इसलामी विश्वविद्यालय दारुल उ़लूम के 150 वर्षों का सर्वेक्षण

दारुल उ़लूम देवबन्द का इतिहास

संकलन

मौलाना मुहम्मदुल्लाह क़ासमी

अनुवाद

प्रोफेसर मुहम्मद सुलैमान

आदेशानुसार

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साहब

मोहतमिम ;कुलपतिद्ध दारुल उ़लूम देवबन्द

मकतबा दारुल उ़लूम

देवबन्द ज़िला सहारनपूर यू.पी. 247554

दारुल उ़लूम देवबन्द का इतिहास

आदेशानुसार

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब

मोहतमिम (कुलपति) दारुल उ़लूम देवबन्द

संकलन	**मौलाना मुह़म्मदुल्लाह क़ासमी**
अनुवाद	प्रोफेसर मुह़म्मद सुलैमान
टाइपिंग & सेटिंग	मुह़म्मद साबिर सिद्दीक़ी / मौलाना अब्दुलहादी क़ासमी
प्रकाशन वर्ष	2012 ई. / 1433 हि.
पृष्ठ	326

प्रकाशक

मकतबा दारुल उ़लूम

देवबन्द ज़िला सहारनपूर यू.पी. 247554

Phone: 01336-222429 Fax: 222768

www.darululoom-deoband.com

विषय सूची

सन्दर्भ पुस्तकें

1. **तारीख़ दारुल उ़लूम देवबन्द**
   सय्यद महबूब रिज़वी साहब
2. **दारुल उ़लूम की सौ साला ज़िंदगी**
   हज़रत मौलाना कारी मुहम्मद तय्यब साहब
3. **सवानेह क़ासमी**
   हज़रत मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी
4. **दारुल उ़लूम देवबन्द नम्बर**
   माहनामा अल–रशीद लाहौर
5. **दारुल उ़लूमः एहयाए इसलाम की अज़ीम तहरीक**
   मौलाना निज़ामुद्दीन असीर अदरवी
6. **दारुल उ़लूम की तालीमी खुसूसियात**
   सय्यद महबूब रिज़वी साहब
7. **सालाना हालात व कवाइफ़ दारुल उ़लूम देवबन्द**
   कुतुब खाना व मुहाफ़िज़ ख़ाना, दारुल उ़लूम देवबन्द
8. **उर्दू मासिक दारुल उ़लूम की फ़ाईलें**
   दफतर माहनामा दारुल उ़लूम, दारुल उ़लूम देवबन्द
9. **अ़रबी मासिक अल–दाई की फ़ाईलें**
   दफतर माहनामा अल–दाई, दारुल उ़लूम देवबन्द
10. **आईना–ए–दारुल उ़लूम की फ़ाईलें**
    दफतर शेखुल हिन्द एकेडमी, दारुल उ़लूम देवबन्द

प्रस्तावना

दारुल उलूम देवबन्द केवल इसलामी विश्वविद्यालय और केन्द्रीय संस्था ही नहीं बल्कि इस्लामी सभ्यता और दीनी तरबियत का एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र भी है। इसके स्नातक दुनिया भर में फैले हुए हैं और इसकी सोच व दृष्टिकोण को मानने वाले पूरी दुनिया में पाये जाते हैं। दारुल उ़लूम के शैक्षिक और वैचारिक रिश्ते अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व और संस्थाओं से कायम हैं और इस के प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से आम आदमी तक पहुंचे हुए हैं। यही कारण है कि दारुल उलूम से संबंधित लोगों के अलावा पूरे विश्व से ऐसे लोग भी इसकी ओर खिंचे चले आते हैं जो इससे सीधे तौर पर जुडे नहीं हैं। यह सिलसिला शिक्षा से जुडे लोगों और रिसर्च स्कॉलरों तक ही सीमित नहीं है बल्कि आम मुसलमान और ग़ैर–मुस्लिम, उच्च शिक्षित लोग, विभिन्न देशों के राजदूत, मीडिया से जुड़ी हस्तियां, अ़रब और ग़ैर–अ़रब देशों के प्रतिनिधि मंडल आदि दारुल उलूम की शोहरत सुन कर स्वयं प्रत्यक्ष रूप देखने आते रहते हैं। दारुल उलूम के इन दर्शनार्थियों और अकीदतमन्दों के दिलों में दारुल उलूम के इतिहास और इसके भूतकाल के सिलसिले में विभिन्न प्रकार के प्रश्न पैदा होते हैं।

इसी कारण इस बात की बहुत आवश्यकता महसूस की जा रही थी कि दारुल उलूम का पूर्ण परिचय विभिन्न भाषाओं (विशेषकर उर्दू, अ़रबी, अंग्रेज़ी और हिन्दी) में पुस्तक के रूप में पेश किया जायें ताकि दुनिया दारुल उलूम के इतिहास से परिचित हो सके और मुसलमानों के सामने उनकी महान विभूतियों और बुज़ुर्गों की इस महान धार्मिक और शैक्षिक यादगार का इतिहास आ जाये क्योंकि इतिहास ही किसी क़ौम की वास्तविक धरोहर है। इतिहास ही के द्वारा अपने महान बुज़ुर्गों के जीवित कारनामों और उनकी अभूतपूर्व सेवाओं से परिचित हुआ जा सकता है। इतिहास ही क़ौम की मुर्दा रगों में खून दौड़ाने, भविष्य की चुनौतियों का सामना करने और तरक़्क़ियों की ऊँचाईयों को छूने के लिये ठोस आधार

प्रदान करता है।

दारुल उलूम की वेबसाईट के लिये दारुल उलूम के परिचय की तैयारी के सिलसिले में एक नया पहलू यह सामने आया कि इसी मसौदे को आवश्यक फेर–बदल के साथ किताब की रूप में प्रकाशित किया जाये ताकि इसके लाभ उठाने वालों का दायरा बढ़ाया जा सके। मुझे बेहद खुशी हो रही है कि इस दिशा में अच्छी पेशक़दमी हुई और सबसे पहले हिन्दी का संकलन तैयार होकर सामने आया। अल्हम्दुलिल्लाह यह किताब हमारे इन उद्देश्यों को भली भांति पूरा कर रही है।

इस किताब में दारुल उलूम देवबन्द के डेढ़ सौ सालों का इतिहास संक्षिप्त और पूर्ण रूप से समेट लिया गया है। इसमें दारुल उलूम देवबन्द की स्थापना और इसकी भूमिका, दारुल उलूम के डेढ़ सौ सालों की अहम घटनाओं का वर्षवार वर्णन, दारुल उलूम की वैचारिक विरासत, दारुल उलूम का प्रबन्धन, दारुल उलूम के पाठ्यक्रम व शैक्षिक प्रबन्धन, दारुल उलूम के कारनामे और सेवायें, दारुल उलूम के विद्वान और मशहूर हस्तियाँ आदि शीर्षकों पर आधारित जानकारियां शामिल हैं जो इन्शाअल्लाह आम लोगों के लिये दारुल उलूम से परिचय का आधार बनेंगी। यह पुस्तक विभिन्न धर्मों के विद्वानों और शिक्षाविदों, सत्य की खोज करने वालों और रिसर्च स्कॉलरों के लिये अत्यधिक लाभदायक जानकारियों का भण्डार साबित होगी।

अल्हम्दुलिल्लाह उर्दू, अ़रबी और अंग्रेज़ी में भी इसी अन्दाज़ से दारुल उलूम का पूर्ण परिचय तैयार किया जा रहा है जो इन्शाअल्लाह निकट भविष्य में इसके आप के हाथों में होगा।

दुआ है कि अल्लाह तआला शिक्षा के इस वट वृक्ष को क़यामत तक क़ायम रखे, हमारी इन कोशिशों को स्वीकार करे और हम सब को अपनी मर्ज़ी के अनुसार चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन!

अबुल क़ासिम नोमानी
मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द
27 शव्वाल 1433 / 15 सितम्बर 2012

भूमिका

दारुल उ़लूम देवबन्द का इतिहास केवल शिक्षा संस्था का इतिहास नहीं है, और न दारुल उ़लूम देवबन्द एक मात्र शिक्षा संस्था है, बल्कि दारुल उ़लूम देवबन्द एक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विचारधारा का केन्द्र है जो इस्लामिक धार्मिक सिद्धान्तों पर आधारित है। यह केन्द्र क्यों और कब स्थापित हुआ? इस केन्द्र का क्या योगदान है? इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिये यह संकलन प्रसारित किया जा रहा है।

2002 ई. में तत्कालीन मोहतमिम हज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साह़ब के आदेश पर दारुल उ़लूम देवबन्द की वेबसाइट के लिये चार भाषाओं में दारुल उ़लूम देवबन्द का परिचय तैयार करने का सिलसिला आरम्भ हुआ। परन्तु यह काम पूरी तरह से ना हो सका। बाद में कार्यवाहक मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना गुलाम रसूल ख़ामोश साह़ब ने इस काम से विशेष दिलचस्पी ली और काम आगे बढ़ाने का आदेश दिया।

सबसे पहले उर्दू भाषा पर काम शुरू हुआ और दारुल उ़लूम देवबन्द का एक व्यापक और विस्तृत परिचय तैयार कर के उसी के आधार पर अन्य भाषाओं (हिंदी, अ़रबी, इंगलिश) में भी दारुल उ़लूम का परिचय प्रस्तुत करने की योजना बनी।

दारुल उ़लूम वेबसाइट के लिये तैयार होने वाली इस जानकारी को दारुल उ़लूम के वर्तमान मोहतमिम (वाईस चांसलर) हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब बनारसी के आदेशानुसार हिन्दी भाषा में पुस्तक के रूप में समाज और विद्वानों के सामने लाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

दारुल उ़लूम देवबन्द के दस्तावेजों को सामने रखकर और हमसे पहले विद्वानों ने इस दिशा में जो काम किया है उन की जानकारी को आधार मानकर इस इतिहास का संकलन किया गया है। यह पुस्तक दारुल उ़लूम के डेढ़ सौ साल के इतिहास को अपने दामन में समेटे हुए है। इस पुस्तक में दी गयी तिथियां मूल रूप से हिजरी में हैं, इसी लिये

समझने में आसानी के लिये हिजरी सन् के साथ साथ ईसवी सन् भी लिखा गया है, लेकिन इस में कहीं कहीं छोटी मोटी गलती भी हो सकती है। पुरानी किताबों में कहीं कहीं तिथियों की गलतियां भी थीं जिन को ठीक करके लिखा गया है।

यह हमारा सौभाग्य है कि अल्लाह ने हमैं इस सेवा के लिये कु़बूल किया। हम दारुल उ़लूम देवबन्द के वर्तमान मोहतमिम हज़रत मुफ़्ती मौलाना अबुल क़ासिम साह़ब और दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा (प्रबन्धक निकाय) के भी बेहद आभारी हैं कि उन्होंने दारुल उ़लूम के इस हिन्दी इतिहास को पुसतक के रूप में प्रकाशित करने की अनुमति दी। अल्लाह तआ़ला जज़ाए खैर दें मौलाना अ़ब्दुलह़मीद नोमानी साह़ब (जमीअ़त उलमा–ए–हिंद नई दिल्ली) को कि उन्हों ने मजलिस–ए–शूरा के आदेशानुसार इस किताब को देखा और उचित सुझाव दिये।

हम इंटरनेट विभाग के सदस्यों मौलाना हुसैन अह़मद क़ासमी, मौलाना सलाहुद्दीन क़ासमी और मौलाना अ़ब्दुलहादी क़ासमी के आभारी हैं कि इन्हों ने क़दम क़दम पर अपनी अनेक सेवाएं पेश कीं और इस कार्य को सामने लाने में पूरा सहयोग दिया। अल्लाह तआ़ला मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद साजिद साहब हरदोई अध्यापक दारुल उ़लूम को जज़ाए खैर दें कि आप ने इस संग्रह को संकलिक करने में लाभदायक सुझाव दिये। मौलाना तालिब हुसैन साहब संचालक मुहाफ़िज़ ख़ाना दारुल उ़लूम देवबन्द भी धन्यवाद के योग्य हैं कि उन्हों ने दारुल उ़लूम के अहम रिकार्ड तक पहुचंने में काफी सहयोग दिया।

अल्लाह तआ़ला हमारी इस कोशिश को कु़बूल फरमाए और दारुल उ़लूम देवबन्द के इतिहास का यह कार्य दारुल उ़लूम के सम्बन्ध में जानकारी चाहने वालों के लिये उपयोगी हो। आमीन!

मुहम्मद सुलैमान
ग्रा. मालाहेडी डा. रण्डोल (सहारनपुर)
शोध प्रमुख, शैखुल हिन्द शोध संस्थान
देवबन्द

मुह़म्मदुल्लाह क़ासमी
संचालक इंटरनेट विभाग व
ऑन लाइन दारुल इफ़्ता
दारुल उ़लूम देवबन्द

30 शव्वाल 1433 / 18 सितम्बर 2012

(1)

पृष्ठभूमि और स्थापना

दारुल उ़लूम की स्थापना की पृष्ठभूमि

स्वर्ग समान भारत वर्ष में मुसलमान बादशाहों के शासन काल के इतिहास का समय बड़ा प्रकाशमान और उज्जवल रहा है। मुस्लिम शासकों ने भारत वर्ष की उन्नति और विदेशों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस की साख को मज़बूत करके ऐसे कार्य किये जो भारत वर्ष के इतिहास में सुनहरे शब्दों में लिखे जाने के योग्य हैं। इस्लामी हुकूमत का आरम्भ पहली शताब्दी हिजरी (सातवीं ईसवी शताब्दी) से होजाता है। और गंगा जमुना की लहरों की भांति यह सल्तनत अपने स्थान से चलकर देश के हर भाग पर लहराती, बलखाती फैलती चली जाती है। बारहवीं हिजरी शताब्दी (18वीं ईसवी शताब्दी) तक पूरी शान के साथ मुस्लिम शासक हिन्दुस्तानियों के दिलों पर शासन करते हैं। यह कहना अनुचित न होगा कि औरंगज़ेब आलमगीर मुस्लिम हुकूमतों के उत्थान व पतन के बींच सीमा रेखा थे। उनकी मृत्यु के पश्चात ही देश खण्डित हो गया, और संयुक्त भारत अलग–अलग प्रांतों और रजवाड़ों में बंटता चला गया। यद्यपि इस के बाद भी डेढ़ सौ साल तक मुग़लों की हुकूमत रही। मगर यह हुकूमत निर्जीव थी। प्रशासकों के अन्दर शासन की आत्मा मर गई थी। इस उथल पुथल और विद्रोह के समय केन्द्रीय सरकार की कमज़ोरी के कारण, भारत की अन्दरुनी और विदेशी जातियों ने बड़ा लाभ उठाया। हर एक प्रान्त के सरदार को एक दूसरे से डरा धमका कर और सहायता व इमदाद का ढौंग रचकर विरोध को ख़ूब बढ़ावा दिया गया, और केन्द्रीय सरकार को अधिक से अधिक कमज़ोर करने का पूरा प्रयत्न किया गया जिस में उन को पूरी सफलता मिली।

औरंगज़ेब आलमगीर के बाद डेढ़ सौ साल के उत्थान पतन और विद्रोह का अन्दाज़ा इस बात से भली भांति लगाया जा सकता है कि केवल पचास साल की मुद्दत में 1707 ई॰ से 1757 ई॰ तक दिल्ली के

तख्त पर दस बादशाह बिठाये और उतारे गये, जिन में केवल चार अपनी प्राकृतिक मौत से मरे। इनके अतिरिक्त कई क़त्ल किये गये किसी की आंखों को लोहे की गर्म सलाखों से फोड़ दिया गया। कुछ ने क़ैदखानों की अंधेरी कोठरी में अपनी जान दी।

सोलहवी शताब्दी के अन्त में अंग्रेज़ व्यापारी भारत में आने प्रारम्भ हुए। 1600 ई॰ में महारानी एलिज़बेथ की आज्ञा से ईस्ट इण्डिया कम्पनी भी स्थापित हो गई थी। डेढ़ सौ साल तक इन लोगों को केवल अपने व्यापार से ही सम्बंध या सम्पर्क रहा लेकिन जब आलमगीर और मुअज़्ज़मशाह की मुग़लिया परिवार की हुकूमतों में फूट पड़ने लगी और देश में आन्तरिक युद्ध आरम्भ हो गये तो समय के संकट से लाभ उठाकर अंग्रेज़ भी मैदान में उतर आये और धोखेबाज़ी से काम लेकर प्रत्येक प्रान्त में विश्वासघातों को जन्म दिया। अंग्रेज़ों की यह एक ऐसी चाल थी जिस के कारण उन्हों ने बहुत ही आसानी से टिड्डी दल फौज को लेकर दक्षिण बंगाल, मैसूर, पंजाब, सिंध, बर्मा और अवध को विजय करते हुए 1857 ई॰ में दिल्ली के लाल किले पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। और मुग़ल परिवार के अंतिम चिराग़ बहादुर शाह ज़फर को बन्दी बनाकर रंगून भेज दिया जहां वह सदैव के लिये मृत्यु की गोद में सो गये। इस प्रकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी पूरे भारत पर छा गई। इस प्रकार इंग्लैण्ड की सरकार इस मुल्क की बाग डोर अपने हाथ में लेकर स्याह–सफ़ेद की मालिक बन गई।

1857ई॰ में पूरे मुल्क में स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी गई, मगर इस युद्ध में असफलता मिली जिस के पश्चात भारतीयों पर अत्यचार आरम्भ हो गये। अत्याचार इतने कठोर थे कि उन को सुन कर हृदय कांप उठता है। अंग्रेजों के अत्यचारों का सीधा निशाना मुसलमान थे, क्योंकि हुकूमत मुसलमानों ही से छीनी गई थी, इस लिये उन कों इन्हीं से गड़बड़ी की आशंका थी। 1857 ई॰ के स्वतन्त्रता संग्राम में ब्रिटिश गवर्नर जनरल ने यह घोषणा कर दी थी कि हमारे विरोधी वास्तव में मुसलमान हैं, अतः1857 ई॰ के युद्ध में असफलता के पश्चात अंग्रेज़ों ने जी भरकर बदला लिया, और आलिमों, कवियों, लेखकों और नेताओं को चुन–चुन कर क़त्ल करना आरम्भ कर दिया।

सर विलयम मयूर ने अपनी पुस्तक 'बग़ावते हिन्द' में कुछ गोपनीय

दस्तावेज़ों का संदर्भ देते हुए लिखा हैः "18 नवम्बर 1858 ई॰ के प्रातः काल चौबीस शहज़ादों को दिल्ली में फांसी दी गई" आगे लिखते हैः "झज्जर, बल्लब गढ़, फर्रूख़नगर और फर्रुख़ाबाद के अमीरों और नवाबों ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था, अतः उन में से कुछ को फांसी पर लटका दिया गया और कुछ को काला पानी की सज़ा दी गई। (कवाइफ़ व सहाइफ़ पृष्ठ 13)

आलिमों के साथ इतना कठोर अत्याचार और ज़ुल्म किया गया कि इतिहासकारों का कलम उन को लिखने से कांपता है। गोया 1857 ई॰ का स्वतन्त्रता संग्राम पशुता और अत्याचार का न समाप्त होने वाला सिलसिला लेकर आरम्भ हुआ था। ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब मुहाजिर मक्की के प्रसिद्ध ख़लीफ़ा ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही और ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी आदि ने एक इस्लामी फौजी यूनिट स्थापित करके अंग्रेज़ों के विरुद्ध शामली, थानाभवन, और कैराना आदि में युद्ध का मोर्चा खोल दिया। ह़ज़रत हाजी इमदादुल्ला साह़ब अमीरुल मोमिनीन, मौलाना रशीद अह़मद गंगोही वज़ीर लामबन्दी, हाफिज़ ज़ामिन साह़ब अमीर जिहाद, मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी कमाण्डर इनचीफ़, मौलाना मुनीर साह़ब ह़ज़रत नानौतवी के फौजी सैक्रेट्री और सय्यद हसन असकरी दिल्ली के क़िले में सियासी मेम्बर चुने गये। इस लिये इन लोगों को अंग्रेज़ों के अत्याचार का श्यामपट बनना अवश्यक था।

जिहादे शामली के पश्चात, अंग्रेज़ों ने थानाभवन पर आक्रमण कर दिया और पूरे क़स्बे को जलाकर राख के ढेर में बदल दिया। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले वीरों को फांसी पर लटकाया जाने लगा। हाजी इमदादुल्लाह साह़ब, मौलाना क़ासिम नानौतवी और मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के वारन्ट जारी कर लिये गये और बन्दी बनाने वालों या पता देने वालों के लिये असंख्य पुरस्कारों की घोषणा की गयी। वारन्ट का क्या हुआ यह अलग बात है, बताना यह है कि अंग्रेज़ों ने मुसलमानों को दबाने, कुचलने, तबाह व बरबाद करने में विशेष रुप से मौलवियों को क़त्ल करने में तनिक भी झिझक अनुभव नहीं की। 1857 ई, के स्वतन्त्रता संग्राम में लगभग दो लाख मुसलमान शहीद हुए जिन में पचपन हज़ार से अधिक उलमा (मोलवी) थे।

अंग्रेज़ अपने बुरे इरादों के अधीन धीरे–धीरे भारत की राजनीतिक, शैक्षिक, और प्रशासनिक गतिविधियों में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) करने लगे थे। इस उद्देश्य से स्थान–स्थान पर बाईबिल सोसाइटियाँ स्थापित की गईं। इंजील का अनुवाद देश की समस्त भाषाओं में किया गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्कीम यह थी कि भारत के निवासियों विशेष रुप से मुसलमानों को असहाय और निर्धन बना दिया जाये, जिसके लिये उचित और अनुचित साधनों को अपना कर कार्य किया जाता था। इस मार्ग में सबसे बडी रुकावट मुसलमानों की शिक्षा थी। इस के लिये 1251 हि॰ तदनुसार 1835 ई, का शैक्षिक प्रोग्राम बनाया गया जिस की आत्मा लार्ड़ मैकाले के विचार में इस प्रकार थी–"एक ऐसी जमात तैयार की जाये जो रंग और नस्ल के लिहाज़ से तो हिन्दुस्तानी हो मगर विचार और व्यवहार के लिहाज़ से ईसाइयत के सांचे में ढली हो"।

अंग्रेज़ी सभ्यता की यह चाल, मुसलमानों की धार्मिक ज़िन्दगी सामाजिक रस्म–ओ–रिवाज और ज्ञान विज्ञान को बरबाद करने वाली थी। जिस को स्वीकार करने में वे किसी प्रकार भी तैयार नही हो सकते थे। अभी तक वह अपनी धार्मिक ज़िन्दगी बरक़रार (स्थिर) रखने का कोई समाधान न सोच सके थे कि उसी बीच 1857 ई॰ का युद्ध छिड़गया, जिसकी तबाह व बरबाद करने वाले कार्यो ने दिलों को भयभीत कर दिया और आत्मा को मुर्दा बना दिया। लोगों के दिलों पर मायूसी की घटायें छा गईं।

भारत में मुसलमानों के इतिहास में यह सब से अधिक भयानक और ख़तरनाक समय था। इसी दुख भरे वातावरण में जब मुसलमानों की संस्कृति को मिटाने और नेतृत्व को समाप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा था, हज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी, व हाजी मुह़म्मद आ़बिद और आपके साथियों ने अंग्रेज़ों को अपने उद्देश्यों में असफल बनाने और मुसलमानों को एक केन्द्र पर लाने के लिये 15 मुहर्रम 1283 हि॰ यानी 31 मई 1866 ई॰ ब्रहस्पतिवार के दिन मस्जिद छत्ता में अनार के पेड़ के नीचे एक मदरसा इस्लामिया अरबिया (दारुल उ़लूम देवबन्द) स्थापित किया, जिस की वास्तविकता स्वतन्त्रता संग्राम के लिये एक फौजी छावनी की थी और जिसपर शिक्षा का सुनहरा पर्दा डाल दिया गया था। इस वास्तविकता का वर्णन ब्रिटिश सरकार की सी0आई0डी0

ने अपनी गुप्त रिपोर्ट में इन शब्दों में बयान किया है– "रेशमी रूमाल षडयन्त्र में जो मोलवी शामिल हैं लगभग वे तमाम इसी मदरसे दारुल उ़लूम से शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं।" बाद में यह मदरसा इसलामी संगठन और जिहाद का गढ़ और मौलाना महमूद हसन ने अपने प्रधानाध्यापक होने के समय में जो जिहाद का अन्दोलन आरम्भ किया था उसका केन्द्र बना। (रेशमी ख़ुतूत साज़िश केस पृष्ठ 191)

दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना किसी समय के आवेश या व्यक्तिगत हौसले के आधार पर नहीं बल्कि इस की नींव एक निश्चित स्कीम और एक जमात की सोची समझी स्कीम के तहत रखी गई है। जिस का समर्थन इस घटना से होता है कि दारुल उ़लूम की स्थापना के पश्चात शाह रफ़ीउद्दीन देवबन्दी हज के लिये मक्का मुअज़्ज़मा गये तो वहां हजरत हाजी इमदादुल्ला साह़ब से अर्ज़ किया (कहा) कि हमने देवबन्द में एक मदरसा स्थापित किया है, उस के लिये दुआ फरमाइयें, तो ह़ज़रत हाज़ी साह़ब ने फ़रमाया – "सुबहानल्लाह, आप फरमाते हैं कि हमने मदरसा स्थापित किया है, यह ख़बर नहीं कि कितनी सिर प्रातः कालीन समय में सज्दे करके गिड़गिड़ाते रहे कि ऐ अल्लाह हिन्दुस्तान में इस्लाम की सुरक्षा का कोई साधन पैदा कर दे। यह मदरसा उन्हीं की दुआओं का फल है। देवबन्द का भाग्य है कि इस अमूल्य वस्तु को यह भूमि ले उड़ी।"

इस तरह ह़ज़रत नानौतवी और ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब आदि ने दारुल उ़लूम को स्थापित करके अपने कार्य से यह घोषणा कर दी कि "हमारी शिक्षा का उद्येश्य ऐसे नवयुवक तैयार करना है जो रंग व नसल के लिहाज़ से हिन्दुस्तानी हों और दिल दिमाग़ से इसलामी हों, जिन में इस्लामी सभ्यता और संस्कृति की भावना जागी हो, वे दीन और सियासत के आधार पर इस्लामी हों। इस का एक लाभ यह हुआ कि भारत में पाश्चात्य सभ्यता के फैलाव पर रोक लग गयी और बात एक तरफ़ा न रही बल्कि अगर एक ओर ब्रिटिश समर्थकों ने जन्म लिया और दूसरी ओर मशरक़ियत (इसलामी सभ्यता) का पालन करने वालों की जमात ने सामने आकर मुक़ाबला किया। जिस से यह भय जाता रहा कि मग़रबियत (पश्चिमी सभ्यता) की बाढ़ पूरब को बहा ले जायेगी बल्कि अगर उस की धारा का रेला बहाव पर आयेगा तो ऐसे बांध भी बन गये

हैं जो उसको बे रोक टोक आगे नहीं बढ़ने देंगे"।

यह है "मदरसा अ़रबी इसलामी देवबन्द" यानी अ़रबी मदरसों की जननी की स्थापना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, जिससे स्पष्ठ है कि दारुल उ़लूम देवबन्द उसी क्रांति का केन्द्र है जिस को इमामुल हिन्द शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने स्थापित किया था। उसी क्रांति का रक्त दारुल उ़लूम की रगों में अभी तक संचार कर रहा है।

दारुल उ़लूम की स्थापना

1857 ई. की क्रान्ति में जब दिल्ली उजड़ गई और उसकी सियासी दशा बदल गई तो दिल्ली का शैक्षिक केन्द्र भी समाप्त हो गया। उस समय के विद्वानों को जो उस क्रान्ति में शामिल थे, यह चिन्ता हुई कि इस शिक्षा के कारवां को कहां ठिकाना दिया जाये और हिन्दुस्तान में असहाय मुसलमानों के दीन (धर्म) को संभालने के लिये क्या उपाय किया जाये। सौभाग्य से यह दौलत देवबन्द की मस्जिद छत्ता के हिस्से में आई। यह वही मस्जिद है जिसमें देवबन्द आने पर हजरत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम साह़ब ठहरा करते थे। हजरत नानौतवी की ससुराल इसी के समीप मुहल्ला दीवान में थी, इसलिये आप यहां आया करते थे। वह देवबन्द को अपना दूसरा घर बना चुके थे। उस समय हाजी मुह़म्मद आ़बिद और मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब भी इसी मस्जिद में ठहरा करते थे। इसलिये इन बुजुर्गों का आपस में गहरा सम्बन्ध हो गया। इनके अलावा देवबन्द में इनका ह़ज़रत मौलाना जुलफ़िक़ार साह़ब और हजरत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान साह़ब से भी संबंध था।

अतः इन हज़रात का अधिकतर समय मुसलमानों की इल्मी व दीनी विरासत को बचाने में ख़र्च होने लगा। उस समय उनके मन में यह बात आई कि मुसलमानों की सभ्यता उजागर रखने के लिये एक दीनी शिक्षा की संस्था क़ायम की जाये, लेकिन यह मदरसा क़ायम कैसे हो और इसका कार्य करने का तरीक़ा क्या हो? क्योंकि अब दिल्ली का मदरसा उजड़ गया था, ब्रिटिश सरकार ने औक़ाफ़ ज़ब्त कर लिये थे और नवाबों और अमीरों की बरबादी के कारण किसी इस्लामी संस्था को किस तरह चलाया जाये? हजरत नानौतवी के आठ उसूलों से पता चलता है कि इन हज़रात ने यह फैसला किया कि मदरसा जनता के चन्दे से चलाया जाये।

चन्दा इकट्ठा करने में सबसे पहले जिस व्यक्ति ने व्यवहारिक कदम उठाया वह हजरत मुह़म्मद आ़बिद साह़ब थे। एक दिन प्रातःकाल

अपने रूमाल की झोली बनाकर आपने उसमें तीन रूपये डाले और छत्ता मस्जिद से अकेले मौलाना महताब अली के पास गये। उन्हों ने छः रूपये दिये। फिर बारह रूपये मौलाना फ़ज़लुर्रहमान साह़ब ने दिये और छः रूपये हाजी फ़ज़ल हक़ ने दिये। फिर वहां से मौलाना ज़ुलफ़िक़ार अली साह़ब के पास आये। उन्हों ने बारह रूपये दिये। उस समय सय्यद ज़ुलफ़िक़ार अली देवबन्दी द्वितीय भी वहां थे, उन की तरफ से भी बारह रूपये दिये। इस प्रकार शाम तक दौ सौ रूपये हुए।

अन्ततः 15 मुहर्रम 1283 हि॰/31 मई 1866 ब्रहस्पतिवार के दिन मस्जिद छत्ता के खुले आंगन में अनार के पेड के साये में साधारण तरीक़े से दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना हुई। हजरत मौलाना मुल्ला महमूद देवबन्दी को पहला अध्यापक बनाया गया और महमूद हसन नामी बच्चा इस मदरसे का पहला विद्यार्थी बना जो बाद में शैखुल हिन्द के नाम से पूरी दुनिया में जाना गया। इस मदरसे के सबसे पहले उस्ताद और शागिर्द का नाम महमूद था। मदरसा इस बेसरो सामानी में बना, न कोई इमारत, न विद्यार्थी। हालांकि यह एक छोटा सा मदरसा था लेकिन यह भारत में दीनी तालीम और दीनी दावत के एक नये दौर की शुरूआत थी।

आज से डेढ़ सौ साल पहले एक विचित्र बात थी कि अवामी चन्दे के आधार पर एक ऐसा तालीमी इदारा क़ायम किया जाये जो हुकूमत के प्रभाव से आज़ाद हो। आने वाले समय के लिये यह एक बंधन था। आज जबकि बडी–बडी रियासतें समाप्त हो गई हैं, मगर कश्मीर से असम तक हज़ारों दीनी मदरसे चल रहे हैं और उन पर सरकार की तब्दीली का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इससे अवामी चन्दे की अहमियत और मदरसों के अस्तित्व का पता चलता है। वक़्फ़ के तरीक़े से यह अवामी चन्दे का तरीक़ा बहुत अच्छा है। चन्दे के संबंध में दारुल उ़लूम का आरम्भ से यह नियम रहा है कि इसमें न तो चन्दे के लिये कोई अनिवार्य सीमा निश्चित की गई है और न मज़हब व मिल्लत की कोई क़ैद हे।

दारुल उ़लूम की स्थापना के चार दिन बाद दारुल उ़लूम की ओर से एक ऐलान छपा जिस पर निम्न हज़रात के हस्ताक्षर थे – ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद अ़ाबिद साह़ब, ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम साह़ब नानौतवी, ह़ज़रत मौलाना महताब अली साह़ब, ह़ज़रत मौलाना

जुलफ़िक़ार अली साह़ब, ह़ज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान साह़ब, ह़ज़रत मुंशी फ़ज़लहक़ साह़ब, ह़ज़रत शेख़ निहाल अह़मद साह़ब। ये ह़ज़रात मजलिस–ए–शूरा (प्रबन्धक निकाय) के केवल सदस्य ही न थे बल्कि दारुल उ़लूम के निर्माता थे। इनमें ह़ज़रत नानौतवी दारुल उ़लूम के सबसे पहले संरक्षक और हाजी मुह़म्मद आ़बिद दारुल उ़लूम के सबसे पहले मोहतमिम बनाये गये।

दारुल उ़लूम के संस्थापक ☆

क्रं.	नाम	जन्म–मृत्यु
1	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी	1832–1880
2	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब	1835–1913
3	ह़ज़रत मौलाना महताब अली देवबन्दी	मृत्यु 1887
4	ह़ज़रत मौलाना जुलफ़िक़ार अली देवबन्दी	1822–1905
5	ह़ज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान देवबन्दी	1832–1907
6	ह़ज़रत मुंशी फ़ज़ल हक़ साह़ब	
7	ह़ज़रत शेख़ निहाल अह़मद साह़ब	मृत्यु 1887

☆ ह़ज़रत नानौतवी, ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब और ह़ज़रत मुंशी फ़ज़ल हक़ साह़ब के ह़ालात अंतिम अध्धयाय में आ रहे हैं। ह़ज़रत मौलाना महताब अली देवबन्दी, ह़ज़रत मौलाना जुलफ़िक़ार अली देवबन्दी, ह़ज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान देवबन्दी और ह़ज़रत शैख़ निहाल अह़मद के ह़ालात संक्षेप में लिखे जा रहे हैः–

(1) ह़ज़रत मौलाना महताब अली साह़ब

आप ह़ज़रत शैखुल हिन्द के ताया थे। शेख़ फ़तह अली देवबन्दी के तीन बेटों में ह़ज़रत मौलाना महताब अली सबसे बड़े थे। आपके भाई ह़ज़रत मौलाना जुलफ़िक़ार अली भी दारुल उ़लूम के संस्थापकों में से थे। उस समय देवबन्द के उच्च विद्वानों में से थे। ह़ज़रत नानौतवी ने देवबन्द में अ़रबी की आरम्भिम पुस्तकें आप ही से पढ़ी थीं। दारुल उ़लूम की स्थापना और उसको तरक़्क़ी देने में आप हाजी सय्यद मुह़म्मद आ़बिद के साथ–साथ रहते थे। ह़ज़रत मौलाना महताब अली

ने तालीम दिल्ली अरबिक कॉलेज में ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अली नानौतवी और ह़ज़रत मुफ़्ती सदरूद्दीन आजुरदा से हासिल की। जब शिक्षा प्राप्त करके आप देवबन्द आये तो चूंकि घराना खुशहाल था इसलिये उन्होंने कहीं मुलाज़मत नहीं की बल्कि देवबन्द में शिक्षा की नींव रखी। शेख़ करामत अली की बैठक में इनका मदरसा था। यहीं वे छात्रों को पढ़ाया करते थे। ह़ज़रत मौलाना महताब अली की मृत्यु तारीख़ दारुल उ़लूम देवबन्द के अनुसार 1293 हिजरी/1876 ई. है (पृ. 231 व 232) जबकि ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब ने मदरसे की सदस्यता का अन्त 1304/1887 लिखा है जो शायद आपकी मृत्यु का वर्ष है। (दारुल उ़लूम की सदसाला ज़िन्दगी पृष्ठ 102)

(2) ह़ज़रत मौलाना जुलफ़िक़ार अ़ली साह़ब

ह़ज़रत शेखुल हिन्द के पिता थे। दिल्ली कॉलेज में ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली नानौतवी (मृत्यु 1851) ई. से पढ़ा। शिक्षा प्राप्ति के बाद बरेली कॉलेज में प्रोफ़ेसर नियुक्त हुए। कुछ सालों बाद डिप्टी इन्स्पेक्टर हो गये। अ़रबी भाषा व सहित्य पर बड़ी पकड़ थी। दीवाने ह़मासह की शरह़ (कुंजी) तसहीलुरिमासह, दीवाने मुतनब्बी की शरह़ तसहीलुल बयान, और बहुत सी अन्य पुस्तकों की कुंजियां उर्दू में लिखी हैं। मौलाना ने इन शरहों में अ़रबी के मुश्किल अलफ़ाज़ व मुहावरों का ऐसे आसान मुहावरों सहित अनुवाद और व्याख्या की है कि जिसके कारण अ़रबी सहित्य की पुस्तकें बहुत आसान हो गयी हैं। मआ़नी व बयान में तज़किरतुल बलाग़त और रियाज़ी में तसहीलुल ह़िसाब उन की यादगारें हैं। अ़रबी भाषा में एक संक्षिप्त रिसाला अल–हदीयतुस्सनीयह के नाम से लिखा है जिस में दारुल उ़लूम के बजुर्गों के गुण और देवबन्द की सरज़मीन की विशेषतायें बड़े अनोखे अंदाज़ में लिखी गयी हैं। 1322 हि./1904 में 85 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई।

(3) ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान उस्मानी साह़ब

आप ने भी दिल्ली कालेज में ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली से शिक्षा प्राप्त की। फ़ारसी और उर्दू के उच्चकोटि के शायर थे। विभिन्न नज़में क़सीदे और मरसिये आदि उन के शौक और रूची के प्रतीक हैं। देवबन्द में 1301/1883 हि. में एक ज़बरदस्त प्लेग फैला था। उस प्लेग की तबाह कारियों को उन्होंने फ़ारसी भाषा में नज़्म किया है जो देवबन्द के ह़ालात में एक तारीख़ी दस्तावेज़ है। ह़ज़रत मौलाना फ़ज़ुर्रह़मान को तारीख़ निकालने में भी बड़ा कमाल ह़ासिल था। शिक्षा

विभाग में डिप्टी इंस्पेक्टर मदारिस के पद पर नियुक्त थे। 1325/1907 में मृत्यु पाई। उन्होंने अपने बाद अपने बेटों में अ़ज़ीज़ुर्रह़मान उस्मानी, मुफ़्ती–ए–आजम दारुल उ़लूम देवबन्द, ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द, ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी सदर मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द जैसे प्रसिद्ध उलमा छोड़े।

(4) ह़ज़रत शेख़ निहाल अह़मद साह़ब

आप देवबन्द के रहने वाले थे। दारुल उ़लूम की स्थापना के बाद जो पहली अपील छपी थी, उनमें आपका नाम शामिल था। आपकी तालीम ह़ज़रत मौलाना महताब अली की दर्सगाह में हुई थी जो शेख़ करामत हुसैन के दीवानख़ाने में स्थापित थी। इस दर्सगाह में ह़ज़रत नानौतवी ने भी तालीम हासिल की थी। रिकॉर्डों के आधार पर आरम्भ से लेकर 1304 हिजरी/1887 ई. तक मजलिस–ए–शूरा के सदस्य रहे। शायद यही इन की मृत्यु का सन भी है।

(2)

दारुल उ़लूम देवबन्द के 150 (डेढ़ सौ) साल

1. दारुल उ़लूम देवबन्द का पहला दौर
2. दारुल उ़लूम देवबन्द का दूसरा दौर
3. दारुल उ़लूम देवबन्द का तीसरा दौर
4. दारुल उ़लूम देवबन्द का वर्तमान दौर

दारुल उ़लूम देवबन्द का पहला दौर

1283 / 1866 – 1313 / 1895 (30 वर्ष)

क्रं.	मोहतमिम का नाम	आरम्भ व अन्त	समय
1.	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब (1250 / 1835–1331 / 1913)	1283 / 1866–1284 / 1867 1286 / 1869–1288 / 1871 1306 / 1888–1310 / 1893	10 वर्ष
2.	ह़ज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब (1252 / 1836–1308 / 1891)	1284 / 1867–1285 / 1868 1288 / 1872–1306 / 1888	19 वर्ष
3.	ह़ज़रत हाजी फ़ज़लहक़ साह़ब	1310 / 1893–1311 / 1894	1 वर्ष
4.	ह़ज़रत मौलाना मुनीर साह़ब नानौतवी	1311 / 1894–1313 / 1895	डेढ वर्ष

दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना 15 मुहर्रम 1283 हि॰ / 31 मई 1866 ई. को सादा अन्दाज़ में की गयी थी। उस समय इस का नाम मदरसा अ़रबी देवबन्द रखा गया। उस समय सबसे पहले मौलाना महमूद साह़ब को ह़ज़रत नानौतवी ने अध्यापक रखा जो उस समय मेरठ में निवास करते थे। मस्जिद छत्ता में अनार के पेड़ के नीचे पढ़ाई शुरू हुई। आश्चर्य है कि इस मदरसे में दाखिल होने वाले सबसे पहला विद्यार्थी का नाम भी महमूद था जो बाद में शैखुल हिन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए और बाद में दारुल उ़लूम देवबन्द के पहली क़तार के उलेमा के उस्ताद भी हुए।

दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना के चार दिन बाद मदरसे की घोषणा की गई और जनता से चन्दे की अपील की गई। दारुल उ़लूम की व्यवस्था के लिये एक कमेटी मजलिस–ए–शूरा बनाई गयी। इस

कमेटी के सदस्य निम्न प्रकार थे – (1) ह़ज़रत हाजी आ़बिद साह़ब (2) ह़ज़रत मुह़म्मद कासिम नानौतवी साह़ब (3) ह़ज़रत मौलाना महताब अली साह़ब (4) ह़ज़रत मौलाना जुलफ़िक़ार अली साह़ब (5) ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान साह़ब (6) ह़ज़रत मुन्शी फ़ज़्ल हक़ साह़ब (7) ह़ज़रत शेख़ निहाल अह़मद साह़ब। मजलिस–ए–शूरा की देख रेख में आमदनी और ख़र्च का हिसाब रखने, शिक्षा और व्यवस्था के कामों को देखने के लिये ह़ज़रत हाजी आ़बिद साह़ब को मोहतमिम बनाया गया।

इस दौर के हर वर्ष के संक्षिप्त हालात निम्न तालिका से स्पष्ट हैंः

1283 हि./1866–67 ई.

आरम्भ में विद्यार्थियों की कुल संख्या 21 थी। साल के अंत में यह संख्या 78 हो गई जिस में 58 विद्यार्थी बाहर के थे। पहले ही साल में आस पास और दूर के स्थानों जैसे बनारस, पंजाब और काबुल तक के बच्चे आने शुरू हो गये। इस प्रकार अध्यापक भी बढ़ाये गये। इसी साल ह़ज़रत मौलाना याकूब साह़ब नानौतवी प्रधानाध्यापक के पद पर आये। इसी साल मौलाना मुह़म्मद फ़ाज़िल फुलती साह़ब, मौलाना मीर बाज़ खां साह़ब, मौलाना फतह मुह़म्मद साह़ब और हाफ़िज़ अह़मद हसन की नियुकित भी हुई। सालाना कुल खर्च लगभग 394 रूपये रहा और 255 रूपये बाकी बच गये।

1284 हि./1867–68 ई.

सालाना बजट सात सौ रूपये रखा गया। इस वर्ष देवबन्द में महामारी फैलने के कारण दो माह तक शिक्षा बन्द रही। आश्चर्य की बात यह है कि महामारी के होते हुए भी बाहर के विद्यार्थियों की संख्या 78 से बढ़ कर 120 हो गई जबकि दारुल उ़लूम की न अपनी बिल्डिंग थी और न मतबख़ (रसोईघर)। इस साल चन्दा भी दोगुना 1275 रूपये हुआ। इसी साल हाजी आ़बिद साह़ब के हज पर जाने के कारण मोहतमिम के पद पर ह़ज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब को नियुक्त किया गया। इसी साल दारुल उ़लूम में शिक्षा का विस्तार करने के लिये दरजा नाज़रा, हिफ़्ज़, फारसी और गणित की शिक्षा आरम्भ की गई तथा दो अध्यापक बढाये गये। दारुल उ़लूम की उन्नति को देख कर एक एकाउन्टेण्ट रखा गया।

1285 हि./1868–69 ई.

इस साल में एक जमात ने अपनी शिक्षा पूरी की। हजरत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही ने दारुल उ़लूम का दौरा किया और मदरसे का निरीक्षण किया। उन्हों ने विद्यार्थियों की परीक्षा ली और अपने विचार रखे।

1286 हि./1869–70 ई.

महामारी और क़हत (अकाल) के कारण शैक्षिक कार्य बन्द रहा। हजरत मौलाना रफीउद्दीन साह़ब देवबन्दी हज के लिये गये। उनके स्थान पर हजरत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब को दोबारा मोहतमिम बनाया गया।

1287 हि./1970–71

पिछले साल की महामारी के कारण आगे दाखिले और तालीमी तरक्की के बजाये पिछले साल के तालीमी काम को पूरा किया गया।

1288 हि./1871–72 ई.

बच्चों की संख्या 106 हो जाने के कारण मस्जिद छत्ता छोटी पडने लगी। इस लिये दारुल उ़लूम को क़ाज़ी मस्जिद में स्थानान्तरित (मुन्तक़िल) कर दिया गया। देवबन्द की जामा मस्जिद के निर्माण ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद की देख रेख के कारण उनके काम को हल्का करने के लिये ह़ज़रत मौलाना रफीउद्दीन साह़ब को दोबारा मोहतमिम नियुक्त किया गया।

1289 हि./1872–73 ई.

दारुल उ़लूम की स्थापना के बाद पहली बार प्रमाण–पत्र वितरण (तक़सीम–ए–असनाद) का जलसा हुआ। 1285 हिजरी से 1289 हिजरी तक के उत्तीर्ण छात्रों की संख्या 25 थी, मगर जलसे में केवल 9 उत्तीर्ण विद्यार्थी ही उपस्थित थे। इनमें मौलाना अह़मद हसन अमरोहवी, मौलाना ख़लील अह़मद अम्बेहटवी, मौलाना फ़ख़रूल हसन गंगोही, मौलाना अब्दुल्लाह अंसारी अम्बेहटवी और मौलाना फतह मुह़म्मद थानवी आदि शामिल हैं जो बाद में भारत के महान विद्वान बने। इसी साल

जौनपुर और दिल्ली के अनेक विद्वान जो पहले से आलिम थे, दारुल उ़लूम देवबन्द की प्रसिद्धी के कारण दोबारा ह़दीस पढने आये।

1290 हि./1873–74 ई.

जामा मस्जिद बन जाने पर मदरसे को क़ाज़ी मस्जिद से जामा मस्जिद में स्थानान्तरित (मुन्तक़िल) कर दिया गया। इसी साल पांच विद्यार्थियों ने शिक्षा पूरी करके प्रमाण–पत्र प्राप्त किये। शिक्षा पूरी करने वालों में मौलाना महमूद हसन भी शामिल थे। सालाना जलसे में ह़ज़रत गंगोही, ह़ज़रत मौलाना मज़हर नानौतवी आदि विद्वानों ने शिरकत की। ह़ज़रत नानौतवी ने इस जलसे में एक महत्वपूर्ण भाषण दिया। इसी साल ह़ज़रत मौलाना सिद्दीक़ अह़मद अंबेहटवी, मौलाना अब्दुल्लाह ग्वालियरी, मौलाना अब्दुल हक़ बरेलवी और मौलाना मु. मुराद पाक पट्टनी की नियुक्ति हुई।

1291 हि./1874–75 ई.

दारुल उ़लूम के पहले विद्यार्थी हजरत मौलाना महमूद हसन को सम्मान स्वरूप अवैतनिक रूप से अध्यापक नियुक्त किया गया और दूसरे साल से चौथे साल तक के छात्रों को पढा़ने के लिये अध्यापक नियुक्त हुए। दारुल उ़लूम के आधार पर मदरसे स्थापित होने आरम्भ हो गये जिनमें सहारनपुर में मज़ाहिर उ़लूम, दिल्ली, मेरठ, खुर्जा, बुलन्द शहर, अलीगढ़ और मुरादाबाद के मदरसे हैं। इसी साल थानाभवन के अ़रबी मदरसे का इलहाक़ (जोड़) स्वीकार किया गया। इसी साल कुस्तुनतुनिया के प्रसिद्ध अख़बार 'अल–जवाइब' ने अपना अंक मुफ़्त में ही दारुल उ़लूम में भेजना शुरू किया जो उस समय बडी बात थी। इस से पता चलता है कि दारुल उ़लूम की प्रसिद्धी दूर–दराज़ के देशों में भी फैल रही थी। इसी साल मजलिस–ए–शूरा में ह़ज़रत नानौतवी के प्रस्ताव पर यह निर्णय लिया गया कि दारुल उ़लूम की एक स्थाई और बडी इमारत होनी चाहिये। अतः चन्दा जमा होना शुरू हुआ और आबादी के पश्चिमोत्तर में छत्ता मस्जिद के पास एक प्लॉट खरीद लिया गया। इस साल एक अंग्रेज़ जासूस जान पामर ने दारुल उ़लूम में गुप्त रूप से भ्रमण किया जिसकी रिपोर्ट बाद में सामने आई जो "वास्तविक गवाही वह है कि दुश्मन भी उसकी गवाही दे" का बेहतरीन उदाहरण है।

1292 हि./1875–76 ई.

दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना का सालाना जलसा बडी शान से मनाया गया। दारुल उ़लूम की प्रथम इमारत नौदरा और अहाता मूलसरी की नींव रखी गई। इस अवसर पर ह़ज़रत मौलाना अह़मद अली मुहद्दिस्स सहारनपुरी, हजरत नानौतवी, हजरत गंगोही और ह़ज़रत मौलाना मज़हर नानौतवी उपस्थित रहे। यह निर्माण का कार्य आठ साल तक चला और 23000 रूपये खर्च हुए।

1293 हि./1876–77 ई.

इस्लामी हुकूमत और अदालतों की अवनति के बाद दारुल उ़लूम को इस्लामी केन्द्र की सूरत से ख्याति (शोहरत) मिलने लगी और जनता इस्लामी कामों में दारुल उ़लूम देवबन्द की ओर देखने लगी। सालाना रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि इस साल फतवों की अधिकता के कारण यह सेवा शुरू की गयी। इस साल अम्बेहटा (सहारनपुर), मुज़फ़्फ़र नगर और गुलावठी (बुलन्द शहर) के मदरसों का इलहाक़ (संबंधन) दारुल उ़लूम से हुआ।

1294 हि./1877–78 ई.

विद्यार्थियों ने अपने इनाम की कुल रक़म सत्तर रूपये रूस और तुर्की के बीच ज़ख़्मी होने वाले तुर्क फौजियों के लिये कुस्तुनतुनिया में चन्दे के तौर पर भेजी। इस साल ह़ज़रत नानौतवी, ह़ज़रत गंगोंही, ह़ज़रत मौलाना याक़ूब नानौतवी, ह़ज़रत मौलाना रफीउद्दीन और ह़ज़रत शैख़ुल हिन्द समेत लगभग एक सौ विद्वान हज की यात्रा पर गये।

1295 हि./1878 ई.

दारुल उ़लूम के उत्तीर्ण पुराने विद्यार्थियों ने दारुल उ़लूम की सहायता के लिये "समरतुल तरबियत" के नाम से एक संस्था बनाई।

1296 हि./1879 ई.

संस्था की उन्नति और मदरसों के इलहाक़ (संबंधन) के कारण इस को मौलाना याकूब नानौतवी ने दारुल उ़लूम का नाम दिया। दारुल उ़लूम में हिकमत (तिब) का विभाग खुला। विद्यार्थियों को दवा बनाना,

इलाज करना, बीमारी की दवा देना आदि सिखाया जाने लगा।

1297 हि./1880 ई.

4 जुमादलऊला 1297/15 अपरैल 1880 बृहस्पतिवार को ह़ज़रत मौलाना क़ासिम साह़ब नानौतवी की मृत्यु हो गई। मजलिस–ए–शूरा ने ह़ज़रत गंगोही को दारुल उ़लूम का संरक्षक बनाया।

1298 हि./1880–81 ई.

तीन साल के बाद इस साल दारुल उ़लूम में बड़े पैमाने पर जलसा दस्तारबन्दी मनाया गया जिसमें बडी संख्या में विद्वान शरीक हुए। इस साल विद्यार्थियों की संख्या ढाई सौ रही।

1300 हि./1882–83 ई.

स्थापना से अब तक 56 विद्यार्थियों ने शिक्षा पूर्ण की। 50 हाफ़िज़ बने। दूसरे दर्जों के विद्यार्थी अलग हैं।

1301 हि./1883–84 ई.

जलसा दस्तार बन्दी हुआ। दारुल उ़लूम की अठारह साल की सेवा का निरीक्षण किया गया। दारुल उ़लूम में हिकतम की तालीम शुरू हुई और इलाज भी शुरू हुआ।

1302 हि./1884–85 ई.

दारुल उ़लूम के प्रथम सदर मुदर्रिस ह़ज़रत मौलाना याकूब साह़ब नानौतवी का निधन हुआ। आप अठारह साल तक शैखुल ह़दीस रहे। इस बीच 77 तलबा ने तकमील की जिस में ह़ज़रत शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना खलील अह़मद सहारनपुरी, ह़ज़रत थानवी, ह़ज़रत मुफ़्ती अजीजुर्रहमान उस्मानी, ह़ज़रत हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद, ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान आदि उलमा प्रमुख हैं। ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद देहलवी सदर मुदर्रिस बने।

1303 हि./1885–86 ई.

इस साल तक 141 विद्यार्थियों ने शिक्षा पूरी की। जो बीच में ही शिक्षा छोडकर चले गये उनकी संख्या अलग है। हिन्दुस्तान के आस–पास के अलावा कन्धार, काबुल और बुख़ारा के विद्यार्थियों की

संख्या भी काफ़ी थी। इस साल 64 विद्यार्थियों ने कुरान करीम हिफ़्ज़ किया।

1304 हि./1886–87 ई.

दारुल उ़लूम की सहायता के लिये हैदराबाद दक्षिण में अंजुमन मुईनुल इस्लाम क़ायम हुई। इस अंजुमन के द्वारा दारुल उ़लूम को काफ़ी दिनों तक सहायता मिलती रही।

1305 हि./1887–88 ई.

रियासत हैदराबाद दक्षिण के सदर नवाब सर आसमान जाह ने दौलत आसफ़िया की ओर से दारुल उ़लूम के लिये सौ रूपये माहाना चन्दा नियुक्त किया।

1306 हि./1888–89 ई.

ह़ज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन ने हिजरत (देशत्याग) के इरादे से हज की यात्रा की। ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद अ़ाबिद तीसरी बार मोहतमिम बने।

1307 हि./1889–90 ई.

ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद देहलवी के त्यागपत्र देने के बाद ह़ज़रत शैखुल हिन्द सदर मुदर्रिस बनाये गये।

1308 हि./1890–91 ई.

इसी साल ह़ज़रत मौलाना ख़लील अह़मद अंबेहटवी (जो बाद में मज़ाहिर उ़लूम के शैखुल ह़दीस हुए) और ह़ज़रत मौलाना गुलाम रसूल हज़ारवी की नियुक्ति हुई।

1309 हि./1891–92 ई.

अब तक 27 साल की मुद्दत में 234 आलिम व 81 हाफ़िज़ बने।

1310 हि./1892–93 ई.

ह़ज़रत हाजी अ़ाबिद साह़ब के कार्य अधिकता के कारण मजलिस–ए–शूरा ने ह़ज़रत हाजी फ़ज़ल–ए–हक़ साह़ब को मोहतमिम बनाया। इसी साल दारुल इफ़ता (फ़तवों का विभाग) खोला गया जिसके ज़िम्मेदार मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साह़ब को बनाया गया।

1311 हि./1893–94 ई.

दारुल उ़लूम की उपयोगिता पूरे संसार में फैलने लगी। ज्ञात हुआ कि दारुल उ़लूम से पढ़ने वाले अधिकतर उ़लमा मदरसों में अध्यापक बन गये। ह़ज़रत हाजी फ़ज़ल हक़ ने त्यागपत्र दे दिया। मौलाना मुनीर नानौतवी को मोहतमिम बनाया गया।

1313 हि./1895–96 ई.

ह़ज़रत मौलाना मुनीर नानौतवी ने त्यागपत्र दे दिया। इस के बाद ह़ज़रत हाफ़िज़ मुमहम्मद अह़मद साह़ब को मोहतमिम बनाया गया। ह़ज़रत मुह़म्मद अह़मद साह़ब के समय में दारुल उ़लूम ने बहुत तरक़्क़ी की।

ख़ुलासा

इस तीस साल के समय में दारुल उ़लूम में चार मोहतमिम और तीन सदर मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक) बने – ह़ज़रत मौलाना याक़ूब साह़ब नानौतवी, ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद देहलवी और शैखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी, जिनका समय 1333/1915 हिजरी तक रहा। इस समय में दारुल उ़लूम ने कुल 277 फ़ुज़ला तैयार किये जो दारुल उ़लूम के विद्वानों में गिने जाते हैं। इन्हीं हज़रात के प्रयत्नों से दारुल उ़लूम को यह प्रसिद्धी मिली। विद्यार्थियों की संख्या तीन सौ हो गयी। अध्यापकों की संख्या बारह–तेरह हो गयी। दारुल उ़लूम का बजट 393 रूपये से बढ़कर 6000 हो गया। इसी बीच दारुल उ़लूम की इमारत नौदरा के आस–पास में कमरे बने। इसी बीच में दारुल उ़लूम का दारुल इफ़ता (फ़तवा का विभाग) खुला।

दारुल उ़लूम देवबन्द का दूसरा दौर

1313/1895 – 1348/1930 (35 साल)

क्रं.	मोहतमिम का नाम	आरंभ व अन्त	समय
5	ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब (1279/1862=1347/1928)	1313/1895–1347/1928	34 वर्ष
6	ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमाना साह़ब उस्मानी (मृ. 1348/1929)	1347/1928–1348/1929	सवा साल

यह दौर दारुल उ़लूम की जवानी का दौर कहलाता है जो ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद अह़मद साह़ब के एहतमाम के दौर से आरम्भ होता है। यह दौर कुल 35 सालों का है। इस दौर में दारुल उ़लूम के शिक्षा व्यवस्था में काफ़ी स्थिरता आई। आर्थिक और भवन निर्माण की बडी तरक़्क़ी हुई। इसी समय में मदरसे ने उन्नति करके दारुल उ़लूम का स्थान प्राप्त किया।

इस पूरे समय का विवरण वर्षवार निम्न है –

1313–1318 हि./1895–1901 ई.

ह़ज़रत गंगोही के दारुल उ़लूम देवबन्द में आने पर नवाब महमूद अली ख़ाँ रईस छतारी व अलीगढ़ और दूसरे महान उलमा देवबन्द में पधारे। मजलिस–ए–शूरा में छः नये सदस्यों की बढ़ोतरी हुई। होस्टल के निर्माण के लिये हैदराबाद दक्षिण का सात हज़ार रूपयों का चन्दा आया। भोपाल के नवाब की बेगम शाहजहां की ओर से भारी सहायता हुई। हॉस्टल का निर्माण 1316 हि. में शुरू हुआ और 1318 हि. में पूरा

हुआ। इस पूरे निर्माण में बारह हजार रूपये ख़र्च हुए।

1319 हि./1901–02 ई.

दारुल उ़लूम का पुस्तकालय 1283 हिजरी में ही आरम्भ हो चुका था। इसमें समय–समय पर विभिन्न विषयों की पुस्तकों की बढ़ोतरी होती रही। मौलाना आ़बिद साह़ब ऑनरेरी मजिस्ट्रेट जौनपुर ने अपना मूल्यवान पुस्तकालय जिसमें बहुमूल्य पुस्तकें थीं, दारुल उ़लूम को दान किया। इसी साल नवाब सुल्तान जहां बेगम भोपाल ने तीन सौ रूपये सालाना चन्दा नियुकत किया।

1320 हि./1902–03 ई.

इस साल ह़ज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम रायपुरी और हकीमुल उम्मत ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी को मजलिस–ए–शूरा का सदस्य बनाया गया।

1321 हि./1903–04 ई.

क़ाज़ी अ़लीमुद्दीन रईस शामली ने अपनी जाएदाद दारुल उ़लूम देवबन्द के लिये वक़्फ़ की। तजवीद और क़िरात का विभाग शुरू हुआ। क़ारी अब्दुर्रहमान मक्की के शिष्य क़ारी अब्दुल वहीद खाँ इलाहाबादी की नियुक्ति हुई। इसी साल अंग्रेज़ी के साथ दीनी शिक्षा प्राप्त करने वालों और दीनी शिक्षा के साथ अंग्रेज़ी पढ़ने वालों को वज़ीफ़ा देने की तजवीज़ पास हुई।

1322 हि./1904–05 ई.

दारुल उ़लूम की प्रसिद्धि के कारण संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के राज्यपाल सर जेम्स डगसलिपटोस व मौलाना सय्यद अह़मद शाही इमाम जामा मस्जिद दिल्ली ने दारुल उ़लूम का भ्रमण किया। ह़ज़रत शैखुल हिन्द के पिता ह़ज़रत मौलाना ज़ुल्फ़िक़ार अली का इन्तक़ाल हुआ जो दारुल उ़लूम की शूरा के सदस्य और ख़जान्ची थे।

1323 हि./1905–06 ई.

इस साल 9 जुमादस्सानिया 1323 हि./11 अगसत 1905 ई. को ह़ज़रत मौलाना गंगोही संरक्षक दारुल उ़लूम की मृत्यु हुई।

1324 हि./1906–07 ई.

इस साल इनाम तकसीम करने का जलसा हुआ जिस में आस–पास के अलावा अलीगढ़, मुरादाबाद, शाहजहांपुर, बरेली, भोपाल और लाहौर से लोग आये। मजलिस–ए–शूरा ने मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी साह़ब को उप–मोहतमिम बनाया।

1325 हि./1907–08 ई.

ह़ज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान उस्मानी का इन्तक़ाल हुआ। हाजी फ़सीहुद्दीन की सहायता से दारुल उ़लूम के लिये मस्जिद की ज़मीन खरीदी गई।

1326 हि./1908–09 ई.

दौलत आसफ़िया हैदराबाद दक्षिण से सालाना चन्दा बढ़ाकर 250 रूपये हो गया। रियासत भोपाल से भी चन्दा बढकर तीन हज़ार हो गया।

1327 हि./1909–10 ई.

रानदेर के दानी व्यापारी हाजी गुलाम मुह़म्मद आज़म ने मस्जिद के निर्माण के लिये उन्नीस हज़ार रूपये दिये और मस्जिद की नीव रखी गयी। इस मस्जिद को 1388 हिजरी में पूर्ण किया गया। अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी और मौलाना हुसैन अह़मद मदनी अवैतनिक रूप से अध्यापक बनाये गये। ह़ज़रत मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी के आन्दोलन पर दारुल उ़लूम पर प्रभाव और उसकी माली इमदाद व पुरातन विद्यार्थियों की संस्था जमीयतुल अन्सार की स्थापना की गई। 26 साल के बाद दस्तारबन्दी का जलसा किया गया। दारुल उ़लूम के फ़ुज़ला (पुरातन विद्यार्थियों) की संख्या एक हज़ार से अधिक हो गयी।

1328 हि./1910–11 ई.

दारुल उ़लूम देवबन्द में रसोई चालू की गई। आर्य समाज की इसलाम विरोधी गतिविधियों की रोकथाम के लिये दावत व तबलीग़ (प्रचार–प्रसार) का विभाग खोला गया।

1329 हि./1911 ई.

जमीयतुल अन्सार ने मोतमरूल अन्सार के नाम से मुरादाबाद में एक बड़ा जलसा किया और पूरे देश में क़ासिमुल मआरिफ़ के नाम से शाखें स्थापित कीं।

1330 हि./1911–12 ई.

दारुल ह़दीस की इमारत की नींव रखी गयी। ह़ज़रत शैखुल हिन्द, ह़ज़रत थानवी, ह़ज़रत ख़लील अह़मद सहारनपुरी और ह़ज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम रायपुरी ने नींव रखी। मिश्र के प्रसिद्ध विद्वान अल्लामा सय्यद रशीद रज़ा सम्पादक अल–मनार ने दारुल उ़लूम का भ्रमण किया। इसी साल बलकान के युद्ध में ख़िलाफ़त उस्मानिया तुर्की और अंजुमन हिलाल–ए–अहमर की सहायता के लिये दारुल उ़लूम के द्वारा 65000 रूपये का चन्दा किया गया। शैखुल अदब ह़ज़रत मौलाना ऐजाज़ अली अमरोहवी और ह़ज़रत मौलाना सय्यद असग़र हुसैन देवबन्दी की नियुक्ति हुई।

1331 हि./1912–13 ई.

माहनामा अल–क़ासिम जिसे आरम्भ में मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी ने 1328/1910 हिजरी में अपने खर्चे पर जारी किया था, वह इस साल दारुल उ़लूम से संबंद्धित कर दिया गया। दौलत आसफ़िया की चन्दे की रक़म पांच सौ रूपये सालाना कर दी गयी। ह़ज़रत मौलाना इब्राहीम बलियावी की नियुक्ति हुई।

1332 हि./1913–14 ई.

मतबख (रसोई) विभाग का विस्तार किया गया। ह़ज़रत गंगोही की याद में माहनामा अल–रशीद आरम्भ किया गया। 1330 हिजरी में बलक़ान के युद्ध के समय दारुल उ़लूम की ओर से ख़िलाफ़त उस्मानिया की मदद से प्रभावित होकर सुल्तान पंजुम ने ख़िलाफ़त उस्मानिया का सबसे बड़ा और मुबारक तोहफ़ा नबी अकरम सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के जुब्बा–ए–मुबारक (चोग़े) का ग़िलाफ़ (कवर) दारुल उ़लूम को दिया जिस को दौलत उस्मानिया के सफ़ीर ख़ालिद ख़लील बक ने 16 रबीउल अव्वल 1332/1914 को देवबन्द में भेंट किया। नवाब

सलीमुल्लाह खान रईस ढाका ने दारुल ह़दीस के निर्माण के लिये तेरह हजार (13000) रूपये दिये।

1333 हि./1914–15 ई.

सर जेम्स मिसटन राज्यपाल (गवर्नर) उत्तर प्रदेश ने दारुल उ़लूम का भ्रमण किया और अपने विचार रखे। रेलवे स्टेशन पर मस्जिद बनाई गयी। इसी साल ह़ज़रत शैखुल हिन्द रेशमी रूमाल तहरीक के संबंध से हिजाज़ (अ़रब) गये।

1334 हि./1915–16 ई.

हैदराबाद दक्षिण का चन्दा आठ सौ रूपये सालाना हो गया। यह चन्दा आगे बढ़कर 1338 में एक हजार रूपये हो गया। विद्यार्थियों की तादाद चार सौ से बढ़ गयी। इसी कारण स्टाफ, तामीरात, कुतुबख़ाना आदि विभागों में विस्तार किया गया।

1335 हि./1916–17 ई.

दौरा–ए–ह़दीस में 90 विद्यार्थी दाख़िल हुए। कुल विद्यार्थियों की संख्या 577 हो गयी। आजादी के संघर्ष के जुर्म में ब्रतानिया सरकार ने ह़ज़रत शैखुलहिन्द को शरीफ़ मक्का के द्वारा गिरफ़्तार करा लिया गया और काहिरा के रास्ते मालटा द्वीप में क़ैद कर दिया जहां वह लगभग सवा तीन साल क़ैद रहे।

1336 हि./1917–18 ई.

विद्यार्थियों की संख्या 601, अध्यापक संख्या 23, फुज़ला 73, सालाना आमदनी 63021 और खर्च 64227 रूपये रहा।

1337 हि./1918–19 ई.

इसी साल दारुल उ़लूम के संरक्षक ह़ज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम साह़ब रायपुरी और मौलाना गुलाम रसूल हज़ारवी की मृत्यु हुई।

1338 हि./1919–20 ई.

22 जुमादस्सानी को ह़ज़रत शैखुल हिन्द ने साथियों सहित रिहाई पाई। दारुल उ़लूम में विद्यार्थियों की संख्या छः सौ से अधिक हो गयी। दानियों की विशेष तवज्जुह के कारण चन्दे से दारुल ह़दीस के उत्तर

और दक्षिण और पश्चिम में नये हॉस्टल की नींव रख दी गयी।

1339 हि./1920–21 ई.

18 रबीउल अव्वल 1339/30 नवमबर 1920 ई. को ह़ज़रत शैखुल हिन्द का इन्तक़ाल हो गया। इसी साल फ्रांस, रंगून और दक्षिणी अफ़्रीक़ा के मुसलमानों की ओर से दारुल उ़लूम को भारी चन्दा मिला।

1340 हि./1921–22 ई.

दौलत आसफ़िया हैदराबाद दक्षिण के हाईकोर्ट के पद पर तीन साल के लिये ह़ज़रत हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब का चुनाव हुआ। इस बीच हाफ़िज़ साह़ब सदर मोहतमिम रहे और ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान कार्यकार मोहतमिम रहे।

1341–42 हि./1922–24 ई.

आर्य समाज के ज़बरदस्त फ़ितना–ए–इरतदाद (दीन से फिर जाना) और शुद्धि व संगठन की वजह से दारुल उ़लूम का पूरा ध्यान अन्दरूनी हालात से हटकर इस सोचे समझे आन्दोलन की ओर बंट गया। दारुल उ़लूम के अध्यापकों और दूसरे विद्वानों ने मैदान में उतरकर इस फ़ितने का मुक़ाबला किया और आम मुसलमानों के बीच इस्लाम पर उनके विश्वास को बहाल किया।

1344 हि./1925–26 ई.

ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ साह़ब की हैदराबाद से वापसी हुई और आप के स्थान पर मौलाना हबीबुर्रहमान को इफ़ता के पद पर नियुक्त किया गया। ह़ज़रत थानवी दारुल उ़लूम के संरक्षक चुने गये। 1341 हिजरी में क़ारी मुह़म्मद तय्यब को नायब मोहतमिम बनाया गया था लेकिन प्रबंधन से अधिक शैक्षिक रूझान होने के कारण इधर नहीं आये। इस साल बुजुर्गों के कहने से इस पद को स्वीकार किया।

1345 हि./1926–27 ई.

एहतमाम चुस्त दुरूस्त के लिये तब्दीली हुई। मजलिस–ए–शूरा ने अपने कामों की देखरेख के लिये एक उप–समिति बनाई। ह़ज़रत कश्मीरी छुट्टी पर कश्मीर चले गये।

1346 हि./1927–28 ई.

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी ने त्यागपत्र दे दिया। ह़ज़रत कश्मीरी और दूसरे उलमा डाभेल गुजरात चले गये। दारुल उ़लूम में तालीमी

स्ट्राईक हुई और बडी कठिनाई से हालात सुधरे। ह़ज़रत कश्मीरी के स्थान पर ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी को सदर मुदर्रिस और शैखुल ह़दीस के पद पर दारुल उ़लूम लाया गया। आप उस समय सिलहट आसाम में शैखुल ह़दीस थे।

1347 हि./1928–29 ई.

3 जुमादलऊला 1347/17 अकतूबर 1928 को दारुल उ़लूम के मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद का यात्रा के बीच हैदराबाद में देहान्त हो गया। उन को हैदराबाद के क़ब्रिस्तान ख़ित्ता–ए–सालिहीन में दफ़न कर दिया गया। मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी को मोहतमिम बनाया गया।

1348 हि./1929–30 ई.

4 रजब 1348 हि./5 दिसमबर 1929 ई. को दारुल उ़लूम के मोहतमिम मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी की मृत्यु हो गई।

खुलासा

ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब और ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी साह़ब के इस दौर में दारुल उ़लूम ने बहुत उन्नति की। मदरसा अरबिया देवबन्द वास्तव में दारुल उ़लूम देवबन्द बन गया। शिक्षा, व्यवस्था विभाग, छात्रों की संख्या और भवनों में तरक़्क़ी हुई। इस दौर में देश–विदेश के लगभग 1700 विद्वान तैयार हुए। छात्रों की संख्या तीन सौ से बढ़कर लगभग नौ सौ हो गयी और अध्यापक तीस हो गये। दारुल उ़लूम का सालाना बजट छः हज़ार से बढ़कर लगभग पचास हज़ार हो गया। इस दौर में ह़ज़रत शैखुल हिन्द की सदारत और ह़ज़रत कश्मीरी का दौर गुज़रा और अंत में ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी का दौर शुरू हुआ।

इस दौर में दारुल उ़लूम में विभिन्न भवन बने। छात्रावास के अतिरिक्त गेट, दफ़्तर और मेहमाना खाना के भवन भी बने। दारे जदीद छात्रावास, दारुल ह़दीस के भवन इसी दौर में बने। दारुल उ़लूम की पुरानी मस्जिद, रेलवे स्टेशन की मस्जिद और कुतुबख़ाना भी इसी दौर में बना। इसी दौर में किचन, तबलीग़ आदि विभाग बने और माहनामा अल–क़ासिम जारी किया गया।

दारुल उ़लूम देवबन्द का तीसरा दौर

1348/1930 – 1401/1981 (52 वर्ष)

क्र.	मोहतमिम का नाम	आरम्भ व अन्त	समय
7	ह़ज़रत मौलाना कारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब (1315/1897–1403/1983)	1348/1930–1401/1981	52 वर्ष

दारुल उ़लूम का तीसरा दौर ह़ज़रत कारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब के एहतमाम का दौर है जो लगभग आधी शताब्दी का दौर है। इस दौर में तालीमी व्यवस्था और प्रबन्ध के कामों के साथ दारुल उ़लूम की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि हुई और दारुल उ़लूम विचार धारा की नींव पड़ी। तथा दारुल उ़लूम मुसलमानों का मज़हबी केन्द्र बन गया।

इस दौर की मुख्यय झलकियां निम्न प्रकार हैं –

1348 हि./1930 ई.

ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी की मृत्यु के बाद मजलिस–ए–शूरा ने ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब को मोहतमिम बना दिया।

1349 हि./1930–31 ई.

दारुल उ़लूम की मस्जिद का विस्तार हुआ। दारुल ह़दीस का भवन पूर्ण हुआ।

1350 हि./1931–32

छात्रों के अन्दर तफ़सीर (कुरआन की व्याख्या) की योग्यता पैदा करने के लिये तफ़सीर का विभाग शुरू किया गया। इसी प्रकार तजवीद

की तालीम और अभ्यास को अनिवार्य कर दिया गया और यह नियम बनाया गया कि जब तक छात्र कम से कम अन्तिम पारे (पारा नं. 30) का पूर्ण अभ्यास न कर ले उसको प्रमाण–पत्र न दिया जाये।

1352 हि./1933–34 ई.

ह़दीस पढाने के लिये दारुल ह़दीस फौक़ानी के नाम से एक हॉल की नींव रखी गई। दारुल उ़लूम में दाख़ले के लिये नियमों को आसान बनाया गया। रसोई में खाना तक़सीम करने के लिये टिकटों का प्रबन्ध किया गया।

1353 हि./1934–35 ई.

मक्का मुकर्रमा से दारुल उ़लूम के लिये ह़ज़रत शाह नियाज़ अह़मद (ख़लीफ़ा ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की) का छः हजार रूपयों का उपहार आया। मजलिस–ए–शूरा ने रिटायर होने वाले मुलाज़मीन के लिये पेंशन की सुविधा का बिल पास किया।

1354 हि./1935–36 ई.

ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी साह़ब – जो उस समय मदरसा तालिमुद्दीन डाभेल गुजरात में थे – के महान विद्वान होने के कारण सदर मोहतमिम बने और इस पद पर 1362 हिजरी तक रहे। मजलिस–ए–शूरा में मदरसे के संरक्षक की संवैधानिक हैसियत तय करने के मुद्दे पर मतभेद होने के कारण ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी ने संरक्षक पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

1355 हि./1936–37 ई.

तीन नये विभाग खोले गये। हिसाब को ठीक–ठाक रखने के लिये तन्ज़ीम व तरक़्क़ी का विभाग खोला गया। रिकॉर्ड को सुरक्षित रखने के लिये मुहाफ़िज़ खाना खोला गया और छात्रों के स्वास्थ्य के लिये वर्ज़िश का विभाग क़ायम किया गया। यह विभाग 1367 हिजरी तक रहा। जामिया अज़हर के विशेष अध्यापकों का मण्डल दारुल उ़लूम आया और जामिया अज़हर और दारुल उ़लूम के बीच आपसी सम्पर्क पर ज़ोर दिया।

1356 हि./1937–38 ई.

दारे जदीद के बाक़ी कमरों की पूर्णता के बाद दूसरे भवनों जैसे दर्जा फ़ारसी का कमरा, तथा मुहाफ़िज़ ख़ाने की दो मंज़िल की इमारत बनाई गई।

1358 हि./1939–40 ई.

हजरत मौलाना उ़बैदुल्लाह सिन्धी (जो 1333 में शैखुल हिन्द के हुक्म से रेशमी रूमाल क्रांति के संबंध में अफ़ग़ानिस्तान गये थे) हिन्दुस्तान से 25 साल बाहर रहने के बाद देवबन्द पधारे। सुल्तान बिन सऊ़द की हुकूमत हिजाज़ की ओर से उनकी तमाम प्रकाशित पुस्तकें दारुल उ़लूम को भेंट की गईं। इसी साल ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब का अफ़ग़ानिस्तान का दौरा हुआ। अफ़ग़ानिस्तान के सदर की ओर से 50 हज़ार रूपयों की बडी रक़म दारुल उ़लूम को दी गयी। इसी साल दारुल ह़दीस की ऊपरी मंज़िल पर दारुल तफ़सीर के नाम से एक दर्सगाह (कक्षा) बनायी गई और उसके ऊपर एक गुम्बद बनाया गया जो आजकल दारुल उ़लूम की पहचान बना हुआ है।

1359 हि./1940–41 ई.

अफ़ग़ानिस्तान के उपहार से दारुल उ़लूम के पश्चिम में एक बड़ा दरवाज़ा बनाया गया इसका नाम बादशाह अफ़ग़ानिस्तान के नाम पर बाब–उल–ज़ाहिर रखा गया ताकि दारुल उलूम और अफ़ग़ानिस्तान के आपसी रिश्तों को दर्शाए। इस महान गेट से दारुल उ़लूम की शान बढ़ गई। इसी साल ह़ज़रत मोहतमिम साह़ब का अलीगढ़ विश्व विद्यालय का विशेष दौरा हुआ।

1360 हि./1941–42 ई.

विश्व युद्ध के कारण विश्व की आर्थिक दशा ख़राब होने के बावजूद छात्रावास के भवन को पूरा किया गया। 1328 हिजरी में मासिक अल–क़ासिम जारी हुआ और 11 साल जारी रहने के बाद लगभग 20 साल तक बन्द रहा। इस साल इस को मासिक 'दारुल उ़लूम' पत्र के नाम से दोबारा जारी किया गया।

1361 हि./1942 ई.

अंग्रेज़ सरकार के ख़िलाफ़ भाषण देने पर ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी की गिरफ़्तारी हुई। मुरादाबाद में मुक़दमा चला और अठारह महीने की सज़ा हुई। ह़ज़रत मदनी की गिरफ़्तारी और देश के राजनीतिक हालात के कारण वार्षिक परीक्षा बन्द कर दी गई और दारुल उ़लूम में छुट्टी कर दी गई। इस साल चीनी इस्लामी क़ौमी सालवेशन के सदस्य उस्मान ने दारुल उ़लूम का भ्रमण किया और अच्छा प्रभाव प्रकट किया।

1362 हि./1943 ई.

1942 ई. में मुल्क के अन्दर का राजनीतिक हालात का प्रभाव दारुल उ़लूम पर पड़ा और छात्रों की संख्या में कमी आ गयी। सदर मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी और कुछ अध्यापकों ने राजनीतिक विवाद के कारण त्यागपत्र दे दिया।

1363 हि./1944 ई.

ह़ज़रत मदनी की सज़ा बिला शर्त समाप्त कर दी गई।

1364 हि./1944–45

ख़ुशख़ती (केलीग्राफ़ी) का विभाग खोला गया।

1365 हि./1945–46 ई.

टैक्निकल डिपार्टमेण्ट (तकनीकी विभाग) खोला गया।

1366 हि./1946–47 ई.

दारुल उ़लूम देवबन्द से बिहार और गढ़मुक्तेश्वर (यूपी) के फ़साद से प्रभावित मुसलमानों की सहायता के लिये प्रतिनिधि मण्डल भेजे गये। दारुल उ़लूम में मुलाज़मीन के वेलफ़ेयर फ़ण्ड का सिलसिला शुरू हुआ। इसी साल 15 अगस्त 1947 ई./27 रमज़ान को जुमा के दिन मुल्क को आज़ादी मिली।

1367 हि./1947–48 ई.

दारुल उ़लूम की मस्जिद के पूर्व की ओर की इमारत के ऊपरी

मंज़िल पर दारुल इफ़्ता की ऊपरी मंजिल बनाई गयी जिसका इफ़्तताह (उद्घाटन) 19 रबीउल अव्वल को हुआ।

1368 हि./1948–49 ई.

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय कोर्ट के लिये ह़ज़रत मोहतमिम और दूसरे देवबन्द के उलमा का चुनाव हुआ। इसी साल हुकूमत की ओर से दारुल उ़लूम में तलाशी का दुखद मामला पेश आया जिससे मुसलमानों में सरकार की ओर से अविश्वास पैदा हुआ।

1369 हि./1949–50 ई.

देश के विभाजन के कारण पाकिस्तानी छात्रों के दाख़िले में आने वाली रूकावटों को दूर किया गया। पाकिस्तानी छात्रों को एक साल का परमिट मिलने लगा मगर यह सिलसिला अधिक दिनों तक नहीं चल सका। भारत सरकार की ओर से विदेश विभाग और रेडियो द्वारा दारुल उ़लूम का प्रचार किया गया। अफ़ग़ानिस्तान के राजदूत सरदार नजीबुल्लाह ख़ान दारुल उ़लूम में पधारे।

1370 हि./1950–51 ई.

ह़ज़रत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद शिक्षा मंत्री भारत सरकार दारुल उ़लूम में पधारे। दारुल उ़लूम में उनका स्वागत किया गया।

1371 हि./1951–52 ई.

भूमिदान तहरीक आन्दोलन के संस्थापक आचार्य विनोबा भावे देवबन्द आये] दारुल उ़लूम में पधारे और अपने प्रभाव प्रकट किये। महायुद्ध और फिर देश के विभाजन के कारण दारुल उ़लूम की आमदनी और छात्रों की संख्या पर असर पड़ा। इसी साल देवबन्द के आस पास के किसानों ने अनाज इकट्ठा करके देना आरम्भ किया जो आज तक जारी है।

1372 हि./1952–53 ई.

तिब (हिकमत) के विभाग को बढ़ावा दिया गया। अस्पताल बनाया गया जिस में इलाज के अलावा छः मुलाज़िम रखे गये। दार–ए–जदीद के बढ़े छात्रावास और पार्कों में पानी देने के लिये ट्यूबवेल लगाया गया।

1373 हि./1953–54 ई.

अ़रब के सम्राट शाह सऊ़द ने अपने हिन्दुस्तान के दौरे पर दारुल उ़लूम को 25000 रूपयों का उपहार दिया। इसी साल मोतमर इस्लामी के जनरल सेक्रेटरी अनवर सादात दारुल उ़लूम पधारे जो बाद में मिस्र के राष्ट्रपति भी बने।

1375 हि./1955–56 ई.

मोतमर इस्लामी और जामे अज़हर से दारुल उ़लूम के शैक्षिक संबंध बढ़े और अ़रबी साहित्य के दो अध्यापक (शेख़ अब्दुल मुनीम अल–नमिर और शेख़ अब्दुलआल अल–उक़बावी) दारुल उ़लूम आये। दारुल उ़लूम की मस्जिद में विस्तार किया गया। इसी साल फ़तावा दारुल उ़लूम की तरतीब का काम आरम्भ हुआ।

1376 हि./1956–57 ई.

14 ज़ुलहिज 1376/10 जूलाई 1957 को भारत के राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद दारुल उ़लूम में पधारे और अच्छे विचार प्रकट किये। ह़ज़रत मोहतमिम साह़ब बर्मा की यात्रा पर गये। दारुल उ़लूम का प्रभाव बहुत अधिक बढ़ा।

1377 हि./1957–58 ई.

12 ज़ुमादलउला 1377/5 दिसमबर 1857 को ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी की मृत्यु हुई। इसी साल 5 शाबान 1377/25 फरवरी 1958 ई. को अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह ज़ाहिर शाह दारुल उ़लूम में पधारे जिनका बड़ी शान से स्वागत किया गया।

1378 हि./1958–59 ई.

फ़ुज़ला दारुल उ़लूम (पुरातन छात्र) संगठित करने के लिये एक बड़ा जलसा दस्तार बन्दी किया गया, 'तनज़ीम फ़ुज़ला दारुल उ़लूम' क़ायम हुई।

1379 हि./1959–60 ई.

ह़ज़रत क़ारी साह़ब ने री–यूनियन, पूर्वी अफ़्रीक़ा और मिस्र की यात्रा की। इस यात्रा से दारुल उ़लूम को आर्थिक और सामाजिक लाभ

हुआ। मिस्र के राष्ट्रपति जमाल अब्दुल नासिर के भारत आने के समय दारुल उ़लूम में छुट्टी होने के कारण उन को दारुल उ़लूम नहीं बुलाया गया लेकिन दिल्ली में उन को उपहार भेंट किया गया।

1380 हि./1960–61 ई.

जामिया तिब्बिया की स्थापना की गई। इस का चार वर्षीय कोर्स सरकार से मान्यता प्राप्त था। (अब यह दारुल उ़लूम से अलग ऐक संस्था है)। लन्दन विश्वविद्यालय में इस्लामी शिक्षा विभाग के लैक्चरर (प्रवक्ता) डा. पी हार्डी ने दारुल उ़लूम का दौरा किया।

1381 हि./1961–62

केन्द्र सरकार के मन्त्री प्रोफे़सर हुमायुं कबीर ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। मिस्र सरकार ने दारुल उ़लूम को कुरआन मजीद की कि़रात (पढ़ने के तरीके़) की कैसेटैं भेंट कीं।

1382 हि./1962–63 ई.

दारुल उ़लूम ने सौ साल की यात्रा पूरी की। सौ साल में यह मदरसा अंतर्राष्ट्रीय स्तर का दारुल उ़लूम बन गया। 1283 में छात्रों की संख्या 78 और अध्यापक 16 और सालाना आमदनी 649 रूपये थी जबकि इस साल छात्रों की संख्या 1485, अध्यापक 49 और सालाना आमदनी लगभग 7 लाख रूपये थी। कुल मुलाज़िमों (कर्मचारियों) की संख्या 200 हो गई। पुस्तकालय में एक लाख से अधिक पुस्तकें हो गईं। जामिया हल्ब शाम (सीरिया) के प्रसिद्ध आलिम शेख़ अब्दुल फ़त्ताह अबू गु़द्दह दारुल उ़लूम में पधारे।

1383 हि./1963–64 ई.

ह़ज़रत मोहतमिम साह़ब ने दक्षिणी अफ्री़क़ा का दौरा किया। आलमी मोतमर इस्लामी क़ाहिरा की कांफ्रेंस में ह़ज़रत मोहतमिम साह़ब ने शिरकत की जिस में हिन्द व पाक के तमाम उलमा ऐसे थे जो दारुल उ़लूम में पढ़े थे। वापसी में हज के बाद मदीना विश्वविद्यालय में आप ने भाषण दिया।

1384 हि./1964–65 ई.

अ़रब मुल्कों में दारुल उ़लूम का प्रचार करने के लिये तीन माही

पत्रिका 'दावतुल हक़' जारी की गयी जो बाद में "अद्दाई" के नाम से प्रति माह निकलने लगी। दारुल उ़लूम को अनाज के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश सरकार की मदद हुई। 23 मार्च 1965 ई. को उत्तर प्रदेश के गवर्नर विश्वनाथ दास ने दारुल उ़लूम का दौरा किया।

1385 / 1965-66 ई.

केन्द्र सरकार की पुस्तक 'हिन्दुस्तानी मुसलमानों के तालीमी इदारे' में दारुल उ़लूम का बड़े अच्छे शब्दों मे वर्णन किया गया।

1386 हि. / 1966-67 ई.

पुस्तकालय के भवन को बड़ा किया गया। अ़रबी किताबों के अलग कमरे के साथ-साथ दारुल उ़लूम देवबन्द के विद्वानों की पुस्तकों का अलग कमरा बनाया गया।

1387 हि. / 1967-68 ई.

बैतुल मुक़द्दस पर इसराईल के दुखपूर्ण नियंतरण के अवसर पर मुल्क में अपील की गई और एक भारी रक़म इकट्ठी करके फ़िलिस्तीन, मिस्र, सीरिया (शाम) और जॉर्डन के दुखी अ़रबों को भेजी गई। इसी प्रकार मस्जिद अक़सा को जला देने पर इसराईल का खंडन करके जॉर्डन को प्रस्ताव भेजे गए और जॉर्डन सरकार ने इस के लिये धन्यवाद दिया। इसी साल अल्लामा इब्राहीम बलियावी की मृत्यु हुई।

1388 हि. / 1968-69 ई.

दारुल उ़लूम के अनेकों विद्वान जैसे हजरत मौलाना सय्यद मुबारक अली, नायब मोहतमिम मौलाना हमीदुद्दीन फ़ैज़ाबादी, क़ारी हिफ़्ज़ुर्रहमान साह़ब आदि का इन्तक़ाल हुआ।

1389 हि. / 1969-70 ई.

दारुल उ़लूम में छात्रों की अब तक सबसे बडी हड़ताल तथा छात्रों के इख़राज का मामला पेश आया। पश्चिमि दीशों के अनेकों शोधकर्ताओं ने दारुल उ़लूम के पुस्तकालय से लाभ उठाया। कैलीफ़ोर्निया अमरीका से श्रीमती बारबरा मिटकाफ़ भी इस सम्बन्ध में देवबन्द आयीं और उन्हों ने दारुल उ़लूम के इतिहास पर सामग्री इकट्ठा की। इनकी अंग्रेज़ी किताब का नाम है – 'देवबन्द इस्लामिक रिर्वावल इन ब्रिटिश इंडिया'।

इसी साल अ़रब के विभिन्न देशों जैसे मराक़श, अल–जज़ाइर, जॉर्डन आदि के अ़रब मेहमान भी पधारे और बड़े प्रभावित हुए। मस्जिद छत्ता को बड़ा किया गया।

1390 हि./1970–71 ई.

दारुल उ़लूम के पाठ्यक्रम में तब्दीली की गई और पाठ्यक्रम में दर्जाबन्दी का सिलसिला शुरू किया गया।

1391 हि./1971–72 ई.

जामिया तिब्बिया की अपूर्ण इमारतों की पूर्णता की गई। अफ़्रीक़ी नई मंज़िल का निर्माण हुआ। ह़ज़रत मोहतमिम साह़ब का इंग्लैण्ड, फ़्रांस और पश्चिमी जर्मनी का दौरा हुआ।

1392 हि./1972–73 ई.

मुसलमानों की दीनी सुरक्षा के लिये ह़ज़रत मोहतमिम साह़ब और ह़ज़रत मौलाना मिन्नतुल्लाह रहमानी के प्रयत्न से 'मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड' की स्थापना हुई। सदर मुदर्रिस मौलाना फ़ख़रूद्दीन की मृत्यु हुई। मिस्र का सांस्कृतिक वफ़्द और टोकियो विश्वविद्यालय के उस्ताद दारुल उ़लूम आए।

1393 हि./1973–74 ई.

राबता आलम–ए–इस्लामी मक्का मुकर्रमा के प्रतिनिधि दारुल उ़लूम आए। वज़ारत मआ़रिफ़ सऊ़दी अ़रब के डायरेक्टर और मबाहिस इल्मिया के सदस्यों ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल अकबर अली खां का दारुल उ़लूम आए।

1395 हि./1974–75 ई.

ह़ज़रत मोहतमिम साह़ब की रियूनियन (अफ़्रीक़ा में फ़्रांस के द्वीप) की यात्रा और राबता–ए–आलम इस्लामी के जलसे में शिरकत हुई। फ़्रांस और इंग्लैण्ड का दौरा हुआ। शैख़ुल अज़हर डाक्टर अ़ब्दुल ह़लीम महमूद, वकीलुल अज़हर शेख़ अब्दुर्रहमान बेतार, मुफ़्ती–ए–आज़म मिस्र शेख़ मुह़म्मद ख़ातिर और शेख़ मुह़म्मद अल–फ़ख़ाम ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। इसी साल कुवैत के मंत्री यूसुफ़ सय्यद हाशिम रिफ़ाई सम्पादक मासिक 'अल–बलाग़' कुवैत, उस्ताद अब्दुर्रहमान और क़तर के

शेख़ अब्दुल मुईज़ अब्दुल सत्तार के साथ ताशक़न्द के सदस्य शरफुद्दीन महदूफ़ आदि का भी दौरा हुआ। 7 शव्वाल को हज़रत मौलाना मुहम्मद मियां का इन्तक़ाल हुआ। मलेशिया के हाई कमिश्नर हाजी अब्दुल हामिद का दारुल उ़लूम का दौरा।

1396 हि./1975–76 ई.

भारत गणतन्त्र के राष्ट्रपति जनाब फ़ख़रूद्दीन अली अहमद का दारुल उ़लूम पधारे। फ़तही अब्दुल हमीद तनज़ीम फ़िलिस्तीन (जापान) ने दारुल उ़लूम का दौरा किया।

1398 हि./1977–78 ई.

मदीना विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि मण्डल दारुल उ़लूम आया। सऊ़दी अ़रब, सूडान, संयुक्त अ़रब अमारात आदि के विद्वान और छात्रों का मंडल दारुल उ़लूम आया। मदीना विश्वविद्यालय के वाईस चांसलर शेख़ अब्दुल मुहसिन बिन इबाद और कुल्लीयतुददावत के प्रिंसपल शेख़ सालेह बिन अब्दुल्लाह का दौरा हुआ।

1399 हि./1978–79 ई.

दारुल उ़लूम में सदसाला (शतवर्षीय) जलसा करने का निर्णय लिया गया और उसकी तैयारी आरम्भ हो गयी।

1400 हि./1979–80 ई.

21, 22, 23 मार्च 1980 (जुमादलऊला 1400 हिजरी) को दारुल उ़लूम का विषाल शतवर्षीय जलसा हुआ जिस में 15 से 20 लाख मुसलमान शरीक हुए। भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश के अलावा ऐशिया, अफ़्रीक़ा, अमेरिका, यूरोप के आठ हज़ार से अधिक प्रतिनिधि मण्डल, सरकारी सदस्य और मेहमान शरीक हुए। भारत के मुसलमानों के इतिहास का यह महान इजलास था जिसकी गूंज पूरी दुनिया में अनुभव की गई।

खुलासा

इस दौर में दारुल उ़लूम ने बडी तरक़्क़ी की और वास्तव में यह एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था बन गया। हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी की सदर मुदर्रसी का अधिकतर समय इसी दौर में गुज़रा। आपके दौर

में फ़ारिग़ होने वाले छात्रों की संख्या 4483 है। 1348 हिजरी में जब हज़रत क़ारी साह़ब ने दारुल उ़लूम की बागडोर संभाली तो उस समय आठ विभाग थे। 1400 हिजरी में उनकी संख्या बढकर 23 हो गई। दारुल उ़लूम का बजट पचास हज़ार से बढ़कर 26 लाख तक पहुंच गया। दारुल उ़लूम के कर्मचारियों की संख्या भी 45 से बढ़कर 200 से अधिक हो गई और अध्यापकों की संख्या अठारह से बढकर साठ हो गई। छात्रों की संख्या भी 840 से बढकर दो हज़ार से अधिक हो गई थी। दारुल उ़लूम के भौतिक संसाधनों में भी काफ़ी उन्नति हुई। भवनों में काफ़ी तरक़्क़ी हुई। दारुल तफ़सीर, दारुल इफ़ता, दारुल क़ुरान, दारुल ह़दीस, बाब–ए–ज़ाहिर, जामिया तिब्बिया, मेहमान ख़ाना, छात्रावास, अफ़्रीक़ी मंज़िल इसी दौर में बनीं। दूसरी ओर ह़ज़रत कारी साह़ब ने देश विदेश के इतने अधिक दौरे कि उन से दारुल उ़लूम का बडा नाम रोशन हुआ।

दारुल उ़लूम देवबन्द का वर्तमान दौर

1401/1981–1432/2012 (जारी)

क्र.	मोहतमिम का नाम	आरंभ व अन्त	समय
8	ह़ज़रत मौलाना मरगू़बुर्रहमान बिजनोरी (1334/1914–1432/2010)	1402/1982–1432/2010	32 वर्ष
9	ह़ज़रत मौलाना गुलाम मुह़म्मद साह़ब वुस्तानवी (1950)	1432/2010–1432/2010	7 माह
10	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम साह़ब नोमानी (1947)	1432/2011– जारी	जारी

दारुल उ़लूम का वर्तमान दौर सदसाला (शतवर्षीय) इजलास के बाद आरम्भ होता है। शतवर्षीय इजलास के बाद दारुल उ़लूम में कुछ अव्यवस्था रही और आपस में एक दूसरे के विरोध का वातावरण बना, लेकिन अल्लाह की कृपा से दारुल उ़लूम जल्द ही इस उथल–पुथल से बाहर निकल आया। इस वर्तमान दौर में दारुल उ़लूम ने शैक्षिक, प्रबन्धन और भवन निर्माण में बहुत तरक़्क़ी की तथा इसका क्षेत्रफल पहले से दो गुना हो गया। विदेशों में भी बडी शोहरत हुई।

अगली लाइनों में दारुल उ़लूम की इसी तरक़्क़ी का वर्णन पेश है–

1401 हि./1980–81 ई.

मजलिस–ए–शूरा के सदस्य ह़ज़रत मौलाना मरगू़बुर्रहमान साह़ब बिजनौरी को मजलिस–ए–शूरा (प्रबन्धन समिति) ने मददगार मोहतमिम और ह़ज़रत शैखुल हिन्द के नवासे ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद उस्मान साह़ब को नायब (उप) मोहतमिम बना दिया। इसी साल सदर मुदर्रिस

हज़रत मौलाना फ़ख़रूल हसन साहब मुरादाबादी और मजलिस–ए–शूरा के सदस्य हज़रत मौलाना मुस्तुफ़ा हसन अलवी लखनऊ की मृत्यु हुई। हज़रत मौलाना मैराजुल हक़ साहब देवबन्दी को सदर मुदर्रिस नियुक्त किया गया। एहतमाम और मजलिस–ए–शूरा के बीच विरोध उत्पन्न हुआ और एहतमाम की ओर से मजलिस–ए–शूरा के फैसलों को रद्द कर दिया गया, छात्रों की छुट्टी कर दी गई। मजलिस–ए–शूरा की ओर से छात्रों को दारुल उ़लूम के समीप कैम्प में रखकर तालीम शुरू की गई।

1402 हि./1981–82 ई.

दारुल उ़लूम में अव्यवस्था के कारण मजलिस–ए–शूरा का इजलास रबीउल अव्वल में मुस्लिम मुसाफ़िर ख़ाना लखनऊ में हुआ। मजलिस–ए–शूरा ने हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब को इनकी नियम विरूद्ध कार्यवाही के कारण मोहतमिम के पद से निलंबित कर दिया और हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साहब बिजनौरी को मोहतमिम का चार्ज दिया गया। 29 जमादिल अव्वल (25 मार्च 1982 ई.) को दारुल उ़लूम दोबारा खुल गया और मजलिस–ए–शूरा ने दारुल उ़लूम का पूरा प्रबन्धन अपने हाथ में ले लिया।

1403 हि./1982–83 ई.

रुवाक़े ख़ालिद (छात्रावास) का निर्माण पूरा हुआ। मजलिस–ए–शूरा ने 24 शव्वाल को हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब का त्यागपत्र स्वीकार किया और हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साहब बिजनौरी को स्थायी मोहतमिम बना दिया गया। अनेक अध्यापक नियुक्त किये गए। शैखुल हिन्द अकेडमी की स्थापना की गई और मौलाना सईद अहमद अकबराबादी डायरेक्टर नियुक्त हुए। सहायक अध्यापकों का दर्जा क़ायम किया गया। फुज़ला बंग्लादेश को बंग्लादेश में इजलास दस्तारबन्दी की इजाज़त दी गई। दारुल उ़लूम में ग़ल्ला स्कीम का जलसा हुआ। 6 शव्वाल (17 जुलाई 1983) को हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब का इन्तक़ाल हुआ।

1404 हि./1983–84 ई.

इस साल छात्रों की संख्या 2350 थी। दारुल उ़लूम का सालाना बजट बावन लाख रूपये था। अध्यापकों और कर्मचारियों के लिये क्वार्टर

की योजना पास हुई। दारुल उ़लूम के हालात को स्पष्ट करने और चन्दा इकट्ठा करने के लिये पाकिस्तान, मलेशिया, अ़रब में अध्यापकों के वफद (प्रतिनिधि मण्डल) भेजे गये। मजलिस–ए–शूरा के सदस्य मौलाना अतीकुर्रहमान का निधन हुआ।

1405 हि./1984–85 ई.

ह़ज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी को सहायक मोहतमिम बनाया गया। दारुल मुदर्रिसीन के निर्माण की मंजूरी हुई। ह़ज़रत मौलाना हामिदुल अंसारी ग़ाज़ी मजलिस–ए–शूरा से अलग हुए। ह़ज़रत मौलाना क़ारी सिद्दीक़ साह़ब बान्दवी ने विभिन्न कारणों से मजलिस–ए–शूरा से त्याग पत्र दे दिया। मुफ़्ती महमूद हसन गंगोही को देवबन्द बुलाया गया। नायब मोहतमिम मौलाना मुह़म्मद उस्मान साह़ब देवबन्दी का निधन हो गया। ह़ज़रत मौलाना असअ़द मदनी मजलिस–ए–शूरा के सदस्य चुने गये। दारुल तरबियत और दारुल उ़लूम की शान के अनुरूप विषाल मस्जिद का निर्माण आरम्भ हुआ। पाक्षिक (पन्द्रह रोज़ा) पयामे दारुल उ़लूम शुरू किया गया। भारत में मिस्र के राजदूत डा. अम्र मूसा दारुल उ़लूम में पधारे।

1406 हि./1985–86 ई.

ह़ज़रत मौलाना अबू सऊद साह़ब मजलिस–ए–शूरा से अलग हुए। पाक्षिक 'पयाम दारुल उ़लूम' को आईना दारुल उ़लूम के नाम से रजिस्टर्ड कराया गया। ह़ज़रत मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी मजलिस–ए–शूरा के सदस्य 03 रमज़ान को इन्तक़ाल फरमा गये। जामिया अज़हर से अ़रबी पढाने के लिये शैख़ अब्दुल्लाह जुमा रिज़वान दारुल उ़लूम में पधारे। भारत में सऊदी अ़रब के राजदूत शेख़ फुवाद सादिक़ दारुल उ़लूम में पधारे। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री और मंत्रीगण दारुल उ़लूम में पधारे। इसी साल तीन सौ से अधिक पाकिस्तानी विद्वान शेखुल हिन्द सेमिनार दिल्ली में प्रतिभाग करने तथा इस के बाद दारुल उ़लूम देवबन्द देखने आये। अ़रब इस्लामी ऐसोसियेशन के सदस्य डा. फतह़ी उस्मान दारुल उ़लूम आये। विभिन्न कठिनाईयों के कारण जामिया तिब्बिया को समाप्त कर दिया गया। तालीमी प्रबन्ध चुस्त बनाने के लिये मदरसा सानविया अलग बना दिया गया। इसी साल मस्जिद

रशीद की नींव रखी गई। बम्ब्रई (मुमबई) में तनज़ीम व तरक़्क़ी का दफ़्तर खुला।

1407 हि./1986–87 ई.

92 लाख रूपयों का बजट पास हुआ। क़ादियानियों के बढ़ते क़दमों को देखकर दारुल उ़लूम में एक बड़ा इजलास बुलाया गया। दारुल उ़लूम में तहफ़्फ़ुज़–ए–ख़तम–ए–नबुव्वत की स्थापना हुई। छात्रावास आज़मी मंज़िल का निर्माण शुरू हुआ।

1408 हि./1987–88 ई.

एक करोड 34 लाख का बजट पास हुआ। मजलिस–ए–शूरा के सदस्य ह़ज़रत हाजी अलाउद्दीन मुम्बई का इन्तक़ाल हुआ। इसी साल इमाम हरम मक्की शेख़ मुह़म्मद बिन अब्दुल्लाह अल–सुबैयिल ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। इनका बडा सम्मान किया गया। इस्लामिक बैंक जद्दा के महाप्रबन्धक शेख़ फ़ैसल अब्दुल अज़ीज़ अल–ज़रबली दारुल उ़लूम में पधारे।

1409 हि./1988–89 ई.

छात्रों की संख्या 2575, अध्यापक व कर्मचारी 300। ह़ज़रत मौलाना गुलाम रसूल ख़ामोश मजलिस–ए–शूरा के सदस्य बने। क़ादियानियों की रोकथाम के लिये दारुल उ़लूम में तहफ़्फ़ुज़ ख़तमे नबुव्वत का दस दिन का इजलास हुआ। ग़ल्ला स्कीम का जलसा हुआ। दारुल उ़लूम के छात्रों ने मलेशिया के अन्तर्राष्ट्रीय कैम्प में भाग लिया।

1410 हि./1989–90 ई.

विभिन्न फ़िरक़ों और हिन्दुइज़्म और ईसाइयत के अध्ययन के लिये अलग एक विभाग खोले जाने का प्रस्ताव पास हुआ। ह़ज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी दारुल उ़लूम देवबन्द से अलग हो गये। मजलिस–ए–शूरा के सदस्य ह़ज़रत मौलाना हकीम अब्दुल जलील देहलवी का इन्तक़ाल हुआ। दारुल उ़लूम के आठ सालों का सर्वेक्षण लिया गया और पुरातन छात्रों का जलसा हुआ। शेख़ मुह़म्मद महरूस आज़मी इराक़ी का दारुल उ़लूम का दौरा हुआ।

1411 हि./1990–91 ई.

हदीस के तख़स्सुस के विभाग के लिये प्रस्ताव पास किया गया। मजलिस–ए–शूरा के सदस्य मौलाना मुहम्मद सईद जामिया इस्लामिया डाभेल, हज़रत मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आबिदीन मेरठी और मौलाना मिन्नतुल्लाह रहमानी का इन्तक़ाल हुआ। हज़रत मौलाना इस्माईल मोटा साहब गुजराती और हज़रत मौलाना नाज़िर हुसैन साहब हापुड़ मजलिस–ए–शूरा के सदस्य चुने गये।

1412 हि./1991–92 ई.

सदर मुदर्रिस हज़रत मौलाना मेराजुल हक़ का इन्तक़ाल हुआ। मजलिस–ए–शूरा के सदस्य हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान आज़मी, हज़रत नवाब उबैदुर्रहमान ख़ान शेरवानी, हज़रत मौलाना अब्दलु क़ादिर रायपुरी का इन्तक़ाल हुआ।

1413 हि./1992–93 ई.

मजलिस–ए–शूरा के सदस्य हज़रत मौलाना अब्दुल क़ादिर मालेगांव और हज़रत मौलाना हामिदुल अंसारी ग़ाज़ी का इन्तक़ाल हुआ। हज़रत मौलाना अबुल क़ासिम नोमानी, हज़रत मौलाना अज़हर रांचवी, हज़रत मौलाना इस्माईल कटकी और हज़रत मौलाना बदरूद्दीन अजमल मजलिस–ए–शूरा के सदस्य चुने गये। हज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साहब मोहतमिम दारुल उ़लूम ने दक्षिण अफ़्रीक़ा का दौरा किया।

1414 हि./1993–94 ई.

सालाना बजट ढाई करोड़ रूपये हुआ। इसलाम के नाम पर विभिन्न फ़िरक़ों के लिये छात्रों के लिये मुहाज़रात (लेकचर) की शुरूआत हुई। आसामी मंज़िल के निर्माण का प्रस्ताव पास हुआ जिसे बाद में शैखुलइसलाम मंज़िल का नाम दिया गया। मेहमान ख़ाने का नया निर्माण और ग़ल्ला स्कीम का जलसा हुआ।

1415 हि./1994–95 ई.

हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां कैरानवी का इन्तक़ाल हुआ। इस्लामी

मदरसों के अन्दरूनी समस्याओं और बाहरी ख़तरों को देखते हुए मदरसों के सदस्यों का जलसा हुआ और दारुल उ़लूम में 'ऑल इण्डिया राबता मदारिस' कार्यालय स्थापित किया गया। इस विभाग में मुल्क के सैकड़ों अ़रबी मदरसे शामिल हुए। राबता मदारिस अ़रबिया का नया पाठ्यक्रम लागू किया गया।

1416 हि./1995–96 ई.

सालाना बजट तीन करोड़ अठारह लाख पास हुआ। शेखुल हिन्द एकेडमी में पत्रकारिता की शिक्षा का आरम्भ हुआ। ह़ज़रत मुफ़्ती महमूद हसन साह़ब गंगोही का दक्षिण अफरीका में निधन हुआ।

1417 हि./1996–97 ई.

छात्रों की टेक्निकल शिक्षा के लिये दारुल उ़लूम में कम्प्यूटर का विभाग खोला गया। मजलिस–ए–शूरा के वरिष्ठ सदस्य ह़ज़रत मौलाना मंजूर नोमानी का इन्तक़ाल हुआ।

1418 हि./1997–98 ई.

मस्जिद अक़्सा के पूर्व इमाम और धार्मिक विद्वान डा. महमूद अल–सियाम दारुल उ़लूम में पधारे। मस्जिद रशीद में उनका स्वागत हुआ। इलाहाबाद हाईकोर्ट की जज श्रीमती शीला दीक्षित और वकीलों का प्रतिनिधि मंडल दारुल उ़लूम में पधारा। डा. मोहतशिम की अध्यक्षता में इंग्लैण्ड का प्रतिनिधि मंण्डल दारुल उ़लूम आया। ख़रीद फ़रोख़्त (क्रय–विक्रय) और स्टॉक रूम का विभाग दारुल उ़लूम में खोला गया।

1419 हि./1998–99 ई.

ऑल इण्डिया राबेता मदारिस अरबिया का इजलास हुआ।

1420 हि./1999–2000 ई.

मजलिस–ए–शूरा के सदस्य ह़ज़रत मौलाना अब्दुल हलीम जौनपुरी का इन्तक़ाल हुआ। देश में ईसाई मिशनरियों के बढ़ते क़दमों को देखकर दारुल उ़लूम में ईसाइयत खण्डन कमेटी की स्थापना हुई। कम्प्यूटर विभाग में इण्टरनेट और वेबसाईट का आरम्भ हुआ। 'दारुल उ़लूम' और 'अल–दायी' मासिक पत्रिकाओं की कम्पोज़िंग के लिये कम्प्यूटर का प्रबंध हुआ। इसी साल ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती निज़ामुद्दीन

आज़मी का निधन हुआ।

1421 हि./2000–01 ई.

मजलिस–ए–शूरा के सदस्य ह़ज़रत मौलाना अबुल हसन अली मियां और ह़ज़रत हकीम मुह़म्मद ज़मां हुसैनी का निधन हुआ। इस साल 'तख़स्सुस फ़िल ह़दीस' का विभाग खुला। तहफ़ीजु़ल कुरआन भवन (ह़कीमुलउम्मत मंज़िल) का निर्माण हुआ।

1422 हि./2001–02 ई.

अमेरिका में 9–11 हमलों के बाद तालिबान के देवबन्दी विचारों के कारण दारुल उ़लूम का नाम वैश्विक मीडिया में आने लगा। इसी आधार पर बहुत से विदेशी विशेष रूप से मीडिया से जुड़े लोग दारुल उ़लूम आने लगे।

1423 हि./2002–03 ई.

दारुल उ़लूम का वैश्विक परिचय कराने और दावत के लिये अंग्रेज़ी विभाग खुला जिस में दारुल उलूम के स्नातकों को इंगलिश सिखाई जाती है। भारत में फ्रांस के राजदूत दारुल उ़लूम पधारे।

1424 हि./2003–04 ई.

दारुल उ़लूम और राबता के अधीन देश में मकतबों की स्थापना का फैसला हुआ। मौलाना गुलाम रसूल ख़ामोश को कारगुज़ार मोहतमिम बनाया गया।

1425 हि./2004–05 ई.

दार–ए–जदीद की पुरानी इमारत के स्थान पर नया छात्रावास बनाने का प्रस्ताव पास किया गया। दारुल उ़लूम में एक विशाल पुस्तकालय शैखुल हिन्द के नाम पर बनाये जाने की नींव रखी गई। आधुनिकतम तकनीकों का प्रयोग करते हुए दारुल उ़लूम के संदेश दूर–दूर तक पहुंचाने के लिये बाकायदा इण्टरनेट विभाग की स्थापना हुई।

1426 हि./2005–06 ई.

मजलिस–ए–शूरा के सदस्य ह़ज़रत मौलाना इस्माईल कटकी का निधन हुआ। हिन्दी विभाग खोलने का प्रस्ताव पास हुआ। जमीयत

उलमा–ए–इस्लाम पाकिस्तान के मौलाना फ़ज़लुर्रहमान और सदस्यों ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। अमेरिका के चीफ़ ऑफ़ मिशन राबर्ट ब्लैक दारुल उ़लूम में पधारे। दारुल उ़लूम के फ़तवों के संकलन के लिये 'तरतीब फ़तावा' विभाग खोला गया।

1427 हि./2006–07 ई.

मजलिस–ए–शूरा के सदस्य ह़ज़रत मौलाना असअ़द मदनी तथा ह़ज़रत मौलाना इस्माईल मोटा गुजराती का निधन हुआ। गै़र मुक़ल्लिदीन के बढते क़दम को रोकने के लिये तहफ़्फ़ुज़ सुन्नत के विभाग की स्थापना हुई। ह़ज़रत मोहतमिम साह़ब ने राब्ता आलम इस्लामी में शरीक होने के लिये सऊदी अ़रब का दौरा किया। मौलाना फ़ज़लुर्रहमान साह़ब की अध्यक्षता में 'मुत्तहिदा मजलिस अमल' के संसद सदस्यों ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। इण्डोनेशिया के सात सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने दारुल उ़लूम का दौरा किया।

1428 हि./2007–08 ई.

दारुल उ़लूम के फ़तवों को ऑन लाईन प्रकाशित करने के लिये इण्टरनेट विभाग में उर्दू–अंग्रेज़ी वेबसाईट प्रारम्भ की गई। ग़ल्ला स्कीम का जलसा हुआ। राबता मदारिस इस्लालिया का इजलास हुआ और केन्द्र सरकार के मदरसा बोर्ड योजना का विरोध किया गया जिस के बाद सरकार ने इस योजना को रोक दिया। दिल्ली में अमेरिका के दूतावास से तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने दारुल उ़लूम का दौरा किया।

1429 हि./2008 ई.

आज़मी मंज़िल के पास बैंक ए.टी.एम. और रेलवे बुकिंग काउन्टर प्रारम्भ हुआ। इण्टरनेट विभाग में दारुल उ़लूम की परीक्षा के परिणाम को वेबसाईट पर डालने के काम का शुभारम्भ हुआ। ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब ने बीमारी के कारण त्याग–पत्र दिया जो लगभग 30 वर्षों तक दारुल उ़लूम के शैखुल ह़दीस रहे। ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालनपुरी को शैखुल ह़दीस और सदर मुदर्रिस बनाया गया। दारुल उ़लूम में आल इंडिया आतंकवाद विरूद्ध इजलास हुआ और वैश्विक मीडिया में इसकी चर्चा हुई। जमीयत

उलमा–ए–हिन्द में आपसी झगड़ों और अंतर्विरोध के कारण नाज़िम तालीमात ह़ज़रत मौलाना अरशद मदनी साह़ब और नायब मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद उस्मान साह़ब अपने–अपने पदों से हट गये। ह़ज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ साह़ब संभली नायब मोहतमिम और मौलाना मुजीबुल्लाह साह़ब गोडंवी नाज़िम तालीमात बनाये गये।

1430 हि./2009 ई.

शिक्षा और भवन निर्माण के लिये तेरह करोड़ रूपये का बजट पास हुआ और सिफ़ारशी दाख़ला का कोटा समाप्त कर दिया गया। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव का दारुल उ़लूम का दौरा हुआ। मुफ़्ती अज़ीजुर्रहमान के फ़तवों का तेरहवॉ खण्ड प्रकाशित हुआ।

1431 हि./2009–10 ई.

ह़ज़रत मौलाना नसीर ख़ान साह़ब का निधन हुआ। कार्यवाहक मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना गुलाम रसूल ख़ामोश साह़ब का निधन हुआ। सऊदी अ़रब के वक़्फ़ मंत्रालय के डॉ. अब्दुल्लाह ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। मलेशिया के राज्य किलनतान के शिक्षा मंत्री मु. इमाद अबदुल्लाह, पर्यटन विभाग के मंत्री श्री तक़ीउद्दीन हुसैन, चीफ़ जस्टिस दातून दाऊद और मलेशिया के मुख्य मुफ़्ती शकरी मुह़म्मद आदि आठ सदस्यों का शिष्ठ मंडल दारुल उ़लूम के दौरे पर आया। क़तर के मशहूर आलिम शेख़ मुहीउद्दीन कुर्रा अल–दाग़ी दारुल उ़लूम में पधारे। इसी साल ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साह़ब ने दारुल उ़लूम देवबन्द का दौरा किया।

1432 हि./2010–11 ई.

1 मुहर्रम 1432/8 दिस. 2010 को दारुल उ़लूम के मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साह़ब का निधन हुआ। ह़ज़रत मौलाना अबुल क़ासिम साह़ब कारगुज़ार मोहतमिम बनाये गये। सफ़र 1432/जनवरी 2011 में ह़ज़रत मौलाना गुलास मुह़म्मद वस्तानवी साह़ब को मोहतमिम बनाया गया। 19 रबीउल अव्वल 1432 हि./23 फरवरी 2011 को मजलिस–ए–शूरा की आपातकालीन मीटिगं बलुाई गयी और ह़ज़रत मौलाना अबुल क़ासिम नोमानी बनारसी को दोबारा कार्यवाहक

मोहतमिम बनाया गया। फिर मजलिस–ए–शूरा की शाबान 1432 हि. /जूलाइ 2011 की मीटिंग में आपको स्थायी मोहतमिम बना दिया गया। भवन निर्माण का वार्षिक बजट 17 करोड रूपये पास हुआ। इस साल अ़रब के कई विद्वानों ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। 7 रबीउल अव्वल 1432 को प्रसिद्ध सऊदी लेखक शेख़ आइज़ अब्दुल्लाह क़रनी की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि मंडल ने दारुल उ़लूम का दौरा किया। 14 रबीउल अव्वल को मशहूर हनफ़ी शामी विद्वान शेख़ मुह़म्मद बिन अव्वामा ने भी दारुल उ़लूम का भ्रमण किया और भाषण दिया। 20 रबीउल अव्वल को इमामे हरम मक्की शेख़ अब्दुल रहमान बिन अब्दुल अज़ीज अल–सुदैस ने दारुल उ़लूम का दौरा किया और मस्जिद रशीद में जुमा की नमाज़ पढ़ाई और भाषण भी दिया। हरमेन शरीफ़ैन (मक्का और मदीना) में क़ादियानियों के दाख़िले पर पाबन्दी के लिये दारुल उ़लूम ने सऊदी अ़रब के बादशाह अब्दुल्लाह को मेमोरेन्डम दिया।

खुलासा

इस दौर में दारुल उ़लूम में अधिकतर समय सदर मुदर्रिस व शेखुल ह़दीस के पद को ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब ने गौरवान्वित किया। आपके बाद ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालपुरी शेखुल ह़दीस और सदर मुदर्रिस बने। इस दौर में बीस हज़ार फुज़ला (विद्वान) तैयार हुए। छात्रों की संख्या प्रति वर्ष 2000 से बढ़कर साढ़े तीन हज़ार प्रतिवर्ष हो गई। दारुल उ़लूम का बजट 17 करोड़ रूपये हो गया। इस दौर में कई शानदार भवन बने और दारुल उ़लूम का क्षेत्रफल दो गुना हो गया। मस्जिद रशीद, दारुल तरबियत, मदरसा सानविया, दारुल मुदर्रिसीन, रुवाक़े ख़ालिद, शैखुल हिन्द मंज़िल (आज़मी मंज़िल), शेखुल इस्लाम मंज़िल (आसामी मंज़िल), हकीमुल उम्मत मंज़िल (तहफ़ीजुल कुरआन मंज़िल) आदि भवन इसी दौर में बनें। छात्रावास नये अन्दाज़ में तीन मंज़िला पुनः बनाया जा रहा है। आलीशान शेखल हिन्द पुस्तकालय का निर्माणकार्य भी इसी दौर में आरम्भ हुआ।

इस दौर में कई महत्वपूर्ण विभाग भी बनाये गये। विशेष रूप से इस्लामी विचार के तहफ़्फ़ुज़ (सुरक्षा) पर विशेष ध्यान दिया गया। इस

सम्बन्ध में ऑल इण्डिया मजलिस–ए–तहफ़्फ़ुज़ ख़त्म–ए–नबुव्वत, रद्दे ईसाइयत का विभाग, तहफ़्फ़ुज़–ए–सुन्नत और मुहाज़रात विभाग बनाये गए। दारुल उ़लूम को वर्तमान समय के अनुसार ज़रूरतों को समझते हुए शेख़ुल हिन्द एकेडमी, कम्प्यूटर विभाग, मीडिया सेल, अंग्रेज़ी विभाग और इंटरनेट विभाग खोले गये। पूरे भारत के मदरसों को एक प्लेटफ़ॉर्म पर इकट्ठा करने और समस्याओं पर विचार करने के लिये ऑल इण्डिया राबता मदारिस अ़रबिया की स्थापना हुई। इस के अलावा इसी दौर में शोबा तख़स्सुस फ़िल ह़दीस का विभाग, ख़रीद फ़रोख़्त विभाग और स्टॉक रूम भी आरम्भ हुआ।

इस दौर में दारुल उ़लूम को बहुत अधिक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। दारुल उ़लूम अपने मसलक को पूरे ज़ोर–शोर के साथ और पुरानी परम्पराओं को क़ायम रखते हुए प्रदर्शित करता रहा।

अल्लाह तआ़ला दारुल उ़लूम को इसी प्रकार हरा–भरा और उन्नतिशील रखे। आमीन!

(3)

विचारधारा और मौलिक सिद्धान्त

1. दारुल उ़लूम का उद्देश्य और मौलिक सिद्धान्त
2. दारुल उ़लूम के विद्वानों की विचारधारा (मसलक)

दारुल उ़लूम का उद्देश्य और मौलिक सिद्धान्त

दारुल उ़लूम की स्थापना जिन उद्देश्यों के लिये की गई उन का विस्तार दारुल उ़लूम के पुराने दस्तूर असासी (नियमावली) में निम्न प्रकार बयान किये गये हैं।

(1) कु़रआन मजीद, तफ़सीर, ह़दीस, अकीदा (धार्मिक विशवास) और उन के ज्ञान के सम्बंध में ज़रूरी और लाभदायक ज्ञान की शिक्षा देना और मुसलमानों को पूर्ण रूप से इसलामी जानकारी देना और प्रचार के द्वारा इसलाम की सेवा करना।

(2) इसलामी व्यवहार के अनुसार चरित्र निर्माण और विद्यार्थियों के जीवन में इसलामी आत्मा को उत्पन्न करना

(3) इसलाम के प्रचार व प्रसार और दीन की रक्षा व बचाव के लिये भाषण और लेखन से सेवा करना। मुसलमानों में शिक्षा व प्रचार के द्वारा पूर्वजों और नेक महापुरूषों जैसा चरित्र और व्यवहार का जज़बा पैदा करना।

(4) सरकार और हुकूमत के प्रभाव से बचना और ज्ञान व शिक्षा की स्वतन्त्रता को स्थिर रखना।

(5) दीन की शिक्षा के प्रचार व प्रसार के लिये विभिन्न स्थानों पर अ़रबी मदरसे स्थापित करना और दारुल उ़लूम से इलहाक़ (सम्बन्द्ध) करना। (दस्तूर असासी दारुल उ़लूम 5-6)

ये वे उद्देश्य हैं जो सदैव इसलामी इतिहास और रिवायतों (रीति–रिवाजों) के दामन से जुड़े हुए रहे हैं। मगर इस समय उन को जीवित रखने की ज़रूरत इसलिये महसूस हुई थी कि तेरहवीं हिजरी शताब्दी (बीसवीं ईसवी शताब्दी) के मध्य में हुकूमत के परिवर्तन के साथ–साथ मुसलमानों के ज्ञान और व्यवहार और सोच में जो परिवर्तन

और बाधा उत्पन्न हो गई थी उस को दूर करने के लिये ऐसे साधन अपनायें जायें जिन के द्वारा इसलाम, इसलामी ज्ञान और इसलामी संस्कृति और समाज की रक्षा की जा सके। दारुल उ़लूम का उद्देश्य इन्ही उद्देश्यों को जीवित रखने और नवीनीकरण करने का है। दारुल उ़लूम के उद्देश्यों और इस ज़माने के मुसलमानों की बदहाली के सम्बन्ध में ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद याक़ूब नानौतवी ने 1301 हिजरी के इनामी जलसे में भाषण करते हुए कहा था "इस मदरसे की स्थापना केवल दीन को जीवित रखने के लिये हुई है। यह वह समय था जिस में ग़दर (1857 ई॰ का स्वतन्त्रता संग्राम) के पश्चात हिन्दुस्तान ने थोड़ा सा समय गुज़ार लिया था और सामान्य रूप से देखने पर ऐसा लगता था कि दीन का ख़ातमा हो गया है। न कोई पढ़ सके न पढ़ा सके। बड़े–बड़े शहर और केन्द्र इस शिक्षा के थे ख़राब हो गये थे, उलमा परेशान, पुस्तकालय नदारद, एकता समाप्त हो गयी थी। अगर किसी व्यक्ति ने ज्ञान पिपासा की हिम्मत की तो कहां जाये और किस से सीखे। ऐसा लगता है कि बीस बरस में जो उलमा जीवित हैं अपने वास्तविक देश जन्नत में चले जायेंगे तब कोई इतना बताने वाला भी नहीं होगा कि वुज़ू के कितने फ़र्ज़ और नमाज़ में क्या वाजिब हैं। ऐसी परेशानी और नाउम्मीदी में अल्लाह की कृपा ने जोश मारा और अपने नेक बन्दों को इस ओर आकृषित किया जिस से यह मदरसा प्रकट हुआ"। (तारीख दारुल उ़लूम 1:143)

ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब पूर्व मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द का दारुल उ़लूम के उद्देश्य के सम्बन्ध में कहना है –

(1) मज़हब (धर्म) :– दारुल उ़लूम धार्मिक स्रोत है और आरम्भ से अन्त तक इसलाम के नियमों का पाबन्ध है, यही कारण है कि यहॉ का प्रत्येक व्यक्ति इसलाम का नमूना है।

(2) आज़ादी (स्वतंत्रा) :– जिस का अर्थ यह है कि दारुल उ़लूम पूर्ण रूप से बाहरी दासता के ख़िलाफ़ है। इस का शैक्षिक प्रबन्ध, शिक्षा दीक्षा, आर्थिक प्रबन्ध आदि नीचे से ऊपर तक स्वतन्त्र हैं। दुनिया में यह पहली शिक्षा संस्था (विश्वविद्यालय) है जिस के सामने हुकूमत ने बराबर आग्रह किया है मगर इस ने लाखों रूपये के आग्रह को स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

(3) सादगी और मेहनत :– जिसका तात्पर्य यह है कि यहां के उलमा जीवन के संघर्ष में बड़ी–बड़ी मुसीबत को सहन करने के अभ्यस्त हैं।

(4) किरदार (उच्च चरित्र) :– जिस का उद्देश्य यह है कि यहॉ के विद्यार्थी इस उच्च चरित्र का नमूना हैं जिस को उन्हों ने अपने पूर्वजों से प्राप्त किया है। यह चरित्र सारा का सारा आत्मिक है।

(5) इकेडमिक और शैक्षिक रूचि :– यह वह विशेषता है जिसे दारुल उ़लूम को देखने वाला पहले ही क्षणों में अनुभव करता है। यह न कहने की बात है न सुनने से सम्बन्ध है, दारुल उ़लूम की प्रत्येक विशेषता को उसकी ज़िन्दगी के आइने में देखा जा सकता है। यही कारण है कि दारुल उ़लूम के सेवक परोकारिता और कुर्बानी का ज़िन्दा नमूना हैं। मुसलमानों को इन लोगों पर विश्वास है और दुनिया के प्रत्येक भाग से इस दारुल उ़लूम के लिये आर्थिक सहायता मिलती है। (तारीख दारुल उ़लूम 1:145)

दारुल उ़लूम की नीव उन उलमा ने रखी थी जिन के मन खुलूस और ईमानदारी से भरपूर थे। उन के मन और मस्तिष्क मुसलमानों के शानदार भविष्य के लिये बेचैन थे। उन्हों ने अपने को दीन के उत्थान के लिये वक़्फ़ (प्रदान) कर दिया था। अल्लाह ने दारुल उ़लूम और उस की सेवा को स्वीकार किया और इस ने मुल्क और मुल्क से बाहर जो धार्मिक, शैक्षिक और समाजिक सेवायें की हैं वह भुलाई नहीं जा सकती हैं। यहां से हज़ारों आलिम पैदा हुए जिन में बेहतरीन मुहद्दिस, मुफ़्ती, लेख़क और प्रचारक उत्पन्न हुए और आत्मशुद्धि करने वालों की एक लम्बी जमात भी है, बल्कि इन में वह लोग भी हैं जिन्हों नें देश की स्वतन्त्रता और यहां के सुधार के लिये अद्वितीय बलिदान दिये हैं।

उसूले हश्तगाना (आठ नियम)

दारुल उ़लूम के प्रथम संस्थापक ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी ने दारुल उ़लूम और इस तरह के मदरसों को चलाने के लिये आठ उसूल (नियम) बनाये जिस पर आज सारे मदरसों का प्रबंध आधारित है। वह नियम यह हैं:

(1) पहला नियम यह है कि मदरसे के कार्यकर्ताओं को सदैव चन्दे

को बढ़ाने में दिलचस्पी रहनी चाहिए इस के लिये आप कोशिश करें और दूसरों से करायें। शुभचिंतकों को यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए।

(2) विद्यार्थियों के भोजन और रहन–सहन के लिये दारुल उ़लूम के शुभचिंतक सदैव प्रयत्नशील रहें।

(3) मदरसे के सलाहकारों को सदैव यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि मदरसे की भलाई सोचें, अपनी बात की पक्ष (ज़िद) न की जाए। कभी जब इस की नौबत आ जाए कि दूसरे सलाहकारों को अपनी राय का विरोध पसन्द न आये तो इस मदरसे की नींव में कमज़ोरी आ जाएगी, तात्पर्य यह कि दिल से हर समय मदरसे का लाभ सम्मुख रहे, अपनी बात का पक्ष न हो। इसलिये यह आवश्यक है कि सुझाव देने वाला स्पष्ट रूप से अपनी बात कहे और सुनने वाला इस को धैर्य से सुने अर्थात यह ख़्याल रहे कि अगर दूसरे की बात समझ में आ जायेगी तो वह मुख़ालिफ़ ही क्यों न हो मन से स्वीकार करेगें। मोहतमिम साहब को यह अनिवार्य है कि मशवरे की बातों में वह हितेशियों से मशवरा किया करें चाहे वह शूरा के मेम्बर हों या दूसरा कोई विद्वान मदरसों का शुभचिंतक हो। यदि किसी कारण किसी मेम्बर से मशवरे की नौबत न आए और दूसरे मेम्बरों से मशवरा कर के वह काम कर लिया तो इस कारण नाखुश न हों कि मुझे क्यों नही पूछा। अगर मोहतमिम साहब ने किसी से भी नही पूछा तो शूरा को आपत्ति हो सकती है।

(4) यह बात बहुत ज़रूरी है कि अध्यापकों में एकता हो और दुनयावी आलिमों की तरह एक दूसरे के पीछे न पड़ें। अल्लाह न चाहे, अगर इस की नौबत आयेगी तो फिर इस मदरसे की ख़ैर नहीं।

(5) पाठयक्रम जो पहले से निर्धारित किया जा चुका हो या बाद में मशवरे से निश्चित हो पूरा किया जाए, नहीं तो यह मदरसा या तो खूब आबाद ही नहीं होगा, और अगर आबाद होगा भी तो बेफ़ायदा होगा।

(6) इस मदरसे में जब तक आमदनी का कोई निश्चित तरीक़ा न होगा तब तक इंशाअल्लाह यह मदरसा अल्लाह के भरोसे इसी

प्रकार चलेगा और अगर आमदनी का कोई निश्चित स्रोत प्राप्त हो गया जैसे जागीर या कारख़ाना या व्यापार या किसी धनवान का वचन तो फिर ऐसा प्रतीत होता है कि अल्लाह पर भरोसे की दौलत उठ जाएगी और अप्रत्यक्ष सहायता बन्द हो जाएगी और कार्यकर्ताओं में आपस में मतभेद पैदा हो जाएगा। तात्पर्य यह है कि आमदनी और निर्माण में एक तरह की बेसरो सामानी (अनिश्चित्ता) रखनी चाहिए।

(7) सरकारी सहयोग और धनवानों का साझा भी अधिक हानिकारक मालूम होता है।

(8) जहां तक हो सके ऐसे लोगों का चन्दा बरकत का साधन मालूम होता है जिन को अपने चन्दे से नामवरी की आशा न हो। तात्पर्य यह है कि साफ़ मन से दिया गया चन्दा अधिक स्थाईपन का सामान मालूम होता है।

(तारीख दारुल उ़लूम 1:155)

दारुल उ़लूम के विद्वानों की विचारधारा (मसलक)

दारुल उ़लूम देवबन्द की यह जमात 'अहल–ए–सुन्नत वल–जमात' है, जिसकी नींव क़ुरआन व ह़दीस (किताब व सुन्नत) और इजमा व क़यास पर स्थिर है। इस के यहां तमाम मसलों में प्रथम स्थान क़ुरआन व ह़दीस को प्राप्त है जिस पर पूरे दीन का भवन खड़ा हुआ है। इस के यहां किताब व सुन्नत की प्राप्ति केवल अध्यन से नही बल्कि पूर्वजों के कथन और उनसे मिलने वाली विरासत की सीमाओं में रह कर और उस्तादों और पीरों की संगत और शिक्षा–दीक्षा ही से निश्चित हो सकती हैं। वह रिवायतों के संकलन से विश्लेषणकर्ता के उद्देश्य को दृष्टि में रखकर तमाम रिवायतों (कथनों) को इसी के साथ सम्बंधित करता है, और सबको धीरे–धीरे अपने–अपने द्देश्य पर इस प्रकार चस्पां करता है कि सब एक ही ज़ंजीर की कड़ियॉ मालूम हों। इसी बिना पर जमात की दृष्टि एक ऐसा गुलदस्ता दिखाई देता है जिस में हर रंग के इल्मी व अमली फूल अपने–अपने स्थान पर खिले हुए नज़र आते हैं।

यहां मुहद्दिस (ह़दीस के जानने वाले) होने के माने फ़क़ीह (धार्मिक क़ानून जानने वाले) से लड़ने या फ़क़ीह होने के माने मुहद्दिस से तंग होजाने या तसव्वुफ़ पसन्दी के माने इल्म–ए–कलाम की दुश्मनी के नहीं बल्कि इस के सुसंगठित मसलक के अधीन इस शिक्षा संस्था का फ़ाज़िल (स्नातक) एक ही समय में मुहद्दिस, फ़क़ीह, मुफ़स्सिर, मुफ़्ती, मुतकल्लिम, सूफी और हकीम सिद्ध होता है।

इसी प्रकार इस में आत्मिक शुद्धी के विचार भी ज़रुरी हैं। इस ने अपने चाहने वालों को इल्म (ज्ञान) की ऊंचाइयों से संवारा और मानवीय अख़लाक़ (चरित्र) से भी सजाया। इस जमात के लोग एक और इल्मी और अख़्लाक़ी ऊंचाइयों पर स्थिर हुए वहीं विनम्रता के गुण से भी भरपूर

हुए, न घमण्ड का शिकार और न अपमानता में फंसे। वह जहां इल्म और अख़लाक़ की ऊंचाइयों पर पहुंच कर सामान्य से ऊंचे दिखाई देने लगते है वहीं विनम्रता (मिलनसारी) के गुणों से भरपूर होकर साधारण लोगों में मिले जुले रहते हैं।

इस सुसंगठित, सुट्टढ़ और संतुलित तरीक़े से दारुल उ़लूम अपनी ने शैक्षिक सेवाओं में उत्त्तर में साईबेरिया से लेकर दक्षिण में सुमात्रा जावा तक और पूर्व में ब्रमा से लेकर पश्चिम में अ़रब व अफ़्रीक़ा तक इस्लाम धर्म का प्रकाश फैला दिया। दूसरी ओर राजनीतिक और राष्ट्र की सेवा से भी इस के उ़लमा ने कभी भी मुंह नहीं मोड़ा यहां तक कि 1803 ई, से 1947 ई, तक इस जमात के लोगों ने अपने–अपने रंग में बड़े बड़े बलिदान दिये जो इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हैं। किसी समय भी इन वीरों के राजनीतिक कार्यों पर पर्दा नही डाला जा सकता। विशेष रुप से तेरहवीं सदी हिजरी की आधी शताब्दी के अंत में मुग़लिया हुकूमत के पतन के समय ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब की संरक्षता में उन के दो विशेष मुरीदों ह़ज़रत मौलाना क़ासिम साह़ब और ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद साह़ब गंगोही और उन के अनुयाइयों के क्रांतिकारी कारनामों और गिरफ़्तारियों के वारन्ट पर उन की गिरफ़्तारी और जेल में क़ैद हो जाने की सच्चाई को न झुठलाया जा सकता है और न भुलाया जा सकता है। इन ख़िदमात का सिलसिला लगातार आगे बढ़ता रहा और इन्हीं भावनाओं के आधीन इन बुज़ुर्गों के अनुयाईयों भी क्रांतिकारी कार्यों के रुप में राष्ट्र की सेवा करते रहे। चाहे वह ख़िलाफ़त अन्दोलन हो या स्वतन्त्रता संग्राम, इन हज़रात ने अपने पद के अनुसार कार्य किया।

संक्षिप्त यह है कि इल्म और अख़्लाक़ की परिपक्वता इस जमात की वास्तविकता रही है। दृष्टि की विशालता, सहृदयता, राष्ट्र और क़ोम की सेवा इस का विशेष उद्देश्य रहा। लेकिन जीवन के इन तमाम पक्षों में सब से अधिक महत्त्व शिक्षा और इस्लामी ज्ञान को प्राप्त रहा है। जब कि जीवन के ये तमाम पक्ष इल्म ही की रोशनी में ठीक प्रकार से सफल बनाये जा सकते हैं, इसी पक्ष को इस ने उज्जवल रखा।

यह विचारधारा (मसलक) निम्न सात आधार भूत नियमों पर आधारित है। –

(1) शरीअत का इल्म :– इसमें विश्वास, उपासनायें और व्यवहार आदि सभी बातें दाख़िल हैं जिन का सम्बन्ध ईमान और इस्लाम से है। शर्त यह है कि यह इल्म असलाफ़ (पूर्वजों) की करनी और कथनी की सीमाओं में सीमित रहकर उन प्रमाणित उलमा (विद्वानों) से हासिल करें जो दीन के ज्ञाता हार्दिक शिक्षा और तरबियत और संगति प्राप्त किये हुए हों। जिन का आनतरिक और बाहरी ज्ञान और व्यवहार शरीअत जानने और मानने वाले से लगातार पहुंचा हो। स्ंवय पुस्तकें पढ़ने और अध्यन या केवल बौद्धिक खींचा तानी का परिणाम न हो और वह बौद्धिक दलील से ख़ाली भी न हो कि उस इल्म के बग़ैर हक़ व नाहक़, हलाल व हराम, जायज़ व नाजायज़, सून्नत व बिदअत आदि में अन्तर न हो और न ही इस के बग़ैर दीन में स्वंय उत्पन्न किये विचार और दृष्टीकोण से छुटकारा सम्भव है।

(2) तरीक़त पर चलना :– अर्थात सूफी हज़रात के सिलसिले और तज़रबों के नियमों के आधीन (जो किताब और सुन्नत से लिये गये हैं) सभ्यता, अख़लाक़ और मन की शुद्धि और आंतरिक भाव की पूर्णता करना, कि इस के बग़ैर संतुलित चरित्र, चाहत की स्थिरता और आन्तरिक सूझ–बूझ, मानसिक पवित्रता और वास्तविकता सम्भव नहीं।

(3) सून्नत का अनुसरण :– यानी जीवन के हर एक पक्ष में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के जीवन और उनके कथन का अनुसरण करना और आन्तरिक व बाहर की दशा में शरीअ़त का सम्मान रखकर सुन्नत को अपनाये रखना। इस के बगैर रस्म व रिवाज, जहालत और बिदत से छुटकारा सम्भव नहीं।

(4) हनफ़ी फ़िक़ह :– दारुल उ़लूम के संस्थापक हनफ़ी हैं इसलिये हनफ़ी फ़िक़ह के माने (अर्थ) इजतहादी मसलों में हनफ़ी फ़िक़ह का मानना और मसाइल व फ़तवे को निकालने में इसी उसूले फ़िक़ह की पैरवी करना हैं कि इस के बग़ैर मसलों के नतीजे निकालने में इच्छापालन से बचाव नहीं हो सकता।

(5) क़लाम–ए–मातुरीदियत :– यानी अ़क़ीदों (धार्मिक विशवासों) में सही चिन्तन के साथ, अहल–ए–सुन्नत वल–जमात के तरीक़े पर

अशाइरा व मातुरीदी के अर्थों और क़ायदों पर बनाये हुए विश्वासों पर स्थिरता और विश्वास की दृढ़ता को जारी रखना, कि इस के बिना शंकाओं, अनुमानों और भ्रम व शंका से बचाव मुमकिन (सम्भव) नही।

(6) जहालत और गुमराही का विरोध :– यानी ईर्ष्यालू गिरोह बन्दों के उठाये हुए फ़ितनों (झगड़ों) की रोक थाम मगर व्यक्ति की ज़बान व बयान में और माहौल की मनोविज्ञान के के साथ व्यक्ति के अनुकूल सुत्रों द्वारा, कि इसके बग़ैर जहालत, बुराइयों और शत्रुओं से शरीअत की सुरक्षा मुमकिन नहीं। इसमें शिर्क, बिदअत और नास्तिकता का खण्डन और गलत रीति रिवाजों का संशोधन और आवश्यकता नुसार लेखन या भाषण आदि सब शामिल हैं।

(7) क़ासमियत और रशीदियत का ज़ौक (लगन) :– फ़िर यही पूरा मसलक अपनी संयुक्त शान (वैभव) से जब दारुल उ़लूम के प्रथम संस्थापक ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी और ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के हृदय और आत्मा से चलकर स्थित हुआ तो उसने समय की आवश्यकताओं को अपने अन्दर समेट कर एक विशेष लगन और विशेष रंग की सूरत अपना ली जिसे 'मशरब' के शब्दों से जाना गया है। इस लिए दारुल उ़लूम देवबन्द के दस्तूर–ए–असासी (नियमावली) जिसको 1368/1949 में मंजूर किया गया उस के शब्दों में "दारुल उ़लूम देवबन्द का मसलक अहल–ए–सुन्नत वल–जमात हनफ़ी मज़हब और उस के संस्थापकों ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी और ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के मशरब के अनुकूल होगा" (दस्तूर असासी पृष्ठ 6) इसलिये दारुल उ़लूम के मसलक के निर्माण के अंशों में यह अंश विशेष है जिस पर दारुल उ़लूम की शिक्षा दीक्षा का कारखाना चल रहा है।

(तारीख़ दारुल उ़लूम 1:429–432)

(4)

दारुल उ़लूम की व्यवस्था और प्रबन्धन

1. दारुल उ़लूम देवबन्द की व्यवस्था
2. दारुल उ़लूम का प्रबन्धन (प्रशासन)
3. दारुल उ़लूम के विभाग (शोबा जात)

दारुल उ़लूम की व्यवस्था

दारुल उ़लूम देवबन्द का एक दस्तूर असासी (नियमावली) है जिस के द्वारा दारुल उ़लूम के सभी शैक्षिक और प्रबंधन संबंधी कार्य किये जाते हैं। नियमावली की रोशनी में मजलिस–ए–शूरा कायम है और उस की अगुआई में दारुल उ़लूम काम करता है।

मजलिस–ए–शूरा (प्रबन्धक निकाय)

दारुल उ़लूम देवबन्द की व्यवस्था आरम्भ ही से शूरा के नियमों पर आधारित है। मजलिस–ए–शूरा की यह ज़िम्मेदारी है कि वह दारुल उ़लूम के तमाम कार्यों की निगरानी (देखरेख) रखे। हिन्दुस्तान में उस समय लोकतन्त्र की व्यवस्था से आम तौर पर जनता नावाक़िफ़ थी। दारुल उ़लूम ने अपने आरम्भिक काल से ही लोकतान्त्रिक व्यवस्था को अपनाया और इस व्यवस्था को सफलतापूर्वक चलाकर क़ौम (समाज) के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। यही कारण है कि इस व्यवस्था के आपसी चिन्तन में बड़ी विशालता पैदा हुई। ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम साह़ब नानौतवी ने अपने आठ नियमों के तीसरे नियम में कहा है कि सलाहकार सदैव मदरसे के लाभ को दृष्टिगत रखें और अपने विचार के विरोध को बुरा न समझें नहीं तो मदरसे पर इसका बुरा प्रभाव पडेगा। "विचारों की स्वतन्त्रता" और "लोकतांत्रिक व्यवस्था" यह दो सिद्वान्त हैं जिनसे अच्छा कोई दूसरा तरीक़ा नहीं है। इस प्रकार रचनात्मक समीक्षा की राह खुल जाती है जो किसी संस्था की उन्नति के लिये ज़रूरी है।

मजलिस–ए–शूरा दारुल उ़लूम की सर्वाधिकार प्राप्त कमेटी है। दारुल उ़लूम की पूरी व्यवस्था इसी मजलिस के अधिकार में है। दारुल उ़लूम के प्रत्येक कर्मचारी के लिये इस कमेटी के नियमों और आदेशों को पालन करना अनिवार्य होता है। मजलिस–ए–शूरा दारुल उ़लूम को चन्दा देने वालें की वकील है और दूसरी ओर दारुल उ़लूम की आमदनी

व ख़र्च और व्यवस्था के कामों को बहुमत के आधार पर पूर्ण कराती है और इसी आधार पर निर्णय लेती है। दारुल उ़लूम के तमाम फैसले शूरा के नियमों के आधार पर होते हैं। दारुल उ़लूम के सभी नियम व क़ानून यही मजलिस बनाती है। दारुल उ़लूम की चल और अचल संपत्ति और वक़्फ़ की जायदादें भी इसी मजलिस के अधिकार में होती हैं।

शूरा के सदस्यों की संख्या 21 होती है जिसमें कम से कम 11 का आ़लिम होना आवश्यक है बाक़ी दूसरे सदस्य प्रसिद्ध मुसलमानों में से चुने जाते हैं, मगर दो सदस्य देवबन्द के निवासी होने आवश्यक हैं। मोहतमिम और सदर मुदर्रिस अपने पद से इस मजलिस के सदस्य होते हैं। इस मजलिस के साल में दो जलसे (बैथक) होते हैं। पहला मुहर्रम के महीने में और दूसरा रजब के महीने में। इजलास के लिये कम से कम एक तिहाई सदस्यों की संख्या होना आवश्यक है।

मजलिस–ए–आ़मिला (कार्यकारिणी समिति)

मजलिस–ए–शूरा के अधीन 1345 हिजरी (1927 ई.) से मुस्तकि़ल तौर पर मजलिस–ए–आ़मिला क़ायम है। मजलिस–ए–आ़मिला का काम शूरा के कामों में मदद करना है और शूरा के द्वारा दिये गये अधिकारों के आधार पर दारुल उ़लूम के प्रबन्धकीय कार्यों को व्यवहारिक रूप देना है। मजलिस–ए–आ़मिला, मजलिस–ए–शूरा के फैसलों को लागू करने के लिये ज़िम्मेदार है। मजलिस–ए–आ़मिला दारुल उ़लूम की व्यवस्था और दफ़्तरों के हिसाब और कार्यों की निगरानी (देखरेख) की ज़िम्मेदार है।

इस मजलिस के सदस्यों की संख्या 9 (नौ) होती है। मोहतमिम और सदर मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक) अपने पदों के अनुसार इस बॉडी के स्थाई सदस्य होते हैं जबकि बाक़ी सदस्य मजलिस–ए–शूरा से चुने जाते हैं। इस मजलिस का चुनाव सालाना होता है। मजलिस–ए–आ़मिला के साल भर में चार जलसे होते हैं। पहला जसला रबीउलअव्वल, दूसरा जुमादल अव्वल, तीसरा शाबान और चौथा जलसा ज़ीक़ादह में होता है। मजलिस–ए–आ़मिला का कोरम पांच सदस्यों से पूरा हो जाता है।

दारुल उ़लूम का प्रबन्धन व प्रशासन

मोहतमिम (कुलपति)

दारुल उ़लूम के प्रबंध के सर्वोच्च पदाधिकारी दारुल उ़लूम के मोहतमिम होते हैं जो मजलिस–ए–शूरा की नुमाइन्दगी करते हैं तथा तालीमात के अलावा दारुल उ़लूम के तमाम विभागों की निगरानी करते हैं। मजलिस–ए–शूरा के प्रबन्ध की तमाम ज़िम्मेदारियों और कर्तवयों को निभाते हैं और विभिन्न कार्यवाहियों का उत्तरदायी होते हैं।

आवश्यकता के अनुसार दारुल उ़लूम के मोहतमिम की सहायता के लिये एक या दो नायब मोहतमिम होते हैं जिन को मोहतमिम अपनी देखरेख में अलग–अलग कार्यभार व ज़िम्मेदारियां सौंपता है। ये नायब मोहतमिम, मोहतमिम की अनुपस्थिति में भी सीमित अधिकारों के साथ कार्य करते हैं।

इस महान पद के लिये हमेशा यह नियम सामने रखा गया है कि इस के लिये ऐसे व्यक्ति को चुना जाये जो ज्ञान और ईमानदारी और इन्तज़ामी कामों में विशेष योग्यता रखते हों और देश में अपना प्रभाव भी रखते हों। दारुल उ़लूम देवबन्द को ऐसे व्यक्ति और विद्वान आरम्भ से ही मिलते रहे हैं जिन्हों ने अपनी योग्यता से ऐसी मिसालें पैदा की हैं जो आाज के समय में मिलनी कठिन हैं।

सदर मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक)

दारुल उ़लूम की तालीमी कार्यवाहियों की निगरानी के लिये सदर मुदर्रिस का पद क़ायम है। सदर मुदर्रिस तालीमात (शिक्षा) विभाग के ज़िम्मेदार होते हैं और मजलिस–ए–शूरा के सदस्य होते हैं। सदर मुदर्रिस की ज़िम्मेदारी में तालीमी कार्यों की देखरेख, छात्रों की अख़लाक़ी और धार्मिक तरबियत (नैतिक और चरित्र निर्माण), परीक्षा का

प्रबन्ध, तालीमी रिपोर्ट तैयार करके मजलिस–ए–शूरा में पेश करना आदि शामिल हैं।

मजलिस तालीमी (शैक्षणिक परिषद)

तमाम कक्षाओं जैसे अ़रबी, फ़ारसी, उर्दू, दीनियात और तजवीद आदि के कार्यों के प्रबन्ध और सुझाव देने के लिये सदर मुदर्रिस के लिये एक तालीमी कमेटी होती है। इस कमेटी का कार्य दाख़िले की परीक्षायें लेना, निसाब–ए–तालीम (पाठ्यक्रम) में आवश्यकता के अनुसार फेरबदल करना आदि होते हैं। इस मजलिस के सदस्य मोहतमिम, सदर मुदर्रिस व नायब मोहतमिम और अन्यों में दो उच्च शिक्षक होते हैं। इस कमेटी का मजलिस–ए–शूरा की ओर से एक नायब नाज़िम भी होते हैं जब कि सदर मुदर्रिस इस कमेटी के अध्यक्ष (नाज़िम) होते हैं।

दारुल उ़लूम देवबन्द के कार्यालय व विभाग

दारुल उ़लूम के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिये अनेक कार्यालय और विभाग क़ायम किये गये हैं। सामान्य रूप से दारुल उ़लूम का नाम यद्यपि एक मदरसा ही है लेकिन अपने विस्तृत प्रबन्धात्मक दृष्टि कोण से एक सम्पूर्ण जामिआ़ (विश्वविद्यालय) और परिणाम के अनुसार इस से भी आगे बढ़ा हुआ है। दारुल उ़लूम का प्रबन्ध वर्तमान में लगभग तीन दर्जन विभागों और कार्यालयों पर आधारित है। प्रत्येक शोबा अपने अन्दर एक संस्था है। प्रत्येक विभाग का कार्यक्षेत्र अलग है। प्रत्येक विभाग (शोबे) का एक नाज़िम या ज़िम्मेदार होता है जो अपने अधिकारों की सीमा में रह कर विभाग के कार्यों को चलाता है। नाज़िम अपने कार्य को मोहतमिम की निगरानी में करता है। इन सभी विभागों को कुल तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. प्रबन्धन (इन्तज़ामिया) से संबंधित विभाग –

1. शोबा एहतमाम (प्रशासनिक विभाग)
2. शोबा मुहासबी (वाणिज्यिक विभाग)
3. शोबा मुहाफ़िज़ ख़ाना (संग्राहलय विभाग)
4. कुतुबख़ाना (पुस्तकालय)
5. शोबा तंज़ीम व तरक़्क़ी (व्यवस्था व विकास का विभाग)
6. दारुल इक़ामा (छात्रावास विभाग)
7. शोबा मतबख़ (रसोईघर)
8. शोबा तामीरात (निर्माण विभाग)
9. शोबा अवक़ाफ़ (संस्था की वक़फ़ जायदादों से संबंधी विभाग)
10. शोबा सफ़ाई व चमनबन्दी
11. मकतबा दारुल उ़लूम (प्रकाशन विभाग)

12. शोबा बरक़ियात (बिजली विभाग)
13. अज़मत अस्पताल (चिकित्सा विभाग)
14. माहनामा दारुल उ़लूम (उर्दू पत्रिका)
15. माहनामा अल–दाई़ (अ़रबी पत्रिका)
16. मेहमान खाना (अतिथि गृह)
17. शोबा कम्प्यूटर टाइपिगं
18. शोबा ख़रीदारी
19. शोबा स्टॉक रूम

2. तालीमी शोबे (शैक्षिक विभाग) –

1. शोबा अ़रबी व तकमीलात
2. शोबा तजवीद व क़िराअत
3. शोबा तह़फ़ीज़ुल क़ुरआन
4. शोबा दीनयात उर्दू व फ़ारसी
5. शोबा किताबत (सुलेख)
6. कम्प्यूटर विभाग
7. अंग्रेज़ी विभाग
8. दारूस्सनाए़ (दस्तकारी का विभाग)

3. इल्मी (एकेडमिक) विभाग –

1. शोबा दारुल इफ़्ता (फ़तवा विभाग)
2. इंटरनेट व ऑन लाइन फ़तवा विभाग
3. शोबा तबलीग़ (धार्मिक प्रचार विभाग)
4. मजलिस तहफ़्फ़ुज़–ए–ख़त्म नबुव्वत
5. शोबा रद्द–ए–ईसाइयत
6. शोबा तहफ़्फ़ुज़ सुन्नत
7. शोबा मुहाज़रात इल्मिया
8. शेखुल हिन्द एकेडमी
9. ऑल इंडिया राबता मदारिस इस्लामिया अ़रबिया
10. शोबा तरतीब फ़तावा

प्रबन्धन (इन्तज़ामिया) से संबंधित विभाग

(1) शोबा–ए–एहतमाम (प्रशासनिक विभाग)

शोबा एहतमाम कानूनी तौर पर दारुल उ़लूम का केन्द्रीय विभाग है। यह तमाम शोबों को अपने आधीन और देख रेख में चलाता है। मजलिस–ए–शूरा व अ़ामिला की प्रस्ताव और फ़ैसले एहतमाम ही के द्वारा लागू किये जाते हैं। शोबों के की देखेभाल के अ़लावह दारुल उ़लूम का बाहर से सम्बन्ध भी इसी शोबे द्वारा होता है। इस कारण शोबा एहतमाम को विशेष स्थान प्राप्त है।

एहतमाम के अहम मंसब (पद) के लिये सदैव यह नियम दृष्टि में रखा जाता है कि इस के लिये ऐसे व्यक्तित्व का चुनाव किया जाता है जो शिक्षा और ज्ञान, ईमानदारी, तक़वा और प्रबन्धात्मक कार्यों में विशेष योग्यताओं के मालिक होने के अतिरिक्त मुल्क में अपना एक विशेष प्रभाव रखते हों। एहतमाम का यह शोबा दारुल उ़लूम के तमाम कामों के सम्बन्ध के सिलसिले में सीधा मजलिसे शूरा का उत्तरदायी है। इस शोबे का कार्यालय मुख्य दरवाज़े के उपर स्थित है जिस का निर्माण 1315/1898 में हुआ था।

(2) शोबा–ए–मुहा़सबी (वाणिज्यिक विभाग)

अपनी दशा के आधार पर यह शोबा बहुत ही मत्वपूर्ण है। दारुल उ़लूम की स्थापना के दूसरे साल ही इस की स्थापना हो गई थी। दारुल उ़लूम के पूर्ण आमदनी और ख़र्च का हि़साब इसी विभाग से सम्बंधित है। सभी दफ़तरों और शोबों से आने वाले बिलों की जांच और मंजूरी के बाद उन की अदायगी, बैंकों से सम्बंधित मामले और विद्यार्थियों के वज़ीफ़ों और आमदनी व ख़र्च से सम्बंधित तमाम कामों को पूरा करना इसी शोबे की ज़िम्मेदारी है। हर क़िसम की आमदनी व ख़र्च की शोबेवार और मदवार विस्तार रखना इस का कर्तव्य है। कोई भी चीज़ बिना रसीद के दाख़िल और बग़ैर वावुचर के ख़र्च नहीं की जाती है। दारुल उ़लूम का ख़ज़ाना इसी शोबे के माध्यम से मोहतमिम साह़ब के आधीन रहता है।

दारुल उ़लूम की दूसरी विशेषताओं की तरह़ शोबा मुह़ासबी भी ह़िसाब व किताब की सफ़ाई व सुथराई में अपना अलग स्थान रखता है। जांच पड़ताल के लिये उसका दरवाज़ा हर व्यक्ति के लिये हर समय खुला रहता है। दूसरे शोबों के द्वारा जो ख़र्च होता है उनकी जांच पड़ताल भी मुह़ासबी के आधीन है। दारुल उ़लूम का सालाना बजट तैयार करना और फिर ख़र्च को इसी बजट से सीमित रखने का प्रयत्न करना भी इसी शोबे की ज़िम्मेदारी है।

(3) मुह़ाफ़िज़ ख़ाना (संग्राहलय)

मुह़ाफ़िज़ ख़ाना दारुल उ़लूम का वह महत्वपूर्ण विभाग है जो अपने अन्दर दारुल उ़लूम की पूर्ण तारीख रखता है। इस विभाग का मूल उद्देश्य दारुल उ़लूम के पूरे रिकार्ड की सुरक्षा और व्यवस्था है। परन्तु इस के अतिरिक्त भी कुछ महत्वपूर्ण कार्य भी इस विभाग के जिम्मे हैं। दारुल उ़लूम के तमाम विभागों के काग़ज़, क़लम, इंक और स्टेशनरी से सम्बंधित पूरा सामान सप्लाई करना इसी विभाग का कार्य है। इसी प्रकार तमाम विभागों को रजिस्टर, रसीदें, दूसरे आवश्यक काग़ज़ात का छपवाना और समाप्त होने पर मंगाना इन तमाम कामों का ह़िसाब भी इसी शोबे के आधीन आता है।

(4) कुतुबख़ाना (पुस्तकालय)

कुतुबख़ाना (पुस्तकालय) किसी भी विद्यालय के लिये अनिवार्य है। यही कारण है कि दारुल उ़लूम ने आरम्भ ही से पुस्तकालय पर विशेष ध्यान दिया है। सब से पहले कुछ किताबें विद्यार्थियों के पढ़ने के लिये मंगाई गयीं। इस के पश्चात किताबों को जमा करने का सिलसिला आरम्भ हुवा जो आज तक जारी है। इस समय दारुल उ़लूम के पुस्तकालय में दो लाख से अधिक पुस्तकें हैं। जिन में पाठय पुस्तकें और सामान्य हर विषय की पुस्तकें हैं। यह पुस्तकें बीस से अधिक भाषाओं में सौ से अधिक विषयों पर हैं।

इस पुस्तकालय की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहां अमूलय मखतूतात (हस्थ लिखित सामग्री) का संग्रह है जिन में कुछ के सम्बन्ध में यक़ीन के साथ कहा जा सकता है कि उन का अस्तित्व, दारुल उ़लूम के पुस्तकालय के अतिरिक्त दुनिया में कहीं नहीं है। कुतुबख़ाने के

केवल मख़तूतात का परिचय दो खण्डों में छपा है। कुतुबखाने में एक भाग दारुल उ़लूम के विद्वानों की सम्पादित व लिखित पुस्तकों के लिये सुरक्षित है जो शोधकर्ता और अध्यापकों के लिये विशेष दिलचस्पी की चीज़ है।

(5) शोबा–ए–तनज़ीम व तरक़्क़ी (व्यवस्था व विकास का विभाग)

यह शोबा दारुल उ़लूम के लिये आर्थिक व्यवस्था और अनाज जमा करने का कार्य करता है। चंदह वसूल करने के लिये 25 से अधिक सफ़ीर और राबता–ए–आ़म्मा (जन सम्पर्क) के लिये इस शोबे के अनेकों प्रचारक कार्य कर रहे हैं। सफ़ीर देश के कोने–कोने में दौरे करते हैं और कम व अधिक हर स्थान से उन्हें आर्थिक साहयता मिलती है। इस शोबे के ज़िम्मेदार भी राबते को सुसंगठित करने के लिये इ़लाक़ों का दौरा किया करते हैं। यह शोबा 1355/1936 में स्थापित हुवा था, और अपनी स्थापना दिवस से ही उन्नति के मार्ग पर है। इस शोबे का अपना एक उप कार्यालय मुम्बई में शाख़ के रूप में काम करता है। इस के उद्देश्य में जन सम्पर्क और आर्थिक व्यवस्था के कार्य आते हैं।

(6) दारुल इक़ामह (छात्रावास विभाग)

दारुल इक़ामह दारुल उ़लूम का बड़ा कार्यरत विभाग कहलाता है। इस के अधिकार में विद्यार्थियों की तरबियत, सीटों का बंटवारा अदि कार्य हैं। विद्यार्थियों के लिये यात्रा कंशेसन जारी करना, परिचय पत्र बनाना, विद्यार्थियों के आपसी झगड़े निमटाना और दारुल उ़लूम के दरबानों (चौकीदारों) की देख रेख इस की ज़िम्मेदारी में शामिल है। विभागाध्यक्ष के अ़लावह दस से अधिक वार्डन अलग–अलग छात्रावास में काम करते हैं। दूसरे विभागों की भांति इस विभाग का भी एक स्थाई कार्यालय है जो हर समय कार्यरत रहता है।

(7) शोबा मतबख़ (रसोईघर)

दारुल उ़लूम की स्थापना के बाद लगभग चालीस साल तक विद्यार्थियों के लिये खाने का प्रबंध की दो सूरतें थीं। कुछ विद्यार्थियों को शहर वाले खाना दिया करते थे और कुछ विद्यार्थियों को खाने का वज़ीफ़ा दारुल उ़लूम से दिया जाता था जिस से खाने का प्रबन्ध वे

स्वयं करते थे। स्पष्ट है कि दोनों दशाओं में विद्यार्थियों को कठिनाई थी। इस कारण नकद वज़ीफ़े के बजाये 1328/1910 तक मतबख़ (रसोईघर) का प्रबन्ध आरम्भ हुवा। पहले साल में पच्चीस तीस विद्यार्थी खाने वाले थे। इस समय उन्नति करते हुए इस विभाग के आधीन लग भग ढाई हज़ार से अधिक व्यक्तियों का खाना तैयार होता है। मत़बख़ के कर्मचारी चालीस व्यक्तियों से अधिक हैं।

मत़बख़ के कार्यों में खाना बनाना और उस के आवश्यक सामान की तैयारी, खाने बांटना, मत़बख़ से ख़ाना प्राप्त करने वाले व्यक्तियों का रिकार्ड और पूरा हि़साब रखना शामिल है। खाना अच्छा देने का प्रयत्न किया जाता है। अगर किसी विद्यार्थी को शिकायत हो तो तुरन्त दूर की जाती है। इस प्रकार यह शोबा अपने स्थापना दिवस ही से बहुत सी जिम्मेदारियों को निभा रहा है। साल के बारह महीने यहां काम चलता रहता है।

आटा चक्कीः मतबख (किचन) की ज़रूरत को पूरा करने के लिये एक आटा चक्की कछ है, जो प्रतिदिन लग भग पन्द्रह कुन्टल से अधिक आटा पीसता है। मसाले के लिये दूसरी मशीनें भी हैं जो मत़बख़ की हर प्रकार की अवश्यकता पूरी करती हैं।

(8) शोबा तामीरात (भवन निर्माण विभाग)

नए भवनों का निर्माण, पुराने भवनों की मरम्मत और रंग व रोग़न का कोई विशेष समय निश्चित नहीं है। शैक्षिक सतर हो या छुट्टी यह शोबा अपना काम करता रहता है। पिछले दो दहाइयों में बहुत अधिक भवन निर्माण के कारण इस का कार्य कहीं से कहीं पहुंच गया। विशेष रूप से मस्जिद रशीद जो एक अनोखी इ़मारत है इस विभाग के कार्य का प्रदार्शन करती है। विशाल शेखल हिन्द पुस्तकालय और दार–ए–जदीद का निर्माणकार्य भी इसी विभाग के ज़िम्मे है।

(9) शोबा–ए–औक़ाफ़ (वक़्फ़ जायदादों से संबंधी विभाग)

दारुल उ़लूम की तमाम मिल्कियत व वक़्फ़ जायदाद की हि़फ़ाज़त और देखभाल कार्यों को पूरा करना इसी शोबे के ज़िम्मे है। औक़ाफ़ का सिलसिला दारुल उ़लूम की इ़मारतों के निर्माण के साथ ही आरम्भ हो गया था। समय–समय पर दानी लोग अपनी छोटी छोटी जायदादें

दारुल उ़लूम के लिये वक़्फ़ करते रहे हैं। यह औक़ाफ़ विभिन्न स्थानों में स्थिर हैं। दारुल उ़लूम का यह शोबा वक़्फ़ की गयी इमारतों के किराये की वसूलयाबी, बढ़ोतरी का प्रयत्न, न देने वालों के ख़िलाफ़ मुक़दमा चलाकर या किसी और साधन से किराया प्राप्त करने या मकान ख़ाली कराने का संघर्ष भी करता है। यह विभाग दारुल उ़लूम की आमदनी वाले विभागों में गिना जाता है।

(10) सफ़ाई व चमन बन्दी

दारुल उ़लूम के सारे कैमपस में सफ़ाई पर विशेष ध्यान देने के लिये नियमानुसार यह शोबा स्थापित है। यह विभाग दारुल उ़लूम के तमाम रास्तों, बरामदों और शौचघर समेत दूसरे स्थानों की सफ़ाई का प्रबन्ध करता है। इसी के साथ चमन बन्दी और गार्डनिंग का काम भी इस विभाग के जिम्मे है। दारुल उ़लूम के ऑगन में विभिन्न चमन या बाग़ीचें हैं जो रंग बिरंग फूलों और वृक्षों से भरे हैं और दारुल उ़लूम की सुन्दरता को बढ़ाते हैं। इनकी देख भाल और कांट छांट कर के साफ़ रखना भी इस शोबे की ज़िम्मेदारी है जिस को यह शोबा पूरी तरह़ निभा रहा है।

(11) मकतबह दारुल उ़लूम (प्रकाशन विभाग)

यह दारुल उ़लूम की पूरानी प्रकाशनिक संस्था है। यहां से पाठय पुस्तकें और सामान्य पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। अब तक इस विभाग के आधीन 17 खण्डों में फ़तावा दारुल उ़लूम सहित असंख्य उर्दु, अ़रबी, हिन्दी और इंगलिश पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

(12) शोबा–ए–बरक़ियात (बिजली विभाग)

यह विभाग दारुल उ़लूम के तमाम दफतरों, मस्जिदों, दरसगाहों, रास्तों, विद्यार्थियों के कमरों और तमाम आवश्यक्ता के स्थानों पर बिजली प्रदान करता है। बिजली से सम्बंधित तमाम इन्तज़ाम करना और हर स्थान पर जल का पहुंचाना भी इसी विभाग की देख रेख में है। इस के अ़लावह दारुल उ़लूम की गाड़ियों की देख भाल, मरम्मत डराइवरों से सम्बंधित मामलात और गाड़ियों के प्रोग्राम की तरतीब आदि काम भी इसी शोबे के आधीन आता है। दरसगाहों में आवश्यकता के समय जलसे

वग़ैरह में लाउड स्पीकर का प्रबन्ध करना भी इसी शोबे की ज़िम्मेदारी है।

(13) अ़ज़मत हस्पताल (चिकित्सा विभाग)

विद्यार्थियों के निःशुल्क इ़लाज और दवाओं की प्राप्ति के लिये अ़ज़मत हस्पताल के नाम से एक बड़ा चिकित्सा विभाग है जहां हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है। विद्यार्थियों और दूसरे लोगों को मामूली फ़ीस पर दवा दी जाती है। विद्यार्थियों के अ़लावह ग़रीब लोगों के लिये यह बहुत लाभदायक हस्पताल है। इस में यूनानी और एलोपेथिक दोनो प्रकार का इ़लाज होता है। इस की सेवा भाव का अन्दाज़ह इस बात से लगाया जा सकता है कि एक साल में इस से लाभ उठाने वालों की संख्या लगभग एक लाख होती है।

(14) माहनामा दारुल उ़लूम (उर्दू मासिक पत्रिका)

ज़ुबान व क़लम की उपयोगिता और इस के द्वारा इसलामी शिक्षा, पूर्वजों का ज्ञान और अहल–ए–सुन्नत वल–जमाअ़त के मसलक के प्रसार की आवश्यकता होती है। 1328/1910 में मासिक 'अल–क़ासिम' और 1332/1914 में मासिक 'अल–रशीद' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इन दोनों पत्रिकाओं ने उच्चस्तर के साथ अपना कर्तव्य निभाया। मगर कुछ कारणों से ये सिलसिला बन्द हो गया परन्तु ज़रूरत का एह़सास बाक़ी रहा।

इस लिये 1360/1941 मुें 'दारुल उ़लूम' के नाम से एक मासिक जारी किया गया जो आज भी अपने स्तर को स्थिर रखे हुए है और नियमानुसार पाबन्दी से निकलता है। दारुल उ़लूम की वर्तमान प्रबन्धक समिति के विशेष ध्यान से कम्पोज़िंग और छपाई के साथ रंगीन टाईटल से सजा कर अधिक धार्मिक मज़मूनों पर मुश्तमिल यह पत्रिका दारुल उ़लूम की भरपूर तर्जुमानी कर रही है।

(15) माहनामा अल–दाई़ (अ़रबी मासिक पत्रिका)

दारुल उ़लूम दीनी संस्था के लिये अपना कोई अ़रबी भाषा का प्रवकता (तर्जुमान) होना अनिवार्य था जिस के द्वारा दारुल उ़लूम के ह़ालात और विचारधारा से अ़रबों को विशुद्ध अ़रबी भाषा में जानकारी

मिल सके। इस उद्येष्य से 1385/1965 में तिमाही 'दअ़वतुल ह़क़' का प्रकाशन आरम्भ हुवा। इस के बाद 1397/1977 में 'अल–दाई' के नाम से एक पाक्षिक पत्र जारी हुआ, जो कुछ सालों के बाद मासिक के रूप में प्रकाशित होने लगा। 'अल–दाई' उच्च स्तर का मासिक अ़रबी पत्रिका मानी जाती है। पूर्वजों के ज्ञान व उपयोगिता पर विशेष प्रकाशन का प्रबन्ध किया गया है। इस प्रकार अब प्रत्येक पक्ष पर इस का स्तर उँचा हुवा है। अ़रब देशों में दारुल उ़लूम का यह तरजुमान (प्रवक्ता) बहुत उपयोगी माना जाता है।

(16) शोबा–ए–मेहमान खाना (गेस्ट हाउस)

दारुल उ़लूम पहले ही दिन से न केवल भारत के मुसलमानों का ही नहीं बल्कि समस्त इसलामी क़ौम के दिलों की धड़कन बना हुवा है जिस के कारण अधिक संख्या में मेहमानों की आमद होती है और दारुल उ़लूम को देखने या दूसरे कामों के लिये मेहमानों की एक बड़ी संख्या पहुंचती रहती है। इसलिये दारुल उ़लूम की ओर से एक बड़े और साफ़ सुथरे मेहमान खाने (गेस्ट हाउस) का प्रबन्ध है। यहॅा खाने पीने और रहने की सुविधा है। मेहमान खाने की सुन्दर इ़मारत देखने योग्य है। बीच में एक बड़ा हाल है जिस में मजलिस–ए–शूरा के इजलास होते हैं। शूरा के मेम्बरों के ठहरने का प्रबन्ध भी यहीं होता है। वर्तमान मेहमान खाने का भवन आधूनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। मेहमानों के आराम व सुविधा में कोई कमी नहीं होती। मेहमान खाने का अपना एक अलग दफ़तर है।

(17) शोबा कम्प्यूटर टाइपिंग

यह पुस्तकों की कम्पोज़िंग का विभाग है। दारुल उ़लूम के उर्दू मासिक 'दारुल उ़लूम' और अ़रबी मासिक 'अल–दाई' पत्रिकाओं की टाइपिंग के लिये यह शोबा क़ायम किया गया है। यहां दारुल उ़लूम के अन्य काग़ज़ात, पत्र और पर्चे आदि भी लिखे जाते हैं।

(18) शोबा ख़रीदारी

यह शोबा दारुल उ़लूम के तमाम ज़रूरी सामान ख़रीदता है। दारुल उ़लूम के तमाम विभागों में आवश्यक वस्तुओं को मार्किट से

ख़रीद कर प्रदान करता है और उस से सम्बन्धित हिसाब किताब भी रखता है।

(19) शोबा स्टॉक रूम

इस शोबे में रोज़ाना के इस्तेमाल के सामानों का स्टॉक रखा जाता है और ज़रूरत के मौक़े पर मांगे जाने पर अलग अलग शोबों को दिया जाता है।

तालीमी शोबे (शैक्षिक विभाग)

1. शोबा अ़रबी व तकमीलात
2. शोबा तजवीद व कि़राअत
3. शोबा तह़फ़ीज़ुल क़ुरआन
4. शोबा दीनयात उर्दू व फ़ारसी
5. शोबा किताबत (सुलेख)
6. कम्प्यूटर विभाग
7. अंग्रेज़ी विभाग
8. दारूस्सनाए़ (दस्त कारी का विभाग)

तअ़लीमात (शिक्षा विभाग)

एहतमाम के बाद यह शोबा मुख्य है। इस विभाग का आरम्भ एक उस्ताद और एक शागिर्द से हुवा था। इस के पश्चात ही से दारुल उ़लूम का हर क़दम लगातार उन्नति की तरफ बढ़ रहा है। अब यह विभाग अपने आधीन अनेक उप विभाग चला रहा है। तअ़लीमात के कामों में उपरयुक्त तमाम शोबों की निगरानी के साथ, असबाक़ की तक़सीम, प्ररीक्षा प्रबन्ध, विद्यार्थियों की पदोन्नति प्रवेश आदि से सम्बन्धित कार्यवाही, ह़ाज़री (उपस्थिति) लेना आदि शमिल हैं। शिक्षा के रिकार्ड की सुरक्षा, सनदें (प्रमाण पत्र) जारी करना और तअ़लीमी कमेटी के सुझाव को लागू करना आदि कार्य भी तअ़लीमात के आधीन आते हैं।

तअ़लीमात के उप विभाग यह हैं :–

(1) शोबा अ़रबी व तकमील

इस विभाग में अव्वल अ़रबी से लेकर दौरह ह़दीस और तकमीलात (तकमील–ए–तफ़्सीर, तकमील–ए–उ़लूम, तकमील–ए–इफ़ता आदि) तक की तअ़लीम का प्रबन्ध है।

(2) शोबा तजवीद व कि़राअत

इस विभाग में हफ़्स उर्दू और ह़फस अ़रबी और सबआ़ व अश्रह की मुकम्मल तअ़लीम के साथ अ़रबी की तमाम दर्जों के विद्यार्थियों के लिये कि़राअत का ज़रूरी अभ्यास कराया जाता है।

(3) शोबा तह़फ़ीज़ुल क़ुरआन

इस शोबे में हिफ़्ज़–ए–क़ुरआन का उचित प्रबन्ध है। इस की तमाम दरसगाहें मदरसा सानिवियह में हैं और इस की एक अलग बिलडिंग है।

(4) शोबा दीनयात उर्दू व फ़ारसी

इस शोबे में, नाज़रह क़ुरआन और दीनयात के अ़लावह उर्दू व फ़ारसी, हिन्दी, अंग्रेज़ी, भुगोल और ह़िसाब (गणित) की बाक़ायदा शिक्षा दी जाती है। न विषयों के साथ, चौथे और पांचवें साल में इफ़ारसी भी पढ़ाई जाती है।

(5) शोबा किताबत (सुलेख)

इस शोबे में विद्यार्थियों को किताबत (सुलेख) की बाक़ायदा शिक्षा दी जाती है। इस के अ़लावह अ़रबी व तजवीद आदि की विभिन्न जामातों के विद्यार्थियों के लिये भी किताबत की शिक्षा का घंटेवार प्रबन्ध है।

(6) कम्प्यूटर विभाग

आज के उन्नतिशील युग में कम्प्यूटर मानव जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। इस से विद्यार्थियों को जानकारी कराना न केवल आवश्यक है बल्कि वर्तमान समय की सख्त ज़रूरत भी है। चूंकि कम्प्यूटर, दीनी तअ़लीमी और तबलीग़ी कामों में सहायक होने के साथ लेखन का कार्य भी बहुत अच्छी प्रकार बड़ी तेज़ी से कर सकते हैं, इस लिये दारुल उ़लूम ने इस की उपयोगिता का अनुभव किया और इस विभाग को स्थापित किया जिस में नियमानुसार दाख़ला देकर कम्प्यूटर की ट्रेनिंग दी जाती है। इस विभाग की स्थापना 1417/1996 में की गयी।

कम्प्यूटर सिखाने के लिये प्रति वर्ष दारुल उ़लूम से फ़ारिग़ कुछ विद्यार्थीयों को प्रवेश दिया जाता है। एक साल की मुद्दत में उन को विभिन्न प्रोग्रामों की शिक्षा दी जाती है। इस के बाद सालाना इम्तिह़ान में सफलता पाने पर उन को डिप्लोमा का सर्टीफ़िकेट दिया जाता है ताकि रोज़गार के अवसर तलाश करने में सुविधा प्राप्त हो।

(7) अंग्रेज़ी विभाग

धार्मिक प्रचार और प्रसार को ध्यान में रखकर अंग्रेज़ी भाषा की उपयोगिता से इन्कार नहीं किया जा सकता। अंग्रेज़ी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है और अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया के साथ–साथ इस की उपयोगिता भी बढ़ गयी है। ऐसी दशा में यह अनुभव किया जा रहा है कि विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी भाषा भी सिखाइ जाये। इसी ज़रूरत को सामने रखते हूए दारुल उ़लूम ने 1423/2002 यह विभाग स्थापित किया। इस विभाग में दारुल उ़लूम से फारिग होने वाले विद्यार्थियों को दाख़िला दिया जाता है। दो साल का कोर्स है। उर्दू अ़रबी के अंग्रेज़ी में अनुवाद और स्पीकिंग पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पढ़ते समय छात्रों की इस्लामी शक्ल व सूरत और दीनी विचार बनाये रखने पर विशेष ज़ोर दिया जाता है।

(8) दारूस्सनाए (दस्तकारी का विभाग)

शिक्षा के साथ विद्यार्थियों के आर्थिक समस्य के ह़ल के लिये 1945 में यह विभाग स्थापित हुवा था। दर्ज़ी में कुर्ता पायजामा और सदरी की कटिंग व सिलाई और शेरवानी की कटिंग एक साल में सिखाई जाती है। इस शोबे में कुछ विद्यार्थी तो बाक़ायदा प्रवेश लेकर दर्जी का काम सीखते हैं, जब कि कुछ विद्यार्थी ख़ारिज (एक्स्टरा) टाइम में लाभ प्राप्त करते हैं।

इल्मी शोबे (एकेडमिक विभाग)

1. शोबा दारुल इफ़्ता (फ़तवा विभाग)
2. इंटरनेट व ऑन लाइन फ़तवा विभाग
3. शोबा तबलीग़ (धार्मिक प्रचार विभाग)
4. मजलिस तहफ़्फ़ुज़ ख़त्म–ए–नबुव्वत
5. शोबा रद्‌द–ए–ईसाइयत
6. शोबा तहफ़्फ़ुज़ सुन्नत
7. शोबा मुहाज़रात इल्मिया
8. शेखुल हिन्द एकेडमी
9. राबता मदारिस इस्लामिया
10. शोबा तरतीब फ़तावा

(1) दारुल इफ़्ता (फ़त्वा विभाग)

दारुल इफ़्ता दारुल उ़लूम का महत्वपूर्ण शोबा है। दारुल उ़लूम की स्थापना होते ही मुल्क के चारों ओर से फ़त्वा मंगाने का एक बड़ा सिलसिला आरम्भ हो गया। आरम्भ में अलग शोबा नहीं था बल्कि उस्तादों को ही फ़त्वे का काम सौंपा गया था। मगर जब फ़त्वों की मांग अधिक बढ़ गई तो 1310/1882 में दारुल इफ़्ता के नाम से अलग विभाग स्थापित किया गया। उस समय से अब तक ऐसे ह़ज़रात इस सेवा पर नियुक्त होते रहे हैं जिन को फ़िक़ह में अधिक से अधिक अनुभव प्राप्त था।

दारुल इफ़्ता से जो फ़त्वे मांगे जाते हैं उन में प्रति दिन के मामूली मसलों के अ़लावह पेचीदह और ग़ौर तलब मसले, पंचायतों के फ़ैसले, अ़दलतों की अपीलें और विविध आदेश अधिकता से होते हैं। दारुल इफ़्ता का कर्तव्य है कि वह जानकारी करने वालों को पूरी तहक़ीक़ (ख़ोज) और स्पष्टता के साथ शरीअ़त के मसले बताये। अ़वाम के अ़लावह आ़लिम भी अक्सर मसले पूछते हैं। इस महत्व और नज़ाकत के बावजूद दारुल इफ़्ता का काम आ़म और ख़ास मुसलमानों में सदैव इत्मिनान और महवपूर्ण समझा जाता है।

(2) इंटरनेट व ऑन लाइन फ़तवा विभाग

वर्तमान युग की इन्फ़ॉर्मेशन तकनीक और दूरसंचार के माध्यम की आश्चर्यजनक तरक़्क़ी जहां अनेकों सियासी, समाजी और धार्मिक समस्यायें पैदा करती है वहीं कम्प्यूटर इंटरनैट का अच्छा पक्ष यह सामने आया है कि इन साधनों का प्रयोग करके इस्लामी पैग़ाम और धार्मिक शिक्षा को बड़ी तेज़ी से दुनिया भर में फैलाया जा सकता है। दारुल उ़लूम देवबन्द ने इस बात को समझते हुए 1415/1996 में कम्प्यूटर विभाग क़ायम किया और मुल्क में इंटरनेट सर्विस शुरू होते ही 2002 में इंटरनेट प्रभाग (सेक्शन) आरम्भ कर दिया जिसे बाद में अलग विभाग बना दिया गया। यह विभाग दारुल उ़लूम वेबसाईट और ऑन लाइन फ़तवा वेबसाईट की देख रेख के अतिरिक्त इंटरनेट से जुड़े अन्य कार्य करता है। स समय दारुल उ़लूम की वेबसाईटें ऐशिया, यूरोप, अफ़्रीक़ा, अमेरिका, ऑस्टधेलिया के लगभग सभी देशों में देखी और पढ़ी जाती है। प्रतिमाह पचास से अधिक देशों के एक हजार से अधिक लोग इमेल द्वारा सम्पर्क करते हैं और अपने प्रश्नों का उत्तर पाते हैं।

दारुल उ़लूम वेबसाईटः दारुल उ़लूम वेबसाईट चार भाषाओं – उर्दू, अ़रबी, इंग्लिश और हिन्दी में है। इन भाषाओं में दारुल उ़लूम की जानकारी, पूर्वजों का संक्षिप्त विवरण, कुछ प्रसिद्ध पुस्तकें आदि डाली गयी है। अ़रबी मासिक 'अल–दाई' और उर्दू मासिक 'दारुल उ़लूम' के अंक वेबसाईट पर डाले जाते हैं। 1429/2008 से दारुल उ़लूम के सालाना परीक्षण के परिणाम (रिज़लट) भी वेबसाईट पर डाले जाते हैं। दारुल उ़लूम का तराना और तस्वीरें, दारुल उ़लूम के बैंक अकाउण्ट और पैसा भेजने के तरीक़े भी दिये गए हैं।

दारुल इफ़ता वैबसाईटः दारुल उ़लूम देवबन्द ने इंटरनैट पर इमेल के द्वारा आने वाले फ़तवों की अधिकता को देखते हुए 2007 में एक फ़तवा वेबसाईट चालू कर दी है। उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं में यह डाटाबेस वेबसाईट इस प्रकार की सर्विस देने वाली दुनिया की चन्द गिनी चुनी वेबसाईटों में से एक है। दारुल उ़लूम देवबन्द से फ़तवा चाहने वाले इस वेबसाईट पर आकर सवाल कर सकते हैं। सवाल अंग्रेज़ी या उर्दू किसी भी भाषा में किया जा सकता है। अब तक इस

वेबसाईट पर उर्दू में लगभग 13000 और अंग्रेज़ी में लगभग 6000 फ़तवे प्रकाशित हो चुके हैं।

(3) शोबा तबलीग़ (प्रचार विभाग)

तबलीग (प्रचार) दारुल उ़लूम की दीनी और मसलकी ज़िम्मेदारी है जो इस विभाग से सम्बंधित है। इस की स्थापना 1342/1934 में उस समय हुई जब हिन्दुस्तान में शुद्धी और संगठन का आन्दोलन फैला। उस समय इस विभाग के प्रयत्न से लाखों मुसलमान धर्म परिवर्तन से बच गये और सामान्य रूप से मुसलमानों में इसलाम और उस के आदेशों पर पक्का यक़ीन हो गया।

इस के बाद से आज तक यह शोबा (विभाग) प्रचार व प्रसार के काम में लगा है। इस शोबे में प्रचारक काम करते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में मदरसों और आ़म मुसलमानों के बुलावे पर यात्रा करने के अ़लावह अपने आधार पर भी प्रचार के लिये यात्रा करते हैं। निः सन्देह उन का प्रयत्न मुसलमानों को दीन इसलाम पर स्थिर रखने और दारुल उ़लूम के स्मीप लाने में महत्वपूर्ण कार्य है।

(4) ऑल इंडिया मजलिस तह़फ्फ़ुज़–ए–ख़त्म–ए–नुबुव्वत

क़ादयानी फितना को दबाने के लिये दारुल उ़लूम ने अपनी पुरानी परम्प्रा के मुताबिक़ 29 से 31 अक्तूबर 1986 को अन्तरराष्ट्रीय इजलास तह़फ्फ़ुज़–ए–ख़त्म–ए–नुबुव्वत किया, और इसी जलसे में मजलिस तह़फ़ुज़–ए–ख़त्म–ए–नुबुव्वत की स्थापना की गयी ताकि संगठित रूप से इस पाखण्ड का पीछा किया जाये। अतः यह मजलिस अपने स्थापना दिवस ही से उद्देश्य पूर्ति के लिये प्रयत्नशील है। और समय–समय पर इस शोबे के आधीन हिन्दुस्तान के विभिन्न शहरों में तरबियती कैम्प लगते रहते हैं जिन में विशेष रूप से दारुल उ़लूम के शुभचिंतक उस्ताद और मजलिस तह़फ्फ़ुज़–ए–ख़त्म–ए–नुबुव्वत के ज़िम्मेदारों के अ़लावह दूसरे बड़े विद्वान भाग लेते हैं।

क़ादियानियत के खण्डन के विषय पर दारुल उ़लूम के फ़ारिग़ विद्वानों को ट्रेनिंग देना भी इस शोबे की जिम्मेदारी है। अतः प्रतिवर्ष कुछ विद्वानों का दाख़ला एक साल के लिये मंजूर किया जाता है। दूसरे मदरसों के उस्तादों की ट्रेनिंग के लिये भी छह महीने का कोर्स है।

मजलिस की ओर से या उस की देख–रेख में, यूपी, दिल्ली, बिहार, बंगाल, पंजाब, आंध्रा प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, करनाटक, तमिलनाडू , आसाम, मैघालय, राजस्थान, और नेपाल के बहुत से स्थानों पर सैकड़ों छोटे बड़े जलसे और कांफ्रेंसें की गयी हैं। इस के अ़लावह बड़े प्रोग्राममों की तैयारी के सिलसिले में सैकड़ों मस्जिदों में प्रोग्राम किये गये हैं, जिन की बरकत से लाखों लोगों ने क़ादयानियों के धोखे को समझा। क़ादयानी प्रचारक जगह जगह वाद–विवाद करने के लिये चेलैंज करते हैं। मजलिस ने इस क्षेत्र में भी इन का पीछा किया। प्रत्येक स्थान पर क़ादयानी या तो बहस में अनुत्तर हो गये या चेलैंज दे कर छुप गये। इस प्रकार की घटनायें आए दिन सामने आती रहती हैं।

मजलिस की सेवाओं का एक प्रकाशमान पक्ष यह है कि इस के प्रयत्न से बड़ी संख्या में क़ादयानियों को तोबा करने का सौभाग्य मिला है। जिस में कई क़ादयानी प्रचारक और परिवार सम्मिलित हैं। क़ादयानियत से तोबा करने की यह घटनायें यूपी, बिहार, बंगाल, आसाम, हैदराबाद, और दिल्ली आदि अनेकों स्थानों पर घठित हुई हैं। इस के अ़लावह बहुत से स्थानों से क़ादयानी उस्तादों को हटा कर मुस्लिम अध्यापकों की नियुक्ति कर दी गयी है। यह विभाग अब तक अनेकों पुस्तकें और पम्फलेट छाप चुका है।

(5) शोबा रद्दे ईसाइयत

दारुल उ़लूम की स्थापना इस समय हुई थी जब मुल्क पूरी तरह ईसाईयों के हाथ में जा चुका था और ईसाई मुसलमानों के धर्म पर हमला कर रहे थे। अंग्रेज़ों के प्रशिक्षित ईसाई मुल्क में हर जगह प्रचार कर रहे थे। इन से टक्कर लेने और प्रचार रोकने के लिये दारुल उ़लूम ने बेड़ा उठाया और हर मैदान में ईसाई मिश्नरी का मुक़ाबला किया और उनके कामों पर पानी फेर दिया।

इस के एक सदी के बाद ईसाइयत ने मुल्क में फिर से सिर उठाया। जब इसका पता दारुल उ़लूम को लगा तो मजलिस–ए–शूरा ने 1419 / 1998 में शोबा रद्दे ईसाइयत स्थापित किया। इस शोबे में अनेकों किताबचे लिखे गये और ईसाईयों के ऐतराज़ का जवाब दिया गया। मुल्क के विभिन्न स्थानों पर शिविर लगाये गये। इस संबंध में

1422 हिजरी में दारुल उ़लूम में दो दिवसीय प्रशिक्षण कैम्प लगाया गया जिसमें बंगाल, बिहार, राजस्थान, कश्मीर, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू से उलमा पधारे। प्रतिवर्ष दो आलिमों को दारुल उ़लूम में दाख़िला दे कर उन्हें इस विषय पर तैयार किया जाता है कि वे ईसाइयत से मुक़ाबला कर सकें।

(6) शोबा तह़फ़ुज़–ए–सुन्नत

भारतीय प्रायद्वीप में ग़ैर मुक़ल्लदियत लगभग दो सौ साल पहले से थी और देवबन्द के उलमा को शुरू से ही इस से विरोध था। लेकिन अ़रब मुल्कों में ग़ैर मुक़ल्लिदों ने देवबन्द के उलमा के विरूद्ध विचार फैलाये। इस से नौजवानों में इसका बुरा प्रभाव पड़ा। दारुल उ़लूम ने इस फितने का मुक़ाबला करने के लिये छात्रों को तरबियत देने के लिये मुहाज़रात का सिलसिला आरम्भ किया और 1427 / 2006 में शोबा तह़फ्फ़ुज़–ए–सुन्नत क़ायम हुआ।

(7) दफ़तर मुहाज़रात इल्मिया

दारुल उ़लूम देवबन्द अपने कार्यों को सुचारू से चलाने के लिये योग्य अफ़राद बनाने का प्रयत्न करता है। प्रतिदिन जो नये संकट धर्म में आते हैं, दारुल उ़लूम अपनी ज़िम्मेदारी मानता है कि उन को ठीक करे। इस काम के लिये मुहाज़रात इल्मिया के नाम से यह शोबा खोला गया है। इस में आठ विषयों पर छात्रों को लेकचर दिये जाते हैं जो निम्न प्रकार हैः 1. गै़र मुक़ल्लिदियत 2. बरेलवियत 3. मौदूदियत 4. क़ादियानियत 5. शिईयत 6. यहूदियत 7. ईसाइयत 8. हिन्दुमत।

प्रत्येक विषय पर पांच लेकचर होते हैं। प्रत्येक विषय पर अलग–अलग उस्ताद हैं जो अपने विषय पर अलग लेख लिखते हैं। बृहस्पितिवार को ज़ुहर के बाद छात्रों के सामने वह मज़मून पढ़ा जाता है। इस शोबे में दौरा ह़दीस के फ़ारिग़ छात्र शरीक होते हैं। पेपर पढ़ते वक़्त सवाल जवाब होते हैं।

(8) शेख़ुल हिन्द एकेडमी

देवबन्द के पूर्वजों के ज्ञान की सुरक्षा और उन को प्रकाशित करने के उद्देश्य को दृष्टि में रख कर 1403 / 1983 में शैख़ुल हिन्द एकेड़मी

की स्थापना हुई। दारुल उ़लूम देवबन्द का यह तह़क़ीक़ी (शोध) और सम्पादनिक शोबा कहलाता है। जिस के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार हैं: (1) अपने पूर्वजों के इ़ल्मी ख़ज़ाने की सुरक्षा (2) पूर्वजों के व्यक्तित्व और सेवायें और वर्तमान समय में सम्पादन, लेखन और प्रकाशन का कार्य करके मुसलमानों और अ़रब की जनता को परिचित कराना। (3) मसलक दारुल उ़लूम और दूसरे विषयों पर शोध गर्भित पुस्तकें लिख कर छपवाना। (4) विद्यार्थियों को लेखन और सम्पादन का कार्य सिखाना।

शैख़ुल हिन्द एकेड़मी अपने स्थापना दिवस ही से कार्यकर्ताओं की देख रेख में अपने उद्देश्यों को पूरा करने में लगनशील है। पूर्वजों के इ़ल्मी सरमाये को सुरक्षित रखने के सिलसिले में एकेडमी कार्यशील है कि उन के लेखन कार्य में तबदीली किये बग़ैर इमला और शैली को क़ायम रखकर फुटनोट के द्वारा आसान करके छपाई की कमी को साफ़ कर के प्रकाशित किया जाये। दूसरे विषयों पर भी एकेडमी पुस्तकें तैयार कराती है। या तैयार हुए मैटर को देख कर, यदि वे एकेडमी के स्तर के हैं तो एकेड़मी उन की छपाई का प्रबन्ध करती है।

अब तक एकेडमी से जो अहम पुस्तकें तैयार होकर छप चकी हैं उनके नाम निम्न प्रकार हैं। (1) शूरा की शरई़ ह़ैसियत (2) तफ़हीमुल क़ुरआन का तह़क़ीक़ी जायज़ह (3) अइम्मा–ए–अ़बआ (4) तदवीन सेयरे मग़ाज़ी (5) अदिल्ला–ए–कामिलह (6) ईज़ाहुल अदिल्लह (7) अयोध्या के इसलामी आसार (8) शिई़यत क़ुरआन और ह़दीस की रोशनी में (9) ख़ैरुल क़ुरून की दरसगाहें (10) लआली मंसूरह (अ़रबी) (11) मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी ह़यात और कारनामे (12) मौलाना रशीद अह़मद गंगोही, ह़यात और कारनामे (13) ह़ज़रत शैख़ुल हिन्द ह़यात और कारनामे (14) ख़्वातीने इसलाम की दीनी व इ़ल्मी ख़िदमत (15) अल–अ़क़ल वन्नक़ल (अ़रबी) (16) मुसलमानों के हर पेशे में इ़ल्म व उ़लमा (17) आइना–ए–ह़कीक़त नुमा (18) तज़किरतुन्नोमान (19) इशाअते इसलाम (20) तक़रीरे दिल पज़ीर (21) ताइफ़ा–ए–मंसूरह (22) अल–ह़ालतुत्तुआ़लीमियह फ़ी अ़हदिल (अ़रबी) (23) अल–इसलाम वल–अ़क़्लानियह (अ़रबी) (24) ज़कात के मसले (25) उ़लमा देवबन्द इत्तिजाहु हुमुदीनी व मिज़ाजुहुमुल मज़हबी (अ़रबी) (26) मजमूआ़ हफ़्त रसाइल (27) अ़हदे रिसालत, ग़ारे ह़िरा से गुम्बदे ख़ज़रा तक (28)

दारुल उ़लूम देवबन्द, मदरसतुन फ़िकरियुतन (अ़रबी)!

शैख़ुल हिन्द एकेड़मी में विद्यार्थियों को लेखन और सम्पादन का गुण भी सिखाया जाता है।

(9) राबता–ए–मदारिस इस्लामिया अ़रबियह

दारुल उ़लूम देवबन्द को प्रथम दिन ही से केन्द्र बिन्दू का दर्जा रहा है। और हिन्दुस्तान में स्थापित होने वाले मदरसे वैचारिक आधार पर दारुल उ़लूम देवबन्द से सम्पर्क रखे हुए हैं। इस लिये दारुल उ़लूम अधिकारिक रूप से विभिन्न क्षेत्रों में इसलामी मदरसों को सहयोग और उन का मार्गदर्शक करता है। लेकिन कुछ समय पूर्व ऐसे हा़लात पैदा हुए कि कार्यों के विभिन्न प्रभाव के कारण नियमानुसार अपने आधीन करने के मार्ग में कठिनाइयां आड़े आईं। इस सम्बन्ध में सोच विचार के लिये 20, 21 मुह़र्रम 1415 हि./जून 1995 को एक नुमाइन्दा इजलास तलब किया गया जिस में मुल्क के सत्तर बड़े मदरसों ने भाग लिया और दारुल उ़लूम में ऑल इंडिया राबता–ए–मदारिस इस्लामिया अ़रबियह का विभाग शुरू हुआ।

राबता–ए–मदारिस पाठयक्रम व तरबियत और मदरसों की मुश्किलात के बारे में सात सुझाव पास करता है और सशोंधन के बाद तैयार होने वाले पाठयक्रम लागू करने की सिफ़ारिश करता है। अब तक नियमानुसार 25000 से अधिक मदरसे मेम्बर बन चुके हैं। राबता–ए–मदारिस अ़रबियह बड़ी छान बीन के बाद मदरसों को अपनी सदस्यता देता है।

राबता–ए–अ़रबियह तेज़ी के साथ उन्नति कर रहा है। नियमावली के अनुसार राबते के प्रबन्ध के मुताबिक़ 20 रजब 1416/1996 को पहला अधिवेशन हुवा, दूसरा अधिवेशन जून में हुवा। इसी अधिवेशन में राबते के लिये नियम बनाये गये और मदरसों के लिये ज़ाबता अख़लाक़ बने और दूसरे अहम कायों को पूरा करने के लिये राबते की मजलिस आ़मला का संगठन किया गया। तजावीज़ की रोशनी में 51 रुकनी मजलिस–ए–आ़मिला का क़ायम हुई जिस में मजलिस–ए–शूरा दारुल उ़लूम देवबन्द से दस सदस्य, दस दारुल उ़लूम के अध्यपक, 31 विभिन्न प्रान्तों के सदस्य शामिल हैं। इसी अधिवेशन में अध्यपकों की ट्रेनिंग

सुझाव भी तैय पाया जिस का तरीक़ा निश्चित होकर इस को कार्यविन्त किया जा चुका है।

1998 उत्तर प्रदेश हुकूमत ने मज़हबी इमारत रेग्यूलेशन बिल पास करके मुसलमानों का मूल अधिकार समाप्त करने का प्रयत्न किया। दारुल उ़लूम ने 12 नवम्बर 1998 को पूरे देश के विद्वानों को बुलाकर इजलास में इसकी मुख़ालिफ़त की और यह बिल सर्दख़ाने में डाल दिया गया। इसी प्रकार जब यू.पी. सरकार ने स्कूलों में वन्दे मात्रम गीत पढ़ना अनिवार्य कर दिया था तो उस समय भी दारुल उ़लूम ने कुल हिन्द जलसा करके नाराज़गी जताई। सरकार ने इस फैसले को भी वापस ले लिया। फरवरी 2008 में आतंकवाद विरोधी कुल हिन्द इजलास बुलाया जिसमें बीस हज़ार उलमा शरीक हुए। इस का अच्छा प्रभाव पड़ा। इसी प्रकार केन्द्रीय सरकार की मदरसा बोर्ड की योजना के विरूद्ध कुल हिन्द राबता मदारिस का इजलास हुआ। हुकूमत ने इस योजना पर भी रोक लगा दी। इसी प्रकार हुकूमत के राईट टू एजूकेशन एक्ट और डायरेक्ट टैक्सेज़ कोड के ख़िलाफ़ भी आवाज़ उठाई गयी क्योंकि मदरसों पर उनके कार्यों पर रूकावट आ रही थी। राब्ता मदारिस अरबिया हर तीन साल बाद मजलिस–ए–अ़ामिला और मजलिस–ए–उ़मूमी का इजलास करता है।

(10) शोबा तरतीब फ़तावा

दारुल उ़लूम में दारुल इफ़ता का स्थाई शोबा 1310/1892 में शुरू हुआ। शुरू में फ़तवे की नक़ल रखने का नियम नहीं था। 1329/1912 में नक़ल रखने का सही प्रबन्ध हुआ। दारुल उ़लूम में 1866 से 1928 तक के 47 सालों की नक़ल नहीं है। फ़तावा तरतीब देने का काम पुनः 1374/1955 से आरम्भ हुआ जब क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब के सुझाव पर केवल मुफ़ती अज़ीज़ुर्रहमान के फ़तवों को जमा करने का काम शुरू हुआ जो बाद में 'फ़तावा दारुल उ़लूम' के नाम से प्रकाशित हुए। पहली जिल्द 1382 हिजरी में प्रकाशित हुई।

तरतीब फ़तावा का दूसरा दौर 1425/2005 में शूरा के सदस्य ह़ज़रत मौलाना बदरूद्दीन अजमल की कोशिश से मजलिस–ए–शूरा की मंजूरी मिलने के बाद शुरू हुआ। ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती

अज़ीज़ुर्रह़मान के फ़तवों की तरतीब की जा रही है जो कुल 18 जिल्दों पर पूरे होंगे।

तरतीब फ़तावा के लिये अलग से दफ़तर है जहां फ़तवों की तरतीब पर काम चल रहा है। इस फ़तवे के अलावा दूसरे मुफ़तियों के फ़तवे भी सुरक्षित रखे जा रहे हैं। सुरक्षित रखने का यह काम कम्प्यूटर पर चल रहा है। 1432/2010 तक ह़ज़रत मुफ़ती अज़ीज़ुर्रह़मान साह़ब के अलावा ह़ज़रत मुफ़ती शफ़ी उस्मानी, ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली आदि मुफ़तियों के 65 से अधिक रजिस्टर (लगभग 25000 पृष्ठ) टाईप किये जा चुके हैं।

(5)

शिक्षा और पाठयक्रम

1. भारत में मदरसों का पाठयक्रम
2. दारुल उ़लूम की शैक्षिक व्यवस्था
3. दारुल उ़लूम देवबन्द की शैक्षिक विशेषतायें
4. दारुल उ़लूम का पाठयक्रम

भारत में मदरसों का पाठयक्रम

दारुल उ़लूम का शैक्षिक पाठयक्रम वर्णन करने से पूर्व उचित होगा कि अ़रबी शिक्षा का पाठयक्रम का संक्षिप्त इतिहास बयान कर दिया जाये ताकि इस्लाम के प्रथम चरण से लेकर वर्तमान समय तक शैक्षिक आकर्शण का अन्दाज़ह लगाया जा सके।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के समय शिक्षा का आरम्भ क़ुरआन मजीद से हुआ। ह़ज़रत उ़मर की ख़िलाफ़त के समय क़ुरआन मजीद की शिक्षा के साथ ह़दीस का प्रचार–प्रसार प्रकाशन और पठन–पाठन का भी विशेष प्रबन्ध था। फिर जैसे–जैसे समय बीतता गया और शैक्षिक आवश्यकता बढ़ती रहीं, फ़ुनून (विधाओं) में भी आवश्यकतानुसार बढ़ोतरी होती रही। दूसरी शताब्दी हिजरी के मध्य तक उ़लूम व फ़ुनून, क़ुरआन, ह़दीस, फ़िक़ह और अश्आ़र अ़रब पर आधारित है। इस के बाद चौथी शताब्दी के अन्त तक जो ईजाद का दौर कहलाता है इस में सांस्कृतिक उन्नति के साथ विभिन्न फ़ुनून की ईजाद और अनुवाद किये गये और आवश्यकतानुसार कुछ आविष्कार पढ़ाये जाने लगे। अतः ह़दीस, तफ़सीर, फ़िक़ह, उसूले फ़िक़ह, सर्फ़, नह़व, लुग़ात, अश्आ़र अ़रब और इतिहास आदि उस युग के ज्ञान का भी इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) किया गया। पांचवी और सातवी शताब्दी के मध्य इमाम ग़ज़ाली के द्वारा इ़ल्मे कलाम की नींव पड़ी और उसके समर्थन के लिये उपर्युक्त वर्णित उ़लूम के अ़लावा मंतिक़ और फ़लसफ़ा (दर्शन) आदि विषयों की बढ़ोतरी हो गई।

यद्यपि यह विषय कम या अधिक तमाम इस्लामी मुल्कों में थे, फ़िर भी विभिन्न देशों में चूंकि अधिकता से अ़रब ख़ानदान आबाद थे इस लिये इन देशों में अ़रबी का झुकाव होने के कारण तफ़सीर व ह़दीस और असमाए रिजाल (ह़दीस के ज्ञाता) पर अधिक ज़ोर दिया जाता था। उन्दुलुस में अदब (साहित्य) अश्आ़र और तारीख़ को अधिक उन्नति प्राप्त हुई थी। ईरान में फ़िक़ह, उसूले फ़िक़ह, तसव्वुफ़ का अधिक रिवाज था।

लेकिन इसी के साथ एक ही मुल्क में विभिन्न समय में वातावरण के प्रभाव और आस पास के अनुरोध के कारण भी अधिकतर निसाब में परिवर्तन होता रहा है।

यद्यपि भारत में मुसलमान पहली शताब्दी हिजरी में पहुंच गये थे जिस में पांचवी सदी के आरम्भ में यानी मह़मूद ग़ज़नवी के समय में काफ़ी बढ़ोतरी हुई और सिंध के अ़लावा पंजाब तक का क्षेत्र इस्लामी शासकों के आधीन आगया था। मगर उन के वास्तविक मेल मिलाप का आरम्भ सातवीं सदी हिजरी के आरम्भ यानी सुलतान शहाबुद्दीन ग़ौरी (511 हि. 602 हि.) के समय होता है, यह वह ज़माना था जिस में ख़ुरासान और मावराउन्नहर (मध्य एशिया) आदि में तफ़सीर व ह़दीस के साथ सर्फ़ व नह़व (व्याकरण) लुग़ात, अदब, फ़िकह, मंतिक़, कलाम और तसव्वुफ़ योग्यता के आधार समझे जाते थे। मगर फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह को अहमियत मिली हुई थी। हिन्दुस्तान में आने वाले मुसलमान अधिकतर इन्हीं देशों से आये थे अतः उनके साथ शिक्षा आना भी लाज़मी था। चुनांचे हिन्दुस्तान में उस दौर के पाठयक्रम में यह सब विषय दाख़िल थे। मौलाना अ़ब्दुल ह़ई लखनवी ने पुरारे हिन्दुस्तानी पाठयक्रम को निम्न चार दौर में अंकित किया है—

प्रथम काल — इस का आरम्भ सातवीं सदी हिजरी (तेरहवीं सदी ईसवी) से समझा जाता है और अन्त दसवीं सदी पर उस समय हुआ जबकि दूसरा दौर आरम्भ हो गया था। लगभग दो सौ बरस तक नह़व, अदब, लुग़ात, फ़िक़्ह उसूले फ़िक़्ह, मंतिक़, कलाम, तसव्वुफ़, तफ़सीर, ह़दीस विषयों को योग्यता का आधार समझा जाता था। इस वर्ग के उ़लमा से ज्ञात होता है कि उस ज़माने में इ़ल्म फ़िक़्ह की योग्यता थी। ह़दीस में केवल मशारिक़ुल अनवार का पढ़ लेना काफ़ी समझा जाता था और ह़दीस में अधिक जानकारी के लिये मसाबीह़ अंतिम किताब थी। उस समय के पाठयक्रम में जो विशेषतायें नज़र आती हैं वह भारत पर विजेता के प्रभाव और निखारे हुए विचारों का परिणाम था। हिन्दुस्तान में इस्लामी हुकूमत की नींव जिन लोगों ने डाली व ग़ज़नी और ग़ौर से आये थे। ये वे स्थान थे जहां फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह का माहिर होना इ़ल्म व फ़न की विशेषता समझी जाती थी, इन दोशों में फ़िक़्ही रिवाज का पाया बहुत ऊँचा था।

दूसरा काल – नवीं सदी हिजरी (पंदरहवीं सदी ईसवी) के अन्त में शेख़ अ़ब्दुल्लाह और शेख़ अ़ज़ीज़ुल्लाह ने पिछले मेअ़यार फ़ज़ीलत (योग्यता) को किसी क़दर ऊँचा करने के लिये क़ाज़ी अ़जदुद्दीन की तस्नीफ़ (रचना) और अल्लामा सक्काकी की मिफ़ताहुल उ़लूम पाठयक्रम में दाख़िल की। इस काल में मीर सय्यद शरीफ़ के शागिर्दों ने शरह़ मताले और शरह़ मवाफ़िक़ और अल्लामह तफ़ताज़ानी के शागिर्दों ने मुतव्वल व मुख़्तसर मानी और तलवीह़ व शरह़ अ़क़ाइद नस्फ़ी को रिवाज दिया। उस ज़माने में शरह़ विक़ाया और शरह़ जामी निसाब में सम्मिलित की गई। उस दौर के अन्त में शेख़ अब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी ने उ़लमा–ए–ह़रमैन शरीफ़ैन से इ़ल्मे ह़दीस को पूरा करके इ़ल्मे ह़दीस को उन्नति देने का प्रयत्न किया। इस वर्ग के उ़लमा के ह़ालात से ज्ञात होता है कि इस ज़माने में मिफ़ताहुल उ़लूम सक्काकी और क़ाज़ी अज़ीज़ुद्दीन की मताले और मवाकिफ़ि आखिरी किताबें थीं।

तीसरा काल – द्वितीय काल के निसाब में जो परिवर्तन हुआ उस से लोगों की उमंगे बढ़ गयीं थी। और वह शिक्षा के स्तर को और अधिक ऊँचा करने के इच्छुक थे। मीर फ़तहुल्लाह शीराज़ से हिन्दुस्तान आये, अकबर ने उन को अज़दुल मलिक का ख़िताब दिया। उन्हों ने पहले निसाब में कुछ नये परिवर्तन करके सामने रखा जिस को उ़लमा ने स्वीकार कर लिया।

ह़ज़रत शाह वलीउल्लाह साह़ब जो अंतिम मगर सबसे प्रसिद्ध विद्वान थे, ह़रमैन शरीफ़ैन (मक्का–मदीना) तशरीफ़ लेगये और वहां चौदह महीने ठहरे। शेख़ अबू ताहिर कुर्दी से ह़दीस पढ़ी और भारत में आकर इस लगन से उसका विकास किया कि जिस का प्रभाव आज तक बाक़ी है। ह़ज़रत शाह वलीउल्लाह और उनके अनुयायी उलमा ने सिह़ाह सित्ता के पठन–पाठन को अपने प्रयत्न से पाठयक्रम में लगा दिया। शाह साह़ब ने एक नया निसाब भी बनाया था मगर चूंकि उस ज़माने में इ़ल्म का केन्द्र दिल्ली से लखनऊ बदल गया था इसलिये शाह साह़ब के निसाब को जनता में क़ुबूलियत न मिल सकी। हुमायूं व अकबर के ज़माने में ईरान से जो नया सम्पर्क हुआ था उसने धीरे–धीरे हिन्दुस्तान के शैक्षिक वातावरण में ईरान से नया परिवर्तन उतपन्न कर दिया था। मंतिक और फ़लसफ़े को आरम्भ से ही ईरान में शिक्षा के स्तर

समझे जाते थे, इसलिये मुग़ल दरबार में धीरे–धीरे इसे दूसरे विषयों पर अधिपत्य होती गयी।

चौथा काल – चौथा दौर बारहवीं सदी हिजरी (सत्तरहवीं सदी ईसवी) से आरम्भ होता है। इस के संस्थापक मुल्ला निज़ामुद्दीन सुहालवी लखनवी थे, शाह वलीउल्लाह के सम कालीन थे। दरसे निज़ामी के नाम से जो निसाब आज तमाम मदरसों में प्रचलित है वह इन्हीं की यादगार है। मुल्ला निज़ामुद्दीन ने दूसरे दौर के निसाब में बढ़ोतरी करके एक नया निसाब बनाया जिस की बड़ी विशेषता यह है कि विद्यार्थी में अध्यन करने की रूचि को दृष्टि में रखा गया है। यद्यपि इस निसाब को पढ़ने या पूर्ण कर लेने के बाद किसी विशेष विषय में कमाल हा़सिल नहीं हो जाता, मगर यह योग्यता अवश्य पैदा हो जाती है कि केवल अपने अध्यन और मेह़नत से जिस विषय में चाहे कमाल (विशिष्ठा) पैदा करले। ह़दीस व तफ़सीर का स्तर इस निसाब में भी कुछ ऊँचा नहीं है और अदब (साहित्य) की तो सिरे से कोई किताब ही नहीं।

तेरहवीं सदी हिजरी के मध्य (उन्नीसवीं सदी ईसवी) में हिन्दुस्तान में शिक्षा के तीन केन्द्र स्थापित थे– दिल्ली, लखनऊ और ख़ैराबाद। यद्यपि शिक्षा का पाठयक्रम तीनों का मिला–जुला था, फिर भी तीनों के दृष्टिकोण अलग थे। दिल्ली में तफ़सीर और ह़दीस पर अधिक बल दिया जाता था। ह़ज़रत शाह वलीउल्लाह साह़ब का परिवार किताब व सुन्नत के प्रचार व प्रसार और पठन–पाठन में तल्लीन था। उ़लूमे मअ़कूलह (बौद्धिक) उन के यहां द्वितीय स्थान रखते थे। लखनवी उ़लमा फ़िरंगी मह़ल पर माउन्नहर (मध्य ऐशिया) के सातवीं सदी वाला पुराना रंग छाया हुआ था। फ़िक़ह और उसूले फ़िक़ह को उन के यहां सबसे अधिक उपयोग्यता प्राप्त थी। त़फ़सीर में जलालैन व बेज़ावी और ह़दीस में केवल मिश्कातुल मसाबीह़ काफ़ी समझी जाती थी। ख़ैराबादी केन्द्र का शिक्षा का विषय केवल मंत़िक़ व फ़लसफ़ा था और ये विषय इतनी लगन से पढ़ाये जाते थे कि दूसरे विषय उन के सामने मांद पड़ गये।

दारुल उ़लूम देवबन्द

तेरहवीं सदी हिजरी के पूर्वार्द्ध में दिल्ली और ख़ैराबाद की शिक्षा

संस्थायें समाप्त हो चुकी थीं, हां लखनऊ में शिक्षा का कुछ प्रकाश बाक़ी था। यद्यपि इन स्थानों के केन्द्र समाप्त हो चुके थे फिर भी इन तीनों केन्द्रों की मान्यता हिन्दुस्तान में कम या अधिक बनी हुई थी। दारुल उ़लूम देवबन्द ने इन विषयों की महत्ता को न केवल बाक़ी रखा बल्कि तरक़्क़ी देने में इस ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। दारुल उ़लूम के निसाबे तालीम में इन तीनों स्थानों की विशेषताओं को इकट्ठा कर दिया है जो एक सदी से अधिक समय से अकसर मदरसों में लागू है। कुछ स्थानों पर दूसरे नये निसाब भी लागू हैं। ऐसे मदरसों में नदवतुल उ़लमा लखनऊ की हैसियत अधिक है मगर प्रचलित नहीं।

दारुल उ़लूम के वर्णित निसाब की उपयोग्ता के बावजूद जिस प्रकार प्रत्येक युग में समय के आधार पर पाठयक्रमों में परिवर्तन होता रहता है इसी प्रकार दारुल उ़लूम के निसाब में समय–समय पर ह़ालात और समय की मांग के अनुरूप परिवर्तन होता है, जिसमें दीनी विषय के साथ–साथ वर्तमान समय के विषय और सामाजिक आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाता है तथा उस को अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

दारुल उ़लूम देवबन्द की शैक्षिक व्यवस्था

सामान्य रूप से शव्वाल (अ़रबी महीना) में प्रवेश के बाद ज़ीक़अ़दह के आरम्भ से पाठ पढ़ाने आरम्भ होते हैं और रजब के अन्त तक जारी रहते हैं। शअ़बान में सालाना परीक्षा होती है जो लगभग तीन सप्तह तक चलती है रहती हैं। शअ़बान के अन्तिम सप्ताह में छुध्यिां हो जाती हैं जो शव्वाल के पहले सप्ताह तक चलती हैं। दूसरे सप्ताह से दाखला आरम्भ हो जाता है। जुमे (शुक्रवार) के दिन सप्ताह में छुटटी रहती है।

शिक्षा की समय सारणी

जैसा कि सामानय रूप से अ़रबी मदरसों का नियम है। दारुल उ़लूम में भी पढ़ाई को दो भागों में तक़सीम किया गया है, पहला हि़स्सा चार घन्टे का होता है और दूसरा दो घन्टे का। गर्मी के मौसम में प्रतः छह बजे से 10 बजे तक और दोपहर बाद साढ़े तीन से साढ़े पांच बजे तक और सर्दी के मौसम में प्रतः 8 बजे से 12 बजे तक और ज़ोहर के बाद 2 बजे से 4 बजे तक पढ़ाई का समय है। दारुल उ़लूम में प्रत्येक शैक्षि घन्टा 60 मिनट का होता है। मौसम के परिवर्तन के साथ–साथ समय बदलता रहता है।

परीक्षायें

दारुल उ़लूम की स्थापना से कुछ समय पहले विद्यार्थी जब अध्यापक से एक किताब पढ़ लेता था तो उस से अगली किताब बिना परीक्षा के आरम्भ कर दी जाती थी। ज़ाहिर है कि इस में विद्यर्थी की योग्यता जांचने और परखने का कोई अवसर न था और कभी–कभी नाक़ाबिल विद्यार्थी भी उन्नति की सीढ़यों को पार करता चला जाता था। दारुल उ़लूम ने इस कमी का अनुभाव करते हुए इस तरीक़े को समाप्त कर के छमाही और सालाना परीक्षा को अनिवार्य बनाया।

दारुल उ़लूम में परीक्षा के बारे में जो नियम प्रचलित हैं वह भी काफ़ी सुदृढ है। यहां प्राइवेट परीक्षा का नियम नहीं है। हिन्दुस्तान के मदरसों में सम्भवतः बीजापुर की यह विशेषता थी कि वहां वार्षिक परीक्षा होती थी नहीं तो दूसरे मदरसों के सम्बंध में तारीख़ में कोई वर्णन नहीं मिलता और यह तो बिल्कुल यक़ीनी है कि दारुल उ़लूम की स्थापना के कुछ दिन पूर्व तक हिन्दुस्तान में सालाना परीक्षा का बिल्कुल रिवाज न था।

परीक्षा के नियम और क़ानून

परीक्षा विद्यार्थी की योग्यता और उस्तादों की मेह़नत का परिणाम है और जिस पर तरक़्क़ी का दारोमदार है। लेकिन दारुल उ़लूम को जिस प्रकार हुकूमत के प्रभाव से बिल्कुल अलग रखा गया है उसी प्रकार परीक्षा में किसी प्रकार का बाहरी दखल भी पसन्द नहीं किया गया है। पाठयक्रम स्वयं उनका बनाया हुवा है और परीक्षा भी वह स्वयं अपनी देख रेख में लेते हैं।

परीक्षायें दो प्रकार की होती हैं, एक प्रवेश के लिये – यह परीक्षा उन विद्यार्थियों की होती हैं जो किसी दूसरे मदरसे से आकर दारुल उ़लूम में प्रवेश लेना चाहते हैं। यह परीक्षा शव्वाल में होती है। इस परीक्षा में बहुत ही सावधानी बरती जाती है और कभी–कभी तो तिहाई से अधिक विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिन को प्रवेश परीक्षा में असफल होने के कारण वापस हो जाना पड़ता है। दूसरी परीक्षा पढ़ाई की होती है यह वर्ष में दो बार ली जाती है। अर्धवार्षिक रबीउ़ल अव्वल में और सालाना शअ़बान में होती है।

परीक्षा में बहुत अधिक सवधानी और सख़्ती का पालन किया जाता है पहले और दूसरे साल के तमाम और तीसरे साल की कुछ किताबों तक की परीक्षायें ज़बानी सवाल व जवाब के द्वारा ली जाती है, उपर की कक्षाओं की परीक्षा लिखित रूप में होती है। सवालों के पर्चे बड़ी सवधानी के साथ छपवाकर रखे जाते हैं, पहले प्रत्येक विषय के पचास नम्बर होते थे जो अब सौ कर दिये गये हैं।

इस अवसर पर ज्ञात होना चाहिए कि दारुल उ़लूम से पहले हिन्दुस्तान में जितनी शिक्षा संस्थायें थीं उन की दशा व्यक्तिगत शिक्षा

संस्थाओं की थी। यह कार्य उन में समान था कि न उनमें कक्षायें थी न हाज़री के रजिस्टर होते थे। न विद्यार्थी को विवश किया जाता था कि अमुक किताब और विषय के साथ अमुक पुस्तक और विषय का लेना ज़रूरी है। इस बात की पूरी आज़ादी थी जिस का जो जी चाहता पढ़ता था और जब तक चाहता शिक्षा का सिलसिला जारी रहता। तअ़लीम की कोई मुद्दत निश्चित नहीं थी और परीक्षा का भी कोई विशेष नियम न था। कक्षा, शिक्षा की मुद्दत, उपस्थिति और परीक्षा का नियम लेख आदि कामों को निश्चित करने की प्राथमिकता दारुल उ़लूम को प्राप्त है और यहीं से अ़रबी मदरसों में यह कार्य प्रचलित हुआ और आज तक चल रहा है।

शिक्षा के लिये वज़ीफ़े

अ़रबी मदरसों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अधिकतर निर्धन होते हैं उन के संरक्षकों में इतनी हिम्मत नहीं होती कि वे अपने लड़कों की शिक्षा दीक्षा में ख़र्च कर के पढ़ा लिखा बना सकें। प्रत्येक उन्नतिशील क़ौम की तारीख़ इस बात की गवाह है कि तरक़्क़ी का भेद उस कौ़म के अ़वाम के शिक्षित होने में छिपा है। यह उस समय तक सम्भव नहीं जब तक शिक्षा का मुफत प्रबन्ध न हो। अतः सदयों के बाद के अनुभव से बीसवीं सदी के बड़े–बड़े शिक्षा विशेषज्ञों ने यह नतीजह निकाला कि आ़म जनता की तअ़लीम मुफत होनी चाहिए और जब तक यह तरीक़ा अपनाया नहीं जायेगा शिक्षा का सामान्य होना कठिन है। प्रचलित शिक्षा का सबसे बड़ा दोष यह है कि वह केवल उन लोगों के लिये विशेष बन कर रह गई है जो अपना ख़र्च स्वयं उठा सकें। तात्पर्य यह कि वर्तमान शिक्षा को प्राप्त करने में ग़रीबों के लिये कोई स्थान नही है। लेकिन हमारी पुरानी शिक्षा व्यवस्था में ख़र्च को विद्यार्थी के बजाये शिक्षा के ज़िम्मे रखा गया है। इस शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थी से कोई फ़ीस नहीं ली जाती (जैसा कि उपर कहा जा चुका है) बल्कि विद्यार्थियों को पढ़ने के लिये किताबों का प्रबन्ध भी मुफत किया जाता है। इस से आगे निर्धन बच्चों को संस्थाओं की ओर से भोजन, वस्त्र और दूसरी ज़रूरतों के लिये नक़द वज़ीफ़े भी दिये जाते हैं।

दारुल उ़लूम में आरम्भ ही से इस बात पर विशेष ध्यान रखा जाता

है कि नर्धन विद्यार्थियों के खान, कपड़ों के ख़र्च व इ़लाज और दूसरी अनिवार्य अवश्यकता की ज़िम्मेदारी विद्यार्थी के बजाये दारुल उ़लूम की ओर से उठाई जाती हैं। मगर वज़ीफ़ा जारी करने में यह ध्यान रखा जाता है कि इस कार्य से विद्यार्थी में मुफत ख़ोरी की आ़दत पैदा न हो जाये और वह तन–मन से शिक्षा के कार्यों में तल्लीन रहे। इस कारण तमाम वज़ीफ़े एक साल के लिये जारी किये जाते हैं। दूसरे साल में उन को दोबारा आरम्भ किया जाता है। विद्यार्थी अगर किसी भी परीक्षा में असफल होता है तो वज़ीफ़ा बन्द कर दिया जाता है। और जब तक वह नियम के अनुसार नम्बर प्राप्त नहीं कर लेता वज़ीफ़ा जारी नहीं होता। हां हास्टल में ठहरने के लिये जगह और किताबें सभी को दी जाती हैं।

वज़ीफ़ा प्राप्त करने के लिये निम्न शर्तें ज़रूरी हैं – (अ) विद्यार्थी कम से कम नूरूल ईज़ाह हिदायतुन्नह्व (जो दूसरे साल में बढ़ाई जाती है) पढ़ चुका हो। (ब) वर्णित पुस्तकों के इम्तिहा़न में सौ नम्बरों में कम से कम पचास नम्बर प्राप्त कर लिये हों जो सफलता की द्वतीय श्रेणी है। (ज) निर्धन के कारण सहायता चाहता हो।

वज़ीफ़े दो क़िस्म के हैं। (1) खाना (2) नक़द। खाने के प्रबन्ध के लिये मत़बख़ (रसोई) है, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को एक वक़्त में दो तंदूरी रोटियां दी जाती हैं जो 250 ग्राम खुश्क आटे की होती हैं। दोपहर को दाल और शाम को गोश्त दिया जाता है। खाने के अतिरिक्त विभिन्न मात्रा में नक़द वज़ीफ़े भी दिये जाते हैं जो सौ रूपये महाना तक होते हैं। यह दोनों प्रकार के वज़ीफ़े दारुल उ़लूम में इमदाद कहलाते हैं।

जिन विद्यार्थियों की इमदाद जारी होती है उन को साल भर में दो जोड़े कपड़े और दो जोड़े जूते दिये जाते हैं। कमरों में प्रकाश और कपड़ों की धुलाई के लिये महाना वज़ीफ़ा निश्चित है। बीमार विद्यार्थियों के लिये इ़लाज़ करने वाले नियुक्त हैं, दवा मुफत दी जाती है, और खाना परहेज़ी मिलता है। इन सब के अ़लावा दारुल उ़लूम की तमाम सड़कों और रास्तों में प्रकाश, होस्टल में पानी के नल और सर्दी के मौसम में लिहा़फ़ दिये जाते हैं। विद्यार्थी को माली इमदाद मिलती हो या न मिलती हो हर हाल में उस के लिये रहने का प्रबंध मुफत होता है।

पुरस्कार (इनाम)

विद्यार्थियों में लअ़लीमी लगन को प्रोत्साहित करने के लिये उन को

सालाना परीक्षा में सफलता पर पुस्कार के योग्य समझा जाता है। जो विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उघीर्ण होता है उसे विशेष इनाम दिया जाता है। इनाम में विद्यार्थी की योग्यता के आधार पर दरसी व ग़ैर दरसी किताबें दी जाती हैं। दारुल उ़लूम में कुछ दूसरे कामों की तरह आरम्भ ही से पुरस्कार बांटने के नाम से जो जलसा किया जाता है उस में स्थाई लोगों के अ़लावा दूसरे बाहरी लोगों को भी बुलाया जाता है। इस जलसे का मतलब यह होता है कि मुसलमान सामन्य रूप से चन्दा देने वाले विशेष रूप में इस बात का अन्दाज़ह कर सकें कि उन्हों ने अपनी जिस नई नसल को दारुल उ़लूम के सुपुर्द किया था उसके शैक्षिक परिणाम क्या निकले और यह कि क़ौम ने जो रूपये दारुल उ़लूम को दिये हैं उन के उपयोग का दृश्य वह अपनी आंखों से देख लें।

प्रमाण पत्र और सनदें

जो विद्यार्थी दारुल उ़लूम का पाठयक्रम पूरा कर के सालाना परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेते हैं उन को सनद दी जाती है। सनद में प्रत्येक पढ़ी हुई किताब का नाम लिखा जाता है मगर जिस किताब के परीक्षा में फेल हों वह सनद में दाख़िल नहीं की जाती। सनद में उन किताबों के नामों के अ़लावा जिन की परीक्षा दी जा चुकी है विद्यार्थी की शैक्षिक मानसिक योग्यता क़ाबलियत का वर्णन होता है। और इस बात की गवाही दी जाती है कि उसने दारुल उ़लूम में शिक्षा प्राप्त की है। ज्ञान और विषय में निपुणता रखता है। पठन–पाठन और फ़तवा देने का उस को हक़ प्राप्त है, इस के अ़लावा उस के चरित्र चाल–चलन के सम्बन्ध में भी लिखा जाता है। सनद छपी हुई होती है जिस पर मोहतमिम और अध्यपकों के हस्ताक्षर और दारुल उ़लूम की मोहर लगी होती है। कभी कभी विद्यार्थियों को सनद देने के अ़लावा पुरानी दरसगाहों के नियम के अनुसार जलसे में उस्तादों के हाथों से उन के सरों पर पगड़ी बांधी जाती है, जो अ़रबी मदरसों की परिभाषा में 'दस्तारे फ़जीलत' के नाम से पुकारी जाती है।

दारुल उ़लूम देवबन्द की शैक्षिक विशेषतायें

शिक्षा जितना साधारण और छोटा सा शब्द है उतना ही महत्वपूर्ण और आत्मा की गहराइयों को प्रभावित करने वाला है। शिक्षा केवल शब्दों के चिह्न, आवाज़, बोलियों और छोटी बड़ी किताबों का नाम नहीं है, बल्कि एक ऐसी मानसिक और इ़ल्मी तरबियत का नाम है, जिस के द्वारा इन्सान की प्राधतिक शक्ति व गुणों को उभारकर संवारना और सुसंगठित करना है। और मानवीय भावनाओं को अच्छे उद्देश्यों के आधीन लाकर सुसंस्कृत बनाना है ताकि मानवता के लिये लाभदायक परिणाम प्राप्त किये जा सकें। इन्सान को उस की अपनी योग्यताओं का ठीक प्रयोग करना बहुत कठिन है यह जितना कठिन है उतना ही आवश्यक भी।

दूसरे शब्दों में समझये अगर शिक्षा अज्ञात वस्तुओं की जानकारी तक सीमित हो तो असाधारण बात नहीं है, लेकिन अगर इसे कार्य या व्यावहार के आधीन बना दिया जाये तो इस की कठिनाइयां कई गुना बढ़ जाती हैं। यद्यपि शिक्षा की क़दर दुनिया की हर क़ौम करती है लेकिन इ़ल्म (ज्ञान) के सम्बंध में मुसलमानों का जो दृष्टिकोण है वह दूसरी क़ौमों से बिल्कुल भिन्न है। अमुस्लिम शिक्षा इस्लिए प्राप्त करते हैं कि इस के द्वारा दुनिया में शक्ति, बड़ाई और उन्नति प्राप्त करें। इ़ल्म (ज्ञान) को साधन के बजाये उद्देश्य समझा है, खाने कमाने का साधन नहीं समझा, मुसलमानों ने सदैव इ़ल्म को इ़ल्म के लिये सीखा है। उन्होंने इ़ल्म को कभी इस लिये विशेष नहीं किया कि उस के द्वारा खायें कमायेंगे। मुसलमानों के लिये ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है जो धार्मिक लाभ के अतिरिक्ति परलोक में मोक्ष का भी एक साधन है। ह़ज़रत मुह़म्मद सल0 का कथन है कि प्रत्येक मुसलमान पर इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ (अनिवार्य) है।

यह अनिवार्यता अ़मल ही के लिये आवश्यक कही गई है। और प्रत्येक व्यक्ति पर अवश्यकतानुसार आवश्यक बताया गया है। इतिहास बताता है कि कोई क़ौम उस समय तक उन्नति नहीं कर सकती जब तक उस में इ़ल्म व अ़मल की शक्ति उत्पन्न नहीं होती। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिस के द्वारा आत्मिक, चारित्रिक, सभ्यता और सांस्कृतिक उन्नति हो सकती है जो मनुष्य को उत्पन्न करने का उद्देश्य है। ऐसी उन्नति के सम्मुख यह आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी को इसका अवसर दिया जाये कि वह अपनी योग्यताओं को भली प्रकार उजागर कर सके। दूसरे शब्दों में समाज का सबसे पहला कर्तब्य है कि वह तमाम ऐसी सुविधायें पैदा करे जिस से प्रत्येक विद्यार्थी अपने बहतरीन जौहर (गुण) दिखा सके। वास्तव में इ़ल्म से क़ौमें बनती हैं और अज्ञानता से बिगड़ती हैं। इस लिये यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किये जायें। इसलाम ने शिक्षा को समाज के विशेष वर्गों की बपोती से छुटकारा दिला कर मानवता पर इतना बड़ा एह़सान किया है कि इसका अनुमान लगाना कठिन है।

प्रत्येक तरक़्क़ी प्राप्त करने वाली क़ौम की तारीख़ इस बात की गवाह है कि उसकी तरक़्क़ी का राज़ (भेद) उस क़ौम की जनता के शिक्षित होने में छिपा है। यह बात उस समय तक आसान नहीं जब तक शिक्षा का मुफत प्रबंध न हो, वर्तमान शिक्षा पद्धति में धन का बोझा अधिकतर को शिक्षा से वंचित रखता है। शताब्दियों के अनुभव के बाद अंततः इस परिणाम पर पहुंचे कि अ़वाम की शिक्षा मुफ़त होनी चाहिये और जब तक यह तरीक़ा अपनाया नहीं जायेगा शिक्षा का सार्वजनिक होना कठिन है।

पुराने समय के शिक्षा प्रबन्ध में सदैव से इसी उसूल पर कार्य किया गया है। अतः इन मदरसों में शिक्षा का जो तरीक़ा अपनाया गया है उस में शिक्षा पर ख़र्च विद्यार्थी के बजाये मदरसों पर रखा गया है। इस शिक्षा पद्धति पर कोई फ़ीस नहीं रखी गई थी और इतना ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों के लिये पुस्तकों का प्रबन्ध भी मुफ़त होता है और खाना रहना भी मफ्ुत होता है। इस के अ़लावा निर्धन बच्चों को कपड़ा और नक़द वज़ीफ़ा भी दिया जाता है। अ़रबी मदरसों की यह विशेषता है

जिस का उदाहरण दुनियां के किसी शिक्षा पद्धति में नहीं पाया जाता।

इस के अतिरिक्ति अ़रबी मदरसों में शिक्षा प्राप्ति पर भी कोई ऐसी पाबन्दी नहीं की गयी जिस के द्वारा क़ौम के कुछ व्यक्तियों पर पढ़ने–पढ़ाने के द्वार बन्द कर दिये गये हों। बल्कि इनमें प्रत्येक वह व्यक्ति जिस को ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा होती है बिना किसी रूकावट के इ़ल्म ह़ासिल कर सकता है, उ़मर और कार्य की बन्दिश से हमारे मदरसे हमेशः आज़ाद हैं। उन में रगं, नसल, अमीर और ग़रीब उॅच नीच के बीच कोई अन्तर नहीं रखा गया। इसी आधार पर प्रत्येक व्यक्ति के लिये चाहे वह किसी नसल से सम्बन्ध रखता हो और कितना ही ग़रीब हो बिना झिझक उॅची से उॅची शिक्षा प्राप्त कर सकता है। मुसलमानों की शैक्षिक तारीख़ में असंख्य ऐसे विद्वान मिलेंगे जो पारिवारिक आधार पर उॅचे व नीचे कार्यों से सम्बन्ध रखते थे। नीचे काम करने वालों से शिक्षा की पाबन्दी उठा लेना दुनिया ने मुसलमानों ही से सीखा है, जिस चीज़ का सेहरा आज योरूप के सर बांधा जा रहा है यह वास्तव में अ़रबी मदरसों की ही देन है। लेकिन उ़मर की क़ैद को उठा देने का फ़लसफ़ा अभी दुनिया को सीखना है। प्रौढ़ शिक्षा की शकल में उसकी नीव रखी जा रही है, अब वह ज़माना अधिक दूर नहीं लगता जब दुनिया के विश्वविद्यालयों से यह बुराई हटा दी जायेगी।

मुफ़त तअ़लीम (निः शुल्क शिक्षा)

हमारे पुराने शिक्षा के ढंग की यही रिवायत दारुल उ़लूम का तरीक़ा है। यहां भी विद्यार्थियों से फ़ीस नहीं ली जाती ग़रीब और ज़रूरतमन्द विद्यार्थियों को दारुल उ़लूम की ओर से खाना कपड़ा और नक़द वज़ीफ़ा दिया जाता है। पुस्तकें और रहने के लिये कमरा मुफत दिया जाता है, जिस का परिणाम यह है कि दारुल उ़लूम की शिक्षा केवल धनी लोगों के लिये ही विशेष नहीं है बल्कि ग़रीब से ग़रीब वयक्ति भी इस के द्वारा अपने बच्चों को शिक्षा दिला सकता हे। दारुल उ़लूम देवबन्द हिन्दुस्तान में वह पहली संस्था है जो मुफत शिक्षा प्रदान करती है। डेढ शताब्दी से यह प्रोग्राम सफलता पूर्वक चल रहा है।

ग़ैर फ़ासलाती तअ़लीम–आवासीय शिक्षा

समय उन्नति कर के टेक्निकल शिक्षा द्वारा चांद तारों पर पहुंच

गया है और पृथ्वी का सीना चीर कर उस के ख़ज़ाने निकाल लाया है, लेकिन शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य उच्च चरित्र मानवीय गुणों से आज तक वंचित है। दारुल उ़लूम ने अपना शैक्षिक पाठयक्रम इस प्रकार बनाया है कि उस में शिक्षा प्राप्ती के साथ चरित्र का निर्माण और कार्य करने की पवित्रता की ओर पूरी तरह ध्यान दिया गया है। जाहिर कि शिक्षा के साथ–साथ दीक्षा की बात भी विद्यार्थी को उस्ताद भली भांति प्रदान करे, जो अवासीय शिक्षा के रूप में कठिन है। यही कारण है कि दारुल उ़लूम ने फ़ासलाती शिक्षा को अपने पाठयक्रम में कोई स्थान नहीं दिया है। यद्यपि टेक्निकल तरक़्क़ी ने पूरी दुनिया को एक टेबिल पर समेट कर रख दिया है और अधूनि सूचना प्रौद्योगिक कार्यकर्म ने दूरी के विचार को समाप्त कर दिया है, लेकिन इस वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता कि अवासीय शिक्षा या आन–लाइन शिक्षा के द्वारा दुनिया के किसी कोने में बैठ कर वाद विवाद और हर प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना तो आसान है लेकिन इस दशा में शैक्षिक वातावरण की पवित्रता, अध्यपकों की देख भाल तरबियत और नेक संगति के निश्चित हुए बिना व्यक्तित्व का उभार कठिन ही नही बल्कि असम्भव भी है।

अवासयी शिक्षा की यही कमी है कि जिस की बुनयाद पर दारुल उ़लूम ने इस निज़ाम को अपने उद्देश्य के लिये उपयोगी नहीं पाया। लेकिन दीनी कामों में मार्ग दर्शन के लिये उन का द्वार पूरी दुनिया के लिये खोल रखा है। दारुल उ़लूम अपने इस पाठयक्रम में कहां तक सफल है कि आज दुनिया के चप्पे–चप्पे में यहां के विद्वान दीनी ज्ञान प्राप्त करने के साथ–साथ इसलाम की रूह़ानी व अख़लाक़ी कदरों को ग्रहण कर के इसलाम के प्रचार व प्रसार कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। और व्यवहार की पवित्रता पूरी दुनिया के लिये नमूना बने हुए हैं।

शिक्षा की स्वतन्त्रता

अंग्रेज़ी शासन काल में दारुल उ़लूम पहली शिक्षा संस्था है जिस ने स्वतन्त्र शिक्षा पद्धति को चालू किया और राजनैतिक ग़ुलामी के वातावरण में क़ौम की मानसिक आज़ादी को स्थापित रखने के लिये प्रयत्न किया। यद्यपि यह कार्य बहुत कठिन था मगर दारुल उ़लूम ने

इस पर चलकर इस कठिनाई को सरल बना दिया। दारुल उ़लूम ने ब्रिटिश सरकार के प्रयत्न के बावजूद कभी उसकी सहायता स्वीकार नहीं की इस लिये वह बहुत से बन्धनों से मुक्त रहा है जो सरकारी आर्थिक सहायता के साथ–साथ अनिवार्य हैं। कुछ लोगों की ओर से कहा जाता है कि जब सरकार दारुल उ़लूम को भारी रक़म की सहायता देने को तैयार थी तो उस को स्वीकार करने से इनकार करना ठीक नहीं था। क़ौम चाहे कितनी ही दानशीलता दिखाये मगर फिर भी सरकार की सहायता का मुक़ाबला नहीं कर सकती। उल लोगों की दृष्टि सम्भवतः इस बात पर नहीं गई कि अ़रबी मदरसों को सरकारी सहायता से इस लिये स्वतन्त्र रखना ज़रूरी है कि सरकार चाहे मुसलमानों की ही क्यों न हो जब तक ख़ालिस इस्लामी ढंग पर ह़कूमत न हो उस की सियासत बेलाग और बेदाग़ नहीं हो सकती और अ़रबी मदरसों के लिये ऐसी शिक्षा चाहिए जो हर प्रकार के बाहरी प्रभाव से स्वतन्त्र हो। दारुल उ़लूम देवबन्द केवल मुस्लिम जनता के भरोसे पर दुनिया की सेवा में लगा रहा है। तथा रात दिन की कठिनाइयों के बावजूद अपनी पुरानी शान और रिवायात के साथ स्थिर है।

शिक्षा का उद्देश्य

आज हमारी क़ौमी बदकिस्मती (अभागापन) से शिक्षा का उद्देश्य यह हो कर रह गया है कि उस के द्वारा कोई अच्छी लाभदायक नौकरी प्राप्त कर के अधिक से अधिक धन कमाया जाये। यानी शिक्षा का उद्देश्य ही आरम्भ से बदल ड़ाला गया है। हालांकि शिक्षा की महानता उद्देश्य बहुत उँचा होना चाहिए। निसंदेह सांसारिक ज्ञान और हुनर इस लिये प्राप्त किये जा सकते हैं कि उन के द्वारा सांसारिक उन्नति प्राप्त की जा सके लेकिन अगर इस उद्देश्य को केवल अपने स्वयं के लाभ तक सीमित कर दिया जाये और अपने ही लाभ को सामने रखा जाये तो यह स्वयं स्वार्थ है। इ़ल्म जैसी मूल्यवान वस्तु को केवल अपने स्वार्थ पर ख़र्च करना ज्ञान की महत्व को न पहचानना है। दुनियावी शिक्षा को प्राप्त करने का उद्देश्य यह भी होना चाहिएकि उस के द्वारा पूरी क़ौम के सरमाये को तरक़्क़ी दी जा सके और केवल अपने स्वार्थ का साधन न बन कर मुल्क और क़ौम की तरक़्क़ी का साधन बन सके।

अ़रबी मदरसों के विद्यार्थीयों के सामने शिक्षा प्राप्ति का उद्देश्य अल्लाह तआ़ला की प्रसन्नता और उसकी सृष्टि की भलाई करना है। शिष्य गुरू को गुरू ही समझते हैं। उस्तादी और शागिर्दी के पुरातन मूल्यों का पूरी तरह़ पालन करते हैं। शिष्य अपने गुरू का वैसा ही अदब करते हैं जैसे अपने मां बाप का। उस्ताद की सेवा को प्रत्येक विद्यार्थी अपना सौभाग्य समझता है।

इस्लामी इतिहास की यह सुनहरी घटना याद रखने योग्य है कि बग़दाद में जब मदरसा निज़ामिया स्थापित हुआ और उसके उस्ताद और विद्यार्थियों के लिये प्रतिमाह खूब अच्छे वेतन नियुक्त हुए और सरकार की ओर से हर प्रकार का आराम प्राप्त हुआ तो बुख़ारा के विद्वानों ने शिक्षा के ज़वाल (अवन्नति) के मातम की मजलिस मनाई, और इस पर अफ़सोस मनाया कि अब इ़ल्म अ़मल के लिये नहीं बल्कि सुख सुवीधा प्राप्त करने के लिये हासिल किया जायेगा। ज़ाहिर है कि जिस मनुष्य के सामने इ़ल्म का यह उच्च उद्देश्य होगा वह आधूनिक संस्थाओं के बजाए दारुम उ़लूम का रुख़ क्यों करेगा? जिस की सनद की क़ीमत ह़कूमत की दृष्टि में कुछ भी नहीं।

एक बार एक अंग्रेज़ राज्यपाल जेम्स मिस्टन ने दारुल उ़लूम का निरीक्षण किया उस समय बाहर के एक विद्यार्थी से प्रश्न किया था कि इतनी दूर से तुम्हारे यहां आने का उद्देश्य क्या है? विद्यार्थी ने स्पष्ठ उत्तर दिया था मैं यहां इस लिये पढ़ने आया हूं ताकि वापस जा कर अपने देश के लोगों की दीनी ख़िदमत कर सकूं।

दारुल उ़लूम के पाठयक्रम से अन्दाज़ह किया जा सकता है कि वह सरकारी परीक्षाओं मोलवी, फ़ाज़िल आदि के स्तर से कहीं अधिक उॅचा है। इस लिये अगर दारुल उ़लूम चाहता तो हुकूमत से आसानी के साथ अपनी सनद को मोलवी फ़ाज़िल के बराबर तसलीम करा लेता मगर उसने अपनी सनद को सरकारी ह़कूमतों की मुलाज़मत के लिये स्वीकृति नहीं ली है, और इस बात को अधिक उचित समझा कि वह विद्यार्थियों में ऐसी शैक्षिक योग्यता उतपन्न करने की कोशिश करें कि लोग उस विद्यार्थी उस की सनद को देखते ही यह अनुमान लगालें कि यह कोई काम की चीज़ है और व्यक्ति दीन के जिस काम को अपने ज़िम्मे लेगा उसको क़ाबलियत और प्रसन्नता से पूरा करेगा।

आत्मिक और चारित्रिक शिक्षा

दारुल उ़लूम के पाठयक्रम में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि उस के द्वारा विद्यार्थी इसलाम की आत्मिक और चारित्रिक मूल्यों के साथ–साथ इसलामी उ़लूम (ज्ञान) में भी पूर्ण रूप से दक्ष है, और मिल्लत की विनम्रता पूर्वक ज़िम्मेदारियों को संभालने के योग्य है। दारुल उ़लूम में विद्यार्थियों को यह बताने का प्रयत्न किया जाता है कि उन की शिक्षा का उद्देश्य डिग्री प्राप्त करना नहीं है बल्कि यह एक विशुद्ध दीनी तअ़लीम है।

भारत वर्ष के सियासी और भूगोलिक वातावरण का तक़ाज़ह है कि मुसलमानों में एक ऐसी जमाअ़त मौजूद रहनी चाहिए जो अल्लाह के कलमें और ह़ज़रत मुह़म्मद सल0 की सुन्नत को जीवित रखने के लिये सदैव तत्पर रहे। अल्लाह की कृपा है कि दारुल उ़लूम अपने इस तअ़लीमी मक़सद (उद्देश्य) में कामयाब है। इस शिक्षा संस्था से हज़ारों की संख्या में ऐसे विद्वान, प्रचारक, लेखक, नेतागण निकले हैं जिन्हों ने दारुल उ़लूम के इस उद्देश्य से कभी मुहं नहीं मोड़ा है।

दारुल उ़लूम देवबन्द अपने पाठयक्रम के विकास और सुन्नत के मानने और ज्ञान में पूर्णता प्राप्ति की बिना पर उपमहद्वीप में अकेली शिक्षा संस्था का स्थान रखता है, विशेष रूप में ह़दीस की शिक्षा में एक अद्वितीय विधा का ह़ामिल है। दारुल उ़लूम देवबन्द की इस विशेषता ने इसे दूसरी तमाम संस्थाओं से उॅचा बना दिया है। इस के लिये दारुल ह़दीस में प्रति वर्ष आठसौ से अधिक ह़दीस पढ़ने वाले विद्यार्थी अध्यन करते हैं जो दुनियां के विभिन्न भागों से ह़दीस की शिक्षा प्राप्त करने यहॉ आते हैं। ह़दीस पढ़ने वाले विद्यार्थियों में एक बड़ी संख्य ऐसे लोगों की भी है जो दूसरे मदरसों से शिक्षा पूरी करके आते हैं। क्योंकि दारुल उ़लूम देवबन्द हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, ब्रमा, बंगलादेश और अफ़गानिस्तान आदि मुल्कों के दीनी मदरसों की सरबराही करता है और बहुत से मदरसे पाठयक्रम आंतरिक प्रबन्ध में दारुल उ़लूम देवबन्द का अनुसरण करते हैं।

दारुल उ़लूम को सरकारी सहायता और हुकूमत के हस्तक्षेप से बिल्कुल अलग और आज़ाद रखा गया है। ब्रिटिश सरकार की ओर से

शिक्षा दीक्षा का जो प्रबन्ध उस समय में जारी रखा गया था वह न केवल यह कि इसलामी दृष्टिकोण और विश्वास से कोई मुनासबत नहीं रखता था बल्कि मुसलमानों के लिये हानिकारक था। अगर उस को स्वीकार कर लिया जाता तो हमारी वर्तमान पीढ़ी केवल इतना ही नहीं कि इसलाम को भूल जाती बल्कि आश्चर्य नहीं कि वह इसलाम से बदल जाते और बाग़ी हो जाते। दारुल उ़लूम के बड़ों ने समय होते ही इस खतरे का एह़सास किया और सियासी ग़ुलामी के बावजूद मानसिक आज़ादी को क़ायम रखने के लिये पुरानी शिक्षा पद्धति की आरम्भ से नीव रखी, ताकि इस पाठयक्रम से पढ़ने वाले विद्यार्थी एक मोमिन की हैसियत से ज़िन्दगी के अमली मैदान में क़दम रख सकें।

दारुल उ़लूम देवबन्द का पाठयक्रम

वर्तमान समय में पाठयक्रम चार स्तरों पर विभाजित है, 1. आरम्भिक, 2. मुतवस्सित (मध्यम) 3. आ़ला (उच्च) 4. तकमील (पूर्णता)। तकमील (पूर्णता) लाज़मी नहीं, अगर विद्यार्थी का किसी टॉपिक या विषय में महारत प्राप्त करना उद्देश्य हो तो वह तकमील में प्रवेश लेकर आगे अपनी शिक्षा जारी रख सकता है।

दारुल उ़लूम का पाठयक्रम इस प्रकार है:

प्रथम वर्ष

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	सीरत	सीरत ख़ातिमुल अम्बिया (ह़जरत मौलाना मुह़म्मद शफ़ी साह़ब)। इम्ला व सुलेख।
2	सर्फ़	मीज़ान मुनशइ़ब (फ़ारसी उर्दू) पंज गंज के बाद।
3	नह़व	नह़वमीर (फ़ारसी या उर्दू) शरह़ मिअते आ़मिल (प्रत्येक वाक्य की तरकीब अलग–अलग)
4–5	तमरीन अ़रबी	मिफ़्ताहुल अ़रबियह आधा भाग इस के बाद अल–क़िरातुल वाज़िह़ा प्रथम भाग (तह़रीरी मश्क़ के साथ)
6	तजवीद	पारह अ़म हि़फ़्ज सही़ माख़ारिज के साथ

दूसरा साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	नह़व	हिदायतुन्नह़व मुकम्मल, काफ़या, बह़स फ़ेअ़्ल व ह़रफ़ के बाद
2	सर्फ़	इ़ल्मुस्सीग़ह (उर्दू या फ़ारसी) फुसूले अकबरी (ख़ासियात)
3	तमरीन अ़रबी	अल क़िरातुल वाज़ि़ह़ा दोम (तमरीन के साथ) नफ़्ह़तुल अ़रब के बाद– मुह़र्रम तक समाप्त।

4	फ़िक़ह	नूरूल ईज़ाह़ मुकम्मल क़ुदूरी किताबुल ह़ज के बाद।
5	मंतिक़	आसान मंतिक़ मिक़ात के बाद।
6	तजवीद, सुलेख	जमालुल क़ुरआन अभ्यास पारह अ़म, सुलेख

तीसरा साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	तर्जुमा क़ुरआन	तर्जमा क़ुरआन (सूरह क़ाफ़ से अन्त तक पहले पारह अ़म इस के बाद सूरह क़ाफ़ से पढ़ाया जायेगा)
2	फ़िक़ह	क़ुदूरी किताबुल बुयू से अन्त तक
3	नह़व	शरह़ शुजूरुज़्ज़हब
4	अ़रबी अदब व ह़दीस	नफ़ह़तुल अ़रब ख़त्म तक। मिश्कातुल आसार मुकम्मल।
5	तमरीन अ़रबी	अल क़िरातुल वाज़िह़ा सौम (मुकम्मल तमरीन के साथ) इस के बाद तअ़लीमुल मुतअ़ल्लिम (मुकम्मल)।
6	इसलामी अख़लाक़	अल किरातुल वाज़िह़ा सौम (सप्ताह में चार दिन और तअ़लीमुल मुतअ़ल्लिम दो दिन)

चौथा साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	तर्जुमा	तर्जुमा क़ुरआन (सूरह यूसुफ़ से सूरह क़ाफ़ तक)
2	फ़िकह	शरह़ विक़ाया (जिल्दे अव्वल मुकम्मल दूसरी जिल्द किताबुल इ़ताक़ तक)
3	बलागत व ह़दीस	दुरूसुल बलाग़ह अल–फियतुल ह़दीस के बाद फिर अबवाबुन्न निकाह़ किताब की समाप्ति तक।
4	उसूले फ़िक़ह	अ़रबी रिसालह तह़सीलुल उसूल, इस के बाद उसूलुश्शाशी मुकम्मल।
5	मंतिक़	क़ुत़बी मुकम्मल
6	तारीख व फ़ुनून असरिया	साल के निस्फ़ अव्वल में ख़िलाफ़त बनी उमैयह, ख़िलाफ़त अ़ब्बासिया, ख़िलाफ़त तुर्किया (इन्तज़ामुल्लाह शहाबी) साल निस्फ़ दोम में मबादी इल्म मदनियत, संसार व अ़रब का भूगोल।

अ	तजवीद	पांच पारों का इजरा और उनकी परीक्षा।

पांचवाँ साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	फ़िक़्ह	हिदायह जिल्दे अव्वल मुकम्मल
2	तर्जुमा–ए–कुरआन	आरम्भ से सूरह हूद की समाप्ति तक
3	मआ़नी	मुख़्तसरूल मआ़नी, अव्वल विषय मुकम्मल, इस के बाद तलख़ीस फ़न्ने सानी व सालिस
4	उसूले फ़िक़्ह	नूरूल अनवार किताबुल्लाह के ख़त्म तक, मतन अलमनार सुन्नह से समाप्ति तक।
5	अ़रबी अदब	मक़ामात (15 मकाले)
6	मंतिक़ व अ़क़ाइद	सुल्लमुल उ़लूम ता शर्तियात, इस के बाद अ़क़ी दतुत्तहावी मुकम्मल ,
अ	तजवीद	तारीख सलातीन हिन्द, सुलतान मह़मूद ग़ज़नवी तक (इंतज़ामुल्लाह शहाबी)
आ	मुताला	पांच पारों का इजरा और उनका इम्तिह़ान

छटा साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1–2	तफ़्सीर	तफ़्सीर जलालैन मुकम्मल
3	फ़िक़्ह	हिदायह जिल्दे सानी मुकम्मल (किताबुल इ़ताक़ भी)
4	उसूले तफ़्सीर व फ़िक़्ह	अल फ़वजुल कबीर हुसामी मुकम्मल के बाद।
5	अ़रबी अदब	क़साइद मुनतख़बह मिन दीवाने मुतनब्बीह, दीवाने ह़मासा बाबे अदब मुकम्मल।
6	फ़लसफ़ा	मबादिउल फ़लसफ़ा मेबज़ी के बाद
अ	तजवीद	पांच पारों का इजरा
आ	मुताला	असह़हुस्सियर

सातवाँ साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1–2	ह़दीस शरीफ़	मिश्कातुल मसाबीह़ मअ़ शरह़ नुख़बा व मुकदमा शेख़ अब्दुल ह़क़ मुहद्दिस देहलवी
3–6	फ़िक़ह	हिदायह आख़िरैन
4–5	अ़क़ाइद फ़राइज़	शरह़ अ़क़ाइद मुकम्मल सिराजी बाब जविल अरहाम तक
5	अ़रबी अदब	क़साइद मुनतख़बह मिन दीवाने मुतनब्बी, दीवाने ह़मासा बाबे अदब मुकम्मल
अ	तजवीद	पांच पारों का इजरा
आ	मुताला	तारीख़ अल–मजाहिबिल इसलामिया उर्दू (शेख़ अबू ज़रह मिश्री)

आठवां साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	ह़दीस शरीफ़	बुख़ारी शरीफ़
2	ह़दीस शरीफ़	मुस्लिम शरीफ़
3	ह़दीस शरीफ़	तिरमिज़ी शरीफ़
4	ह़दीस शरीफ़	अबू दाऊद शरीफ़
5	ह़दीस शरीफ़	नसई शरीफ़
6	ह़दीस शरीफ़	इब्न माजा शरीफ़
7	ह़दीस शरीफ़	त़ह़ावी शरीफ़
8	ह़दीस शरीफ़	शमाइले तिरमीज़ी
9	ह़दीस शरीफ़	मुअत्ता इमाम मुह़म्मद
10	ह़दीस शरीफ़	मुअत्ता इमाम मालिक
अ	तजवीद	तजवीद व मश्क़

तकमीले तफ़्सीर

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	तफ़्सीर	तफ़्सीर इब्ने कसीर सूरह साफ़्फ़ात से सूरह नजम तक

2	तफ़्सीर	तफ़्सीर इब्ने कसीर सूरह अल–क़मर से ख़ात्मे कुरआन तक
3	तफ़्सीर	बेज़ावी आले इ़मरान से सूरह आ़राफ़ तक
4	तफ़्सीर	बेज़ावी सूरह बक़रह
5	उसूले तफ़्सीर	मनाहिनुल इ़रफ़ान (मबाहि़स मुनतख़बह) अ़रबी पुस्तकें सबीलुर्रशाद

तकमीले उ़लूम

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	हिकमते शरई़यह	हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ह
2	इ़ल्मे कलाम	मसामरह
3	उसूले ह़दीस	मुक़दमा इब्ने सलाह़
4	फ़िक़्ह	अल–अश्बाह वन्नाज़ाइर
5	उसूले तफ़्सीर	मनाहिनुल इ़रफ़ान (मबाहि़स मुनतख़बह) अ़रबी पुस्तकें सबीलुर्रशाद

तकमीले फ़िक़्ह (इफ़्ता)

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	फ़रायज़	सिराजी
2	इफ़्ता	उकूद–ए–रस्मुल मुफ़्ती
3	क़वायद	अल–अश्बाह वन्नाज़ाइर, क़वायदुल फ़िक़्ह
4	फ़िक़्ह	दुर्रे मुख़्तार
5	फ़तावा नवीसी	फ़तावा लिखने की मश्क़

तकमीले अदब अ़रबी

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	नस्र	असालीबुल इन्शा
2	नस्र	अन्नसरूल जदीद
3	नज़्म	दीवान–ए–हमासा, सबआ़ मुअ़ल्लक़ा 3/मुअ़ल्लक़ा
4	तारीख़	तारीख़ुल अदब अ़रबी (ज़ैयात)
5	बलाग़त	अलबलागतुल वाज़िहा

6	इन्शा	इन्शा–ए–अ़रबी
ख़	मुतालआ़	हयाती (अह़मद अमीन) अलअय्याम (ताहा हुसैन) इ़बरात (मनफ़लूती) अ़बक़रियात (महमूद अक्क़ाद)

डिप्लोमा इन इंग्लिश लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर

(शोबा अंग्रेज़ी ज़बान व अदब)

पहला साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	ग्रामर	इंग्लिश ग्रामर
2	टैक्स्ट बुक	एन.सी.ई.आर.टी सीरीज़ (भाग प्रथम से आठ तक)
3	कम्पोजी़शन	एस्से व कम्पोज़िशन
4	तर्जुमा निगारी	इंग्लिश–उर्दू व उर्दू–इंग्लिश तर्जुमा
5	स्पोकन इंग्लिश	इंग्लिश में बोलचाल व तक़रीर का अभ्यास
6	ट्यूटोरियल	होम वर्क की जांच व तआ़वुन

दूसरा साल

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	टैक्स्ट बुक	एन.सी.ई.आर.टी. सीरीज़ (हिस्सा नौ से बी.ए. तक)
2	कम्पोज़िशन	इन्शा और मज़मून निगारी
3	तर्जुमा निगारी	इंग्लिश–उर्दू व उर्दू–इंग्लिश तर्जुमा और अ़रबी–इंग्लिश व इंग्लिश–अ़रबी तर्जुमा (सप्ताह में तीन–तीन दिन)
4	ग्रामर	एडवान्स्ड इंग्लिश ग्रामर
5	दअ़वह	दअ़वह कोर्स
6	स्पोकन इंग्लिश	इंग्लिश में बोलचाल और तक़रीर की मश्क़
अ	कम्प्यूटर/इंटरनेट	शोबा कम्प्यूटर के ज़रिये कम्प्यूटर व इंटरनेट की ट्रेनिंग

डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन (शोबा कम्प्यूटर)

घंटा	विषय	पुस्तक का नाम
1	बेसिक	बेसिक कम्प्यूटर, विन्डोज़, इंस्टालेशन

2	टाईपिंग	इन–पेज, पेज मेकर
3	डिज़ाईनिंग	कोरल ड्रॉ, फ़ोटो शॉप
4	एम.एस. ऑफ़िस	एम.एस. वर्ड, एम.एस. एक्सल, एम.एस. पावर प्वाइन्ट
5	इंटरनेट	इंटरनेट ट्रेनिंग
6	इंग्लिश	जनरल इंग्लिश

(6)

दारुल उ़लूम देवबन्द के कारनामे

1. दारुल उ़लूम देवबन्द के उज्जवल कारनामे
2. अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक और शैक्षिक आन्दोलन
3. दारुल उ़लूम की प्रचार व सुधारात्मक सेवायें
4. दारुल उ़लूम की रूपरेखा पर मदरसों की स्थापना
5. दारुल उ़लूम के विद्वानों की रचनात्मक सेवायें
6. दारुल उ़लूम और उर्दू सहित्य की ख़िदमत
7. स्वतन्त्रता संग्राम में दारुल उ़लूम का योगदान

दारुल उ़लूम देवबन्द के उज्जवल कारनामे

दारुल उ़लूम देवबन्द ने शिक्षा संस्था के नाते जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिये ऐसे विद्वान पैदा किये हैं जिन्हों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में काम किया है। दारुल उ़लूम देवबन्द ने अपने विद्वानों का एक ऐसा गुलदस्ता तैयार किया है जिस में रंग–बिरंगे फूल अपनी सुगंध से प्रसन्नता का वातावरण उतपन्न कर रहे हैं। इस वास्तविकता से कौन परिचित नहीं है कि ज्ञान के इच्छुक ही किसी क़ौम या राष्ट्र की वास्तविक शक्ति होते हैं। मुसलमानों में होनहार नौजवानों की कमी नहीं है, लेकिन आज ऐसे असंख्य नौजवान और बच्चे मौजूद हैं, जो शिक्षा का शौक़ तो रखते हैं मगर उन के मार्ग में आर्थिक परेशानियां रूकावट हैं। वे चलना चाहते हैं मगर चल नहीं सकते, उभरना चाहते हैं मगर उभर नहीं सकते। इस मजबूरी को अनुभव करके दारुल उ़लूम देवबन्द और उसके विद्वानों द्वारा स्थापित किये गये तमाम दीनी मदरसों में विद्यार्थियों के लिये मुफ़्त शिक्षा के साथ–साथ खाने–पीने और रहने का भी मुफ़्त प्रबन्ध किया।

दारुल उ़लूम देवबन्द ने ज्ञान के इच्छुकों के लिये रास्ता साफ़ कर दिया है। इन तमाम रुकावटों को समाप्त कर दिया है जो शिक्षा प्रप्ति में बाधक थीं। अतः आज तक दीनी मदरसों में शिक्षा पाने वाले निःसंदेह सफ़ल जीवन व्यतीत कर रहे हैं, और उप महाद्वीप में प्रतिदिन उनकी ज़रूरत बढ़ रही है। मदरसों से पढ़े लिखे व्यक्तियों का भविष्य इस लिहाज़ से भी संतोष जनक है कि शिक्षा प्राप्त कर लेने के पश्चात वे जीवन की किसी भी लाइन को अपनायें उसमें सफल रहते हैं और बेरोज़गारी की शिकायत इनके सम्बन्ध में बहुत कम ही सुनने में आती है जबकि इस समय सरकारी शिक्षा पाने वालों में बेरोज़गारी की शिकायत

आम है।

अपनी एक सौ पचास साल की तारीख़ में दारुल उ़लूम ने हिन्दुस्तानी मुसलमानों को जहां एक ओर सामाजी जीवन का उन्नतिशील दृष्टिकोण दिया है, तो वहीं दूसरी ओर उन को सूझबूझ का संतुलन भी दिया है। आज मुसलमानों का जो वर्ग इसलामी दृष्टिकोण को पूर्ण रूप से अपनाये हैं इस्लामी सोच का संतोष भरा आकर्षण और सही इस्लामी जीवन अपनाये हुए हैं, वे दारुल उ़लूम का इतिहास और शिक्षा का प्रयत्न और परिणाम है। धार्मिक शिक्षा होने के बरख़िलाफ़ यहां का वातावरण रूढ़िवादी या दक़ियानूसी नहीं रहा है। इसमें कोई शंका नहीं कि दारुल उ़लूम एक ऐसी शिक्षा संस्था है जो क़दीम व जदीद (नये–पुराने) के हसीन संगम पर क़ायम है और जिस का 150 साला शानदार इतिहास है।

दारुल उ़लूम की स्थापना अचानक ही नहीं हो गयी। इसकी स्थापना में भाग लेने वाले हज़रात केवल प्रत्यक्ष ज्ञान ही से वास्ता नही रखते थे बल्कि उनके दिल अल्लाह की तजल्लियों से प्रकाशमान भी थे जिन को विशेष आत्मज्ञान के द्वारा दारुल उ़लूम की स्थापना पर नियुक्त किया गया था। दारुल उ़लूम के पांचवें मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब का कथन है। "सांसारिक कारणों से इस मदरसे को जो कुछ प्रसिद्धि, सम्मान, उन्नति प्राप्त हुई है यह केवल अल्लाह का उपहार और विशेष अहसान इस मदरसे पर है। सदैव से इस मदरसे को अल्लाह के बन्दों की संरक्षता नसीब रही जिन की तवज्जो बातनी से (आयात्मिक लगाव) से दिन प्रतिदिन इस मदरसे ने हर प्रकार की तरक़्क़ी प्राप्त की। सदस्यों में सदभावना, अध्यापकों में एकता प्रत्येक कार्य में भलाई इन्ही हज़रात के लगाव की अलामत है।" (याददाश्त बनाम अराकीन शूरा दिनांक 26 ज़ुलहिज्जा 1315 हिजरी इजलास मजलिस–ए–शूरा)

इस अवसर पर यह जानना बहुत आवश्यक है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों और दूसरे देशों में दारुल उ़लूम की शिक्षा के क्या परिणाम निकल रहे हैं क्योंकि किसी कार्य की सफलता का आंकड़ा वास्तव में उस के परिणाम से लगता है इस सम्बन्ध में एक समय पूर्व लाहौर के प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्र 'ज़मींदार' ने दारुल उ़लूम देवबन्द के सम्बन्ध

में लिखा था "इस समय हिन्दुस्तान की चारों दिशाओं के बीच धार्मिक ज्ञान की जानकार जितनी हस्तियां दिखाई देती हैं उनमें बड़ा भाग इसी ज्ञान के दरिया (दारुल उ़लूम) से शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं। हिन्दुस्तान के बड़े–बड़े उलमा ने इसी मदरसे में शिक्षा प्राप्त की है। वास्तव में शैक्षिक सेवा में हिन्दुस्तान की कोई शिक्षा संस्था इसका मुक़ाबला नहीं करती। यही नहीं बल्कि बाहरी मुल्कों में भी एक दो को छोड़ कर ऐसा दारुल उ़लूम नहीं जो इससे टक्कर ले सके और जिस न दीन इस्लाम की इतनी सेवा की हो।" (दैनिक ज़मीदार लाहौर दिनांक 24 जून 1923 ई0 संदर्भ तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 425 खण्ड एक)

वास्तविकता यह है कि मुसलमानों की सामूहिक ज़िन्दगी के इतिहास में दारुल उ़लूम की शैक्षिक और तबलीग़ी संघर्ष का बड़ा हिस्सा है। दारुल उ़लूम की लम्बी ज़िन्दगी में कितने ही तूफ़ान आये और राजनीति में कितने ही इन्क़लाब आये मगर यह संस्था जिन उद्देश्यों को लेकर चली थी बड़ी दृढ़ता और साबित क़दमी के साथ उन को पूरा करने में लगी रही। फ़िक्र व ख़्याल के इस उथल–पुथल और फ़ितना फैलाने वाले आन्दोलनों के दौर में अगर साधारण रूप से अ़रबी मदरसे और विशेष रूप से दारुल उ़लूम जैसी संस्था का अस्तित्व न होता तो कहा जा सकता कि आज मुसलमान किसी बड़े भंवर में फंसे होते।

प्रचार, प्रसार, शिक्षा–दीक्षा और समाज सुधार का कोई कोना ऐसा मैदान नहीं जहां दारुल उ़लूम के पढ़े–लिखे कार्यरत न हों और इस्लामी समाज के सुधारने में उन्हों ने अपना जीवन न लगाया हो। समाज सुधार के बड़े–बड़े जलसों में जो रौनक़ है वह दारुल उ़लूम के उच्च कोटि के उलमा के कारण ही है। बड़े–बड़े इसलामी मदरसों की मसनद तदरीस की ज़ीनत आज यही लोग हैं। ख़्वाजा ख़लील अह़मद शाह लिखते है "दारुल उ़लूम देवबन्द जो हिन्दुस्तान ही में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में इसलामी शिक्षा का केन्द्र है और जामिया अज़हर के बाद दुनिया में इसका एक विशेष स्थान है। यही मदरसा है जिस न हिन्दुस्तान में इस्लामी शिक्षा के दरिया बहाये हिन्दुस्तान के कोने–कोने में यहां से पढ़े हुए दीन की शिक्षा और इस्लाम की सेवा में लगे हुए हैं। दारुल उ़लूम देवबन्द ने दीन और दीन की शिक्षा की जो सेवा की है वह सूर्य की

भांति प्रकाशमान है। हां, कोई अन्तरात्मा का अंधा हटधर्म और सचाई का शत्रु अपनी आंखे बन्द करे तो इसका इलाज नहीं" (तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 1:452)

इसलामी दुनिया के बहुत कम देश ऐसे हैं जहां से दीन की इच्छा रखने वाले अपनी संतुष्टि के लिये इस दारुल उ़लूम में आये न हों। अतः पिछली एक शताब्दी में हज़ारों विद्यार्थी इस शिक्षा संस्था से शिक्षा प्रप्त करके ज्ञान को फैलाने का काम कर रहे हैं। श्रीलंका, जावा, सुमात्रा, मलाया, ब्रमा, चीन, मंगोलिया, तातार, क़ाजान, साउथ अफरीक़ा, बुख़ारा, समरक़न्द, अफग़ानिस्तान, मिस्र, शाम, यमन, इराक़, यहां तक कि मदीना मुनव्वरा और मक्का मुअज्जमा से भी विद्यार्थी यहां पढ़ने के लिये आये। यह कुछ कम सम्मान है कि वह देश जो नबुव्वत के ज्ञान से सीधे रूप में कभी लाभान्वित न हुआ हो वह तमाम इसलामी दुनिया की दीनी शिक्षा का केन्द्र बन जाये, यहां तक कि हरमैन शरीफैन (मक्का–मदीना) में भी इसी ज्ञान के सूर्य की किरणें प्रकाश फैला रही हैं। यह सौभाग्य भी किसी दूसरी शिक्षण संस्था के भाग्य में नही आया कि इस के विद्यार्थी ने मदीना मुनव्वरा और विशेष रूप से मस्जिद नबवी में अध्यापन कार्य किया हो। ह़ज़रत मौलाना ख़लील अह़मद सहारनपुरी "बज़लुल मजहूल" के लेखक, ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी ने वर्षों तक मदीना मुनव्वरा ही की मस्जिद में ह़दीस नबवी को पढ़ाया और ज्ञान के दरिया बहाये जिस से अ़रब के अतिरिक्त, मिस्र, शाम और इराक़ के विद्यार्थीयों ने लाभ प्राप्त किया और ज्ञान की प्यास बुझाई। ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी के बड़े भाई ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद ने जो दारुउ़लूम से पढ़े थे, मदीना मुनव्वरा में मदरसतु–ल–शरिया के नाम से एक मदरसा जारी किया जिस से मदीना मुनव्वरह के लोग लाभ उठा रहे हैं। मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ने मक्का मुकर्रमा में मदरसा सौलतिया स्थापित किया। यह मदरसा भी दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर आधारित है। इस प्रकार मक्का मुकर्रमा ही में दूसरा मदरसा मौलाना इसह़ाक़ अमृतसरी ने स्थापित किया जो दारुल उ़लूम देवबन्द के पढ़े लिखे थे। (तारीखे दारुल उ़लूम 1:456)

अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक और शैक्षिक आन्दोलन

1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम विफल हो जाने और मुग़लिया सल्तनत के समाप्त होने के बाद जब अंग्रेज़ों ने अपने राजनीतिक लाभ को सम्मुख रख कर इस्लामी शिक्षा की पुरानी दर्सगाहों (मदरसों) को एक तरफ़ा समाप्त कर दिया था उस समय न केवल इस्लामी सभ्यता और संस्कृति को जीवित रखने के लिये बल्कि मुसलमानों के दीन व ईमान की रक्षा के लिये आवश्यकता थी कि उच्च कोटि की बुनयादों पर प्रथम श्रेणी की दर्सगाह (मदरसा) स्थापित की जाये, जो हिन्दुस्तान के मुसलमानों को नास्तिकता और बेदीनी के फ़ितने से सुरक्षित रख सके। उस वक़्त इस्लाम की सुरक्षा की तमाम ज़िम्मेदारी उलमा पर थी। अल्लाह की मेहरबानी से उलमा ने किसी भी समय अपना कर्तव्य निभाने में कोई कमी नहीं छोड़ी और दारुल उ़लूम देवबन्द के द्वारा तमाम आशायें पूरी हुईं। बहुत ही सीमित समय में दारुल उ़लूम की प्रसिद्धि दूर दूर तक पहुंच गई। जिस से यह न केवल हिन्दुस्तान बल्कि अफ़ग़ानिस्तान और मध्य ऐशिया, बर्मा, इण्डोनेशिया, मलेशिया, तिब्बत, श्रीलंका और पूर्व व दक्षिण अफ्रीक़ी देशों के मुसलमानों की एक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान बन गई, जिस में इस वक़्त भी भारत व भारत से बाहर के लगभग चार हज़ार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं।

दारुल उ़लूम देवबन्द केवल एक मदरसा ही नहीं बल्कि वास्तव में एक आन्दोलन है, एक संपूर्ण विचारधारा है, जिस से हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंग्लादेश के अतिरिक्त पूरे एशिया और दक्षिण पूर्वी अफ़्रीक़ा आदि मुल्कों के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उप महाद्वीप में जितने भी मदरसें हैं उन के तमाम अध्यापक लगभग किसी न किसी रूप में दारुल उ़लूम ही से पढ़े हुए हैं और प्रतिवर्ष सैकडों विद्यार्थी यहां से

शिक्षा प्राप्त करके, अध्यापन, प्रचार–प्रसार और लेखन कार्य के द्वारा दीन के प्रसार का कर्तव्य को पूरा करते हैं और अब अल्लाह की कृपा से यूरोप, ब्रिटेन और अमेरिका तक यह सिलसिला फैल चुका है।

दारुल उ़लूम देवबन्द ने उपमहाद्वीप के मुसलमानों की दीनी ज़िन्दगी में उन को एक श्रेष्ट जीवन पर पहुंचाने का बड़ा कारनामा अन्जाम दिया है। यह न केवल अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है बल्कि मानसिक उन्नति, सभ्यता और सामाजिक हौसला–मन्दियों का ऐसा केन्द्र भी है जिस की ठीक शिक्षा, उच्च चरित्र और नेक नियती पर मुसलमानों को सदैव भरोसा और अभिमान रहा है। जिस प्रकार अ़रबों ने एक समय में यूनानियों के ज्ञान को नष्ट होने से बचाया था ठीक इसी प्रकार दारुल उ़लूम देवबन्द ने उस ज़माने में इसलामी ज्ञान को विशेष रूप से ह़दीस के इल्म की जो सेवा की है वह इसलाम की इल्मी तारीख़ में एक सुनहरे कारनामे की हैसियत रखती है। दारुल उ़लूम देवबन्द ने हिन्दुस्तान में न केवल दीनी शिक्षा और इसलामी मूल्यों की रक्षा के ज़बरदस्त साधन इकट्ठे किये हैं बल्कि इस ने तेरहवीं सदी हिजरी के अंत में और चौदहवीं सदी में हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन पर भी बहुत लाभदायक और लम्बे समय के लिये प्रभाव डाले हैं। 1857 ई. के आन्दोलन में हारने के पश्चात मुसलमानों की शैक्षिक और सांस्कृतिक वातावरण में जो सन्नाटा छा गया था अगर उस समय दारुल उ़लूम की स्थापना न होती तथा यह मुसलमानों का मार्गदर्शक न बनता, तो नहीं कहा जा सकता कि आज हिन्दुस्तानी मुसलमानों की तारीख़ क्या होती।

पिछली डेढ़ शताब्दी में दारुल उ़लूम देवबन्द ने दीन की शिक्षा, उपदेश विश्वासों में सुधार, चरित्र की रक्षा की जो महान सेवा की है और कर रहा है वह दुनिया पर स्पष्ट हैं अतः बहुत से देशों में दारुल उ़लूम से उत्तीर्ण तालिब इल्म (विद्यार्थी) वहां के मुसलमानों की दीनी रहनुमाई और प्रचार या सुधार करने में लगें हैं। महान विचारक मौलाना अली मियां नदवी लिखते हैं: "दारुल उ़लूम से पढ़े लोगों का जो समाज के आम लोगों से सम्बन्ध हैं वह किसी धार्मिक जमात का नहीं है। सारे हिन्दुस्तान में अ़रबी मदरसों का जाल बिछा हुआ है और वहां पर दारुल उ़लूम के पढ़े उस्ताद हैं।" (असर–ए–जदीद का चैलेंज पृष्ठ 36)

इस लिये दारुल उ़लूम के वजूद पर उपमहाद्वीप के मुसलमान बेहद अभिमान प्रकट करते हैं। हिन्दुस्तान में ब्रतानवी शिक्षा प्रबन्ध के जारी होने के बाद जब यहां एक नई सभ्यता और नये दौर का आरम्भ हो रहा था इस नाज़ुक समय में दारुल उ़लूम के पूर्वजों नें धार्मिक शिक्षा की स्थापना का आन्दोलन आरम्भ किया। अल्लाह की कृपा से उन की तहरीक मुसलमानों में लोकप्रिय सिद्ध हुई। अतः उपमहाद्वीप में स्थान–स्थान पर दीनी मदरसें जारी हो गये और एक लम्बे चौड़े जाल की सूरत में प्रति दिन विस्तार पाते जा रहे हैं।

दारुल उ़लूम के आरम्भिक काल ही में दारुल उ़लूम के विद्वानों के सम्बंध में यह बात सोची जाने लगी थी कि दारुल उ़लूम से पढ़ने के बाद उस के विद्वानों के लिये इ़ज़्ज़त व सम्मान के साथ उस के रोज़ी रोटी के दरवाज़े खुल जाते हैं अतः 1298 हि0 की रूएदाद (रिपोर्ट) में लिखा है–"ऐसा नहीं कि दारुल उ़लूम से फ़राग़त प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी को आर्थिक कठिनाई का शिकार होना पड़ा हो जैसा कि दारुल उ़लूम स्थापना के समय कुछ लोगों का विचार था बल्कि अल्लाह ने यहां के विद्यार्थियों को बड़ा सम्मान प्रदान किया। यहां से जो विद्यार्थी पढ़ कर निकलते उन को समाज में बड़ा सम्मान मिलता और आर्थिक रूप से भी उन की दशा अच्छी होती।" (रूदाद जलसा इनाम 1298 हि. पृष्ट 15)

दारुल उ़लूम से जो व्यक्ति पढ़ कर निकले उन्हों ने शिक्षा दीक्षा, आत्मिक शुद्धि, चरित्र निर्माण, लेखन, फ़िक़्ह व फ़तावा, मुनाज़रा, पत्रकारिता, भाषण, हिकमत आदि में जो अमूल्य सेवायें की हैं वे किसी विशेष वर्ग में सीमित नहीं है बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के हर–हर प्रांत के आतिरिक्त विदेशों में भी फैल चुकी हैं। दारुल उ़लूम ने अपने स्थापना दिवस से अब तक इस उपमहाद्वीप में जो महान सेवायें की हैं उनका अनुमान निम्न तालिका से किया जा सकता है कि किस प्रकार उस ने दुनिया भर में अपने विद्वानों को पहुंचा दिया है जो पूरे क्षेत्र में चाँद और सूरज बन कर चमक रहे हैं और सृष्टि को जिहालत से निकाल कर ज्ञान की रौशनी दे रहे हैं।

दारुल उ़लूम से फ़ारिगों की मुल्कवार एक सौ पचास साल की फिहरिस्त निम्न तालिका में दी जाती है। लेकिन उन विद्यार्थियों की

संख्या जिन्हों ने दारुल उ़लूम से लाभ उठाया लेकिन शिक्षा पूरी न कर सके इस में शामिल नहीं है।

दारुल उ़लूम देवबन्द के फ़ुज़ला (विद्वानं)

1283/1866 से 1428/2007 तक की देशों के अनुसार संख्या –

हिन्दुस्तान	31275	पाकिस्तान	1524
बंग्ला देश	3297	मलेशिया	525
अफ़्रीक़ा	237	बर्मा	164
अफ़ग़ानिस्तान	121	नेपाल	119
रूस	70	चीन	44
ब्रतानिया	21	तुर्किस्तान	20
श्रीलंका	19	अमेरिका	17
ईरान	11	थाईलैण्ड	8
फिजी	7	सूडान	7
लबनान	6	वैस्टइण्डीज़	4
सऊदी अ़रब	2	इराक़	2
कुवैत	2	न्यूज़ीलैण्ड	2
मिस्र	1	मसक़त	1
यमन	1	मालदीव	1
इण्डोनेशिया	1	कम्बोडिया	1
फ्रांस	1		

हिन्दुस्तान के विद्वानों की संख्या ––	31275
विदेशी विद्वानों की संख्या ––	5465
कुल संख्या ––	36740

यदि दारुल उ़लूम देवबन्द के उलमा के हाथों स्थापित किये गये मदरसों के उलमा को भी उन के वास्ते से दारुल उ़लूम के ही स्नातक गिना जाये जबकि वास्तविकता भी यही है कि वह दारुल उ़लूम देवबन्द के फ़ुज़ला हैं, तो इस प्रकार इन की संख्या लाखों तक पहुंच जाती है। जिन के द्वारा दारुल उ़लूम देवबन्द का इल्मी व दीनी लाभ अब तक दुनिया के चप्पे–चप्पे में करोड़ों लोगों तक पहुंच चुका है।

दारुल उ़लूम की प्रचार व सुधारात्मक सेवायें

ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जिसका उद्देश्य प्रत्यक्ष रूप में व्यापार करना और वास्तविक उद्देश्य हिन्दुस्तान में ईसाइयत का प्रचार और राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना था, धीरे–धीरे यह हिन्दुस्तान की सियासी, शैक्षिक और प्रशासनिक मामलों में हस्तक्षेप करने लगी थी। इस कम्पनी ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये स्थान–स्थान पर बाईबिल सोसाइटियां स्थापित की थीं। इंजील का अनुवाद देश की तमाम भाषाओं में किया गया और पूरी शक्ति के साथ ईसाइयत का प्रचार आरम्भ हो गया। कम्पनी की योजना यह थी कि भारत में बसने वालों विशेष रूप से मुसलमानों को जाहिल और निर्धन बना कर रखा जाये, जिसके लिये 1258 हि0 तदनुसार 1838 ई0 का शैक्षिक पाठयक्रम लार्ड मैकाले द्वारा तैयार किया गया। जिस की आत्मा यह थी कि एक ऐसी जमात (वर्ग) तैयार की जाये जो रंग और नस्ल के आधार पर हिन्दुस्तानी हो मगर मन और मस्तिष्क व कार्यों के आधार पर ईसाइयत के सांचे में ढली हो।

अंग्रेज़ी सभ्यता की यह चाल मुसलमानों की धार्मिक ज़िन्दगी, क़ौमी मूल्य, और शिक्षा ज्ञान को बरबाद करने वाली चाल थी जिस को स्वीकार करने के लिये वे किसी प्रकार भी तैयार नही हो सकते थे। अभी तक वे अपने धार्मिक जीवन को सुरक्षित रखने के लिये कोई उपाय नहीं सोच पाये थे कि उसी बीच 1857 ई0 का ग़दर (प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम) शुरू हो गया जिस की अथाह बरबादियों ने लोगों के दिलों को भयभीत कर दिया था। मन और मस्तिष्क मुर्दा हो चुके थे। पूरी क़ौम पर सुस्ती और शिथिलता छा गयी थी। हिन्दुस्तान में मुसलमानों के इतिहास में यह सबसे भयानक और ख़तरनाक समय था। ऐसे आपातकालीन समय में जबकि मुसलमानों के लिये निहायत बरबाद करने वाली दशा

उत्पन्न कर दी गयी थी, मुसलमानों ने इसको अनुभव किया, और इस के मुक़ाबले के लिये एक तरफ़ तो पूरे देश में स्थान –स्थान पर दीनी मदरसे स्थापित करके एक सुरक्षित कि़ला बनाया, जिस का परिणाम यह हुआ कि मुल्क को सियासी हार के मानसिक प्रभाव को एक सीमा तक सुरक्षित कर दिया। दूसरी ओर ह़ज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी, ह़ज़रत मौलाना क़ासिम साह़ब नानौतवी, मौलाना अबुल मंसूर और डाक्टर वज़ीर खां आदि हज़रात ने पूरी हिम्मत और वीरता के साथ ईसाइ मिश्नरीज़ का ज़बरदस्त मुक़ाबला किया और हिन्दुस्तान के मुसलमानों को ईसाई बनाने के ईसाई प्रचारकों के इरादे को सफ़ल नही होने दिया।

उस समय ईसाई प्रचारक प्रचार के लिये चार तरीक़े अपनाये हुए थे:–

(1) शिक्षा किसी भी धर्म की तबलीग़ (प्रचार) के लिये सबसे बड़ा साधन है। उस समय प्रत्येक मिशन स्कूल में इंजील की शिक्षा अनिवार्य थी। उस समय उलमा ने मुस्लिम बच्चों के दीन व ईमान की सुरक्षा के लिये यह बात आम कर दी कि मिशन स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे क्रिसचन (ईसाई) बन जाते हैं। इस लिये मुसलमानों ने अपने बच्चों को मिशन स्कूल में प्रवेश दिलाने में सावधानी बरती और पूरी शक्ति से अंग्रेज़ी शिक्षा का विरोध किया। यह एक प्रकार की सुरक्षा ही थी जो ईसाई मिशन के ख़िलाफ़ मुसलमानों की ओर से अमल में लायी गयी मुसलमानों में यह जागृति उलमा ने ही पैदा की थी।

(2) ईसाई मिशनरियों ने प्रचार का दूसरा साधन अस्पतालों को बनाया। अस्पतालों में बीमारों को प्रभावित करने के लिये प्रयत्न किया जाता था। यह सिलसिला अभी भी जारी है। इस लिये एलोपेथिक इलाज क विरोध किया गया। मुसलमान अपने इलाज के लिये अधिकतर यूनानी जड़ी बूटी और अयुर्वेदिक दवाओं को ही अपनाते थे। यही कारण है की यूनानी इलाज के देसी तरीक़े आज तक हिन्दुस्तान में प्रचलित हैं।

(3) ईसाई मिशनरी का तीसरा तरीक़ा साधारण जनता के बीच में भाषण और मुनाज़रा (वादविवाद) का था। हमारे उलमा ने इस मैदान में भी ईसाई प्रचारकों का बढ़–चढ़ कर मुक़ाबला किया और अपनी अटूट दलीलों से ईसाई मिशनरियों को हराया। उन की योजनायें मिट्टी में मिल

गयीं। इस सम्बन्ध में दिल्ली, आगरा और शाहजहांपुर के नाम विशेष रूप से लिये जा सकते हैं। आगरा में मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी और शाहजहांपुर में ह़ज़रत मौलाना क़ासिम साह़ब नानौतवी ने अपने साथियों के साथ मिलकर ईसाई पादरियों का ऐसा मुक़ाबला किया कि वे ठहर न सके (शाहजहांपुर का वादविवाद विस्तार से 'गुफ्तगू–ए–मज़हबी' के नाम से छप चुका है।) उपरोक्त स्थानों के अलावा और भी बहुत से स्थानों पर उलमा ने पादरियों से वार्तालाप किये और इस प्रकार ईसाई मिशन के प्रभाव को फैलने से रोकने में बहुत कठोर कार्य किया। इस काम में निःसंदेह हिन्दुस्तान के बहुत से उलमा का हिस्सा रहा है। और इनकी इस महत्वपूर्ण सेवा को नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता। मगर इस सम्बन्ध में उलमा देवबन्द ने जो महान सेवा की है वह अपने स्थान पर अलग विशेष स्थान रखती है।

(4) ईसाई मिशन के प्रचार का चौथा तरीक़ा लेखन का कार्य था। इस में भी प्रचार प्रसार का वही गन्दा तरीक़ा अपनाया गया था जिस में ईसाइयत की अच्छाई बयान करने से अधिक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और इस्लाम पर हमले किये जाते थे। उलमा ने इस मैदान में भी ईसाई मिशनरियों को चैलेंज किया। जिसके परिणाम स्वरूप उसकी प्रतिदिन की बढ़ौतरी किसी सीमा तक कमज़ोर पड़ गयी। ह़ज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कैरानवी ने 'इज़्हारुल हक़' के नाम से किताब लिख कर मिशनरियों के आरोपों के परख़च्चे उड़ा दिये। ग़र्ज़ देवबन्द और उस के उलमा ने उस समय दीन की रक्षा की ख़ातिर हर सम्भव प्रयत्न किया और प्रत्येक आंतरिक और बाहरी फ़ितने से बचने के लिये सफ़ल प्रयत्न करके हर सम्भव तरीक़े से इसलाम की रक्षा की। साथ ही दीन की सुरक्षा के लिये दीनी मदरसों का जाल फैला कर इस दुष्ट प्रचार का मुक़ाबला करने की कोशिशें कीं। इस्लामी नीतियों को सार्वजनिक जनता तक पहुंचाने के लिये पुस्तकों का प्रकाशन किया। इस में कुछ पुस्तकें ईसाइयत के रद्द में भी प्रकाशित की गयीं, और उन किताबों के द्वारा ईसाई आरोपों के उत्तर से जनता को आश्वस्त किया गया। उलमा–ए–उरुल उ़लूम ने हज़ारों पुस्तकों को प्रकाशित करके लिट्रेचर मुसलमानों को दिया जिसके कारण ईसाई मिशन के मार्ग में बहुत बड़ी रुकावट खड़ी हो गयी। इस प्रकार ईसाई मिशन को अपने

प्रचार में असफ़लता का सामना करना पड़ा।

मुसलमानों के धर्म परिवर्तन का फितना

1341 हि. तदानुसार 1923 ई0 में आर्य समाज के शुद्धि व संगठन ने ज़बरदस्त फ़ितना और इस के कारण बहुत से मुसलमान दीन से फिरने लगे। विशेस रूप से आगरा व आस पास के मलकानों में धर्म परिवर्तन से हिन्दुस्तान के मुसलमानों में बड़ा आक्रोश पैदा हो गया था। इस कारण भारत की अंजुमनें और मदरसे तुरन्त इसको दूर करने के लिये तत्पर हुए। इस संस्था ने बड़ी हिम्मत व साहस के साथ इसमें भाग लिया और अपने पचास प्रचारक उस क्षेत्र में भेजे जो काफ़ी समय तक बड़े प्रयत्न के साथ प्रचार का काम करते रहे, इस उद्देश्य के लिये आगरा में एक स्थायी प्रचार कार्यालय स्थापित किया और इस धर्म परिवर्तन के क्षेत्र में बीस मदरसे क़ायम कर दिये जिन में मलकानों और उनके बच्चों को इस्लाम के विश्वासों और दीन की आवश्यक शिक्षा दी जाती थी। इस प्रयत्न का यह लाभ हुआ कि धर्म परिवर्तन का बढ़ता हुआ सैलाब रूक गया। (रूदाद 1341 हि. पृष्ठ 22–26)

दारुल उ़लूम देवबन्द के प्रचारकों को धर्म परिवर्तन रोकने में जो सफलता प्राप्त हुई वह सभी जानते हैं। दीन की रक्षा, विरोधियों पर रोक और मुसलमानों के सुधार के सम्बन्ध में दारुल उ़लूम के अध्यापक, प्रचारक और प्रबन्धकों का हिस्सा सारे हिन्दुस्तान में बढ़–चढ़ कर है। उदाहरण स्वरूप अगर इन असीमित प्रयत्नों को देख लिया जाये जो आर्य समाज ने इस्लाम का विरोध किया तो आप को स्पष्ट पता चल जायेगा कि इन विरोधों के मुक़ाबले में सबसे अधिक प्रभाव के आधार पर जो सीना तान कर आगे बढ़ा वह दारुल उ़लूम देवबन्द ही है जो हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दीनी व समाजी संस्कृति की सुरक्षा और स्थायित्व का साधन बना।

क़ादयानी फ़ितना

अंग्रेज़ी शासन काल में पश्चमी सभ्यता और ईसाई मिशनरियों के आक्रमण के अतिरिक्त इस्लाम धर्म में तरह–तरह की शंकायें पैदा की जाती थीं चाहे उसका सम्बन्ध शरीअ़त व क़ानून से हो, संस्कृति और सभ्यता से हो, या सामाजिक, आर्थिक या इतिहास से हो। हिन्दुस्तानी

उलमा ने इन दोनों आन्दोलनों और शक्तियों का पूरी ताक़त के साथ मुक़ाबला किया, विशेष रुप से देवबन्द के उलमा ने माफ़ी और रक्षात्मक मार्ग न अपना कर उन पर आक्रमण और आलोचना का मार्ग अपनाया। इस के परिणाम स्वरूप ईसाईयों का प्रचार और शंकायें डालने आदि का कार्यक्रम कमज़ोर पड़ गया, और मुसलमानों के अन्दर इस्लाम के प्रति नया विश्वास उत्पन्न हो गया और अपनी संस्कृति सभ्यता व इतिहास पर गर्व करने लगे। ईसाई मिशनरियों को जब अपने तमाम हरबों (चालों) में असफलता का मुंह देखना पड़ा, और उनकी तमाम चालें असफल हुयीं, तो मुसलमानों के अन्दर ही ऐसे व्यक्तियों की तलाश आरम्भ हुई जो मुसलमानों के लिये आस्तीन का सांप सिद्ध हों और इस्लाम की पवित्र शिक्षा को गन्दा कर सकें, चुनाचे अंग्रेज़ों के संकेत पर पंजाब का मिर्ज़ा ग़ुलाम अह़मद क़ादियानी पहले मसीह मौऊ़द, फिर महदी और ज़िल्ली व बरूज़ी का फ़लसफ़ा बयान करने के बाद योजनानुसार नबुव्वत का दावा कर बैठा जबकि मुसलमानों का विश्वास है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर नबुव्वत का सिलसिला बंद हो गया और आप के बाद कोई नबी नहीं आएगा। यह क़ादियानियों का मसला सूबा पंजाब से उठा और पाकिस्तान होता हुआ मुसलमानों के दीन व ईमान पर चोट करते हुए इस ने इसराईल और लन्दन को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया।

देवबन्दी उलमा ने आरम्भ से ही इस बड़े फ़ितने की गंभीरता को अनुभव किया। दारुल उ़लूम के संस्थापक ह़ज़रत मौलाना क़ासिम मुह़म्मद नानौतवी ने तो अपनी दीनी सूझबूझ के आधार पर इस फ़साद के उत्पन्न होने से पहले ही अनुमान लगा लिया था, अतः उन्हों ने इस विषय के तर्क पर आधारित पुस्तकें लिखीं। क़ादयानी फ़साद के सर उठाते ही उसके मुक़ाबले में ह़ज़रत मौलाना सय्यद अनवर शाह कश्मीरी, मौलाना सैयद मुह़म्मद अ़ली मूंगीरी, मौलाना मुर्तज़ा हसन चान्दपुरी, मौलाना अह़मद अली लाहौरी, मौलाना हबीबुर्रहमान लुधियानवी, मौलाना मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी, मौलाना मुह़म्मद इदरीस कान्धलवी, मौलाना बदरे आलम मेरठी, मौलाना मुह़म्मद अली जालन्धरी और क़ाज़ी अहसानुल्लाह शुजाआबादी आदि विद्वानों ने जो महान सेवायें की हैं वह तारीख़ का एक महत्वपूर्ण अध्याय हैं।

यह कहना ग़लत न होगा कि क़ादयानी फ़ितने को समाप्त करने के लिये दृढ़ता से काम करने का साहस दारुल उ़लूम को मिला है। हिन्दुस्तान में ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी पूर्व शेख़ुल ह़दीस देवबन्द के भरपूर पीछा करने के कारण क़ादियानी फ़िरक़ा लगभग समाप्त हो गया था। 1947 ई0 में भारत विभाजन के बाद क़ादियानियों ने अपनी सरगर्मियों का केन्द्र चनाब नगर (पाकिस्तान) को बनाया, मगर पाकिस्तान में भी दारुल उ़लूम के पढ़े विद्वानों की देखरेख में क़ादियानियों का घेराव जारी रहा अतः उनकी लगातार कोशिशों के प्रयत्न से पाकिस्तान की क़ौमी असम्बली ने क़ादियानियों को 1974 ई0 में ग़ैरमुस्लिम अल्पसंख्यक घोषित कर दिया। इस आन्दोलन का संचालन दारुल उ़लूम के प्रसिद्ध विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ बनूरी कर रहे थे।

अप्रैल 1984 ई0 में जब पाकिस्तान के राष्ट्रपति स्वर्गीय जनरल ज़ियाउलहक़ ने क़ादयानियत पर रोक लगाई तो क़ादियानियों का प्रसिद्ध विद्वान मिर्ज़ा ताहिर भागकर लन्दन पहुंच गया। इस पर क़ादियानियों ने अपने प्रचार का रूख़ हिन्दुस्तान की तरफ़ मोड़ दिया स्थान–स्थान पर जलसे और सभायें आयोजित करके साधारण लोगों को धोखा देने लगे। अल्लाह की कृपा से देवबन्द की मजलिस–ए–शूरा के कार्यकर्ताओं ने दारुल उ़लूम की स्थापना के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपने पूर्वजों के अनुसार इस धर्म परिवर्तन के फ़ितने को सर उठाने से पूर्व ही भांप लिया और उन्हों ने ह़ज़रत मौलाना सैय्यद असद मदनी, अध्यक्ष जमीअतुल उलमा–ए–हिन्द व शूरा मेम्बर दारुल उ़लूम की विशेष कोशिश पर क़ादियानियत का पीछा करने के लिये सामूहिक प्रयत्न की आवश्यकता का एहसास मुसलमानों में विशेष रूप से अ़रबी मदरसों के ज़िम्मेदारों में पैदा किया। जिस के लिये 29 से 31 अक्तूबर 1986 ई॰ को तीन दिन का अन्तरराष्ट्रीय अधिवेशन 'तहफ़्फ़ुज़ ख़त्मे नबुवत' दारुल उ़लूम देवबन्द में कराया। इस के स्वागताध्यक्ष ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द थे और इस अधिवेशन का उद्घाटन ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली मियां नदवी नाज़िम दारुल उ़लूम नदवतुल उलमा लख़नऊ ने किया। इस फ़साद को समाप्त करने के लिये जलसे में सम्मिलित व्यक्तियों के दिलों में नया उत्साह

पैदा हुआ। इसी अवसर पर 'आल इंडिया तहफ़्फ़ुज़ ख़त्मे नबुव्वत' की स्थापना की गयी। 31 अक्तूबर को अधिवेशन की समाप्ति पर जनाब डॉक्टर अब्दुल्लाह उमर नसीफ़ पूर्व जनरल सेक्रेट्री राबता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा ने सम्बोधित करते हुए कहा–"मैं दारुल उ़लूम देवबन्द को मुबारकबाद पेश करता हूँ। वास्तव में दारुल उ़लूम के पूर्वजों ने हिन्दुस्तान में क़ादियानियत के ख़तरनाक फ़ितने के दोबारह प्रयत्न करने को समाप्त करने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय जलसा करके अपनी जागरूकता का परिचय दिया है। मैं इस तारीख़ी जलसे में भाग लेने को अपना सौभाग्य समझता हूं"।

मुस्लिम पर्सनल लॉ

अंग्रेज़ी सरकार के समय में जब भी मुस्लिम पर्सनल लॉ में फेर बदल या कोई ऐसा क़ानून बनाने का प्रयत्न किया गया जो इस्लामी शरीअ़त के विरूद्ध हो सकता था तो उलमा–ए–देवबन्द ही उस का डट कर विरोध करते थे और हर समय अपने कर्तव्य की पहचान का सुबूत देते थे। शारदा एक्ट और वक़्फ़ बिल के अवसरों पर साहस और सफ़ाई के साथ देवबन्द के उलमा ने इसलाम का दृष्टिकोण पेश करने में कभी झिझक अनुभव नहीं की। 1917 ई0 में मुसलमानों के अवश्यक अधिकारों की मांग को लेकर दारुल उ़लूम देवबन्द के पाँचवें मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब ने 'तजवीज़ उलमा–ए–देवबन्द' के शीर्षक से एक तहरीर (लेख) ब्रिटिश सरकार को सौंपी। यद्यपि ब्रिटिश सरकार के ध्यान न देने के कारण यह तजवीज़ मंजूर न हो सकी लेकिन उलमा–ए–देवबन्द की ओर से ठीक समय पर अपनी ज़िम्मेदारी को निभाने का सुबूत दिया गया।

इस के बाद एक लम्बे समय के बाद आठवीं दहाई में हकीमुल इसलाम ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब पूर्व मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द ने ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की क़यादत की और मुसलमानों के धार्मिक और पारिवारिक क़ानून के लिये कार्य करते रहे और आज भी बोर्ड की कलीदी ज़िम्मेदारियां दारुल उ़लूम के पढ़े लिखे लोगों के हाथों में हैं जिन को वे भली भांति पूरा कर रहे हैं। देवबन्द के उलमा को यह विशेषता प्राप्त है कि उन्हों ने हर मामले में

धार्मिक दृष्टिकोण को सामने रखा और बाहरी आवाज़ो और आन्दोलनों से प्रभावित नहीं हुए। अतः मुस्लिम प्रसनल लॉ में परिवर्तन के विरोध में सब से अधिक प्रभाविक आवाज़ जिस वर्ग की रही है वह उलमा–ए–देवबन्द हैं।

फ़ितनों का मुक़ाबला

दारुल उ़लूम के कार्यकर्ताओं ने आरम्भ ही से धार्मिक हमदर्दी और इस्लामी भावना से भरपूर रह कर अपने अध्यापन के कार्यों के साथ इसलामी दुनिया पर गहरी दृष्टि रखी है। जहां कहीं भी किसी फ़ितने ने सर उठाया तो देवबन्द के विद्वानों ने उसका पूर्ण रूप से पीछा कर के अपनी ईमानी शक्ति का प्रदर्शन किया। महान विचारक ह़ज़रत मौलाना अबुल हसन अली मियां नदवी के कथनानुसार – "जिस विशिष्टता पर दारुल उ़लूम की नींव पड़ी और जो उसका वास्तविक उद्देश्य था वह दीन की हमदर्दी और इस्लाम की रक्षा का जज़्बा था। यह है दारुल उ़लूम की विशेषता। ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी और उनके उच्च स्तर साथी मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के अन्दर जो भावनायें काम कर रही थी उसने इनसे दारुल उ़लूम की नीव रखवाई। मैं समझता हूँ कि यह बात उचित नहीं होगी कि यह केवल पढ़ने–पढ़ाने का केन्द्र स्थापित किया गया था। इससे बढ़ कर संस्थापकों के प्रति अन्याय नहीं हो सकता। ऐसा कहने वालों को उन बज़ुर्गों की आत्माओं के सामने लज्जित होना पड़ेगा। जिस समय यह कहा जाता था कि यह केवल एक मदरसा है ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द तड़प उठते थे। उन के अनुसार यह इसलाम का एक क़िला (दुर्ग) है और इस के अनुयाईयों की ट्रेनिंग के लिये एक छावनी और मुग़लिया सरकार के समाप्त होने वाले चराग़ (सरकार) का वैकल्पिक था।" (पाजा सुराग़–ए–ज़िन्दगी)

अन्त में दीन के मदरसों से उपमहाद्वीप के मुसलमानों को क्या लाभ पहुंचा? इस सम्बन्ध में अ़ल्लामा इक़बाल के विचार भी सामने रखने चाहिएं। एक बार उन्हों ने अपने एक विश्वसनीय, हकीम अह़मद शुजा से फ़रमाया था: "इन मदरसों को इस ह़ालत में रहने दो, ग़रीब मुसलमानों के बच्चों को इन्हीं मदरसों में पढ़ने दो, अगर यह मुल्ला और दरवेश न रहे तो जानते हो क्या होगा? जो कुछ हो सकता है मैं अपनी आंखो से

देख आया हूँ। अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान इन मदरसों के प्रभाव से वंचित हो गये तो बिलकुल इसी प्रकार होगा जिस प्रकार उन्दलुस (स्पेन) में मुसलमानों के आठ सौ बरस राज्य के बावजूद आज ग़र्नाता और क़ुरतबा के खण्डर और अल–हुमारा के निशानों के सिवा इस्लाम के सहयोगियों और इस्लामी सभ्यता का कोई निशान नहीं है। हिन्दुस्तान में भी आगरा के ताज महल और दिल्ली के लाल क़िले के सिवा मुसलमानों की आठसौ साला हुकूमत और उनकी संस्कृति और सभ्यता का कोई निशान नहीं मिलेगा।" (खून बहा, हकीम अह़मद शुजा 1:439)

दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर दीनी मदरसों की स्थापना

हिन्दुस्तान में पहले मदरसों का प्रबन्ध तेरहवीं सदी हिजरी तक लगभग समाप्त हो चुका था। कहीं–कहीं स्थानीय प्रबन्ध में डांवांडोल मदरसों का अस्तित्व बराये नाम बाक़ी था। जिन में संसारिक शिक्षा को महत्ता दी जाती थी ह़दीस, तफ़सीर आदि की शिक्षा का बहुत कम रिवाज (प्रचलन) था। इस के विपरीत दारुल उ़लूम की स्थापना लिल्लाही विचार धारा पर की गयी थी। इसलिये यहां संसारिक शिक्षा के स्थान पर धार्मिक शिक्षा, तफ़सीर (व्यख्य) ह़दीस और फ़िक़ह को महत्ताा दी गई है। आगे चलकर उपमहाद्वीप में जितने भी दीनी मदरसें स्थापित हुए हैं उन में भी कम या अधिक दारुल उ़लूम के इसी तरीक़े को पसन्द किया गया। अतः दारुल उ़लूम की स्थापना के छह माह बाद जब 1283 में सहारनपुर में मदरसा मज़ाहिर उ़लूम की स्थापना हुई तो उस ने भी वही निसाब (पाठयक्रम) जारी किया जो दारुल उ़लूम में जारी था। फिर धीरे–धीरे दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर विभिन्न स्थानों पर मदरसें स्थापित हो गये। थाना भवन जिला मुज़फ़रनगर में हाफ़िज़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ साह़ब ने एक दीनी मदरसे की स्थापना की और उसको शैक्षिक और इन्तज़ामी तौर पर दारुल उ़लूम की शाख़ नियुक्त किया। 1285 / 1869 की रूदाद में लिखा है "हमको अतिप्रसन्नता है कि अधिकतर हज़रात अपने साहस से अ़रबी मदरसों को विस्तार देने में प्रयत्नशील हैं तथा विभिन्न स्थानों, दिल्ली, मेरठ, ख़ुर्जा, बुलन्दशहर, सहारनपुर आदि में मदरसें स्थापित किये और दूसरे स्थानों जैसे अलीगढ़ आदि स्थानों पर स्थापित करने की योजना चल रही है। (रूदाद पृष्ठ 70, 1285 हि.)

ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी ने अपने भाषण में फ़रमाया थाः

“अकसर मदरसे इसी मदरसे (दारुल उ़लूम) की प्रेरणा से ही स्थापित किये गये हैं अगर कोई मदरसा इससे तरक़्क़ी पाजाये वह बुद्धिमानों के नज़दीक देवबन्द ही की प्रछाई होगी”। (रूदाद 1290 हि0 पृष्ठ 12)

दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर इस समय जो मदरसे स्थापित हुए दारुल उ़लूम की रूदादों में विस्तार से उनका वर्णन किया गया है। 1297/1880 की रूदाद में लिखा है, “हमें बड़ी प्रसन्नता है और अल्लाह की कृपा है कि इस साल, मेरठ, गुलावठी, दानपुर में इस्लामी नये मदरसे स्थापित हुए हैं और उनका सम्बन्ध कम या अधिक इस मदरसे (दारुल उ़लूम देवबन्द) से है। इन स्थानों के निवासियों को धन्यवाद देते हैं और अल्लाह से दुआ है कि इन मदरसों को स्थायित्य (क़ायम) हो और प्रतिदिन उन्नति करें और बड़े–बड़े शहरों और क़स्बों के मुसलमानों को इस प्रकार के अच्छे कार्य करने की तौफ़ीक़ हो। ए अल्लाह वह दिन दिखा कि कोई बस्ती मदरसों से खाली न रहे। और गली कूचे में इल्म का बोलबाला हो और अज्ञानता दुनिया से समाप्त हो जाये, आमीन।” (रूदाद 1297 हि0 पृष्ठ 61–63)

प्रसिद्ध शहर मेरठ में ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी ने अपने क़याम के दौरान एक मदरसा स्थापित किया था, यह मदरसा दारुल उ़लूम की शाख़ था, इस के प्राथमिक अध्यापक दारुल उ़लूम देवबन्द के पढ़े लिखे थे। मौलाना नाज़िर हसन देवबन्दी, मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान देवबन्दी और मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी, जो बाद में सिलसिलेवार दारुल उ़लूम के मुफ़्ती ए आज़म और मोहतमिम हुए। इन सबने इस मदरसे में पढ़ाया है। मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद और मौलाना सिराज अह़मद मेरठी जैसे विद्वान इस मदरसे के प्रथम विद्यार्थी थे।

मुरादाबाद के मदरसे की स्थापना के सम्बन्ध में 1297 हि. (1880 ई.) की रूदाद में लिखा है “मुरादाबाद एक प्रसिद्ध शहर है वहां के ग़रीब मुसलमानों ने ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी के भरोसे पर दो तीन साल से एक मदरसा इसलामी स्थापित किया है। यद्यपि आरम्भ में यह मदरसा बहुत छोटा था परन्तु अब काफ़ी उन्नति पर है और अधिक उन्नति करेगा। इस मदरसे के कार्यकर्ता प्रयत्नशील और अमानतदार हैं। अल्लाह तआला इन के प्रयत्न में बढ़ोतरी करे और इस

कारखाने को क़ायम रखे, तथा और अधिक उन्नति दे, आमीन।" (रूदाद 1297 हि0 पृष्ठ 61–63)

इस अवसर पर यह बात याद रखनी है कि आज मदरसों का स्थापित करना कुछ अधिक कठिन नहीं है, मगर सौ साल पहले का विचार किया जाये जब इस प्रकार के मदरसों का चलन नहीं था और लोग मदरसों की स्थापना के तरीक़े और उनकी आवश्यकताओं से अधिक जानकारी नहीं रखते थे। इन हालात में सरकार की सहायता के बगैर केवल मुसलमानों के चन्दे के भरोसे पर दीनी मदरसे स्थापित करना एक बड़ा काम था। उस समय से लेकर अबतक उप महाद्वीप में अल्लाह की कृपा से असंख्य दीनी मदरसे स्थापित हो चुके हैं, और प्रति दिन इन की संख्या बढ़ती जा रही है। इनमें से बहुत से मदरसों का दारुल उ़लूम के साथ इल्हाक़ (सम्बद्धता) भी है। हिन्दुस्तान के अधिकतर मदरसों को आपस में मिलाने के लिये राबता मदारिस अरबिया का मरकज़ (केन्द्र) दारुल उ़लूम में बनाया गया है, जो राबता मदारिस, देवबन्दी जमात के संगठन और एकता का एक लाभदायक साधन है। दारुल उ़लूम का उद्देश्य केवल आलिम बना देने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इस के लगनशील व्यक्तियों से ऐसा वातावरण भी बन गया है जिन से स्थान–स्थान पर दीनी मदरसें स्थापित होते चले गये। दारुल उ़लूम की स्थापना के पश्चात मुल्क में जिस अधिकता के साथ दीनी मदरसे स्थापित हुए इससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानों इस समय मुसलमानों में दीनी मदरसे स्थापित करने की बड़ी लगन थी। लेकिन मदरसे को चलाने के लिये पुराने साधन समाप्त हो चुके थे इस लिये साहस ढीले पड़ गये थे, मगर जब दारुल उ़लूम देवबन्द ने पहल की तो मुसलमानों के सामने एक नया रास्ता खुल गया। इसी के साथ कुछ मदरसों के प्रबन्धकों ने दारुल उ़लूम की हैसियत को एक केन्द्र मानकर यह उचित समझा कि अपने–अपने मदरसों को दारुल उ़लूम देवबन्द के आधीन कर दें।

यह वास्तविकता है कि आज उपमहाद्वीप में जिस क़दर भी दीनी मदरसे दिखाई देते हैं उन में से अधिकतर वही हैं जो दारुल उ़लूम देवबन्द के नक़्शे क़दम (रूपरेखा) पर स्थापित किये गये हैं। इस लिये दीनी मदरसों की शिक्षा की ज़िम्मेदारियां अधिकतर दारुल उ़लूम से

फ़ारिग़ विद्वानों से पूरी की जाती है। इस प्रकार दारुल उ़लूम देवबन्द का वजूद इसलाम की नई तारीख़ में एक नये युग की हैसियत रखता है, और यहीं से इस समय पूरे उपमहाद्वीप में दीनी शिक्षा की संस्थाओं का जाल फैला हुआ है। बहुत से हज़रात दीनी मदरसों विशेषकर दारुल उ़लूम से शिक्षा प्राप्त करने के बाद दीनी मदरसा स्थापित करने की लगन को लेकर निकलते हैं। उन्हों ने बहुत से मदरसों को स्थापित किया, अतः दारुल उ़लूम की स्थापना से अब तक उप महाद्वीप में इतनी बड़ी संख्या में मदरसे क़ायम करना आसान नहीं है।

हिन्दुस्तान की सीमाओं में मौजूद मदरसों की संख्या का कोई निश्चित रिकॉर्ड नहीं है, हालांकि दारुल उ़लूम देवबन्द के राब्ता मदारिस इस्लामिया अरबिया के ज़रिये हिन्दुस्तान के तक़रीबन ढाई हज़ार से ज्यादा मदरसे दारुल उ़लूम से संबद्ध हैं।

पाकिस्तान में विफ़ाकुल मदारिस इस्लामिया के नाम से एक बोर्ड क़ायम है जिसके छोटे—बड़े सभी सदस्य मदरसों की तादाद भी हज़ारों में है जिन में अकसर और बड़े दीनी मदरसे देवबन्दी विचारधारा के हैं।

बंगलादेश के चप्पे—चप्पे में भी दीनी मदरसों का जाल बिछा हुआ है जो वास्तव में दारुल उ़लूम की देन है। पाकिस्तान व बंग्लादेश के अतिरिक्त दक्षिण अफ़्रीक़ा, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, ज़ाम्बिया, मॉरीशस, फ़िजी आदि मुलकों में दारुल उ़लूम की रूप रेखा पर मदरसे क़ायम हैं और दारुल उ़लूम से संबद्धता पर गर्व महसूस करते हैं।

दारुल उ़लूम के विद्वानों की रचनात्मक सेवायें

दारुल उ़लूम के विद्वानों ने पठन पाठन और भाषण व उपदेश और दूसरे कार्यों के साथ–साथ लेखन कार्य के क्षेत्र में भी महान कारनामें अंजाम दिये हैं। वे न केवल उप महाद्वीप के मुसलमानों के लिये बल्कि इसलामी दुनिया के लिये भी एक गर्व की बात है। दीनी ज्ञान से सम्बंधित कोई विद्या ऐसी नहीं है जिस में इन की पुस्तकें नहीं हैं। इन में बड़ी–बड़ी पुस्तकें भी हैं और छोटे–छोटे रिसाले और किताबचे भी हैं। ये पुस्तकें अधिकतर तो अ़रबी, फ़ारसी और उर्दू भाषा में हैं मगर इन के अतिक्ति दूसरी भाषाओं में भी मिलती हैं।

दारुल उ़लूम देवबन्द की सेवाओं के दो रुख हैं, (1) आंतरिक, जिस का सम्बंध पढ़ाने लिखाने से है (2) और दूसरा रूख बाहरी जो आम मुसलमानों और मुल्क से सम्बन्धित है। जन सम्पर्क, उपदेश, प्रचार, फ़तवा, दीनी व राष्ट्रीय मामलात में क़ौम की शरई (धार्मिक) मार्ग दार्शन और तस्नीफ़ व तालीफ़ (रचनात्मक कार्य) इस के अहम विषय हैं। इस सिलसिले में दारुल उ़लूम से जो क़ाबिल क़दर सेवायें प्राप्त हुईं वह उप महाद्वीप की तारीख़ में अपनी मिसाल आप हैं। केवल तस्नीफ़ व तालीफ़ ही के मैदान में एक अकेले महानविद्वान हकीमुल उम्मत ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी की छोटी बड़ी किताबों की संख्या एक हज़ार से अधिक है। धार्मिक और सुधारात्मक दृष्टिकोण से जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं है जिस में ह़ज़रत थानवी की पुस्तक न हो। वह लेखन (तस्नीफ़) की अधिकता और उपयोगिता के आधार पर अपना जवाब नहीं रखते। हिन्दुस्तान में धार्मिक लगाव रखने वाला कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो ह़ज़रत थानवी के लिखे "बहिश्ती ज़ेवर" से वाक़िफ़ न हो।

ह़ज़रत थानवी और दूसरे कुछ देवबन्दी विद्वानों की एक विशेषता

यह भी है कि उन्हों ने अपनी तस्नीफ़ात (रचनाओं) के अधिकार सुरक्षित नहीं रखे। बल्कि सामान्य लाभ के लिये आम कर दिया है। इन विद्वानों को व्यापार और आर्थिक लाभ की ज़रूरत कभी नहीं रही, बल्कि सुधार के लाभ का नज़रिया रहा। देवबन्द के विद्वानों के इस लेखनी के धन का केन्द्र बिन्दु अ़रब देश शाम (सीरिया) के एक महान विद्वान शेख़ अबू गुद्दह के अनुसारः "गहरे ज्ञान और विस्तृत अध्यन के अतिरिक्त, तक़्वा, सुधार और आत्मिकता है।" अतः शेख़ अबू गुद्दह ने देवबन्द के विद्वानों की तसनीफ़ का समर्थन व उपयोगिता को मानते हुए यह इच्छा व्यक्त की है कि इनमें जो किताबें उर्दू और फ़ारसी भाषा में हैं उनका अ़रबी में अनुवाद कराया जाये ताकि अ़रब दुनिया को भी उन से लाभ पहुंचे। उन का कथन हैः "मुफ़्तियों के फ़त्वे से मालामाल इस अज़ीमुश्शान (महानसंस्था) इदारे के विद्वानों की सेवा में वर्णन करते हुए एक प्रार्थना करना चाहता हूँ बल्कि अगर थोड़ी सी हिम्मत करूं तो कह सकता हूँ कि यह वाजबी अधिकार है, जिसका मैं अध्यन करना चाहता हूँ जिसकी मांग मैं करना चहता हूँ वह यह है कि विद्वानों का यह कर्तव्य है कि अपने बौद्धिक परिणामों और चिंतन मूल्यवान खोजपूर्ण ज्ञान को अ़रबी भाषा में बदलकर इसलामी दुनिया के दूसरे विद्वानों को लाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करें। यह कर्तव्य इन हजरात पर इसलिये बनता है कि जब कोई व्यक्ति हिन्दुस्तान के किसी विद्वान की कोई तस्नीफ़ (रचना) पढ़ता है तो उस में उस को वह नई तहक़ीक़ (जानकारी) मिलती हैं जिन का केन्द्र बिन्दु गहरे ज्ञान और विशाल अध्यन के अलावा, तक़्वा, (परहेज़गारी) व सुधार और आत्मिकता होता है।" (तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 530)

चूंकि हिन्दुस्तान के यह उलमा नेकी, भलाई, आत्मीयता और ज्ञान में डूब जाने जैसी शर्तों पर न केवल पूरे उतरते हैं बल्कि अपने पूर्वजों के सच्चे उत्तराधिकारी और उनके नमूने हैं इस लिये उनकी किताबें बहुत सी नई जानकारी समयनुसार कितनी ही कारामद वस्तुओं पर आधारित है। बल्कि इन हज़रात की कुछ किताबें तो वे हैं जिन में ऐसी चीज़ें मिलती हैं जो पहले (मध्यकालीन) पूर्वजों, मुफ़स्सिरों, मुहद्दिसों और बुद्धि जीवियों के यहां भी नहीं मिलती।

दारुल उ़लूम देवबन्द से अब तक जिन लोगों ने अपनी शिक्षा प्राप्त

की है उन की संख्या लगभग 100000 है। दारुल उ़लूम देवबन्द के विद्वानों में से जिन लेखकों को एक नुमाया स्थान प्राप्त है केवल उन के वर्णन के लिये एक बड़ी पुस्तक की आवश्यकता है। यह विषय अपने आप में अपना अलग अस्तित्व रखता है, जिसमें संस्था के विद्वानों जो मश्रिक़ (पूर्व) से मग़रिब (पश्चिम) और शुमाल (उत्तर) से जुनूब (दक्षिण) तक फैले हुए हैं, और एक सौ पचास साल के विभिन्न भागों में इल्मी और दीनी सेवा में लगे हों उन के हालात आसानी से नहीं मिल सकते। इस के अलावा यहां संक्षेप में साथ तमाम किताबों और लेखकों के नाम भी पेश नहीं किये जा सकते। इसलिये यहां केवल कुछ प्रसिद्ध लेखकों की किताबों (पुस्तकों) को ही दर्शाया जा रहा है। अलबत्ता इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि देवबन्द के उलमा ने लेखन के क्षेत्र में कितना काम किया है। और पठन–पाठन के अलावा पुस्तकों के रूप में भी कितना मूल्यवान संग्रह इकट्ठा किया है। ये पुस्तकें शिक्षा और तात्विकता के दरिया बहाती हैं।

कुरआन के अनुवाद व तफ़्सीर (व्याख्यायं) और उन से सम्बंधित रचनायें

यह तो सिर्फ़ एक झलक कुरआनी खिदमात के सम्बंध से इन नामों की है जिन का हमें पता चल सका है वरना ह़क़ीक़त यह है कि दुनिया के चप्पे चप्पे में देवबन्द के विद्वान कुरआन व ह़दीस की व्याख्या और प्रकाशन में लगे हुए हैं जिन की संख्या जानना कठिन ही नहीं असम्भव है।

क्र.	पुस्तक का नाम/लेखक का नाम
1	तर्जुमा कुरआन शरीफ़ ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन
2	तर्जुमा कुरआन शरीफ ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
3	तर्जुमा कुरआन शरीफ़ (कश्मीरी) मौलाना यूसुफ़ शाह कश्मीरी
4	मूज़िहुल फुर्क़ान (हाशिया तर्जुमा शैख़ुलहिन्द) मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी, देवबन्दी,
5	हवाशी कुरआन मजीद तर्जुमा शाहअब्दुल क़ादिर ह़ज़रत मौलाना अह़मद लाहौरी
6	एजाजुल कुरआन ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी
7	तफ़्सीर सनाई (उर्दू) मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी,
8	तफ़्सीर बयानुल कुरआन हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी,
9	तफ़्सीर अल कुरआन (अ़रबी) मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी,

10	तफ़्सीर मऊज़्तैन हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी,
11	तर्जुमा तफ़्सीर जलालैन हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान
12	तफ़्सीर मआरिफ़ुल क़ुरआन हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी
13	तफ़्सीर मआरिफ़ुल क़ुरआन हज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
14	तफ़्सीर अलहावी (तक़रीर बेज़ावी) मौलाना जमील अह़मद मुफ़्ती शकील अह़मद
15	तदवीने क़ुरआन हज़रत मौलाना मनाज़िर हसन गीलानी
16	अत्तअव्वुज़ फ़िल इसलाम हज़रत मौलाना ताहिर क़ासमी
17	हाशिया तफ़्सीरे बैज़ावी (अ़रबी) हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान अमरोहवी
18	दीनी दावत के क़ुरआनी उसूल हज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
19	सबक़ुल ग़ायत फ़ी नस्क़िल आयात हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
20	अल अवनुल कबीर शरह अल फ़ौज़ुल कबीर हज़रत मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालनपुरी
21	फ़हमे क़ुरआन हज़रत मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी
22	क़ससुल क़ुरआन हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्यौहारवी
23	कमालैन तर्जुमा जलालैन हज़रत मौलाना नईम साह़ब देवबन्दी
24	मुश्किलातुल क़ुरआन (अ़रबी) हज़रत मौलाना सय्यद अनवर शाह कशमीरी

25	मिनह़तुल जलील ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान उस्मानी
26	वही इलाही ह़ज़रत मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी
27	हदयतुल महदयीन फ़ी आयाति ख़ातमिन्नबियीन ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी
28	तफ़्सीर दरसे कुरआन ह़ज़रत मौलाना अब्दुल हई फ़ारूक़ी
29	तफ़्सीरे अह़मदी मौलाना अह़मद अली लाहौरी
30	तक़रीरुल कुरआन मौलाना मुह़म्मद ताहिर साह़ब देवबन्दी
31	तफ़्सीर ह़बीबी मौलाना हबीबुर्रहमान साह़ब मरवानी
32	अनवारुल कुरआन (पश्तो भाषा में) मौलाना सय्यद अनवारुल हक़ काका खेल
33	हिदायतुल कुरआन (9 पारे) मौलाना मुह़म्मद उस्मान काशिफ़ अल हाश्मी
34	हिदायतुत कुरआन तक्मीलह मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी
35	मिफ़्ताहुत कुरआन मौलाना शब्बीर अज़हर मेरठी
36	तफ़्सीरुल कुरआन मौलाना शाइक़ अह़मद उस्मानी
37	फ़ैज़ुर्रहमान मौलाना याक़ूबुर्रहमान उस्मानी
38	तफ़्सीर सूरह बक़र मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साह़ब हज़ारवी
39	अद्दुररूलमकनून फ़ी तफ़्सीर सूरतुल माऊन प्रोफ़ेसर हकीम अब्दुस्समद सारम साह़ब

40	तर्जुमा तफ़्सीर इब्न अब्बास मौलाना अब्दुर्रहमान कांधलवी
41	मुस्तनद मवज़िहुल फुरक़ान मौलाना अख़लाक़ हसन क़ासमी देहलवी
42	तर्जुमा तफ़्सीरे मदारिक मौलाना सय्यद अंजर शाह मसऊदी कशमीरी
43	तफ़्सीर तक़रीरुल क़ुरआन मौलाना अज़ीज़ुर्रहमान साह़ब बिजनौरी
44	तफ़्सीरे माजदी मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी
45	बयानुल क़ुरआन अला इल्मिल बयान मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी
46	यतीमतुल बयान मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ बिन्नौरी
47	हिकमतुन्नून मौलाना मुह़म्मद ताहिर साह़ब देवबन्दी
48	उ़लूमुल क़ुरआन मुफ़्ती तक़ी उस्मानी (पाकिस्तान)
49	तफ़्सीरों में इसराईली रिवायात मौलाना निज़ामुद्दीन असीर अदरवी
50	लुग़ातुल क़ुरआन मौलाना अब्दुर रशीद नोमानी
51	तफ़्सीर बयानुस्सुबह़ान मौलाना अब्दुल दाईम अल जलाली
52	दरसे क़ुरआन मुफ़्ती ज़फ़ीरुद्दीन साह़ब मिफ़्ताह़ी
53	मअरका ईमान व मादियत (सूरह कहफ़) मौलाना अबुल ह़सन अलीमियां नदवी
54	तज़कीर बि–सूरह कहफ़ मौलाना सय्यद मनाज़िर अह़सन गीलानी

55	जाईज़ह तराजिमे कुरआन मौलाना सालिम क़ासमी
56	कुरआन और उसके हुकूक़ मुफ़्ती ह़बीबुर्रह़मान खैराबादी
57	दरसे कुरआन की सात मजलिसें मौलाना हुसैन अह़मद मदनी
58	कुरआन पाक और साइंस मौलाना ख़लील अह़मद साह़ब
59	अत्तनक़ीदुस्सदीद अ़ला त्तफ़्सीरिल जदीद अबुल मआसिर मौलाना ह़बीबुर्रहमान आज़मी
60	कुरआन मजीद और इंजीले मुक़द्दस मौलाना मुह़म्मद उस्मान फ़ारक़लीत
61	उ़लूमुल कुरआन मौलाना उबैदुल्लाह असअदी क़ासमी
62	अनवारुल कुरआन मौलाना मुह़म्मद नईम साह़ब देवबन्दी
63	बयानुल कुरआन (अव्वल, दोम) मौलाना अह़मद हसन साह़ब
64	तफ़्सीर सूरह हुजरात अल्लामा शब्बीर अह़मद उस्मानी
65	रूहुल कुरआन अल्लामा शब्बीर अह़मद उस्मानी
66	तफ़्सीर सूरह फ़ातिह़ा, यूनुस, यूसुफ़, कहफ़ मौलाना अह़मद सईद साह़ब देहलवी
67	अह़सनुत्तफ़ासीर मौलाना सय्यद हसन देहलवी
68	ह़ल्लुल कुरआन मौलाना ह़बीबुर्रह़मान कैरानवी
69	अलफ़वजुल अज़ीम शरह उर्दू अलफ़वजुल कबीर मौलाना खुरशीद अनवर साह़ब फ़ैज़ाबादी
70	अलखवजुन्नज़ीर शरह़ उर्दू अल फ़वजुल कबीर मौलाना ह़नीफ़ साह़ब गंगोही

71	अल ख़ैरुल कसीर शरह उर्दू अल फ़वज़ुल कबीर मुफ़्ती अमीन साह़ब पालनपुरी
72	सिराजुल मुनीर तर्जुमा तफ़्सीर कबीरे अव्वल मौलाना शैख़ अब्दुर्रहमान साह़ब
73	ग़ायतुल बुरहान फ़ी तावीलिल कुरआन हकीम सय्यद हसन साह़ब
74	फ़ैज़ुल करीम तफ़्सीर कुरआन अज़ीम मौलाना सिबग़तुल्लाह साह़ब
75	तफ़्सीर कलामुर्रहमान मौलाना ग़ुलाम मुह़म्मद साह़ब
76	तफ़्सीर तालीमुल कुरआन मौलाना क़ाज़ी ज़ाहिद अल हुसैनी साह़ब
77	जवाहिरुत्तफ़ासीर मौलाना अब्दुल ह़कीम लखनवी
78	दरसे कुरआन मौलाना क़ारी अख़लाक़ साह़ब देवबन्दी
79	तफ़्हीमुल कुरआनः एक तह़क़ीक़ी जायज़ह मुफ़्ती जमीलुर्रहमान प्रताप गढ़ी
80	तर्जुमा व व्याख्या (तफ़्सीर) हिन्दी मौलाना अरशद मदनी/प्रोफ़ेसर मु. सुलैमान
81	जमालैन शरह जलालैन मौलाना जमाल अह़मद मेरठी
82	मुन्तखब लुग़ातुल कुरआान मौलाना नसीम अह़मद बाराबंकवी

देवबन्द के विद्वानों की ह़दीस की सेवायें

दारुल उ़लूम देवबन्द ने ह़दीस के हर हर पक्ष को उजागर करने के लिये सेवा की है। अतः ह़दीस की पढ़ाने और लिख्ने में दारुल उ़लूम के कार्यों से इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं। यह केवल दावा नहीं है, बल्कि इन सेवाओं से प्रभावित हो कर इस्लामी दुनिया के प्रसिद्ध देश मिश्र के विद्वान और रिसाला "अल–मनार" के सम्पादक अल्लामा सय्यद रशीद रज़ा लिखते हैं– "हमारे भाई हिन्दुस्तानी विद्वानों का ध्यान इस ज़माने में ह़दीस के ज्ञान की ओर न जाता तो पूर्वी देशों से यह ज्ञान समाप्त हो चुका होता, क्योंकि मिस्र, शाम, इराक़ और हिजाज़ में दसवीं सदी हिजरी से चौदहवी हिजरी के आरम्भ तक यह ज्ञान बिल्कुल अंतिम अवस्था तक पहुंच गया था।" (तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 231 जिल्द एक)

इसी पर बस नहीं, एक बार यूसुफ़ सय्यद हाशिमुर्रफ़ाई वज़ीर हुकूमत कुवैत की अध्यक्षता में एक वफ़्द दारुल उ़लूम देखने आया था। यूसुफ़ सय्यद हाशिमुर्रफ़ाई ने जलसा आम में भाषण देते हुए यहां तक कह दिया कि इस्लाम पर आक्षेप को दूर करने के लिये हम महान विद्वानों के मोहताज हैं, इस के लिये हमें हाफ़िज़ ज़हबी और हाफ़िज़ इब्न ह़जर के स्तर के विद्वानों की आवश्यकता है और हमें गर्व है कि इस स्तर के उलमा और विद्वान दारुल उ़लूम में मौजूद हैं।┘ ┘ (तारीख़ दारुल उ़लूम पृष्ठ 416 जिल्द एक)

देवबन्द के उलमा ने ह़दीस का कार्य करने का एक अलग तरीक़ा अपनाया और हालात के अनुसार ह़नफ़ी विचारधारा को प्राथमिकता दी और इस के प्रचार–प्रसार पर ध्यान दिया। दारुल उ़लूम में ह़ज़रत नानौतवी, ह़ज़रत शैख़ुल हिन्द, ह़ज़रत कश्मीरी, ह़ज़रत मदनी और दूसरे हज़रात ने ह़दीस के पठन–पाठन को इतना बढ़ावा दिया कि आज ह़दीस की कोई मशहूर दरसगाह इससे खाली नज़र नहीं आती। ह़दीस के पढ़ाने की एक और विशेषता यह है कि ह़दीस को ग़ौर व फ़िक्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सहित पढ़ने–पढ़ाने का जो पौदा शेख़ अब्दुल हक़

मुहद्दिस देहलवी ने लगाया था दारुल उ़लूम देवबन्द ने उस की पूरी देखभाल की और उसको पूरा पेड़ बना दिया। ह़दीस की शिक्षा की इन्हीं विशेषताओं के आधार पर दुनिया के चप्पे–चप्पे से विद्यार्थीगण ह़दीस की शिक्षा प्राप्त करने के लिये एक सौ पचास साल से यहां खिंचे चले आरहे हैं। अतः इस शैक्षिक माता ने अपने स्थापना दिवस से अब तक हज़ारों ह़दीस के विद्वान इसलामी दुनिया के चप्पे–चप्पे में फै़ला दिये। इस प्रकार से देवबन्द के विद्वानों का पठन–पाठन, और तस्नीफ़ व तालीफ़ में ह़दीस की ख़िदमात के शीर्षक से हम यहां संक्षिप्त रूप से वर्णन करते हैं: –

क्र.	पुस्तक / लेखक
1	अल अबवाब वत्तराजिम (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना महमूदु हसन देवबन्दी
2	इलाउस्सुन्न (18 खण्ड) मौलाना ज़फ़र अह़मद उस्मानी
3	अलफ़ियतुल ह़दीस ह़ज़रत मौलाना मंज़ूर अह़मद नोमानी
4	अनवारुल बारी शरह सह़ीहुल बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा बिजनौरी
5	अनवारुल महमूद ह़ाशिया सुनन अबी दाऊद ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी
6	इन्तिख़ाब सिह़ाए सित्ता ह़ज़रत मौलाना ज़ैनुलआ़बिदीन सज्जाद
7	ईज़ाहुल बुख़ारी मौलाना रियासत अली ज़फ़र बिजनौरी
8	बज़्लुल मजहूद शरह अबूदाऊद ह़ज़रत मौ. ख़लील अह़मद सहारनपुरी
9	तदवीने ह़दीस ह़ज़रत मौलाना मनाज़िर अह़सन गिलानी
10	तर्जुमानुस्सुन्नह ह़ज़रत मौलाना बदरे आलम मेरठी

11	तर्जुमा सह़ी बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना बदरे आलम मेरठी
12	अत्तालीक़ुस्सबीह़ शरह मिश्कात (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना मु. इदरीस कांधलवी
13	अत्तालीक़ुल मह़मूद ह़ाशिया अबूदाऊद ह़ज़रत मौलाना फ़ख़रुल ह़सन गंगोही
14	तक़रीरे तिरमिज़ी ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी
15	तरजुमानुस्सुन्नह ह़ज़रत मौ. बदर आलम मेरठी
16	हुज्जियते ह़दीस ह़ज़रत मौलाना इदरीस कांधलवी
17	ह़दीसे रसूल का क़ुरआनी मेयार ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
18	अरजुर्रियाह़ीन तर्जुमा बुस्तानुल मुहद्दिसीन ह़ज़रत मौलाना अब्दुस्समी देवबन्दी
19	सुनने सईद बिन मंसूर (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
20	शरह़ तिरमिज़ी ह़ज़रत अल्लामा इब्राहीम बलयावी
21	अलउरफ़ुश्शुज़्ज़ी अला तिरमिज़ी ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी
22	फ़तहुल मुलहिम शरह़ मुस्लिम (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी
23	फ़ज़लुल बारी शरह़ सह़ी बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी
24	फ़ैज़ुल बारी अला सह़ीह़िल बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी
25	अल क़वलुल फ़सीह़ ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन अह़मद

26	तह़क़ीक किताबुज़्ज़ुहद वर्रिक़ाक़ ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
27	अल कवकबुद दुर्री ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
28	मुसनदे हुमैदी (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
29	मिश्कातुल आसार ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी
30	मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ (अ़रबी) 11 ख़ण्ड, ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
31	अलमतालिबुल आलिया (अ़रबी) 4 खण्ड ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
32	मज़ाहिरे हक़ जदीद शरह़ मिश्कात मौलाना अब्दुल्लाह जावेद
33	मारिफुल ह़दीस ह़ज़रत मौलाना मु. मंजूर नोमानी
34	मआरिफुस्सुनन शरह तिरमिजी (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना यूसुफ़ बिन्नौरी
35	मआरिफे मदीना तक़रीर तिरमिज़ी ह़ज़रत मौलाना सय्यद ताहिर ह़सन
36	मआरिफुल मिश्कात शरह मिश्कात ह़ज़रत मौलाना अब्दुररऊफ़ साह़ब आली
37	निबरासुस्सारी अला अतराफ़िल बुख़ारी (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना अब्दुल अज़ीज़ गूजरानाला
38	अन्नफ़हुश शज़ी शरह तिरमिज़ी ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
39	अल वरदुश्शजी अला जामे तिरमिज़ी ह़ज़रत शेख़ुलहिन्द मौ. महमूदु हसन
40	जामिउल आसार ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
41	ताबिउल आसार ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी

42	हि़फ़्ज़े अ़रबईन इन्तिख़ाबे मुस्लिम ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
43	अलमिस कुज़्ज़की ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
44	इतफ़ाउल फ़ितन तर्जुमा इह़याउस्सुनन ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
45	अल इदराक वत्तवस्सुल इला ह़क़ीक़तिल इश्तिराक ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
46	मुईनुल्लबीब तालीक़ अलफ़ियतुल ह़दीस मुफ़्ती तौक़ीर आलम पूरनवी
47	अत्तीबुश शजी शरह तिरमिज़ी मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
48	कश्फ़ुल मुगत्ता अन रिजालिल मुअत्ता मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
49	शरह शमाइल तिरमिज़ी मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
50	हा़शिया मुअत्ता इमाम मालिक मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
51	हा़शिया इब्न माजा मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
52	हा़शिया सुनने नसाई मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमान साह़ब
53	मुस्तज़ादुल ह़क़ीर अला ज़ादिल फ़क़ीर मौलाना बदरे आलम मेरठी
54	तोह़फ़तुलक़ारी फ़ी मुश्किलातिल बुख़ारी मौलाना इदरीस कांधलवी
55	अलबाक़ियात शरह इन्नमल आमाल...... मौलाना इदरीस कांधलवी
56	तोह़फ़तुल इख़वान ह़दीस शोबुल ईमान मौलाना इदरीस कांधलवी
57	क़लाइदुल अज़हार शरह किताबुल आसार (3 खण्ड) मुफ़्ती महदी ह़सन शाहजहांपुरी

58	जवाहिरुल उसूल फ़ी उसूलिल ह़दीस मौलाना अब्दुर्रह़मान मरवानी
59	अल अबवाब वत्तराजिम 4 खण्डों में ह़ज़रत मौलाना शेख़ ज़करया साह़ब
60	अवजज़ुल मसालिाक (6 खण्ड) ह़ज़रत मौलाना शेख़ ज़करया साह़ब
61	शरह जवाहिरुल उसूल क़ाज़ी अतहर मुबारकपुरी
62	तालीक़ व तह़क़ीक़ अला इब्ने खुज़ेमा डाक्टर मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ासमी आज़मी
63	इमदादुल बारी मौलाना अब्दुल जब्बार साह़ब
64	दिरासात फ़िल अह़ादीसिन्नबवी डाक्टर मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ासमी आज़मी
65	तह़क़ीक़ व तालीक़ लामिउद्दुरारी अला जामिइल बुखारी ह़ज़रत मौलाना शेख़ ज़करया साह़ब
66	ह़ाशिया बज़्लुल मजहूद ह़ज़रत मौलाना शेख़ ज़करया साह़ब
67	हुज्जियते ह़दीस ह़ज़रत क़ारी तय्यब साह़ब
68	जमउल फ़ज़ाइल शरहुश्शमाइल मौलाना मुह़म्मद इस्लाम क़ासमी
69	इनआमुल बारी शरह़ बुख़ारी मौलाना मुह़म्मद अमीन चाट गामी
70	ईज़ाहुत्तह़ावी मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
71	अल इत्तिह़ाफ़ लि मज़हबिल अह़नाफ़ अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी
72	तफ़हीमुल बुख़ारी मौलाना ज़हूरुल बारी
73	ईज़ाहुल मुस्लिम शरह मुक़द्दिमा मुस्लिम मौलाना मुह़म्मद ग़ानिम देवबन्दी

74	नेमतुल मुनइम शरह़ मुक़द्दिमाए मुस्लिम मौलाना नेमतुल्लाह आज़मी
75	फ़ैज़ुल मुनइम शरह़ मुक़द्दिमाए मुस्लिम मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी
76	फैज़ुल मुलहिम शरह़ मुक़द्दिमाए मुस्लिम मौलाना इस्लामुल ह़क़ गोपागंजी
77	दुररे फ़राइद तर्जुमा जामिउल फ़राइद मौलाना आशिक़ इलाही मेरठी
78	ख़साइले नबवी शैख़ुल ह़दीस मौलाना ज़करया साह़ब
79	मआरिफ़ुस्सुन्नह मौलाना अहतशामुल ह़क़ साह़ब
80	किताबते ह़दीस मौलाना सय्यद मिन्नतुल्लाह रह़मानी
81	मज़हबे मुख़्तार तर्जुमा व ह़वाशी मआनियुल अख़यार मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रह़मान साह़ब
82	अल्लालियुल मंसूरह मौलाना अब्दुल ह़फ़ीज़ बलयावी
83	शरह़ मुक़द्दिमा शेख़ अब्दुल ह़क़ मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
84	तश्रीह़ मुक़द्दिमा शेख़ अब्दुल ह़क़ मौलाना सअद मुश्ताक़ ह़सीरी
85	तोह़फ़तुल अत्क़िया मौलाना अब्दुल माजिद साह़ब
86	शरह़ अबूदाऊद मौलाना अब्दुल माजिद साह़ब
87	रफ़उल ह़ाजा तर्जुमा इब्न माजा मौलाना अब्दुल माजिद साह़ब
88	तंज़ीमुल अश्तात मौलाना अबुल ह़सन चाटगामी
89	इख़्तिलाफ़ुल अइम्मा फ़िल मसाइलि...... मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर संभली

90	तकमिलह फ़तहुल मुलहिम अ़रबी मुफ़्ती तक़ी अस्मानी पाकिस्तान
91	अह़सनुत्तनक़ीह़ लिरकआतित तरावीह़ मौलाना सय्यद ताहिर ह़सन साह़ब गयावी
92	तंशीतुलक़ारी फी ह़ल्लिबुखारी मौलाना मुह़म्मद शौकत क़ासमी
93	तोह़फ़तुल अरीब शरह़ अलफ़िया मुफ़्ती तौक़ीर आलम साह़ब पुरनवी
94	दरसे तह़ावी मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
95	तोह़फ़तुल अलमई शरह तिरमिज़ी मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी

उलमा ए देवबन्द की फ़िक़ही खिदमात

उलमाए देवबन्द ने जिस प्रकार दीन के तमाम शोबों (विभागों) को अपने पल्लू में समेट लिया और प्रत्येक की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। इसी प्रकार शरीअत के बुनयादी शोबे (विभाग) 'फ़िक़ह' की भी बड़ी सेवा की है। इस विभाग की उन की सेवा इतनी बड़ी है कि इस संक्षिप्त सूची में उन का आना सम्भव नहीं है। उनकी फ़िक़ही खिदमात ह़नफ़ी फ़िक़ह व उसूले फ़िक़ह के चारों ओर ही घूमती है। लेकिन उन के मसलक या तस्नीफ़ात (रचनाओं) में मसलकी तअस्सुब (ईर्ष्या) और कठोरता का कोई निशान नहीं है। उलमाए देवबन्द फ़िक़हे इस्लामी के चारों मज़हबों को अहले सुन्नत वल जमात का तर्जुमान मानते हैं, और बराबर अक़ीदत व मुहब्बत रखते हैं। नीचे उलमा–ए–देवबन्द की कुछ प्रसिद्ध तस्नीफ़ात (रचनायें) और शरह़ों (कुंजियों) का वर्ण किया जा रहा है:

उलमा–ए–देवबन्द की फ़िक़ह की कुछ किताबें

1	तालीक़ अल हुज्जह अला अहलिल मदीना (इमाम मुहम्मद) ह़ज़रत मुफ़्ती महदी ह़सन साह़ब
2	अह़कामुल कुरआन मौलाना ज़फ़र अह़मद थानवी, मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी, मौलाना इदरीस कांधलवी,
3	अह़कामे ह़ज़ मौलाना व मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी
4	आसान ह़ज़ मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी
5	इस्लाम क्या है? मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी
6	आलाते जदीदा के शरई अह़काम मौलाना व मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी

7	इमदादुल फ़तावा ह़ज़रत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी
8	इमदादुल मुफ़्तियीन मौलाना व मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
9	बुग्यतुल अलमई तख़रीजि ज़ैलई मौलाना व मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
10	बहिश्ती ज़ेवर ह़ज़रत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी
11	तर्जुमा कुदूरी ह़ज़रत मौलाना अबुल ह़सन बारह बनकवी
12	तालीमुल इसलाम मौलाना व मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह देहलवी
13	ह़ाशिया सिराजी मौलाना रह़मतुल्लाह सिलहटी
14	ह़ाशिया शरह़ निक़ाया (अ़रबी) मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
15	ह़ाशिया कंज़ुद दक़ाइक़ मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
16	ह़ाशिया नूरुल ईज़ाह़ मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
17	जवाहिरुल फ़िक़ह मौलाना व मुफ़्ती शफ़ी देवबन्दी
18	फ़तावा इमदादियह ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
19	फ़तावा दारुल उ़लूम देवबन्द मौलाना व मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रह़मान
20	फ़तावा मुह़म्मदी मा शरह़ देवबन्दी मौलाना मियां सय्यद असग़र हुसैन देवबन्दी
21	किफ़ायतुल मुफ़्ती मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह देहलवी

22	अज़ीज़ुल फ़तावा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
23	मुफ़ीदुल वारिसीन मौलाना मियां सय्यद असग़र हुसैन
24	मीरासुल मुस्लिमीन मौलाना मियां सय्यद असग़र हुसैन
25	नूरुल इस्बाह़ शरह़ नूरुल ईज़ाह़ मौलाना मुह़म्मद मियां साह़ब देवबन्दी
26	अल ह़ीलतुन्नाज़िज़ह ह़कीमुल उम्मत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी
27	सबीलुर्रशाद ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
28	दाफ़े बिदअत ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
29	अवसकुल उरा ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
30	ज़ुबदतुल मनासिक ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
31	अत्तज़कीर ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
32	क्या हिन्दुस्तान दारुल ह़रब है ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
33	अर्रायुन नजीह़ ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
34	हिदायतुल मूतदी ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
35	इसलाम का निज़ामे अराज़ी ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साह़ब
36	रूयते हिलाल ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साह़ब
37	मसला ए सूद ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साह़ब

38	बैंक इंशोरैंस और सरकारी क़र्जे मौलाना बुरहानुद्दीन संभली
39	रूयते हिलाल का मसला मौलाना बुरहानुद्दीन संभली
40	इसलामी अदालत क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
41	शियर्ज़ और कम्पनी क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
42	ज़रूरत व ह़ाजत क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
43	जदीद तिजारती शकलें क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
44	औक़ाफ़ क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
45	निज़ामुल फ़तावा ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साह़ब
46	फ़तावा मह़मूदिया ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मह़मूदुल ह़सन गंगोही
47	मसाइले इमामत ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती ह़बीबुर्रह़मान खैराबादी
48	मसाइल सज्दा सहू ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती ह़बीबुर्रह़मान खैराबादी
49	अशरफुल हिदाया मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
50	अस्सुबहुन्नूरी मौलाना मुह़म्मद ह़नीफ़ गंगोही
51	ईज़ाहुल हुस्सामी मौलाना जमाल अह़द साह़ब मेरठी
52	ग़ायतुस्सिआया शरह़ उर्दू हिदाया मौलाना मुह़म्मद ह़नीफ़ गंगोही
53	दरसे सिराजी मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ तावलवी

54	फ़ैज़े सुबहानी शरह़ उर्दू हुसामी मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
55	मुजल्लह फ़िक़ह इसलामी क़ाज़ी मुजाहिदुल इसलाम क़ासमी
56	कूतुल अख़्यार शरह़ नूरुल अनवार मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
57	अह़कामे लुहूमिल ख़ैल मौलाना बदरुल ह़सन क़ासमी
58	असरे ह़ाज़िर के जदीद मसाइल मौलाना बदरुल ह़सन क़ासमी
59	मुआशरती मसाइल मौलाना बुरहानुद्दीन संभली
60	तदवीने फ़िक़ह मुफ़्ती ज़फ़ीरुद्दीन साह़ब
61	जदीद फ़िक़ही मसाइल मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी
62	निकाह़ व तलाक़ व मीरास मुफ़्ती फ़ुज़ैलुर्रह़मान उस्मानी
63	ईज़ाहुल मसाइन मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
64	ईज़ाहुन्नवादिर मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
65	ईज़ाहुल मसालिक मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
66	ईज़ाहुल मनासिक मुफ़्ती शब्बीर अह़मद क़ासमी
67	सिक़ाया शरह़ हिदाया मौलाना उस्मान ग़नी
68	नूरुल अबसार अला शरह़िल मनार मौलाना बिलाल असग़र साह़ब
69	अलजलुलह़वाशी शरह़ उसूलुश्शासी मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी

70	इजमा और क़यास की हुज्जियत मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
71	अशरफुल हिदाया (8 जिल्दें) मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरोढवी
72	मुकम्मल मुदल्लल मसाइले सेट मौलाना मुह़म्मद रफ़अत क़ासमी
74	क़ामूसुलफिक़ह मौलाना खालिद सैफुल्लाह रह़मानी
75	ह़लाल व ह़राम मौलाना खालिद सैफुल्लाह रह़मानी
76	जदीद फ़िक़ही मसाइल मौलाना खालिद सैफुल्लाह रह़मानी

अक़ाइद और कलाम की कुछ किताबें

क्र.	पुस्तक का नाम/लेखक का नाम
1	तकरीर दिलपज़ीर ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी
2	हुज्जतुलइसलाम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी
3	अह़सनुल कलाम फ़ी उसूलि अक़ाइदिल इसलाम मौलाना रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
4	इसलामी अक़ाइद (उर्दू) मौलाना मुह़म्मद उस्मान दरभंगवी
5	इसलामी अक़ाइद (बंगला) मौलाना मुह़म्मद उस्मान दरभंगवी
6	तर्जुमा शरह़ अक़ाइद मौलाना अब्दुल अह़द देवबन्दी
7	हुदेसे माद्दह व रूह़ मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
8	अद्दीनुल क़य्यिम मौलाना सय्यद मनाजिर अह़सन गीलानी

9	इल्मुल कलाम मौलाना इदरीस कांधलवी
10	अक़ाइदुल इसलाम मौलाना इदरीस कांधलवी
11	अक़ाइदुल इसलाम क़ासमी मौलाना ताहिर क़ासमी देवबन्दी
12	अक़ाइदुल फ़राइद हाशिया शरह़ अक़ाइद मौलाना मुह़म्मद अली चाटगामी
13	हाशिया अक़ीदतुल तहावी मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब क़ासमी
14	रह़मतुल्लाह अल–वासिअ़ह (शरह़ हुज्जतुल्लाह अल–बालिफ़ह) ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती सईद अह़मद पालनपूरी

ईसाइयत के खंडन में कुछ किताबें

1	इसलाम और मसीहियत मौलाना सनाउल्लाह अमरत सरी
2	तौह़ीद, तसलीस और राहे निज़ात मौलाना सनाउल्लाह अमरत सरी
3	अह़सनुल ह़दीस फ़ी इबतालित्तसलीस ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
4	इसलाम और नसरानियत ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
5	इज़हारुल ह़क़ीक़त अ़रबी ह़ज़रत मौलाना रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
6	दावते इसलाम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
7	सबीलुल इसलाम मौलाना डाक्टर मुस्ताफ़ा ह़सन अलवी
8	बशाइरुन्नबिईन ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी

शिईयत के खंडन में कुछ किताबें

1	हदयतुश्शीया ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी

2	इबताले उसूलुश्शिया ह़ज़रत मौलाना रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
3	इरशादुस्सक़लेन ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
4	इसलाम और शिया मज़हब मौलाना इमाम अली दानिश क़ासमी
5	दफ़उलमुजादला अन आयातिल मुबाहिला ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
6	अल काफ़ी लिल एतक़ाद फ़िस्साफ़ी मौलाना मुह़म्मद रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
7	अलमनार रसाइलुस्सुन्नह व शिया मौलाना मुह़म्मद रह़ीमुल्लाह बिजनौरी
8	मतरफतुल करामह ह़ज़रत मौ. ख़लील अह़मद सहारनपुरी
9	हिदायातुर्रशीद इला इफहामिल अनीद ह़ज़रत मौ. ख़लील अह़मद सहारनपुरी
10	फ़ितना ए रफ़्ज़ ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
11	ईरनी इंक़लाब ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
12	उस्मान ज़ुन्नूरेन ह़ज़रत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी
13	सिद्दीक़े अकबर ह़ज़रत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी

क़ादियानियत के खंडन में कुछ किताबें

1	अक़ीदतुल इसलाम फ़ी ह़याति ईसा अल्लामह अनवर शाह कशमीरी
2	तहियतुल इसलाम / अल्लामह अनवर शाह कशमीरी
3	इकफ़ारुल मुलह़िदीन / अल्लामह अनवर शाह कशमीरी
4	ख़ातिमुन्नबियीन अल्लामह अनवर शाह कशमीरी

5	अल–जवाबुल फ़सीह़ लि मुनकिरि …… मौलाना बदरे आलम मेरठी मदनी
6	कलिमतुस्सिर फ़ी ह़याति रूह़िस्सिर मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
7	कलिमतुल्लाह फ़ी ह़याति रूह़िल्लाह मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
8	मिसकुल खिताम फ़ी खत्मि नुबुव्वति …… मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
9	इसलाम और मिर्ज़ाइयत का उसूली …… मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
10	अत्तसरीह़ बिमा तवातुर फ़ी नुज़ूलिल मसीह़ मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी उसमानी
11	खतमे नुबुव्वत 3 भाग मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी उसमानी
12	मसीह़े मौऊद की पहचान मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी उसमानी
13	साइक़ा आसमानी बर फ़िरका क़ादयानी मौ. मुह़म्मद मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
14	मिर्ज़ाइयत का खात्मा मौ. मुह़म्मद मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
15	तह़क़ीकुल कुफर वल ईमान मौ. मुह़म्मद मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
16	फ़तह क़ादियान का दिल कश नजारह मौ. मुह़म्मद मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
17	इसलाम और क़ादियानियत का ……मुताला मौलाना अब्दुल ग़नी पटयालवी
18	क़ादियानियत पर ग़ोर करने का सीधा रास्ता मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी
19	खत्मे नुबुव्वत मौलाना हिफ़ज़ुर्रह़मान सिवहारवी
20	अल खिताबुल मसीह फ़ी तह़क़ीक़िल …… मौलाना अशरफ़ अली थानवी

21	फ़ितना ए क़ादियानियत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ बिन्नौरी
22	कुफ्र व इसलाम की हुदूद और क़ादियानियत मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
23	दआविय मिर्ज़ा मौलाना मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
24	मिर्ज़ाइयत का जनाज़ह बे गोरो कफन मौ. मुह़म्मद मुर्तज़ा ह़सन चान्दपुरी
25	अशद्दुल अज़ाब अला मुसैलिमतिल कज़्जाब मौ. मुह़म्मद मुर्तज़ा ह़सन चान्दपुरी
26	रद्दे मिर्ज़ाइयत के ज़र्री उसूल मौलाना मंजूर अह़मद चिनेवटी
27	नुजूले ईसा मौलाना बद्रे आलम मेरठी
28	खलीफ़ा क़ादियानी जवाब दें। मौलाना मुह़म्मद अली जालंधरी
29	मिर्ज़ाइयों का सियासी किरदार मौलाना मुह़म्मद अली जालंधरी
30	तोह़फ़ा क़दियानियत मौ. मुह़म्मद यूसुफ़ लुधयानवी
31	कादियानी शुबह़ात के जवाबात मौलाना अल्लाह वसाया साह़ब
32	पारलियामिन्ट में क़ादियानी शिकनी मौलाना अल्लाह वसाया साह़ब
33	मुह़ाज़रात ब उनवान रद्दे क़ादियानियत मौ. क़ारी मुह़म्मद उसमान मंसूरपुरी
34	इलहामाते मिर्ज़ा मौलाना सनाउल्लाह अमरतसरी
35	क़ादियानियत का इलमी मुह़ासबा मौलाना मुह़म्मद इलयास बर्नी
36	रद्दे क़ादियानियत के ज़र्री उसूल / मौलाना मुह़म्मद मंजूर चिनैवटी हिंदी अनुवादः मौलाना शाह आ़लम गोरखपूरी

बिदअत के खंडन में कुछ किताबें

1	बराहीने क़ातिआ मौलाना ख़लील अह़मद सहारनपुरी
2	अल मुहन्नद अललमुफन्नद यानी अक़ाइद उलमा ए देवबन्द मौलाना ख़लील अह़मद सहारनपुरी
3	अश्शिहाबुस्साक़िब शैखुल इसलाम मौ. हुसैन अह़मद मदनी
4	सबीलुस्सिदाद फ़ी मसअलतिल इमदाद मौलाना मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
5	अस्सहाबुल मिदरार मौलाना मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
6	तौज़ीहुल बयान फ़ी हि़फज़िल ईमान मौलाना मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी
7	तरीक़ा मौलूद शरीफ़ ह़कीमुलउम्मत मौ. अशरफ़ अली थानवी
8	हि़फ़ज़ुल बयान ह़कीमुलउम्मत मौ. अशरफ़ अली थानवी
9	मुफ़ीदुल मूमिनीन फ़ी रद्दिल मुबतदिईन ह़कीमुलउम्मत मौ. अशरफ़ अली थानवी
10	आंखों की ठण्डक (हाज़िर व नाज़िर) मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
11	इज़ालतुलरैब अन अक़ीदति इल्मिल ग़ैब मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
12	राहे सुन्नत मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
13	नूरो बशर मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
14	दिल का सुरूर मौलाना सरफ़राज़ खां साह़ब सफ़दर
15	ह़क़ पर कौन है? मौलाना इमाम अली दानिश

16	ज़लज़लह दर ज़लज़लह मौलाना इमाम अली दानिश
17	कलिमतुल ईमान और सुन्नत व बिदअत मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी साह़ब देवबन्दी
18	बरेलवी फ़ितने का नया रूप मौलाना मुह़म्मद आरिफ़ साह़ब सम्भली
19	इल्मे ग़ैब क़ारी मुह़म्मद तय्यब सह़ब क़ासमी
20	बरेलवी कुरआन का इल्मी तजज़ियह मौलाना अख़लाक़ हुसैन क़ासमी
21	अशरफुल जवाब ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
22	बवारिकुल ग़ैब मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
23	फ़तह़ बरेली का दिल कश नज़ारा मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
24	साएक़ऐ आसमानी बर ...... रज़ाख़ानी मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
25	इमआनुन्नज़र फ़ी अज़ानिल क़बर मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
26	बरेलवियत का शीश मह़ल मौलाना ताह़िर हुसैन गयावी
27	रज़ाखानियत के अलामती मसाइल मौलाना ताह़िर हुसैन गयावी
28	अंगुश्त बोसी से बाईबिल बोसी तक मौलाना ताह़िर हुसैन गयावी
29	शमअे तौह़ीद मौलाना सनाउल्लाह अमरत सरी
30	अल जन्नह लि अहलिस्सुन्नह मौलाना अब्दुल ग़नी पटयालवी
31	बरैली मज़हब पर एक नज़र मौलाना अब्दुल्लाह क़ासमी ग़ाज़ी पुरी

32	मुख़तारे कुल मौलाना सरफ़राज़ खां सफ़्दर
33	समाए मौता मौलाना सरफ़राज़ खां सफ़्दर
34	चराग़ की रौशनी मौलाना सरफ़राज़ खां सफ़्दर
35	गुलदस्ताए तौह़ीद मौलाना सरफ़राज़ खां सफ़्दर
36	तारीख़ मीलाद मौलाना अ़बदुश्शकूर मिर्ज़ापूरी

इह़सान व तसव्वुफ़ की कुछ किताबें

1	इह़सान व तसव्वुफ़ (बंगला) मौलाना अमीनुल ह़क़ मेमन संघी
2	आदाबुश्शेख़ वलमुरीद ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
3	तबवीब तरबियतुस्सालिक ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
4	तरबियतुस्सालिक ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
5	तर्जुमा अनफ़ासुल आरिफ़ीन मौलाना यूशा सहारनपुरी
6	अत्तशर्रुफ़ बिमारिफ़ति अह़ादीसि तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
7	अत्तसर्रुफ़ फ़ी तह़क़ीक़ित्तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
8	अत्तकश्शुफ़ अन मुहिम्मातित्तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
9	ख़ुसूसुल कलिम ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
10	शरह़ मसनवी मौलाना रूम मौलाना अब्दुल क़ादिर डेरवी

11	शरीअत व तसव्वुफ़ मौलाना मसीहुल्लाह खां अलीगढ़ी
12	उनवानुत्तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
13	कलीदे मसनवी मौलाना रूम ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
14	मबादिउत्तसव्वुफ़ ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
15	मसइलुस्सलूक कलामे मलिकुल मुलूक ह़जरत मौलाना अशरफ़ अली थानवी

ज़बान व अदब (सहित्य) की कुछ किताबें

1	क़सीदह लामिअतुल मूजिज़ात (अ़रबी) मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी देवबन्दी
2	तर्जुमा मक़ामाते ह़रीरी मा ह़ाशिया मौलाना अब्दुस्समद सारिम
3	तौज़ीह़ात शरह़ सबआ मुअल्लिक़ात मौलाना क़ाज़ी सज्जाद हुसैन
4	अत्तालीक़ात शरहुल मक़ामात मौलाना नूरुल ह़क
5	ह़ाशिया दीवाने ह़मासा (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
6	ह़ाशिया दीवाने मुतनब्बी ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
7	ह़ाशिया मक़ामाते ह़रीरी ह़ज़रत मौलाना इदरीस कांधलवी
8	ह़ाशिया मुफ़ीदुत्तालिबीन ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
9	ह़ाशिया मुफ़ीदुत्तालिबीन मौलाना ज़हूरुल ह़क़ देवबन्दी
10	ह़ाशिया मुफ़ीदुत्तालिबीन मौलाना मुह़म्मद अली चटगामी

11	अल क़िराअतुल वाज़िहा (अ़रबी) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा केरानवी
12	अल—बैयनात तर्जुमा उर्दू क़साइदे लामियातुल मूजिज़ात ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
13	कलामे अ़रबी (दो जिल्द) ह़ज़रत मौ. ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद
14	मुईनुल लबीब फ़ी क़साइदिल ह़बीब मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी देवबन्दी
15	नफ़ह़तुल अ़रब (अ़रबी) ह़ज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली अमरोहवी
16	नफ़ह़तुल अदब (अ़रबी) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा केरानवी
17	ह़ाशिया मुक़द्दिमाते ह़रीरी मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा केरानवी
18	अल इफ़ादातुल जमालियह मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा केरानवी

लुगात (शब्द कोष) की कुछ किताबें

1	उर्दू अ़रबी डिक्श्नरी मौलाना अब्दुल ह़फ़ीज़ बलयावी
2	बयानुल्लिसान (अ़रबी उर्दू लुग़त) क़ज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
3	क़ामूसुल क़ुरआन क़ज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
4	अल क़ामूसुल जदीद (उर्दू से अ़रबी) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी
5	अल क़ामूसुल जदीद (अ़रबी से उर्दू) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी
6	अल क़ामूसुल इस्तलाह़ी (उर्दू से अ़रबी) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी
7	अल क़ामूसुल इस्तलाह़ी (अ़रबी—उर्दू) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी

8	अल क़ामूसुल वह़ीद (अ़रबी से उर्दू) मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी
9	मिस्बाहुल्लुग़ात मौलाना अब्दुल ह़फ़ीज़ बलयावी
10	अलमोजमुल वह़ीद मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा साह़ब कैरानवी

तारीख व सीरत (इतिहास) की कुछ किताबें

1	इसलाम का निज़ामे तालीम व तरबियत ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
2	इसलाम का निज़ामे हुकूमत ह़ज़रत मौलाना ह़ामिदुल अनसारी ग़ाज़ी
3	इसलाम में ग़ुलामी की ह़क़ीक़त ह़ज़रत मौलाना सईद अकबराबादी
4	इसलाम और मग़रबी तहज़ीब ह़ज़रत मौलाना क़ारी मु. तय्यब क़ास्मी
5	इशाअते इसलाम ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी
6	आयानुल हुज्जाज ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी
7	इमाम अबू ह़नीफ़ा की सियासी ज़िन्दगी ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
8	अनवारे क़ास्मी (ह़. नानौतवी की जीवनी) मौलाना अनवारुल ह़सन शेरकोटी
9	बलाग़ुल मुबीन फ़ी मकातिबि सैयदिल मुर्सलीन ह़ज़रत मौलाना ह़िफ़ज़ुर्रह़मान सिवहारवी
10	पानीपत और बुज़ुर्गाने पानीपत ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी
11	तारीख़े इसलाम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां साह़ब
12	तारीखुत्तफ़्सीर मौलाना अब्दुस्समद सारिम साह़ब

13	तारीखुल ह़दीस मौलाना अब्दुस्समद सारिम साह़ब
14	तारीखुल कुरआन मौलाना अब्दुस्समद सारिम साह़ब
15	तारीखे मिल्लत (तीन भाग) क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
16	तजल्लियाते उस्मानी मौलाना अनवारुल ह़सन शेरकोटी
17	तज़किरतुल ऐज़ाज़ मौलाना सैयद अनज़र शाह कश्मीरी
18	तज़किरह शाह वलीयुल्लाह देहलवी ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी
19	तज़किरह ह़ज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंजूर नौमानी
20	तर्जुमा सीरते ह़लबियह मौलाना मुह़म्मद असलम साह़ब रमज़ी
21	हुज़ूरे अकरम की सियासी जिन्दगी मौलाना अख़लाक़ हुसैन क़ासमी
22	ह़याते इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी
23	ह़याते इमदाद मौलाना अनवारुल ह़सन शेरकोटी
24	ह़याते शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौ. सय्यद असग़र हुसैन देवबन्दी
25	ह़याते शेखुल इसलाम ह़ज़रत मौ.सय्यद असग़र हुसैन देवबन्दी
26	ह़याते नबवियह ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मह़मूद नानौतवी
27	ख़ातिमुल अम्बिया ह़ज़रत मौ. मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
28	ख़ातिमुन्नबियीन ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब क़ासमी

29	खालिद बिन वलीद मौलाना अब्दुस्सबूह़ पेशावरी
30	खुल्क़े अज़ीम ह़ज़रत मौलाना ह़ामिदुल अंसारी ग़ाज़ी
31	रसूले करीम ह़ज़रत मौलाना ह़िफ़्ज़ुर्रह़मान सिवहारवी
32	ज़ुब्दतुस्सियर ह़ज़रत मौलाना इमादुद्दीन शेरकोटी
33	सफ़र नामा शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौ. सय्यद हुसैन अह़मद मदनी
34	सीरत ख़ालिद बिन वलीद मौलाना ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
35	सफ़र नामा बरमा ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
36	सफ़र नामा अफ़ग़ानिस्तान ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
37	सफ़र नामा मिश्र व ह़िजाज़ ह़ज़रत मौलाना मिन्नतुल्लाह रह़मानी
38	सवानह अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
39	सवानह उवेसे क़रनी ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
40	सवानह ह़ज़रत मौलाना मुह़म्म्द मियां ह़ज़रत मौ. सय्यद अख़्तर हुसैन देवबन्दी
41	सवानह क़ासमी ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
42	सीरते तैयबह मौ. ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
43	सीरते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ह़ज़रत मौ. मुह़म्मद इदरीस कांधलवी
44	सीरते मुबारका मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद मियां देवबन्दी

45	सीरते रसूल सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद असलम रमज़ी
46	शाह वली युल्लाह की सियासी तह़रीक ह़ज़रत मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी
47	शहीदे करबला ह़जरत मौ. क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
48	शहीदे करबला ह़जरत मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ी देवबन्दी
49	शहीदे करबला क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी
50	शोहदा ए इसलाम ह़जरत मौलाना अख़लाक़ हुसैन गीलानी
51	सिद्दीक़े अकबर ह़जरत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी
52	अ़रबी किताबों के तराजिम मौलाना अब्दुस्सबूह़ पिशावरी
53	उलमाए ह़क़ ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी
54	उलमाए हिन्द का शानदार माज़ी ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी
55	गुलामाने इसलाम ह़ज़रत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी
56	फ़क़ीहे मिश्र ह़ज़रत मौ. डाक्टर मुस्तफ़ा ह़सन अलवी
57	मशाहीरे उम्मत ह़ज़रत मौ. क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
58	मोह़तसिबे इसलाम ह़ज़रत मौ. डाक्टर मुस्तफ़ा ह़सन अलवी
59	मुरक़्का सीरत ह़ज़रत मुफ़्ती जमीलुर्रह़मान सिवहारवी
60	मुसलमानों का उरूजो व ज़वाल ह़ज़रत मौ. सईद अह़मद अकबराबादी

61	मोलवी मानवी ह़ज़रत मौ. सय्यद असग़र हुसैन देवबन्दी
62	मेरी डायरी ह़ज़रत मौलाना उबैदुल्लाह सिन्धी
63	अन्नबियुल ख़ातिम ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
64	नशरुत्तिब ह़ज़रत मौ. अशरफ़ अली थानवी
65	नक़्शे ह़यात ह़ज़रत मौ. सय्यद हुसैन अह़मद मदनी
66	वफ़ातुन्नबी ह़ज़रत मौलाना अख़लाक़ हुसैन क़ासमी
67	हज़ार साल पहले ह़ज़रत मौ. मनाज़िर अह़सन गीलानी
68	हिन्दुस्तान अहदे मुग़ल्या में ह़ज़रत मौ. सय्यद मुह़म्मद मियां देवबन्दी

इल्मे कलाम ह़क़ाइक़े इसलामिया और फ़न असरारे दीन और दूसरे विभिन्न ज्ञान–विज्ञान में देवबन्द के पूर्वजों की हज़ारों शोध पूर्ण रचनायें हैं जिन की गणना और परिचय इन संक्षिप्त पृष्ठों में आना कठिन है। दारुल उ़लूम देवबन्द की रचनाओं और संकलनों और अनुवादकों का एक बहुत ही सीमित ख़ाका है। जिस में केवल कुछ विषयों की किताबों के नाम दिये जा सके हैं नहीं तो एक अनुमान के अनुसार देवबन्द के विद्वानों की रचनाओं की संख्या बारह हज़ार के लग भग है। केवल एक विद्वान ह़कीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी की पुस्तकें एक हज़ार से अधिक हैं। दिल्ली की प्रकाशन संस्था "नदवतुल मुसन्निफ़ीन" और ढाबेल में मजलिस इलमी फ़ुजला–ए–दारुल उ़लूम ही के स्थापित किये हुए हैं, जिन से अब तक बहुत सी महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो कर पाठकों की प्रशंसा प्राप्त कर चुकी हैं।

इस से पूर्व कासमी प्रकाशन देवबन्द और ताजुल मआरिफ़, शेख़ुल हिन्द एकेडमी और मरकजुल मआरिफ़ आदि संस्थाओं से भी बहुत सी किताबें छप चुकी हैं। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, और बंगलादेश में देवबन्द के विद्वानों की और भी बहुत सी तस्नीफ़ी और इशाअती संस्थायें हैं जिन

की संख्या जानना बहुत कठिन है। ये संस्थायें उप महाद्वीप के विभिन्न स्थानों और विभिन्न भाषाओं में अपने–अपने तौर पर दीनी व इल्मी खिदमत में लगी हुई हैं, जिन में विभिन्न ज्ञान–विज्ञान के अतिरिक्त दरसे निज़ामी (निज़ामे पाठय क्रम) की बहुत सी किताबों की शरहें (कुंजियें) व नोट भी लिखे गये हैं और विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किये गये हैं।

देवबन्द के लगभग साठ कुतबखाने देवबन्द के विद्वानों की रचनाओं को प्रकाशित करने में लगे हैं। इनमें पुस्तकों के प्रकाशन का अनुमान इस से किया जा सकता है कि देवबन्द में आफ़सैट प्रेस की कई मशीने किताबों के छापने में लगी हैं। इन कुतबखानों के कथनानुसार काम की यह दशा है कि बहिश्ती ज़ेवर (ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी) के कई–कई एडिशन एक समय में विभिन्न कुतुबख़ानों से निकलते रहते हैं। बहिश्ती ज़ेवर के तर्जुमें अब तक कई भाषाओं में छप चुके हैं। पढ़े लिखे मुसलमानों के बहुत कम घर ऐसे होगें जहां बहिश्ती ज़ेवर मौजूद न हों। तालीमुल इस्लाम (लेखक मुफ़्ती मुह़म्मद किफ़ायतुल्लाह) की उपयोगिता का भी यही हाल है। इस के भी कई एडिशन छप चुके हैं। हिन्दी और दूसरी भाषाओं में इस का भी अनुवाद है।

देवबन्द के विद्वानों की रचनायें उप महाद्वीप के मुल्कों के अलावा अफ़गानिस्तान, बरमा, नेपाल, सेलोन, दक्षिणी अफ्रीक़ा, ब्रिटेन, अमेरिका और दूसरे देशों तक पहुंचती है जहां ये रचनायें शौक़ से पढ़ी जाती हैं। दीनी पुस्तकों के प्रकाशन के कारण देवबन्द भारत वर्ष में बड़ा केन्द्र समझा जाता है, अतः इन पुस्तकों द्वारा बहुत से देशों में दीनी ज्ञान के प्रकाशन और प्रसार की बड़ी सेवा हो रही है।

दारुल उ़लूम की उर्दू सहित्य की सेवायें

हिन्दुस्तान में ज्ञान–विज्ञान, आत्मज्ञान और धार्मिक उन्नति का प्रकाशमान स्तम्भ 'दारुल उ़लूम देवबन्द' की लगातार कोशिश एक सौ पचास साल पर आधारित है। दारुल उलूम जिन ह़ालात (परस्थितियों) में स्थापित हुआ था उस से ज्ञात होता है कि ब्रिटिश शासन ने ईसाइयत के प्रचार और प्रसार के लिये जिन हथकण्डों का प्रयोग किया दारुल उ़लूम देवबन्द ने दीनी, तालीमी, सियासी, समाजी, सक़ाफ़ती और भाषाई प्रत्येक मोर्चे पर अंग्रेज़ों के प्रोपैगण्डों को असफल बना दिया। मुसलमानों के अन्दर से दीनी रूह़ को मुर्दा और इस्लामी विशिष्ठता को समाप्त कर देने के लिये पश्चिम से जो आंधी उठी तो ऐसा अनुभव हो रहा था कि हिन्तुस्तान में अब इस्लाम की स्थिरता कच्चे धागे से लटक रही है। लेकिन उलमा–ए–हिन्द विशेष रूप से दारुल उ़लूम देवबन्द के उलमा (विद्वानों) ने मुसलमानों के अन्दर से मायूसी के भाव को निकाल कर उम्मीद की रोशनी पैदा की और हर प्रकार से इस्लाम और मुसलमानों की रक्षा की।

विद्वानों की दूर दृष्टि देख रही थी कि मुसलमानों की मज़हबी ज़ुबान (भाषा) अ़रबी है और हिन्दुस्तान में फ़ारसी का बोलबाला है लेकिन भविष्य में हिन्दुस्तान का भाषाई नक़्शा कुछ और होगा। ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तानियों की भाषा पर आक्रमण करके अंग्रेज़ी भाषा और सहित्य के फ़रोग़ (उन्नति) का हर सम्भव प्रयत्न कर रही थी।लेकिन हिन्दुस्तान पर शासन करने के लिये यहां की भाषायें जानना भी आवश्यक था। उस समय उर्दू अनुन्नत भाषा थी। अंग्रेज़ अ़रबी इस कारण नहीं सीख सकते थे कि वह मुसलमानों की खालिस धार्मिक भाषा थी। और फ़ारसी ज़ुबान भी धार्मिक रंग अपना कर मुसलमानों की ज़ुबान

बन चुकी थी। इसलिये उन्हों ने उर्दू भाषा की ओर ध्यान दिया। अतः अंग्रेज़ों ने अपने नापाक इरादे को पूरा करने के लिये उर्दू सीखना शुरू किया और उसकी शिक्षा को आसान बनाने के लिये क़वाइद (ग्रामर) लिखवाये।

दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना का जो समय है वह उर्दू का उन्नतिशील समय कहलाता है, उस समय उर्दू भाषा अपने आप को बनाने और संवारने में लगी थी। इस का भविष्य कैसा होगा कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन देवबन्द के विद्वानों ने अनुभव किया कि यद्यपि अ़रबी मुसलमानों की धार्मिक भाषा है और फ़ारसी पर भी धर्म का लबादा डाल दिया गया है, लेकिन निकट भविष्य में उर्दू का बोलबाला होने वाला है। हिन्दुस्तान में अगर किसी भाषा द्वारा इस्लाम की ख़िदमत हो सकती है तो वह उर्दू ज़ुबान है। अब सवाल यह है कि देवबन्द के पूर्वजों (अकाबिरीन) ने अ़रबी और फ़ारसी जैसी मीठी और उन्नतिशील भाषाओं को अचानक नकार कर उर्दू ही को शिक्षा का मध्यम क्यों बनाया? विदित है कि इसे देवबन्द के उलमा की बुद्धिमत्ता ही कहा जा सकता है। या दूसरे शब्दों में इल्हाम से उपमा दी जा सकती है, आज अगर देवबन्द की शिक्षा का माध्यम अ़रबी या फ़ारसी होता उसका क्षेत्र सिमटकर कितना कम हो जाता इसका अनुभव हिन्दुस्तान के भाषाई वातावरण में किया जा सकता है।

दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना के नतीजे में हिन्दुस्तान के चप्पे–चप्पे में दीनी मदरसों का जाल फैला हुआ है और अधिकतर मदरसे दारुल उ़लूम के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अपनी शिक्षा का माध्यम उर्दू को बनाये हुए है। यद्यपि हिन्दुस्तान की विभिन्न रियासतों (प्रान्तों) की भाषा भिन्न है लेकिन हर स्थान पर शिक्षा का माध्यम उर्दू ही है। यहां तक कि पश्चमी बंगाल और आसाम सहित, बंग्ला देश में भी दारुल उ़लूम के आधार पर उर्दू ही में शिक्षा दी जाती है। अगर यह कहा जाय तो ग़लत न होगा कि देश के बंटवारे के पश्चात हिन्दुस्तान में जिस प्रकार का सौतेला व्यवहार अपनाया गया है और उर्दू भाषा ज़ुबानी बंटवारे का शिकार हो गई अगर इस्लामी मदरसे न होते या मदरसे वालों का ध्यान उर्दू भाषा की ओर न होता तो इसका अस्तित्व हिन्दुस्तान में इसी तरह होता जैसा इस समय फ़ारसी भाषा का है।

उर्दू भाषा मुसलमानों की भाषा है, यह कहना बिल्कुल ग़लत है। हिन्दुस्तान की स्थानीय भाषायें, प्राकृति, अपभ्रंश, संस्कृत और पंजाबी के साथ, अ़रबी, फ़ारसी के आपसी मेल मिलाप से उर्दू बनी है। और इस के जन्म से लेकर उन्नति तक तमाम मंजिलों को तय करने में, हिन्दू, मुसलमान, बुद्ध, जैन, ईसाई और पादरियों का बराबर का योगदान है। लेकिन उर्दू भाषा धार्मिक ईर्ष्या का शिकार उस समय हुई जब आज़ादी से पहले ही हिन्दुओं का एक वर्ग हिन्दू राष्ट्र की विचारधारा लेकर सामने आया और देश की एकता को नष्ट कर दिया। उस वर्ग ने हिन्दुओं को यह समझाने का प्रयत्न किया कि उर्दू की लिपि अ़रबी की लिपि के अनुसार है और मुसलमानों के धार्मिक नेता इस भाषा को अपनी भाषा बनाये हुए हैं। हिन्दू समर्थक संगठन अपने इस आन्दोलन में अधिक सीमा तक सफल हो गयीं। इस से उर्दू जो हिन्दुस्तान की रिवायत की अमीन ओर कौ़मी एकता की अलामत है मज़हबी घृणा का शिकार हो गई।

आज अगर उर्दू में ज़िन्दगी ही नहीं बल्कि वह उन्नति की राहें तय कर रही हैं तो वह इन मदरसों की ही देन है। दारुल उ़लूम के पढ़े लिखे देश विदेश के विभिन्न मदरसों में, शेरो–शायरी, लेखन कार्य, काव्य संकलन, अनुवाद, व्याख्याएं, मासिक और साप्ताहिक पत्र पत्रिकाओं के द्वारा उर्दू की भरपूर सेवा कर रहे हैं। ह़दीस, तफ़सीर फ़त्वे आदि के जो काम उलमा–ए–देवबन्द के द्वारा हुए हैं वह उर्दू भाषा को परवान चढ़ाने में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि दूसरी संस्थाओं का उर्दू भाषा से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। अगर पूरे तौर पर देखा जाय तो उर्दू भाषा और उससे सम्बंधित बातों का ताल्लुक़ तीन बड़ी संस्थाओं से है। एक ओर देवबन्द और उसके शरई मसलक का पालन करने वाले इदारों (संस्थाओं) को है। दूसरी तरफ़ अलीगढ़ और उसकी वर्तमान शिक्षा को है। तीसरी तरफ़ नदवतुल उलमा और उस की विचारधारा को मानने वाले आते हैं। लेकिन उर्दू ज़ुबान व अदब की खिदमत में देवबन्द को महत्व इस कारण है कि यहां के उलमा की रचनायें दूसरो के मुक़ाबले में कहीं अधिक हैं। जब कि दूसरी संस्थाओं में यह बात नहीं है। फिर यह कि वह विशेषता जो दारुल उ़लूम देवबन्द को दूसरी संस्थाओं से अलग करती है वह इसी की रूप रेखा पर

मदरसों का जाल है। भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश में तो लगभग नब्वे प्रतिशत मदरसे ऐसे है जो अपना सम्बन्ध देवबन्द से रखते हैं। वह उर्दू के माध्यम से कुरआन और ह़दीस की शिक्षा देते हैं।

उर्दू की सेवा के सम्बन्ध से केवल इतना ही नहीं है कि इस्लामी मदरसे उर्दू को अपना शिक्षा का साधन बनाये हुए हैं बल्कि अधिकतर मदरसे उर्दू में अपना मासिक भी निकालते हैं, और उर्दू पत्रकारिता बनाने, संवारने और निखारने का भ्रसक प्रयत्न करते हैं। उर्दू के साथ यह लगाव वहां के उलमा को अपने पूर्वजों से विरासत में मिला है। दारुल उ़लूम देवबन्द सबसे पहले आत्मिक संरक्षक ह़ाजी इमदादुल्लाह साह़ब की उर्दू रचनायें और उनकी आत्मा को झिनझोरने वाली शायरी इस कारण भी उर्दू की महान सेवा बन जाती है कि उस दौर में उर्दू भाषा अनुन्नत थी। देवबन्द के आन्दोलन के संस्थापक ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी उर्दू की रचनायें और उर्दू शायरी मे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आप के कुछ शेर तो उर्दू के ऊंचे से ऊंचे शायर को भी मात देते हैं।

दारुल उ़लूम के पहले सदर मुदर्रिस मौलाना मुह़म्मद याकूब नानौतवी ने ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी की जीवनी उस समय लिखी जब के स्वयं सहित्य लेखन से खाली था। यह जीवनी लेखन उर्दू अदब का बेहतरीन नमूना है। दारुल उ़लूम देवबन्द की महान हस्ती विद्वान मौलाना रशीद अह़मद गंगोही की लेखन शैली आज भी महत्व रखती है। उनकी आरासतः व पैरासतः तह़रीर आज भी उर्दू अदब का एक नमूना है। दारुल उ़लूम देवबन्द के पहले शागिर्द ह़ज़रत शैखुल हिन्द मह़मूदुल ह़सन उच्च कोटि के सहित्यकार थे। उन्हों ने अपनी इल्मी रचना और दर्द भरी शायरी के द्वारा उर्दू की ज़बरदस्त सेवा की है। मुहावरों और प्रतिदिन के प्रयोग से भरी हुई आपकी तह़रीरें उर्दू की एक नई शैली की अमूल्य निधि है। दारुल उ़लूम देवबन्द के पूर्व मोहतमिम मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी की प्रसिद्ध कृति 'इशाअते इस्लाम' अपनी सादगी और साधारण उर्दू में अलग शान रखती है। ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानावी की एक हज़ार से अधिक उर्दू की रचानायें उर्दू भाषा को उन्नति देने में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। बिना विरोध मसलक उप महाद्वीप का वह कौन सा मुस्लिम

घर होगा जहाँ आप की प्रसिद्ध संग्रह 'बहिश्ती ज़ेवर' उर्दू भाषा में न पहुंची हो। आपने अपने विशेष साथी मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी के पत्रों के उत्तर अधिकतर शायरी में दिये हैं।

अल्लामा शब्बीर अह़दम उस्मानी के कु़रआन शरीफ़ के ह़ाशिये उर्दू में निराले अन्दाज़ पर कु़बूलियत प्राप्त कर चुके हैं। सऊदी अ़रब सरकार ने तर्जुमा शैख़ुल हिन्द के साथ आपके ह़ाशियों को लाखों की संख्या में छपवाकर घर–घर में पहुंचाने की पूरी कोशिश की है। मौलाना मानाज़िर अह़सन गीलानी भी दारुल उ़लूम ही के पढ़े हुए थे जिन्हों ने उर्दू ज़बान व अदब पर अपनी सेवा के गहरे चिन्ह स्थापित किये हैं। इनके अतिरिक्त मारिफु़ल कु़रआन लिखने वाले मुफती मुह़म्मद शफ़ी साह़ब, मौलाना इदरीस साह़ब कांधलवी, मौलाना बद्रे आलम मेरठी, मौलाना ह़िफ़्ज़ुर्रह़मान, मौलाना मुह़म्मद मियां देवबन्दी, ह़कीमुल इस्लाम मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब मौलाना मंजूर नोमानी, मौलाना ह़बीबुर्रह़मान आज़मी, मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी, क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन मेरठी, मौलाना ह़ामिद अंसारी ग़ाज़ी, मौलाना रज़ा अह़मद बिजनौरी और बेमिसाल अदीब मौलाना वह़ीदुज़्ज़मा कैरानवी आदि देवबन्द के उलमा ने उर्दू के इल्मी व अदबी सरमाये में रंगा रंग इज़ाफ़ा कर के उर्दू भाषा और सहित्य की अमूल्य सेवा की है। ज़िन्दा लोगों में भी ह़ज़ारों देवबन्दी फु़जला न केवल हिन्द, पाक बल्कि दुनिया के चप्पे–चप्पे में उर्दू भाषा को प्रवान चढ़ा रहे हैं।

शेख़ुल हिन्द एकेडमी दारुल उ़लूम का एक इल्मी विभाग है जहां से अबतक दर्जनों किताबें उर्दू भाषा में छप चुकी हैं और यह सिलसिला बहुत ही तेज़ी के साथ जारी है। इस विभाग के आधीन उर्दू सह़ाफ़त (पत्रकारिता) की तालीम दी जाती है। प्रतिवर्ष बहतरीन पत्रकार व लेखक यहां से तैयार होकर निकलते हैं। अब तक दर्जनों सह़ाफ़ी इस एकेड़मी से तैयार हो चुके हैं। जिन्हें ने क़ौमी, (राष्ट्रीय) अख़बारों में बहुत शीघ्र आपना स्थान बनाया है।

विभिन्न दिशाओं से उर्दू भाषा और सहित्य के सिल–सिले में दारुल उ़लूम देवबन्द की बे मिसाल सेवाओं का अगर पूरी जानकारी के साथ जायज़ा लिया जाये तो हज़ारों पृष्ठ की एक मोटी पुस्तक बन सकती है। हमें बताना केवल यह है कि दारुल उ़लूम देवबन्द ने जहां इल्मी, दीनी,

सियासी और समाजी ख़िदमत अंजाम दी है वहीं उर्दू भाषा और सहित्य पर भी बड़ी ख़िदमत की है। दारुल उ़लूम देवबन्द यद्यपि एक अ़रबी और इस्लामी संस्था है इसलिये अ़रबी अदब (सहित्य) के अनुरूप है, लेकिन इससे यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि हिन्दुस्तानी मुसलमानों की उर्दू के द्वारा अधिक सेवा हो सकती है और दारुल उ़लूम इस से बे खबर है। उर्दू भाषा में देवबन्द की लाखों की संख्या में रचनाओं से अनुमान लगया जा सकता है कि लेखक उर्दू भाषा को ही प्रथमिकता देते हैं।

इस कार्य में देवबन्द के पचास से अधिक कुतबख़ाने लगे हुए हैं। देवबन्द के विद्वानों की रचनायें उपमहाद्वीप के मुल्कों के अलावा अफ़गानिस्तान, बरमा, नेपाल, सेलोन, दक्षिण अफ्रीक़ा, ब्रिटेन, अमेरिका और दूसरे देशों तक पहुंचती है जहां ये रचनायें शौक़ से पढ़ी जाती हैं। चूंकि देवबन्द से प्रकाशित होने वाली किताबें अधिकतर उर्दू भाषा में होती हैं, इसलिये इन किताबों के द्वारा उर्दू भाषा का क्षेत्र भी दिन प्रति दिन विस्तार पकड़ता जा रहा है। एशिया, अफ्रीक़ा और यूरोपियन देशों में करोड़ों मुसलमान इन पुस्तकों से लाभ उठा रहे हैं। प्रोफ़ेसर हुमायूं कबीर, के अनुसार इस साधन से दुनिया में हिन्दुस्तान के सम्मान को बहुत अधिक बढ़ावा मिल रहा है। और इस प्रकार उर्दू अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन गयी है।

स्वतन्त्रता संग्राम में दारुल उ़लूम का योगदान

1857 में पूरे मुल्क में स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी गई। 1857 देश का पहला स्वतन्त्रता संग्राम था। उलमा ने संग्राम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब मुहाजिर मक्की के प्रसिद्ध ख़लीफ़ा ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही और ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी आदि ने एक इस्लामी फौजी यूनिट स्थापित करके अंग्रेज़ों के विरुद्ध शामली, थाना भवन, और कैराना आदि में युद्ध का मोर्चा खोल दिया। ह़ज़रत हाजी इमदादुल्ला साह़ब अमीरुल मोमिनीन, मौलाना रशीद अह़मद गंगोही वज़ीर लामबन्दी, हाफिज़ ज़ामिन साह़ब अमीर जिहाद, मौलाना मु. क़ासिम नानौतवी कमाण्डर इनचीफ़, मौलाना मुनीर साह़ब ह़ज़रत नानौतवी के फौजी सैक्रेट्री और सय्यद हसन असकरी दिल्ली के क़िले में सियासी मेम्बर चुने गये।

जिहाद शामली के पश्चात, अंग्रेज़ों ने थानाभवन पर आक्रमण कर दिया और पूरे क़स्बे को जलाकर राख के ढेर में बदल दिया। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले वीरों को फांसी पर लटकाया जाने लगा। हाजी इमदादुल्लाह साह़ब, मौलाना क़ासिम नानौतवी और मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के वारन्ट जारी कर दिये गये और बन्दी बनाने वालों या पता देने वालों के लिये असंख्य पुरस्कारों की घोषणा की गयी।

आलिमों के साथ इतना कठोर अत्याचार और ज़ुल्म किया गया कि इतिहासकारों की लेखनी उन को लिखने से कांपती है। गोया पशुता और अत्याचार का न समाप्त होने वाला सिलसिला लेकर आरम्भ हुआ था। अंग्रेज़ों ने मुसलमानों को दबाने, कुचलने, तबाह व बरबाद करने में विशेष रुप से मौलवियों को क़त्ल करने में तनिक भी झिझक अनुभव नहीं की। 1857 ई, के स्वतन्त्रता संग्राम में लगभग दो लाख मुसलमान

शहीद हुए जिन में पचपन हज़ार से अधिक उलमा (मोलवी) थे।

1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता के बाद उलमा ने हिन्दुस्तानियों के दिलों में आज़ादी की शमा रोशन की और अंग्रेज़ों से हिन्दुस्तान को आज़ाद करने के लिये एक ठोस प्रोग्राम तैयार किया। दारुल उ़लूम देवबन्द की स्थापना जहां मुसलमानों के अन्दर सभ्यता संस्कृति को बहाल करने, धार्मिक शिक्षा का ज्ञान देकर इसलाम धर्म के गुण उत्पन्न करने और उस के बनाये हुए सीधे रास्ते पर चलने के लिये हुआ था, वहीं हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों की कोशिश को असफल करना भी एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य था। जिसे यूं कहा जा सकता है कि अंग्रेज़ों के अन्याय को समाप्त करने के लिये दारुल उ़लूम एक ठोस हथौड़ा मारने वाला था, जिसकी आवाज़ ने अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान में जीना दूभर कर दिया। दारुल उ़लूम के विद्यार्थियों ने अंग्रेज़ों के विरूद्ध मोर्चा खोल कर जिस प्रकार के कार्य किये हैं वे इतिहास के प्रकाशमान अध्याय हैं।

ह़ज़रत नानौतवी, दारुल उ़लूम की आत्मा थे, हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिये आपके कार्य स्वर्णाक्षारों से लिखने के योग्य हैं। आपने हिन्दुस्तानियों के दिलों में स्वतन्त्रा की रूह़ फूंक कर ऐसी रक्तपाति जंग (युद्ध) को आरम्भ किया था जिस को माने बग़ैर अंग्रेज़ भी नह रह सके। लेकिन अफ़सोस कि आप अभी जीवन की पचास बहारें भी न देख पाये थे कि स्वतन्त्रा के विभिन्न मोर्चों पर अपना बेमिसाल कार्य पूरा करके और कुर्बानी की राह डाल कर वास्तविक मालिक से जा मिले (स्वर्गवास होगया)।

ह़ज़रत नानौतवी के देहान्त के समय दारुल उ़लूम देवबन्द, राजनितिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप में अनेकों कार्य कर चुका था। इस के पश्चात 1323/1905 में ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की अध्यक्षता का दौर आरम्भ होता है। आपको दारुल उ़लूम का प्रथम विद्यार्थी होने का सौभाग्य प्राप्त है। अपने उस्ताद ह़ज़रत नानौतवी के बाद स्वतन्त्रता की कमान अपने हाथ में ले ली, और पहला काम यह किया कि दारुल उ़लूम देवबन्द के फ़ारिग़ हुए विद्यार्थियों की शक्ति को इकट्ठा करने के लिये जमीयतुल अंसार के नाम से एक संगठन बनाया जिसमें भारत और भारत से बाहर के तमाम पुरातन विद्यार्थियों को शामिल किया। आप ने 1914 ई॰ के प्रथम महायुद्ध में तुर्की के शामिल हो जाने के बाद अपनी

जमीअत (संगठन) की पूरी शक्ति को ख़िलाफ़त–ए–उस्मानिया के पक्ष में प्रयोग करने का निर्णय किया। आप का यह अहम क्रान्तिकारी क़दम दुनिया की तारीख़ का अहम अध्याय है।

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने जिस युग में हिन्दुस्तान की पूर्ण आज़ादी का विचार दिया, उस वक्त कोई राष्ट्रीय जमाअत या आन्दोलन पैदा नहीं हुआ था। ह़ज़रत मौलाना असद मदनी की तहरीर (लेख) के मुताबिकः ''आज़ादी की तीसरी जंग ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के नेतृत्व में लड़ी गई, और आप के प्रयत्न से यह तय पाया कि एक मिला जुला प्लेटफ़ार्म आज़ादी प्राप्त करने के लिये बनाया जाये। अतः इस काम के लिये गांधी जी को मौलाना ने परिचित कराया और उन को लीड़र बनाया। मुसलमानों ने अपने निजी फ़ण्ड से गांधी जी को पूरे देश का भ्रमण कराया। (हफ़्त रोज़ह अल जमीअत पृष्ठ 18, 1970)

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के आन्दोलन को तह़रीक रेशमी रूमाल के नाम से जाना जाता है। 1915 ई॰ से पहले हिन्दुस्तान के लगभग सभी लीडर ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की तह़रीक (आन्दोलन) में शामिल रह कर उन्हीं के आधीन थे, और उनकी हिदायत के मुताबिक़ विभिन्न मोर्चों पर काम कर रहे थे। यह अलग बात है कि बाद में लीड़रों ने उनका नाम भुला कर उन को याद नहीं रखा। आप का आन्दोलन कोई मामूली आन्दोलन नहीं था, बल्कि अपने अन्दर सम्पूर्ण आन्दोलन पैदा करने की योग्यता रखता था। आप हिन्दुस्तान में एक बड़ा आन्दोलन करके अंग्रेज़ों की जाबिरानह (कष्टमय) हुकूमत का तख़्ता पलटना चाहते थे जिसके लिये आपने 1905 ई॰ से 1914 ई॰ तक देश के अन्दर केंद्र स्थापित करने, अपने स्वंय सेवक तैयार करने और दूसरे विभिन्न देशों का सहयोग प्रप्त करने के लिये हजा़रों क्रांतिकारियों के साथ काम शुरू कर दिया था। देश के अन्दर आन्दोलन के विभिन्न केन्द्र और एक हैड क्वार्टर स्थापित करके आन्दोलन की भावना रखने वाले बड़े–बड़े मतवालों को काम पर लगा दिया था। मुख्य कार्यालय दिल्ली में था जिसमें ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द, मौलाना मुह़म्मद अ़ली, मौलाना शौकत अली, मौलाना आज़ाद, मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी, महात्मा गांधी, डॉक्टर अंसारी, जवाहर लाल नेहरू, लाला लाजपत राय और राजेन्द्र प्रसाद काम करते थे। इस के अतिरिक्त उप–केन्द्र पानीपत, लाहौर, दीनपुर,

कराची, और ढाका आदि में स्थापित किये गये थे। इनके अलावा सहयोग प्राप्त करने के लिये देश से बाहर भी आफ़गानिस्तान, मदीना, इस्ताम्बुल और कुस्तुनतुनिया आदि में विभिन्न केन्द्र स्थापित किये गये थे। प्रत्येक स्थान पर चोटी के उलमा लीडर आपकी देख–रेख में महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा कर रहे थे। (शेखुल हिन्द मौलाना मह़मूदुल ह़सन पृष्ठ 272–76)

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने अपने आन्दोलन और मिशन को सफल करने के लिये बहुत ही राजनितिक दृष्टि के साथ विदेशों जेसे चीन, बर्मा, जापान, फ्रांस और अमेरिका आदि में अपने प्रतिनिधि मंडल भेजे और हर स्थान पर ब्रांच स्थापित करके इन देशों की हिमायत (सहयोग) प्राप्त करने का प्रयत्न किया और सहयोग न देने पर तटस्थ रहने की प्रार्थना की गई। इसमें एक सीमा तक सफलता भी मिली। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द हर क़दम फूंक–फूंक कर बडी ही सवधानी के साथ रखते थे। उनकी राजनितिक सूझ–बूझ का पता मौलाना मुह़म्मद अली के इस बयान से भली भांति लगाया जा सकता है– ''इन वुफ़ूद के सिलसिले में हमारी राय यह थी कि अमेरिका हमारा हमख़्याल होगा और तुर्की का ह़िमायती होगा; लेकिन शेख़ुल हिन्द साह़ब की राय यह थी कि हमनवा (सहयोगी) तो क्या तटस्थ भी नहीं रहेगा। अतः यही हुआ; महायुद्ध में अमेरिका अंग्रेज़ों का सहयोगी बनकर सामने आया। उस समय हमारी समझ में आया।'' (तह़रीक रेशमी रूमाल पृष्ठ 170)

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के स्थापित किये गये शिक्षा केन्द्र अंग्रेज़ों के विरुद्ध संगठित आन्दोलन का रूप लिये हुए थे सावधानी इतनी थी कि अंग्रेज़ों के जासूस ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की योजनाओं को भांपने में पूरी तरह असफल थे, फिर यह कि ह़ज़रत शैख़ुल हिन्द जैसे एक खालिस मोलवी से किसी बड़ी योजना की उन को बिल्कुल आशा नहीं थी। जबकि वास्तविकता इससे उलटी थी। स्वतन्त्रता संग्राम की सभी आन्दोलन इसी मोलवी की चलाई हुई थी। आपने बहुत ही तात्विकता और पूरी सियासत के साथ विदेशी युद्ध का नक़्शा तैयार किया। तुर्की सरकार को आक्रमण करने में जो रुकावटें आ रही थीं उन को दूर किया। मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी को क़ाबुल भेजा और खुद ह़ज (मक्का शरीफ़) में तशरीफ़ ले गये और हमलों के लिये चार रास्तों को तय

करके हर मोर्चे पर तजुर्बेकार आदमी को नियुक्त किया। आपकी इस फ़ौजी कार्यवाही की यात्रा में दारुल उ़लूम के जो सिपाही तन–मन–धन की बाज़ी लगा कर आप के साथ थे वे हैं मुह़म्मद मियां अंसारी, मौलाना मुर्तज़ा ह़सन चांदपुरी, मौलाना उज़ैरगुल पेशावरी, हाजी जान मुह़म्मद, मौलाना मतलूबुर्रह़मान देवबन्दी, मौलाना मुह़म्मद सहूल भागलपुरी, ह़ाजी अब्दुल करीम सरौंजी, मौलाना वह़ीद अह़मद फ़ैजाबादी, ह़कीम नुसरत हुसैन साह़ब, और मदीनह मुनव्वरह से शेखुल इसलाम मौलाना हुसैन अह़मद मदनी आप के साथ हो गये थे। यहां तक कि मालटा की क़ैद में भी आपके साथ रहे। अतः स्वतन्त्रता संग्राम के लिये दारुल उ़लूम से फ़ारिग़ों में मौलाना हुसैन अह़मद मदनी का विशेष स्थान है।

ह़ज़रत शेखुल हिन्द अन्दरूनी और बाहरी ह़मलों की तारीख़ निश्चित करके बाहर ह़ज की यात्रा पर गये थे। मक्का मुकर्रमह में तुर्की के अनवर पाशा से मुलाक़ात करके उनसे कुछ तह़रीरें लीं जिन में एक तह़रीर हिन्दुस्तान के मुसलमानों के नाम जंग की अपील की थी। अनवर पाशा की इन तह़रीरों को बहुत ही सावधानी के साथ आपने भारत भेज दिया, जिसकी फ़ोटो कापी हिन्दुस्तान के तमाम केन्द्रों पर पहुंचा दी गयी और पुलिस को हवा भी न लगी।

इधर मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी ने क़ाबुल में अमीर ह़बीबुल्लाह से तुर्की ह़मले की आज्ञा प्राप्त करली और उन्हों ने इसकी सूचना शेखुल हिन्द को पहुंचाने के लिये एक रेशमी रोमाल बनवाया जिसमें अमीर ह़बीबुल्लाह से किये गये मुआहदे की पूरी रिपोर्ट और तारीख़ का खुलासा था मगर दुर्भाग्य से रास्ते ही में यह रूमाल अंग्रेज़ों के हाथ लग गया और पूरी योजना की पूर्णता के समय यह भेद खुल गया।

क़िस्मत की ख़ूबी देखिये टूटी कहां कमंद
दो चार हाथ जब कि लबे बाम रह गया

अंग्रेज़ों ने ख़त में आन्दोलन का खुलासा देख़ कर तमाम रक्षा के कार्य कर डाले चूंकि तमाम केन्द्रों को इन्क़लाब की तारीख़ याद थी लेकिन आदेश के बग़ैर कोई ह़रकत करने की इजाज़त नहीं थी और खत के पकड़े जाने की वजह से अंतिम आदेश की बात समाप्त हो गयी थी। भेद खुलते ही हिन्दुस्तान के तमाम इन्क़लाबी लीड़रों को अंग्रेज़ों के अत्याचार का शिकार होना पड़ा। मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी अमीर

ह़बीबुल्लाह के क़त्ल तक जेल में रहे। ह़ज़रत शेखुल हिन्द को शरीफ़ मक्का ने एक फ़त्वे पर हस्ताक्षर न करने के बहाने गिरफतार कर लिया। एक महीने तक जद्दा में क़ैद रहे फिर आपको 12 जनवरी 1917 ई॰ को मिस्र की क़ैद में बदल दिया। इस के बाद 16 फरवरी 1917 ई॰ को मालटा में जंगी क़ैदी की हैसियत से भेज दिया। आपके साथ मौलाना हुसैन अह़मद मदनी, मौलाना उज़ैरगुल और ह़कीम नुसरत हुसैन भी मालटा जेल में रहे।

जमीअत उलमा–ए–हिन्द

ह़ज़रत शेखुल हिन्द की गिरफ़्तारी के बाद यद्यपि इन्क़लाब के तमाम मंसूबे (योजनायें) ख़त्म हो गये मगर आप से सम्पर्क रखने वाले हिम्मत नहीं हारे और आरम्भ से आन्दोलन छेड़ने की जिद्दो–जुहद में लगे रहे। जमीअत उलमा–ए–हिन्द की स्थापना इसी आन्दोलन का हिस्सा था। असफलता से इन शेर दिल इन्क़लाबी लीड़रों के पग नहीं डगमगाये बल्कि असफलता से कार्य करने का जोश और अधिक उभरा। ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने मालटा से वापसी के बाद नई राजनीतिक कोशिशैं आरम्भ कर दीं। आप ने ख़िलाफ़त आन्दोलन और इण्ड़ियन नेशनल कांग्रेस के मोर्चे पर दूसरी जंग छेड़ने का इरादा बना लिया। इस के साथ 'नान कोआप्रेशन' (सहयोग ना करने) का फ़त्वा देकर जमीअत उलमा–ए–हिन्द के सामूहिक फ़ैसले की हैसियत से 500 उलमा के हस्तक्षर ले कर जारी किया जो काफ़ी प्रभावकारी रहा। मौलाना सिंधी ने अस्थाई हुकूमत के नाम पर अफ़गानिस्तान ह़कूमत से संधि की। मौलाना मुह़म्मद अली और मौलाना आज़ाद आदि ने बहुत तेज़ी से मुक़ाबला आरम्भ कर दिया। जिससे पूरे हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ का विरोध और आज़ादी का एक तूफ़ान खडा हो गया। ह़ज़रत शेखुल हिन्द का 'नान कोआप्रेशन' का फ़त्वा बहुत प्रभावकारी रहा, यह एक ऐसी चिंगारी थी जो कांग्रेस के इन्क़लाबी तूफ़ान से अंगारा बन रही थी। (तारीख गोल मेज कॉफ्रेंस पृष्ठ 48)

ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने मालटा से वापसी के बाद जमीअत उलमा–ए–हिन्द के पलेटफार्म से जुड गये जिसे आप के शागिर्दों ने क़ायम किया था। ह़ज़रत शेखुल हिन्द जमीअत उलमा–ए–हिन्द के

अध्यक्ष दारुल उ़लूम देवबन्द की आत्मा और कांग्रेस के वास्तविक मार्गदर्शक की हैसियत से दिलों में आज़ादी की शमा रोशन करके 30 नवम्बर 1920 ई॰ को स्वर्ग सिधार गये।

1920 ई॰ के बाद जंग आज़ादी का दूसरा दौर आरम्भ हुआ, जिस की कमान शेखुल इसलाम मौलाना हुसैन अह़मद मदनी संभालते हैं। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और डाक्टर मुख़्तार अह़मद अंसारी के राजनितिक मार्गदर्शन में आप ने अपने उस्ताद ह़ज़रत शेखुल हिन्द की जलाई हुई शमा को बुझने नहीं दिया और तेज़ तूफ़ानी आंधियों में शत्रुओं से इस शमा की रक्षा की। 1930 ई॰ की आज़ादी की जंग में मुसलमानों ने जान की बाज़ी लगादी, जिसमें 14 हज़ार मुसलमानों ने जेल के कष्ट सहे, और अंतिम जंग 1942 ई॰ में मुसलमानों ने भाग लिया। अंततः 1947 ई॰ में शाह वलीउल्लाह के युग से चली आ रही आज़ादी की यह तहरीक दारुल उ़लूम के उलेमा के लगातार प्रयत्नों और कुर्बानियों की बदौलत सफल हुई और पूरे देश में आज़ादी का सूरज रौशन हुआ।

(7)

दारुल उ़लूम प्रसिद्ध व्यक्तियों की नज़र में

1. दारुल उ़लूम दुनिया के प्रसिद्ध व्यक्तियों की नज़र में
2. दारुल उ़लूम भरत के प्रसिद्ध व्यक्तियों की नज़र मे

दारुल उ़लूम दुनिया के प्रसिद्ध व्यक्तियों की नज़र में

दारुल उ़लूम देवबन्द ने अपने सुदृढ़ मसलक में ह़दीस, तफ़सीर, फ़िक़ह, उसूल फ़िक़ह, कलाम, तसव्वुफ़ और मारिफ़त और दूसरे दीनी उ़लूम को विभिन्न प्रकार के फूलों का एक ह़सीन गुलदस्ता बना कर सुन्दरतम अंदाज़ में पेश किया है जिस से तमाम मसलकी वर्गों के लिये एक केन्द्र पर इकट्ठा होने की सूरत पैदा हो गई। यही कारण है कि दारुल उ़लूम देवबन्द की तालीमी, तरबियती और तहज़ीबी सेवा की स्वीकृति मशाहीर (प्रसिद्ध व्यक्ति) उलमा और विभिन्न राष्ट्रों के उच्च पदीय लोग और इसलामी दुनिया के सम्मनित बुद्धिजीवी, विचारकों ने खुल कर की है। और देवबन्द के निरंतर इल्मी व दीनी प्रभाव और कार्यों को सराहा है। ग़ैर मुस्लिम विद्वानों के लेखों में भी देवबन्द के इल्मी व मज़हबी उपयोगिता स्थान–स्थान पर मिलती है।

यहां नीचे हम इस प्रकार के कुछ मिसालें और प्रभाव नक़ल कर रहे हैं, जो देवबन्द की महानता के प्रमाण और उसकी बरकतों की सच्चाई पर दर्शाते हैं।

इन महान लोगों ने दारुल उ़लूम आ कर दारुल उ़लूम के मुआ़इना रजिसटर में अपने प्रभाव लिखे हैं। यह संकलन अनेक रूप से आ चुके हैं। तारीख दारुल उ़लूम और आदि किताबों में यह प्रभाव छप भी चुके हैं। साथ ही सालाना रूदादों में भी यह प्रभाव छपते रहे हैं।

मुह़म्मद ज़ाहिर शाह दुर्रानी (पूर्व अफ़ग़ानिस्तान पादशाह)

"मैं बहुत खुश हूँ कि आज मुझे दारुल उ़लूम देखने का अवसर प्रप्त हुआ। यह दारुल उ़लूम, अफ़ग़ानिस्तान में विशेष रूप से वहां के मज़हबी क्षेत्रों में बहुत प्रसिद्ध है। अफ़ग़ानिस्तान के उलमा दारुल उ़लूम के संस्थापकों और यहां के अध्यापकों को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखते

आये हैं।"

सरदार नजीबुल्लाह खां (राजदूत अफ़ग़ानिस्तान) नई दिल्ली 1950

दारुल उ़लूम देवबन्द अफ़ग़ानिस्तान की नज़र में एक अवामी, इल्मी, और इस्लामी शिक्षा संस्था है। मगर मैं अपने अनुमान के आधार पर कह सकता हूं कि यह केवल एक शिक्षा संस्था ही नहीं बल्कि इस्लामी कल्चर का केन्द्र भी है। दारुल उ़लूम ने उस ज़माने में जब कि हिन्दुस्तान से इस्लामी हुकूमत समाप्त हो चुकी थी, दीन और दीनी उ़लूम की हिफ़ाज़त की। मुझे विश्वास है कि दारुल उ़लूम भविष्य में भी इसी प्रकार ज्ञान और शिक्षा की सेवा करता रहेगा। अफ़गानिस्तान की जनता, उलमा और इल्म दोस्त व्यक्ति इस के क़द्रदान (प्रशंसक) ही नहीं बल्कि शुभ चिंतक और मददगार भी हैं। दारुल उ़लूम इस्लामी कल्चर की एक बड़ी संस्था है। और अपनी मिसाल आप है। इस्लामी कल्चर की नीव, सच्चाई, मुहब्बत, समानता, भाई चारा और सत्यता को पहचानने पर आधारित है, यह संस्था इन तमाम गुणों से भरपूर है। दारुल उ़लूम की तारीख़ इस बात की गवाह है कि इस ने सदैव सच्चे मुजाहिद और सच बोलने वाले व्यक्ति पैदा किये हैं जिन पर दारुल उ़लूम पूर्ण रूप से गर्व करता है। दारुल उ़लूम अकेला हिन्दुस्तान की विरासत नहीं है बल्कि पूरी इस्लामिक दुनिया की धरोहर है।"

अनवर अल-सादात (पूर्व अध्यक्ष जमहूरिया मिस्र)

इस महान और तारीख़ी दर्सगाह की ज़ियारत (दर्शन) ने मुझे विवश किया कि मैं ठंडे दिल से अपने उन भाइयों की सेवा में मुबारकबाद पेश करूं जो इस को चला रहे हैं। मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह इस इदारह को ज्ञान का मीनारा बनाये और सदैव-सदैव मुसलमानों को इस से लाभान्वित होने का अवसर प्रदान करे।

सय्यद रशीद रज़ा मिस्री (एडिटर अलमिनार मिस्र)

जो महान और अमूल्य शिक्षा और दीन की सेवा आप कर रहे हैं, उनके लिये आप मेरे और तमाम मुसलमानों के धन्यवाद के पात्र हैं। मुझे इस दारुल उ़लूम को देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं आप लोगों को यक़ीन दिलाता हूँ कि अगर मैं दारुल उ़लूम को न देखता तो मैं हिन्दुस्तान से दुखी वापस जाता।

एम. आई. शाह केवन

(अध्यक्ष चीनी मिशन जामिया अज़हर मिस्र 12–10–1938)

मैं ने हिन्दुस्तान के बहुत से शहरों की यात्रायें की लेकिन मैं ने दारुल उ़लूम से बड़ा मदरसा इस मुल्क में नहीं देखा।

ईसा सिराजुद्दीन–(मिश्र देश के सफ़ीर 2 फ़रवरी 1969)

मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूं कि मुझे इस संस्था को देखने का अवसर मिला जो ऐसे शान्दार उद्देश्य के लिये बनाई गयी है जिस से इंसानियत को वास्तविक शान्ति मिलती है। इस संस्था के द्वारा इस के विद्वानों ने पूरी दुनिया में इस्लाम का वह पैग़ाम फैला दिया है जो संसार में शान्ति और एकता की नीव है, और इस कर्तव्य को पूरा करने के लिये अपना जीवन दान किये हुए हैं। मैं इन सब के लिये और कर्मचारियों के लिये शुभकामना और अल्लाह की ओर से भलाई की दुआ़ करता हूं।

अब्दुल ह़लीम मह़मूद (प्रधानाआचाय अल–अज़हर 26 अप्रैल 1975)

मैं ने दारुल उ़लूम देवबन्द के दार्शन किये और यहां कुछ समय व्यतीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं ने विद्यार्थियों को देखा कि वे मेह़नत और प्रयत्न के साथ शिक्षा प्राप्त करने में लगे हुए हैं। दूसरी तरफ़ अध्यापकों के बारे में भी अन्दाज़ह हुआ कि पवित्र हृदय के साथ शिक्षा के लाभ के लिये प्रयत्न के साथ कमर कसे बैठे हैं। दारुल उ़लूम में जो प्रबन्ध चल रहा है उस के आधीन विद्यर्थी आसानी के साथ शिक्षा प्राप्त करते रहते हैं।

मैं यह माने बग़ैर नहीं रह सकता कि दारुल उ़लूम के मोहतमिम साह़ब के ज़ोहद व तक़्वा व लिल्लाहियत ही के यह आसार हैं जो इस संस्था में दिखाई देते हैं और इसी का नतीजह है कि दारुल उ़लूम के फ़ाज़िल तमाम शहरों और मुल्कों में जाकर इस्लामी शिक्षा का प्रसार कर रहे हैं। हम सब की यह दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला दारुल उ़लूम के ज़िम्मेदारों और अध्यापकों और विद्यार्थियों और शुभ चिंतकों को अधिक सवाब प्रदान करे।

मुह़म्मद अल–फ़हाम (प्रधानाआचाय – शेखुल अज़हर)

मुद्दत से दारुल उ़लूम के सम्बंध में सुन रखा था और मैं यह भी

जानता था कि इस के अध्यापक अ़रबी भाषा को भारत में चारों ओर पूरे प्रयत्न के साथ फैला रहे हैं तो यह बातें मेरे लिये बड़ी ख़ुशी का कारण बनती थीं। एक ज़माने से इस के दर्शन का और उलमा–ए–देवबन्द से मिलने का इच्छुक था। जब मैं ने सुना कि वहां के विद्यार्थी अ़रबी में बड़ी मेह़नत से लगे हुए हैं यहां तक कि उन के अध्यापक लेख और पुस्तकें भी अ़रबी में लिखते हैं तो मेरी इच्छा और बढ़ गयी यहां तक कि दिन रात बढ़ती गयी, और अल्लाह से दुआ़ की के मेरी मौत उस वक़्त तक न हो जब तक मैं दारुल उ़लूम न देख लूं और इस के विद्वानों और विद्यार्थियों से न मिल लूं।

अल्लाह का शुक्र है कि मेरी तमन्ना पूरी हुई और मैं ने अपनी मुराद पाली और और इसकी ज़ियारत एक दिन नसीब हुई जिस को ता क़यामत भी नहीं भूल सकता और वह दिन 26 अप्रैल यक शम्बः 1975 ई. का दिन था। मैं ने अपनी आंख से जो कुछ देखा वह कानों के सुने हुए से बहुत अधिक था। एक ओर विद्यार्थी अपने सबक़ में तल्लीन तो दूसरी तरफ़ अध्यापक अपनी ज़िम्मेदारी में डूबे हुए और अ़रबी भाषा जो कि क़ुरआन और ह़दीस की भाषा है उस को अपना सरमाया समझते हैं। इस के महान कुतुबख़ाने को भी देखने का अवसर मिला तो देखा लुग़ात (शब्द कोश) और तारीख़ की असंख्य पुस्तकें पाई।

दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला दारुल उ़लूम देवबन्द और इस के उलमा को हर प्रकार की उन्नति से नवाज़े। इक़रार करना पड़ता है कि यह संस्था इस्लाम के क़िलों में से एक सुरक्षित क़िला है। अल्लाह तआ़ला इन लोगों की पूरी सहायता फ़रमाये जो इस में लगे हुए हैं, और वह दीन इस्लाम की खूब–खूब ख़िदमत करें।

शेख़ अब्दुल फ़त्ताह़ अबू ग़ुद्दह (19 अगस्त 1962)

वह चीज़ जिसके लिये मैं अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता हूं कि मुझे दारुल उ़लूम देवबन्द देखने का अवसर मिला जो वास्तविक रूप से अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिये दीन का घना सायेदार वृक्ष, इल्म व तक़वा का केन्द्र और इस्लाम की रक्षा का ज़ामिन है। बहुत दिनों इस शैक्षिक केन्द्र को देखदे की तमन्ना थी अल्लाह तआला का शुक्र है कि आज पूरी हुई। गुणों से मालामाल इस महान संस्था के उलमा की सेवा का वर्णन करते हुए एक प्रार्थना करना चाहता हूँ कि इन विद्वानों का

कर्तव्य है कि अपने ज्ञान के नतीजों और इल्मी उपयोगिता व तह़क़ीक़ात को अ़रबी भाषा में अनुवाद करके इस्लाम के दूसरे उलमा के लाभ के लिये तैयार करें।

शेख़ मुह़म्मद अल ह़कीम– (मुफ़्ती हल्ब शाम 24 नवम्बर 1974 ई)

आज मुझे दूसरी बार दारुल उ़लूम को देखने का अवसर मिला। मैं ने पहली उपस्थिति से अब तक दो साल की मुद्दत में होने वाली इस संस्था की उन्नति को देख कर बड़ी ख़ुशी हुई कि इस के अध्यापकों का प्रयत्न बड़ा सराहनीय है और इस के विद्यार्थियों की उन्नति प्रशंसनीय है। अल्लह से दुआ़ है कि वह हम सबको इस्लाम और तमाम मुसलमानों विशेष रूप से हिन्दुस्तान के क़ाबिल उलमा ह़ज़रात की सेवा करने का अवसर प्रदान हो जिन्हों ने इस्लामी सभ्यता और संस्कृति और आत्मिक ज्ञान के विकास के लिये अपने को वक़्फ़ कर दिया है।

जे,पी,एस, ओबराय

(प्रोफ़ेसर समाज शास्त्र दिल्ली विश्वविद्यालय 23–2–1973)

मैं ने अफ़ग़ानिस्तान में समाज शास्त्र पर जो रिसर्च (शोध) किया उससे मुझे ज्ञात हुआ कि दारुल उ़लूम का प्रभाव मध्य एशिया में कहां तक फैला हुआ है।

गोपी वन्ट (प्रोफ़ेसर इतिहास आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी 27 मार्च 1939)

मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैं देवबन्द आया और यहां आकर देखा कि क़दीम (पुराना) इस्लामी कल्चर अब भी पूरी शक्ति के साथ हरा–भरा है किसी इतिहासकार के लिये इससे अधिक जानकारी देने वाले अवसर बहुत कम मिलते हैं,

अब्दुल वहाब नजार, मुह़म्मद अह़मद अल अदवी (अ़रब वफ्द)

दारुल उ़लूम के दर्शन का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ और विभिन्न जमातों का निरीक्षण किया, उनका पढ़ना देखा। उस्ताद मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी और दूसरे अध्यापक साहिबान के साथ बैठने का सौभाग्य मिला। इन ह़ज़रात के चेहरों पर नूर देखा। हम ने यहां वह जमातें देखी जिस न, तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़ह, उसूले फ़िक़ह आदि उ़लूम दीनीया की ख़िदमत के लिये अपने जीवन को वक़्फ़ कर दिया है। इस

के साथ ही साथ, लुग़ात, मंतिक, फ़लसफ़ा, हैअत की इतनी बढ़ोतरी कर दी है कि हमको यक़ीन है कि तमाम इस्लामी उम्मत को इस से लाभ पहुंचेगा। इस संस्था के अध्यापकों के साथ हमारी बातचीत हुई तो हमने देखा कि इल्मी सेवा (अध्यपन) में उन को पूरी महारत है। हमने विद्यार्थियों का ध्यान अपने पाठ (सबक़) अपने दीन, और चरित्र की ओर इतना देखा कि हमारी ज़ुबान ने अल्लाह का शुक्र अदा किया, और दुआ़ कि आंतरिक और बाहरी ने़मतें हम पर उतरती रहें, हम अपने और उन के लिये क़ुबूलयत की दुआ करते हैं कि हमारे कार्यों में इख़्लास (सदभाव) हो।

ड़ाक्टर जोलीनस जरीमस अब्दुल करीम

(प्रोफ़ेसर दीनीयात बुडापेस्ट यूनिवर्सिटी हंगरी 10 नवम्बर 1931)

मैं ने दारुल उ़लूम देवबन्द की प्रसिद्धि अपने देश हंगरी के बुडापेस्ट में सुनी थी और सदैव इसकी इच्छा रहा करती थी कि इल्म और सही इस्लामी रूह़ के इस किले (दुर्ग) के दर्शन करूं। अन्ततः मेरी तमन्ना पूरी हुई। अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से इस महान संस्था को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तुर्की और मिश्र की पुराने ढंग की संस्थाओं के मुक़ाबले में इस दारुल उ़लूम की चार दिवारी में अ़रबी और इस्लामी उ़लूम की ताक़त और गहराई को देख कर मैं आश्चर्यचकित रह गया। इस संस्था के प्रिंसिपिल, अध्यपक और विद्यार्थियों ने मुझ जैसे नाचीज़ के साथ जिस मुह़ब्बत और सदभाव के साथ मुआमला किया उससे मैं बहुत प्रभावित हूं।

अब्दुल्लतीफ़ वज़ीर इंसाफ़ व सेह़त (न्याय व स्वास्थ्य) हुकूमत बर्मा

मुझे दारुल उ़लूम देखने का सौभाग्य मिला। मैं इस संस्था और इस के काम से जो इस इदारे में उलमा कर रहे हैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ। यह एक ऐसी संस्था है जिसमें न केवल एक वर्ग के लिये बल्कि पूरे देश के लिये लीडर पैदा किये हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह इदारा ऐसे योग्य व्यक्ति पैदा करता रहे गा जो क़ौम और देश की अमूल्य सेवा करके हिन्दुस्तान को एक बहुत बड़ा देश बना देंगे।

अ़ली असग़र हिकमत (राजदूत इरान भारत)

अल्लाह का शुक्र है कि उसने इस कमज़ोर व्यक्ति को इस महान

संस्था को देखने का अवसर दिया और यहां अध्यापकों और विद्वानों के सम्पर्क का सौभाग्य मिला, इनके पवित्र वाक्यों से दिल व जान को ख़ुशी मिली। इनकी बाक़ी रहने वाली रचानाओं और संकलनों से प्रसन्नता मिली।

नियाज़ बरकीज़– (तुर्की 9 मार्च 1959)

मैं इस महान इदारे की शोहरत (ख्याति) सुना करता था और अब मुझे इस को देखने का मौक़ा (अवसर) मिला है, मैं दारुल उ़लूम के कार्यकर्ताओं का बड़ा आभारी हूं कि उन्हों ने मुझे इस प्रकार की सुविधा प्रदान की और इस प्रकार अतिथि सत्कार किया। पुस्तकालय और उसकी अमूल्य हस्त–लिखित पुस्तकों की संख्या ने मुझे विशेष प्रभावित किया। मैं ने यहां इतनी सदभावना देखी कि उस के धन्यवाद के लिये मेरे पास शब्द नहीं। मैं इस अच्छे काम पर यहां के कार्यकर्ताओं और अध्यापकों को मुबारक बाद पेश करता हूं और दुआ़ करता हूं कि भविष्य में इसी प्रकार सफ़लता मिले।

शेख़ सअ़द शेख़ हुसैन – (हिजाज़, अरब)

यह दारुल उ़लूम इस्लामी दुनिया में एक बेमिसाल जामिआ़ है, हमारे वहम व गुमान में भी नहीं था कि भारत में ऐसी बड़ी दीनी संस्था और ऐसी इस्लामी व अख़लाक़ी तरबियतगाह मौजूद होगी।

सालूजी (जुनूबी अफ्ऱीक़ा 5 सितम्बर 1959)

मैं ने इस संस्था का निरीक्षण किया और यह देखकर बहुत ख़ुशी हुई कि नियमानुसार कक्षाओं में शिक्षा का उचित प्रबन्ध है। यहां है जो दुनिया के प्रत्येक भाग से छात्र आते हैं। दारुल उ़लूम उन लोगों के लिये शिक्षा का मुफ़्त प्रबन्ध करता है जो अपने ख़र्च स्वयं नहीं उठा सकते। ऐसे लोगों को कमरा, खाना, कपड़ा, किताबें और कपड़े धोने का साबुन मुफ़्त दिया जाता है। उलमा अपने फ़राइज़ में तन मन से लगे रहते हैं। इसी कारण यह संस्था बहुत आसानी से चल रही है। मेरी जानकारी में यह अकेली संस्था है जो इस्लाम की मुकम्मल शिक्षा देती है, और ऐसे विद्वान तैयार करती है जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का ठीक सच्चा नमूना हो। मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह तआ़ला इस मदरसे, यहां के तमाम उलमा और विद्यार्थियों के

शुभचिंतकों पर अपनी रह़मतों की बारिश करे। अल्लाह करे यह मदरसा क़यामत तक इसी जोश के साथ जारी रहे।

डाक्टर पी हारडी (लेक्चरार, यूनिवर्सिटी आफ़ लन्दन इंगलैंड 21 दिसम्बर 1960)

मैं हिन्दुस्तान में यह आशा लेकर आया था कि यहां मुझे दारुल उ़लूम के सम्बन्ध में अमूल्य सामग्री मिल जायेगी, अतः यहां आने के बाद मैं ने दारुल उ़लूम देवबन्द आने का इरादा किया कि मैं यहां अपना उद्देश्य पूरा कर सकूं। यहां आने के बाद न यही कि मेरी आशायें पूरी हुई बल्कि यहां के शिष्टाचार और मेहमान नवाज़ी ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया। यहां के विद्वानों ने मेरा मार्गदर्शन किया। मैं न केवन अपने छोटे से प्रोग्राम के दौरान की बेहतरीन यादें अपने साथ ले जाऊँगा बल्कि इस बात का प्रयत्न करूंगा कि मुझे एक बार फिर आने की इजाज़त दी जाये।

जे. डी. एण्डरसन (डारेक्टर इंस्टिटयूट आफ़ एडवांस लीगल स्टडीज़ एण्ड हैड डिपार्टमेंट आफ लॉ स्कूल आफ़ औरेंटल एण्ड अफ़्रीक़न स्टडीज़ यूनिवर्सिटी आफ लंदन इंग्लैंड)

मैं दारुल उ़लूम को जिस के बारे में मैं ने बहुत कुछ पढ़ा था, देख कर असीम प्रसन्नत हुई। मुझे इस बारे में बिलकुल अनुमान नहीं था कि इतना बड़ा होगा, जितना मैं ने इसे पाया। मैं यहां के आवभगत से असीम प्रभावित हुआ और तमाम ह़ज़रात का बडा आभारी हूं। विशेष रूप से इस्लामी क़ानून के निकात पर विभिन्न विद्वानों से बात चीत करने का अवसर मिला, इस से मैं बहुत ख़ुश हूं।

मुह़म्मद यूसूफ़ फरांस

(15 लिवरपुर स्ट्रीट आफ़ स्पेन ट्रान्डाड वैस्ट इण्डेटर वाये साउथ अमेरिका 10 जनवरी 1961)

दारुल उ़लूम में आकर और इसको देखकर मुझे अनुमान हुआ कि यह हिन्दुस्तान में बहुत अधिक आकर्शक इस्लामी संस्था है। मैं इस संस्था को देखकर बेहद ख़ुश हुआ जो इस्लाम की इतनी अधिक सेवा कर चुकी है। इस संस्था में जिसे लगभग शताब्दी पूर्व स्थापित किया

गया था बहुत अच्छी और बड़ी लाइब्रेरी है जिस में अमूल्य इस्लामी सामग्री मौजूद है, सब से आश्चर्य की बात यह है कि यह संस्था हुकूमत के सहयोग के बग़ैर कोई आर्थिक सहायता न लेकर इतने समय से निहायत सफलता के साथ अपना काम कर रहा है। मुझे उम्मीद है और मैं अल्लाह से दुआ़ करता हूं कि इस संस्था पर अल्लाह का एह़सान व कृपा की बारिश होती रहे, और यह सदैव इस मुल्क के मुसलमानों को ठीक इस्लामी शिक्षा देने का सफल प्रयास करती रहे।

अब्दुस्सत्तार अमीन

(सफ़ारत खाना संयुक्त अ़रब अमीरात 24 जमदिउस्सानी 1383)

हमें इस बात का एहसास हुआ बल्कि पता चला कि यह महान संस्था उन विशेष केन्द्रों में से है जिन्हों ने इस अज़ीम (महान) देश और दूसरे देशों में केवल दीन के प्रचार और प्रसार को अपना उद्देश्य बनाया है। मैं मदरसे के ज़िम्मेदारों का उनकी हिम्मत पर दाद देता हूँ और शिक्षा आम करने पर और ज़मीन पर इस्लाम के सुतूनों को स्थिरता देने पर ये ह़ज़रात जो प्रयत्न कर रहे हैं उस पर धन्यवाद देता हूँ।

अमर अबू रेशः (शाम के सफ़ीर 31 अगसत 1968)

मैं ने अ़रब मुत्ताहिदा जुमहूरिया के सफ़ीर जानाब ईसा सिराजुद्दीन के साथ पुस्तकालय का निरीक्षण किया, मेरे दिल में उस वक़्त पुस्तकालय ने गहरा प्रभाव छोड़ा है जब देखा कि ह़ज़रात उलमा ने पुराने समय में हस्तलिखित पुस्तकों को इकट्ठा करने में जो अथाह प्रयत्न किया है हमारे दिल में उस की बड़ी क़दर (सम्मान) है और हम इसे एक बड़ा धन समझते हैं। यह तमाम दुनिया के शिक्षा प्रेमियों के लिये सदैव बहने वा स्रोत है।

अनस यूसुफ़ यासीन (सऊदी अ़रब के सफ़ीर 2 फ़रवरी 1969)

अल्ला का शुक्र है कि मुझे इस महान केन्द्र को देखने का मौक़ा मिला जिस में अल्लाह का नाम लिया जाता है, और अल्लाह की किताब की शिक्षा दी जाती है। मैं अल्लाह से दुआ़ करता हूं कि वह इस केन्द्र को एसे लोग पैदा करने का अवसर दे जो इस्लामी आन्दोलन का नेतृत्व और दुनिया भर के मुसलमानों की इ़ज़्ज़त और सम्मान बढ़ाने का कार्य

करें।

जंरल सिक्रेटरी राबता आलमे इस्लामी मक्का मुकर्रमा, नाज़िम दफतर वज़ारात ह़ज व औक़ाफ़ 31 अगस्त 1983

यह हमारा सौभाग्य है कि आज हम को महान संस्था देखने का सुअवसर मिल रहा है। यह इल्म व मारफ़त का मिनारा और स्रोत समझा जाता है, और उपदेश और मअ़रफ़त का केन्द्र समझा जाता है, जिस ने उपमहाद्वीप में उलमा और मुहद्दिस्सीन की एक बहुत बड़ी जमात तैयार की जिस के द्वारा अल्लाह तआ़ला ने भ्रम व बिदअ़त को बिल्कुल समाप्त करादिया, और अपने दीन की ह़िफ़ाज़त का काम लिया।

आज इस संस्था की चार दीवारी में हमें बहुत सी चीज़ों को देखने का सौभाग्य मिला। विशेष रूप से असंख्य किताबों से भरी हुई लाइब्रेरी, और सम्मानित अध्यापकों से मुलाक़ात, जिस ने दारुल उ़लूम की इज़्ज़त व उद्देश्यों के समझने में भरपूर जानकारी मिली। हमारे दिल प्रसन्नता और ख़ुशी के मिले जुले जज़बात (भावनाओं) से भरपूर हैं। हम इन तमाम ह़ज़रात के हार्दिक रूप से शुक्रगुज़ार हैं जिन्हों ने हमारे लिये अपनी बेमिसाल मेहमान नवाज़ी और हार्दिक स्वागत का प्रदर्शन किया और जिस के परिणाम स्वरूप हम इस महान संस्था को देखने का अवसर प्राप्त कर सके।

विलियम आर. राफ (प्रोफ़ेसर इतिहास, कोलम्बिया यूनीवर्सिटी न्यूयार्क 24 फ़रवरी 1973)

दक्षिण पूर्व एशिया के विद्यार्थी की हैसियत से मुझे दारुल उ़लूम देवबन्द में चौबीस घन्टे व्यतीत करने पर असीम प्रसन्नता हुई क्योंकि मेरे और मेरे साथियों के साथ बहुत मेहरबानी का सुलूक किया गया। मैं दारुल उ़लूम की बहुत सी वस्तुओं से बहुत प्रभावित हुआ। इसका बढ़िया पुस्तकालय, इसका सुन्दर भवन, संसार के हर कोने से आने वाले विद्यार्थी और प्रत्येक दशा में इस संस्था को चलाने का इरादा रखने वाले स्थापकों के नियुक्ति किये गये इल्म के उसूल। मैं यहां से निःस्वार्थ सेवा, डिससिपलिन की सख़्ती से पाबन्धी और मुसलमानों और ग़ैर–मुस्लिमों के साथ सहृदयता की भावनाओं की एक ऐसी यादगार ले

जारहा हूं जो सदैव मेरे दिल पर नक़्श रहेगी।

डाक्टर मुह़म्मद इसह़ाक़, एम.ए.पी.एचडी

(प्रोफ़ेसर और चियरमैन शोबा अ़रबी व इस्लामिक स्टडीज़ यूनिवर्सिटी आफ़ ढाका 21 जनवरी 1974)

दारुल उ़लूम देवबन्द इस्लामी आकाश का चमकता हुआ सितारा है। अल्लाह का शुक्र है कि दारुल उ़लूम एक शताब्दी से अधिक इस्लाम का प्रचार और इस्लामी ज्ञान की सुरक्षा कर रहा है। यही नहीं बल्कि इस्लाम के प्रत्येक कोने में आ़लिम (विद्वान) पैदा कर रहा है। जो हमारे नबी की सुन्नत पर कठोरता से पाबन्द हैं, जिस का कोई अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता। मुझे इस बात का फ़खर है कि मैं दारुल उ़लूम की रूह़ानी और तालीमी बिरादरी के साथ रहा हूं और जमातों, दफ़तरों, लाइब्रेरी और उस के पवित्र अहाते से लाभ उठाया है। इस के पूरे वातावरण पर रूह़ानियत और इल्मियत का दौर दौरह है। मेरे साथ बड़ी इज़्ज़त का मामला किया गया है, जिस का प्रभाव सदैव मेरे मस्तिष्क पर ताज़ा रहेगा, और मेरे जीवन का मार्गदर्शन करता रहेगा।

सोइस वान–डब्लू – मग़रबी जर्मनी 27 मार्च 1974

अफ़सोस कि मैं दो दिन से भी कम ठहर सका, लेकिन यहां बहुत कम ठहरने के समय मुझे बहुत अधिक तजरबा प्राप्त हुआ। मैं ने दारुल उलूम देवबन्द के सम्बन्ध में काफ़ी सीखा और पढ़ा। मौलाना क़ासिम नानौतवी के सम्बंध में एक खास दिलचस्पी पैदा हुई जो कुछ मैं ने देखा और अनुभव किया, उलमा के वास्तविक स्वागत और हमदर्दाना संगति और उलमा की सादगी और साफ़ दिली ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यहां की बहुत अच्छी लाब्रेरी ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया, और मैं उम्मीद करता हूं कि भविष्य के काम में इस लाब्रेरी को अधिक प्रयोग कर सकूंगा। लाइब्रेरी में एक घंटा में मैं ने चार किताबें निकालीं जो मेरे मौजूदह काम में बहुत उपयोगता रखती हैं, मैं ने हिन्दुस्तान से बाहर और अन्दर बहुत सी लाइब्रेरियों में किताबें देखी हैं।

दिल की गहराइयों से में इस संस्था का बहुत अधिक शुक्रिया अदा करता हूं कि इस के अध्यापकों ने मेरा स्वागत किया। यह संस्था इस्लामिक दीनयात और धार्मिक साइंस में बड़ा काम कर रही है। खुदा

की बड़ीकृपा इस संस्था पर है।

डाक्टर मुह़म्मद यूजल तुर्की

(सिविल इंजीनियर इस्तम्बोल 5 शाबान 1394/23 अगस्त 1974)

हमने दारुल उ़लूम देवबन्द के दर्शन किये और हम को बेहद खुशी हुई कि इसको अपने तसव्वुर से ऊंचा पाया, अल्लाह तआ़ला से हमारी दुआ है कि वह दारुल उ़लूम के लिये शिक्षा प्रदान करने की सआ़दत (सौभाग्य) प्रचलित रखे, और दारुल उ़लूम इसी प्रकार अपनी सफल ज़िन्दगी गुज़ारता रहे। अल्लाह तआ़ला से हमारी यह भी दुआ़ है कि वह हमें अहले सुन्नत वल–जमात के अक़ीदे से सदैव जोड़े रखे और गुमराह (पथ भृष्ट) गरोहों के शर (बुराई) से सुरक्षित रखे। दुनिया में मज़ीद इस जैसे मदरसों कों स्थापित करें, और सारी सृष्टि के लिये इस के लाभ को सामान्य कर दें, जिस से आशा है कि इन्शाअल्लाह समस्त संसार पर इस्लाम को सुनहरा अवसर फिर प्राप्त होगा।

ह़ाजी अब्दुल ख़ालिक़

(भारत में मलेशिया के सफीर 29 मार्च 1975)

इस संस्था यानी जामिआ़ दारुल उ़लूम ने इस्लाम की बहुत सेवा की है। इस लिये मुझे ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद तय्यब साह़ब और संस्था के दूसरे प्रोफ़ेसर ह़ज़रात से अपनी मुलाक़ात पर फ़ख्र है। मैं संस्था का आभारी हूं कि यहां मलेशिया के विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाता है।

अ़ली उ़बैद मुह़म्मद ग़ज़ाली (संयुक्त अ़रब अमारात 1975)

मैं ने दारुल उ़लूम की ज़ियारत (दर्शन) की और इसकी शैक्षिक सरगरमियां मालूम करने का अवसर सौभाग्य प्राप्त हुआ, विशेष रूप से, ह़दीस, तफ़सीर के सम्बन्ध में इसकी सेवायें प्रशंसनीय हैं। बड़ी प्रसन्नता हुई जब इन ह़ज़रात के प्रवचन अ़रबी ज़ुबान में सुनने का अवसर मिला। दुआ़ है अल्लाह तआ़ला इस संस्था को अधिक समय तक क़ायम रखे, और इस के संस्थापकों को मग़फ़िरत से नवाज़े, और इसी प्रकार जो इस की ख़िदमत में लगे हुए हैं, और मुसलमानों को इस बात की तौफ़ीक़ दे कि इस अ़वामी इदारे की ख़ूब–ख़ूब मदद करें।

यूसुफ़ अस्सय्यद हाशिम रफ़ाई (पूर्व मंत्री कुवैत, 7 नवम्बर 1975)

अल्लाह तआ़ला ने मुझे और मेरे साथ अध्यापक अब्दुर्रह़मान को – जो कि अ़रबी दीनी पर्चे 'अल–बलाग़' के संम्पादक हैं जो कुवैत से निकलता है – इस इस्लामी बड़े दुर्ग के दर्शन का सौभाग्य मिला जिसे हम दारुल उ़लूम देवबन्द अज़हरुल हिन्द (हिन्दुस्तान का जामिआ़ अज़हर) से याद करते हैं।

यह दर्शन बरोज़ जुमा (शुक्रवार) 11 नवम्बर 1975 ई. को उस समय हुआ जब कि हम सब नदवतुल उ़लमा लखनऊ के ता़लीमी जश्न (समारोह) के सम्बंध में इस्लामी वफ़्द की सूरत में हा़ज़िर हुए थे। अल्लाह इस संस्था को ह़नफ़ी मसलक की सेवा और इस्लामी दावत की ख़ूब–ख़ूब तौफ़ीक़ दे।

अबुल मअ़ज़ (क़त़र 11 नवम्बर 1976)

मिश्र और अ़रब में इस संस्था का खूब चर्चा है और सब ही इसका वर्णन करते हैं और अज़हरे हिन्द से याद करते हैं और यह समझते हैं। यह संस्था अपनी ज़िन्दगी और सरगर्मि को इस्लाम की सेवा के लिये विशेष किये हुए है और इस्लाम का झण्डा इस के कारण ऊँचा है, और पूरे आलम में इस का प्रकाश पहुंच रहा है। जितना सुना था उस से कहीं अधिक पाया और इसी तरह यहां के उलमा की लगातार लगन और अपने विद्यार्थियों के साथ हमदर्दी अल्लाह और उस के रसूल और दीन के लिये नेक जज़्बा मेरे लिये खुशी का कारण है। और मेह़मानों के साथ इन का अख़लाक़, बोलने का ढंग और संजीदगी, ये चीज़े और भी हुस्न को दो गुना करने वाली हैं।

अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना है कि जिस तरह इस संस्था ने इस क्षेत्र में कुरआन और ह़दीस का ज्ञान फैलाया इसी प्रकार इस को अपने उद्देश्य में सफलता दे और इसका हर अगला दिन पिछले दिन से अच्छा सिद्ध हो जिस प्रकार आज का दिन कल पिछले से अच्छा है। और इस के विद्यार्थी जो इसकी पैदावार हैं उन को दीन इसलाम का सही वारिस बनाये। और मैं अपने उन भाइयों की ओर से जो क़त़र में रहते हैं उन की तमन्नायें पेश करता हूं।

अश्शेख़ नूरी, अश्शेख़ मंसूरुल असअ़दी आदि

(वफ़्द राबता उलमा–ए–इ़राक़ बग़दाद 16 नवम्बर 1974)

आज इस मरकज़ी दरसगाह (केन्द्रीय शिक्षा घर) दारुल उ़लूम देवबन्द को देख कर बड़ी ख़ुशी हुई, जो अपने सच्चे ज़िम्मेदारों और कार्यकर्ताओं के साथ दीन की सेवा में लगा हुआ है। देवबन्द की इस इस्लामी यूनिवर्सिटी में उपस्थिति वास्तव में हमारा सौभाग्य है। एक रक़म (धन) जो इस महान संस्था की शान की तो नहीं फिर भी इस्लामी भाई चारह व मुहब्बत और इस के साथ हमारे सच्चे सम्बंध का आइनादार ज़रूर है, इसकी सेवा में सम्मिलित होने की सआ़दत (सौभाग्य) प्राप्त कर रहे हैं। अल्लाह हमारे यह उलमा को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाये और हम सब को नेक काम करने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

दारुल उ़लूम भारत के प्रसिद्ध व्यक्तियों की नज़र में

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

हिन्दुस्तान के इस्लामी शिक्षा के इस बड़ी संस्था में न केवल हिन्दुस्तान के हिस्सों से विद्यार्थी खिंचे चले आते हैं बल्कि इण्डोनेशिया, मलेशिया, अफ़ग़ानिस्तान, मध्य एशिया और चीन जैसे सुदूर मुल्कों से भी यहां विद्यार्थी आते हैं। इतने लम्बे चौड़े क्षेत्र में दारुल उ़लूम की लोकप्रियता इस की महानता का सुबूत है। यह संस्था उचित अर्थों में इस्लामी शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी है।

मौलाना शौक़त अली (7 जनवरी 1941)

जो प्रभाव मेरे दिल पर देवबन्द को देख कर हुआ वह बहुत मन को प्रसन्न करने वाला था। मैं वह प्रभाव देवबन्द में पाता हूँ जिन से किसी क़ौम के ज़िन्दा होने का सुबूत मिलता है।

मौलाना अब्दुल बारी फरंगी महल

मैं ने जितने क़ौमी और सरकारी संस्थायें देखी हैं उन सब का हाल यह है कि उन की प्रसिद्धि उन से अधिक है जितने उनके कार्य प्रकाशित कियें जाते हैं लेकिन दारुल उ़लूम देवबन्द को देखने के बाद मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि इस की वास्तव में सेवा इस के प्रकाशन से बहुत अधिक है।

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद (राष्ट्रपति भारत 13 जुलाई 1957)

आप के दारुल उ़लूम ने केवल इस मुल्क के बसने वालों ही की ख़िदमत नहीं की बल्कि आपने अपनी सेवा से इतनी प्रसिद्धि प्राप्त करली है कि विदेशों के विद्यार्थी भी यहां आये हैं, और यहां से शिक्षा प्राप्त करके जो कुछ यहां सीखा है अपने मुल्क में उसका प्रसार किया है। यह

इस मुल्क के सभी निवासियों के लिये सम्मान की बात है। दारुल उ़लूम के बज़ुर्ग इल्म को अमल के लिये पढ़ते हैं। ऐसे लोग पहले भी हुऐ हैं, मगर कम। उन लोगों का सम्मान बादशाहों से भी अधिक होता था। आज दारुल उ़लूम के बज़ुर्ग इस रास्ते पर चल रहे हैं। और मैं समझता हूं कि यह केवल दारुल उ़लूम या मुसलमानों ही की सेवा नहीं बल्कि पूरे मुल्क और पूरी दुनिया की ख़िदमत है। आज दुनिया में भौतिकता का बोल बाला है, जिस से बेचैनी फैली हुई है, और हृदयों में शांति समाप्त हो गई है, इस का ठीक इलाज आत्मज्ञान है, मैं देखता हूं कि सुकून और शांति का वह सामान यहां के बुज़ुर्ग प्रदान कर रहे हैं। अगर खुदा को इस दुनिया को रखना मंजूर है तो दुनिया को अन्ततः इसी मार्ग पर आना है।

फ़ख़रुद्दीन अ़ली अह़मद (राष्ट्रपति भारत 24 अप्रैल 1976)

मुझे दारुल उ़लूम को देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस संस्था ने इल्मो इरफ़ान की रोशनी से दुनिया वालों के दिलों को प्रकाशमान किया और इस की सम्मानित हस्तियों ने देश की राजनीति में नुमायां काम किया है और अपनी महानता का झण्डा ऊंचा किया है। इस बात को भी सभी जानते हैं कि यह संस्था मुल्क में अपनी इल्मी और सियासी सेवा में अ़ागे रही है।

मैं इस के कुतबख़ाने में अमूल्य किताबों के बड़े ज़ख़ीरे को देख कर प्रभावित हुआ। मुझे मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब उन के कार्यकर्ता अध्यापक और विद्यार्थियों से मिल कर बहुत ख़ुशी हुई। मेरी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला दारुल उ़लूम देवबन्द को नई रोशनी में पुरानी रिवायत (परम्प्रा) को क़ायम रखते हुए आगे बढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और मुल्क व मिल्लत की सेवा में हमेशा इस को नुमायां मक़ाम हासिल हो। (आमीन)

नवाब बहादुर यार जंग (हैदराबाद दकन 30 अक्तूबर 1939)

इस युग में जब कि प्रकृतिवाद और दहरियत (नास्तिकता) ने दिलों और बुद्धि पर अधिकार कर लिया है और दुनिया में हर तरफ़ अधर्म का बोल बाला है वे पवित्र आत्मायें धन्यवाद की पात्र हैं जिन्हों ने इस संस्था की नींव रखी या जो लोग अब इसको सफलतापूर्वक चला रहे हैं।

पिछले 70–75 सालों से इस संस्था के सपूतों ने हिन्दुस्तान ही में नहीं बल्कि तमाम एशियाई मुल्कों में इल्म की रोशनी को जिस प्रकार फैलाया उस से सभी वाक़िफ़ हैं।

शेख़ अब्दुल्लाह (28 जनवरी 1968 ई.)

वर्तमान समय में दुनिया हर प्रकार के संघर्ष विशेष रूप से अस्तित्व के संघर्ष से दोचार हो रही है। यदि हम मदरसे के संस्थापकों में मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी और हज़रत मौलाना महमूद हसन के किरदार को अपना मार्गदर्शक बनायें और संस्था के उद्देश्यों को ज़िन्दा रखें तो मुझे यक़ीन है कि इंशाअल्लाह तआला किरदार के संघर्ष और दूसरे हर प्रकार के कष्टों से छुटकारा प्राप्त करने में मानव जाति की बेमिसाल सेवा करें गे।

ख़्वाजा ख़लील अहमद

(दरगाह हज़रत सय्यद सालार मसूद ग़ाज़ी, बहराइच)

दारुल उ़लूम देवबन्द जो हिन्दुस्तान ही में नहीं बल्कि सारी दुनिया में इस्लामी ज्ञान और शिक्षा का एक बेमिसाल केन्द्र है और जामे अज़हर के पश्चात दुनिया में इसका विशेष स्थान है। यही मदरसा है जिस ने हिन्दुस्तान में इस्लामी ज्ञान का जो अ़रबी भाषा में है दरिया बहा दिये। हिन्दुस्तान के कोने–कोने में यहां के फ़ुज़ला (पढ़े हुए) दीनी इल्म की शिक्षा और इस्लाम की सेवा में लगे हुए हैं। दारुल उ़लूम देवबन्द ने दीन और ज्ञान की जो सेवा की वह आफ़ताब (सूर्य) की भांति प्रकाशमान है। हां कोई हठधर्मी सच्चाई की दुश्मनी से अपनी आंखें बन्द करले तो उसका इलाज नहीं।

हकीम अब्दुल हमीद (संस्थापक जामिया हमदर्द दिल्ली)

हिन्दुस्तान की यह इल्मी (शैक्षिक) और रूहानी संस्था इल्म दीन की ख़िदमत में तल्लीन है। अपनी एक सौ तेरह साल की ज़िंदगी में इस ने इस्लामी शिक्षा के बहुत से शोबों में हज़ारों एसे विद्वानों को जन्म दिया है जिन के प्रभाव उपमहाद्वीप में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में मौजूद रहे हैं, और अभी तक मौजूद हैं।

जे,पी,एस, ओबराय (प्रोफ़ेसर समाज शास्त्र दिल्ली विश्वविद्यालय)

मैं ने अफ़ग़ानिस्तान में समाज शास्त्र पर जो रिसर्च (शोध) किया

उससे मुझे ज्ञात हुआ कि दारुल उ़लूम का प्रभाव मध्य एशिया में कहां तक फैला हुआ है।

अजीत प्रसाद जैन (राज्यपाल केरल 8 सितम्बर 1965)

इस्लामी देशों में जब हिन्दुस्तान का जिक्र आता है तो दारुल उ़लूम देवबन्द का नाम भी ज़रूर लिया जाता है। मिस्र के जामिया अज़हर में जब मैं ने अपने आप को देवबन्द के समीप का रहने वाला बताया तो वहां के उलमा ने बड़ी प्रसन्नता जताई, जिस से मैं ने अपने सम्मान में बढ़ोतरी पाई।

नवाब लतीफ़ यार जंग बहादुर (हैदराबाद दकन 27 अप्रेल 1929)

मैं ने विभिन्न कोटि की जमातों और उन की जमातों में ठहर कर उन की बातों को सुना और देखा, दिल बहुत ख़ुश हुआ। मालूम होता है कि अल्लाह की कृपा इस दरसगाह पर है। इस वक़्त लगभग छह सौ से अधिक विद्यार्थी हैं, और अधिकतर मदरसे ही में रहते हैं। सब मस्जिद में नमाज़ पढ़ने आते हैं। जीवन सादा और साफ़ है। रातों को बारह बजे तक आम विद्यार्थी और उसके बाद भी कुछ विद्यार्थी अध्यन करते हैं। जब, कोई व्यक्ति, किसी स्तर का हो उन के सामने आये तो अदब से सलाम करते हैं और विनम्र भाव से झुक कर पेश आते हैं। यह इस्लामी नूरानी शमा दूसरे स्थानों पर हिन्दुस्तान में तो समाप्त है। कहीं किसी पवित्र स्थान में हो तो हो।

ख़ूराक तक़सीम (भोजन वितरण) के समय मैं ने देखा कि एक नियमित तरीक़े पर खामोशी से बिना शोरगुल के तक़सीम हो जाती है। रोटी और सालन को चख कर देखा, अच्छा और मज़ेदार था। भवन निर्माण को भी देखा भली–भांति कराया गया था। सफ़ाई इतनी अच्छी कि सरकारी दफ़तर जिन पर हज़ारों रूपये ख़र्च होते हैं उस से किसी तरह कम नहीं। तात्पर्य यह कि मुझे मेरी उम्मीद से अधिक दर्सगाह नज़र आई। अध्यापकगण अपने विषयों में प्रवीण हैं। मेरे दिल से दुआ निकलती है कि अल्लाह तआला कार्यकर्ताओं की उमर बढ़ाये और ईमान में बरकत दे। अफ़सोस है कि जो कुछ मैं ने देखा उसको प्रकट करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं।

सय्यद मुहीउद्दीन

(प्रिंसिपल उस्मानिया कालेज दकन 18 अग. 1938)

मैं ने कुछ जमातों की शिक्षा का निरीक्षण किया। माशा अल्लाह उन्नतिशील पाया। विद्यार्थियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। दर्जा तह़तानियह, तजवीद और फ़ारसी की जमातों को विशेष रूप से देखा। तह़तानियह जमातों की शिक्षा भी ऊंची जमातों की भांति बहुत अच्छी ह़ालत पर है। अल्लाह तआला से दुआ है कि दिन प्रति दिन इस में उन्नति हो। यह जामिअ़ा जो हिन्दुस्तानी मुसलमानों का अकेला बड़ा दीनी मदरसा है, बराबर तरक़्क़ी करता रहे, और मुसलमानों की भविष्य की नस्लों को लाभ पहुंचाता रहे, और इस्लाम की रोशनी पूरी दुनिया में फैले।

एम. ए. अमीन

(डिप्टी डाइरेक्टर आल इण्डिया रेडियो 10/09/1950)

मेरे लिये यह प्रसन्नता की बात है कि मुझे इस पुरानी संस्था को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहां पर सादा जीवन उच्च विचार अपनी वास्तविक आत्मा के रूप में मिलती हैं। मुझे मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद और मौलाना मुबारक अ़ली ने दारुल उ़लूम की सैर अपने साथ कराई। मैं ने कुछ लेक्चरों को सुना और देखा कि कक्षाओं में किस प्रकार शिक्षा दी जाती है। और यह भी देखा कि विद्यार्थियों को किस अनुशासन के साथ खाना तक़्सीम किया जाता है। मतबख (रसोई) बड़ा साफ़ सुथरा था। दारुल उ़लूम की मालियात का ह़िसाब बड़े सुन्दर ढंग से रखा जाता है। दरुल उ़लूम में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों पर असंख्य पुस्तकें हैं। वास्तविकता यह है कि यह इदारा एक छोटी सी यूनिवर्सिटी है। मुअज़्ज़िन की आवाज़ पर जिस प्रकार विद्यार्थी और अध्यापकगण नमाज़ के लिये जमा हो जाते हैं इस ने मुझे बड़ा प्रभावित किया। शारीरिक व्यायाम भी कराया जाता है, शाम के समय विद्यार्थी एक बड़े मैदान में खेलने के लिये इकट्ठा हो जाते हैं। मैं दारुल उ़लूम के समस्त कार्यकर्ताओं का आभारी हूं विशेष रूप से मौलाना हुसैन अह़मद मदनी और मौलाना मुबारक अ़ली का कि इन ह़ज़रात ने बड़ा सम्मान दिया।

मुह़म्मद अब्दुल फ़त्ताह़ औदह (नाज़िम नशरयात अ़रबी दिल्ली रेडियो)

यह एक वास्तविकता है कि मैं ने देवबन्द में इस्लाम का एक क़िला पाया, ईमान और सुन्नते नबवी की एक पनाहगाह पाई। यहां आकर मैं ने ज्ञात किया कि दुनिया व आख़रत दोने के लिये किस प्रकार योग्यतायें रखी जाती हैं और यह कि पूर्वजों का अनुकरण जिस की बड़े–बड़े बुज़ुर्गों ने रक्षा की है और जिन से विद्यार्थीगण लाभ उठा रहे हैं यह बड़ी मूल्यवान मीरास है जिस को मानना हमारे लिये ज़रूरी है। और यह भी अनिवार्य है कि हम भविष्य के निर्माण के लिये इसे सुतून बनालें और यक़ीनन हिन्दुस्तान की आज़ादी में बड़े–बड़े बुज़ुर्गों की कोशिश और देश की स्वतन्त्रता के मार्ग में महान अध्यापक मौलाना हुसैन अह़मद मदनी के नतृत्व में इन बज़ुर्गों के चेहरे की रोशनी हिन्दुस्तान में मुसलामानों और इस्लाम को ऐसी दीनी और दुनियावी बड़ी शक्ति पैदा कर देगी जिसपर आज़ादी और ईमान के बड़े क़िलों का निर्माण किया जा सके।

अली अमीर मइज़ (नाज़िम नशरयात फ़ारसी दिल्ली रेड़ियो)

यही स्थान है जहां मैं ने वास्तविक इस्लाम का बड़प्पन और पवित्रता का अनुभव किया, और इस प्रकार पाया कि मुसलमानों की सफ़ें नमाज़ में खाली नहीं और प्रत्येक आगे बढ़ने और एक दूसरे का स्थान लेने की कोशिश करता है। आख़िर कार एक दिन आये गा कि इस्लाम के संगठन और सादगी का साया मुसलमानों की पवित्रता और निःस्वार्थ भाव के परिणाम में 'नूरे मुह़म्मदी' यानी इस्लाम का प्रकाश पूरी दुनिया में छा जायेगा। इस्लाम, यानी रसूले ख़ुदा मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के बताये हुए तरीक़े के अनुसार ख़ुदा की इबादत जिस से हम मध्य एशिया के देश दूर हो गये थे और दुनियावी माल दौलत और वैभव ने हमारी आंखों को अंधा कर दिया था उस इसलाम को हमने इस पवित्र स्थान पर देखा और पाया, और इस्लाम की बड़ाई से हम दो बारा आगाह (जानकार) हुए।

एच. एम. एस. हुसैन (सिकन्दराबाद 15 नवम्बर 1958)

उम्र भर में तवक्कुल (अल्लाह का भरोसा) का फ़लसफ़ा आज

दारुल उ़लूम का अमल (कार्य) देख कर समझ में आया है। मदरसे के प्रबन्धकों की वह पहली मिसाल है जो मैं ने अपनी उमर में देखी है। अल्लाह तआ़ला तमाम मुसलमानों को ऐसे नेक अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान करें। मैं दारुल उ़लूम के तमाम कार्यकर्ताओं और विशेष रूप से जनाब अल्लामा क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब की सेवा में इस नेक काम पर मुबारकबाद पेश करता हूं।

सी. एल. माथुर (स्टाफ़ रिपोर्टर दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्ज़ दिल्ली)

इस महान अद्वितीय संस्था को देखकर मेरा मानसिक स्तर ऊँचा हो गया मैं अपनी भावनाओं को हिन्दुस्तान टाइम्ज़ में व्यक्त करूंगा।

प्रोफ़ेसर हुमायू कबीर (वज़ीर साइंसी तह़क़ीक़ात, भारत सरकार)

मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आज जब कि दुनिया भर की यूनिवर्सिटियां करोड़ों रूपय ख़र्च करती हैं, यह दारुल उ़लूम बहुत ही कम खर्च से इतनी बड़ी और क़ाबिले क़दर ख़िदमात (सेवायें) अंजाम दे रहा है। यह सच है कि अगर इस के संस्थापकों और कार्यकर्ताओं में ईश्वर भक्ति और जन सेवा की भावना न होती तो वह इस पर हर साल करोड़ों रूपय ख़र्च करते मगर इन की क़ुर्बानी और सदभावना की यह दशा है कि इन्हों ने कभी हुकूमत से इमदाद के लिये एक पैसा नहीं मांगा, और केवल अल्लाह के भरोसे और ग़रीब मुसलमानों की इमदाद पर इसे चलाते रहे और आज तक चला रहे हैं। अगर ऐसे दारुल उ़लूम को कोई मिश्नरी सोसाइटी चलाती तो उस का सालाना बहजट किसी रियासत के बजट से कम न होता, मगर दुनिया सुनकर आश्चर्य करेगी कि दारुल उ़लूम एक सौ साल से कम से कम ख़र्च के साथ ऊंची से ऊंची सेवा कर रहा है, वह उलमा जो किसी सरकारी यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर बन कर हाज़ारों रूपयें प्रतिमाह तनख्वाह (वेतन) पाते वह इसमें बहुत कम तनख्वाह लेकर काम करते हैं और बोरिया पर बैथ कर वह काम करते हैं जो इयर कण्डीशण्ड कमरों और कुर्सियों पर भी नहीं किया जा सकता।

यह दारुल उ़लूम दूसरी यूनिवर्सिटियों के लिये एक मिसाली यूनिवर्सिटी है, इसकी सादगी और इस के कार्यकर्ताओं का खुलूस व क़ुर्बानी और उद्देश्य को प्राप्त करने की लगन दूसरों के लिये नमूना है।

जो लोग यह समझते हैं कि यह संस्था साम्प्रदायिकता फैलाती है वे चमकते हुए सूर्य की किरणों का इनकार करते हैं, न केवल यह संस्था बल्कि इस के विद्वान और अध्यापकगण साम्प्रदायिकता के सदैव मुख़ालिफ़ रहे हैं। साम्प्रदायिकता की मुख़ालफ़त बहुत मामूली बात है इस संस्था ने तो सारे मुल्क में देश की स्वतन्त्रता की शमा प्रज्वलित की और क़ौम को आज़ादी के लिये जगाया। अगर इस के बुज़ुर्ग उस समय आज़ादी का नारा न लगाते जब की कांग्रेस का वुजूद तक न था तो आज हिन्दुस्तान का इतिहास यह न होता जो आज है। यह संस्था आज़ादी का मार्गदर्शक और देश की प्रभुसत्ताा का पोषक है। आज़ादी का जो बीज इस ने बोया आज हम उसका फल खा रहे हैं।

जगदीश सहाय (जस्टिस इलाहाबाद 12 मई 1936)

हृदय में विश्वास भावना लिये हुए मैं ने दारुल उ़लूम की सैर की जो कुछ मैं ने देखा वह इस से कहीं अधिक था, जो मैं ने सुना था। यह एक एसी संस्था है जिस पर हिन्दुस्तान को फ़ख्र (अभिमान) करना चाहिए, सिर्फ़ यही नहीं कि यह संस्था सारी दुनिया में अपने प्रकार की अकेली संस्था है, बल्कि यह इल्म का एक बहुत बड़ा केन्द्र है जो पृथ्वी पर चारों ओर अपना प्रकाश फैला रहा है। यह संस्था हर प्रकार की इमदाद और सहायता के योग्य है।

बी. गोपाल रेडी–(यू. पी. के राज्यपाल 22 सितम्बर 1969)

मुझे ख़ुशी है कि मैं दारुल उ़लूम देवबन्द देख सका जो आज अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इस्लामी शिक्षा की एक प्रसिद्ध संस्था है। इस केन्द्र में एक बहुत बड़ी लाइब्रेरी है, और डेढ़ हज़ार से अधिक विद्यार्थी यहां शिक्षा प्रप्त कर रहे हैं। संख्या में विद्यार्थियों को खाना, रहना, किताबें मुफ़त दी जाती हैं। मेरी इच्छा है कि यह संस्था धार्मिक शिक्षा के एक केन्द्र की हैसियत से अपनी आन बान को बाक़ी रखे और देश की सेवा की भावना को भी बढ़ावा देने में और ज़ोर दे।

अकबर अ़ली खां (गवर्नर उत्तर प्रदेश 12,13 दिसम्बर 1973)

मैं आज इस दारुल उ़लूम में ह़ाजरी को अपने लिये सौभाग्य समझता हूं। मेरी नेक तमन्नायें इस शैक्षिक केन्द्र, और हिन्दुस्तान की आज़ादी के मर्कज़ के साथ हैं और हमेशा रहेंगी। ख़ुदा करे यह दारुल

उ़लूम दिन–प्रतिदिन तरक़्क़ी करे और ज्ञान के विकास में और जन सेवा की भावना में तरक़्क़ी देने और देश प्रेम के एहसास को अधिक शक्तिशाली करने में अपनी पुरानी कोशिश को जारी रखे।

शहबाज़ हुसैन (तरक़्क़ी उर्दू बोर्ड वज़ारते तालीम हकूमत हिन्द)

दारुल उ़लूम एक ऐसी राष्ट्रीय संस्था है जिस पर बड़ा अभिमान किया जा सकता है। यहां आकर मुझे बेह़द ख़ुशी हुई। यहां की शिक्षा पद्धती, विद्यार्थियों की सुविधायें और अध्यापकों का ज्ञान लग भग पूरे देश में अलग है। इस संस्था ने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। और मुझे यक़ीन है कि भविष्य में भी इस से देश को मूल्यवान लाभ पहुंचेंगे।

मंजूर आ़लम कुरैशी (अ़रब में भारत के सफ़ीर 5 मार्च 1976)

मैं अपने आप को बहुत ख़ुश क़िस्मत ख़्याल करता हूं कि अल्लाह की कृपा से आज मेरी यह बहुत पुरानी इच्छा इस प्रसिद्ध संस्था दारुल उ़लूम देवबन्द की ज़ियारत (दर्शन) की पूरी हुई। यह संस्था इस्लाम, अ़रबी ज़ुबान और मुल्की ज़ुबानों की अनथक सेवा कर रही है। शिक्षा, रिहाइश और ख़ूराक (भोजन) का प्रबंध अनुकरणीय है। मुझे यह जानकारी कर के यह आश्चर्य हुआ कि विद्यार्थियों को भोजन, कमरा, किताबें मुफ़्त दी जाती हैं। यह संस्था 1866 ई. में लग भग सात सौ रूपय सालाना आमदनी से आरम्भ हुइ थी और इस का बजट 26 लाख रूपयों का है और ये तमाम ख़र्चे प्रांतीय या केन्द्रीय हूकूमत की किसी इमदाद के बग़ैर केवल जनता के द्वारा पूरे होते हैं। मैं खास तौर से मौलाना मुह़म्मद तय्यब साह़ब मोहतमिम और उनके स्टाफ़ का आभारी हूं कि उन्हों ने मेरे निरीक्षण के सम्बन्ध में तकलीफ़ उठाई।

लाब्रेरी को देख कर मुझे असीमित ख़ुशी प्राप्त हुई जिस में अ़रबी, फ़ारसी और उर्दू के नायाब लेख हैं, क़ुरआन शरीफ़ के कुछ हस्थलेख पुरातन आर्ट के अमूल्य नमूने हैं। दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इस संस्था को और तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाये, आमीन!

बसुदेव सिहं (स्पीकर उत्तर प्रदेश असम्बली 16 मई 1975)

आज मैं ने दारुल उ़लूम देखा, यहां इल्म के तअ़ल्लुक़ से जो काम हो रहा है इस की मुकम्मल सफलता का मैं इच्छुक हूं। मुझे असीम

प्रसन्नता मिली है। यह संस्था जनता की वास्तविक सेवा करती रहे यह मेरी दिली इच्छा है।

ज़रूरी नोट

21, 22, 23 मार्च 1980 (जुमादऊला 1400 हिजरी) को दारुल उ़लूम का सौ साला जलसा हुआ जिसमें 15 से 20 लाख मुसलमान, और पूरी दुन्या के आठ हज़ार से अधिक प्रतिनिधि मण्डल शरीक हुए।

इस के अतिरिक्त भारत, पाकिस्तान, बंग्लादेश के साथ ऐशिया, अफ़्रीक़ा, अमेरिका, यूरोप के अनेक प्रतिनिधि मण्डल, सफीर, उलमा, सरकारी सदस्य और मेहमान बराबर पधारते रहते हैं। दारुल उ़लूम में अनेक इमाम हरम मक्की जैसे शेख़ मुह़म्मद बिन अब्दुल्लाह अल–सुबैयिल, शेख़ अब्दुल रहमान बिन अब्दुल अज़ीज अल–सुदैस, शेख़ सउद बिन इबराहीम अल–शुरैम पधार चुके हैं।

अमेरिका में 9–11 हमलों के बाद तालिबान के देवबन्दी विचारों के कारण दारुल उ़लूम का नाम वैश्विक मीडिया में आने लगा। इसी कारण बहुत से विदेशी और इंटरनेशनल मीडिया के लोग दारुल उ़लूम आने लगे।

(8)

दारुल उ़लूम के महा पुरूष और विद्वान

1. दारुल उ़लूम के सरपरस्त (संरक्षक)
2. दारुल उ़लूम के कुलपति (मोहतमिम)
3. दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रिस और शैखुलह़दीस
4. दारुल उ़लूम के वर्तमान उलमा
5. दारुल उ़लूम के प्रसिद्ध उलमा

दारुल उ़लूम के सरपरस्त (संरक्षक)

1	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी (1832–1880)
2	ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही (1827–1905)
3	शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी (1851–1920)
4	ह़ज़रत मौलाना अबदुर्रहीम रायपूरी (0000–1919)
5	ह़ज़रत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी (1863–1943)

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी

(1832–1880)

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी दारुल उ़लूम के प्रथम संस्थापक और सरपरस्त (संरक्षक) थे। वह वलीयुल्लाही इ़ल्म व ज्ञान के बहुत बड़े विद्वान थे। ह़ज़रत नानौतवी के समकालीन व्यक्ति सर सय्यद अह़मद खां ने विद्यार्थी जीवन में आप की बुद्धिमत्ताा का वर्णन करते हुए अपने विचारों को इस प्रकार व्यक्त किया हैं: ''लोगों का विचार था कि मोलवी मुह़म्मद इसह़ाक़ साह़ब के बाद कोई व्यक्ति उनका उदाहरण तथा उनके गुणों में पैदा होने वाला नहीं जन्म लेगा। मगर मोलवी मुह़म्मद क़ासिम साह़ब ने अपनी नेकी, दीनदारी, परहेज़गारी, सज्जनता से सिद्ध कर दिया कि मोलवी मुह़म्मद इसह़ाक़ साह़ब के बदले में अल्लाह ने और व्यक्ति को भी उत्पन्न कर दिया है बल्कि कुछ बातों में उन से भी अधिक। बहुत लोग ज़िन्दा हैं जिन्होंने मोलवी मुह़म्मद क़ासिम को बहुत छोटी उम्र में दिल्ली में भी शिक्षा प्राप्त करते देखा है। आरम्भ ही से नेकी भलाई, तक़वा खुदा परस्ती झलकने लगी थी। ...... इस युग

में सब लोग मानते हैं और सम्भवतः वह लोग भी जो उन से शत्रुता और विरोध करते थे मानते हैं कि मोलवी मुह़म्मद क़ासिम इस दुनियां में अद्धितीय थे। उनका स्तर इस युग में सम्भवतः शिक्षा के क्षेत्रों में शायद शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ से कुछ कम हो मगर और दूसरी तमाम बातों में उन से बढ़ कर था। विनम्रता और नेकी और सादगी में यदि उन का स्तर मोलवी मुह़म्मद इसह़ाक़ से बढ़ कर न था, तो कम भी न था। वास्तविकता यह है उनका स्वभाव फ़रिश्तों जैसा था। ऐसे मनुष्य से युग का वंचित हो जाना लोगों के लिये जो उनके बाद ज़िन्दा हैं बहुत अफ़सोस का कारण है।" (अ़लीगढ़ इंस्टिटयू गज़ेट 24, 4, 1880)

1832 ई. को आप सहारनपुर ज़िले के क़स्बा नानौता में जन्मे। आरम्भिक शिक्षा कस्बा नानौता ही में हुई। मकतब की शिक्षा के बाद देवबन्द में कुछ दिनों तक मौलाना महताब अ़ली के मकतब में पढ़ा। फिर अपने नाना के पास सहारनपुर में चले गये और वहां मोलवी नवाज़ से अ़रबी सर्फ़ व नह़व (व्याकरण) पढ़ा। 1843 के आखिर में आप को ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली नानौतवी अपने साथ दिल्ली ले गये और पढ़ाना आरम्भ किया। इस के बाद उन को दिल्ली कॉलेज में दाख़िल कर दिया गया। मगर ह़ज़रत नानौतवी वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित नहीं हुए।

दिल्ली कालेज में दाख़ले से पहले मौलाना ममलूकुल अ़ली से मंतिक़ व फ़लसफ़ा और कलाम की किताबें मीर जाहिद, क़ाज़ी मुबारक, सदरा वग़ैरह उन के मकान पर पढ़ चुके थे। अन्त में इस पढ़ाई में सम्मिलित हुए जो कुरआन और ह़दीस में सारे हिन्दुस्तान में केन्द्रीय स्थान रखता था। ह़ज़रत शाह वलीयुल्लाह की शिक्षा संस्था में उस समय शाह अब्दुल ग़नी मुजद्दिदी इंचार्ज थे। उन से ह़दीस की शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में ही उन के ज्ञान की प्रसिद्धि हो गयी थी।

सह़ीह़ बुख़ारी का ह़ाशिया (फ़ुटनोट) लिखना

शिक्षा प्राप्ति के पश्चात मौलाना नानौतवी ने जीवन यापन के लिये ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद अ़ली मुह़द्दिस सहारनपुरी के प्रेस अह़मदी दिल्ली में अपने लिये पुस्तकों को एडिट करने का कार्य अपनाया। उसी समय में ह़ज़रत मौलाना अह़मद अ़ली के कहने पर सह़ीह़ बुख़ारी के

अन्तिम के पांच छह सिपारों के फुटनोट भी लिखे। ह़ज़रत नानौतवी की किसी जीवनी में इस का खुलासा मौजूद नहीं है कि उन्होंने तालीम से कब फ़राग़त हासिल की और सह़ीह़ बुख़ारी की तसह़ीह़ (एडिट) और ह़ाशिया (फुटनोट) लिखने की घटना किस सन में घटित हुई। सवानेह़ क़ासमी (ह़ज़रत मौलाना सय्यद मनाज़िर ह़सन गीलानी) से इतना पता चलता है कि उस समय आप की उ़मर बाईस तेईस साल होगी। मौलाना सहारनपुरी का महत्वपूर्ण कारनामा यह है कि उन्होंनं ह़दीस की हस्तलिखित किताबों को बड़े कठोर प्रयत्न से ठीक करके छाप कर आ़म किया। अतः 1848 ई. में जामे तिरमिज़ी और 1850 ई. में सह़ीह़ बुख़ारी प्रकाशित की। जो लोग ह़ज़रत नानौतवी के निकट न थे उन को सह़ी बुख़ारी की तसह़ीह़ व तहशीहा (एडिट करने और फुटनोट लगाने) जैसा सावधानी रखने वाला इ़ल्मी काम एक अल्पायु को सौंप दिये जाने पर आश्चर्य होना चाहिए मगर ह़ज़रत मौलाना अह़मद अ़ली जैसे विद्वान ने अपने बुद्धिमान शागिर्द को पहचान लिया था।

इसलाम की सुरक्षा, सेवा, और मदरसों का विकास

ह़ज़रत नानौतवी का सबसे महान कार्य हिन्दुस्तान में दीन की शिक्षा को जीवित करने के लिये मदरसों के द्वारा एक आन्दोलन चलाना था। ह़ज़रत नानौतवी ने मदरसों के लिये उसूले हश्त गाना (आठ नियम) बनाये थे, जिन के आधीन उन को चलना था। उन के प्रयत्न से विभिन्न स्थानों पर दीनी मदारिस जारी हो गये, अतः थाना भवन, ज़िला मुज़फ़रनगर, गुलावठी ज़िला बुलन्दशहर, कैराना ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर, बुलन्दशहर, मेरठ, मुरादाबाद आदि स्थानों पर मदरसे स्थापित हो गये जिनमें से अधिकतर आज तक स्थिर हैं और अपने आस–पास में इ़ल्म व दीनी ख़िदमत कर रहे हैं। आज भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में जो दीनी मदरसों का जाल बिछा हुआ है वास्तव में ह़ज़रत नानौतवी के उसूले हश्त गाना की रौशनी में क़ायम हैं।

वर्तमान समय में आज जो पढ़ने पढ़ाने का कक्षा वार तरीक़ा प्रचलित है, पुराने समय में ऐसा नहीं था बल्कि इसके ख़िलाफ़ था। साधारण रूप से आ़लिम (विद्वान) अपने मकानों और मस्जिदों में बैठ कर अल्लाह के नाम पर पढ़ाते थे और जीवन चलाने के लिये कोई व्यापार

या दूसरा काम करते थे। या अल्लाह पर भरोसा रख कर जीवन गुज़ारते थे। ह़ज़रत नानौतवी ने अपने बड़ों के इस रिवाज को जारी रखा। ह़ज़रत नानौतवी साह़ब जीवन निर्वाह के साधन के साथ–साथ पठन–पाठन का सिलसिला भी सदैव जारी रखा। ह़दीस की 6 मशहूर किताबों 'सिह़ाह़–ए–सित्ता' के अ़लावा मसनवी मौलाना रूम और दूसरी किताबें भी पढ़ाते थे। मगर पढ़ाना किसी मदरसे के बजाये, प्रेस की चार दीवारी, मस्जिद या मकान पर होता था जहां विशेष शिष्य ही उपस्थित होते थे।

1860 ई. में ह़ज के लिये तशरीफ़ ले गये। वापसी के बाद मुजतबाई प्रेस मेरठ में नौकरी करली 1868 ई. तक इसी प्रेस से सम्बद्ध रहे। इसी ज़माने में दूसरी बार ह़ज के लिये जाना हुआ और इस के बाद हाशमी प्रेस से सम्बन्ध हो गया। इस बीच पठन–पाठन बराबर जारी रहा, मगर किसी मदरसे की नौकरी कभी पसन्द नहीं की, सवानेह़ क़ासमी मख़्तूतः के लेखक लिखते हैं– "यह सबको मालूम है कि इसलामी मदरसा देवबन्द आप ही का स्थापित किया हुवा है, मगर कभी लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं किया। आरम्भ में मजलिस–ए–शूरा ने प्रयत्न किया भी कि इस मदरसे की मुदर्रसी स्वीकार कर लें और उस के बदले वेतन लें, मगर स्वीकार नहीं किया। और कभी किसी प्रकार से भी एक पाई के लिये भी मदरसे से नहीं चाहा। हांलाकि रात–दिन मदरसे की भलाई के लिये तल्लीन रहे और तालीम में लगे रहे। अगर कभी मदरसे की क़लम दवात से अपना कोई ख़त लिखते तो तुरन्त एक आना मदरसे के ख़ज़ाने में जमा कर देते।

आवभगत और संतोष, विनम्रता इस सीमा तक थी कि आ़मिल के बनाव श्रंगार, पगड़ी, आदि का भी प्रयोग नहीं करते थे। सम्मान से बहुत घबराते थे। कहा करते थे– "इस नाम को इ़ल्म ने ख़राब किया नहीं तो अपनी दशा को ऐसी मिट्टी में मिलाता कि यह भी न जानता कि क़ासिम नामी कोई व्यक्ति पैदा भी हुवा था।" जिन कामों में प्रदर्शन होता उन से दूर रहते थे।

अन्य धार्मिक सेवायें

हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी साम्राज्य के शासन के साथ–साथ ई़साईयत ने

भी पैर फै़लाना आरम्भ कर दिया था और हर प्रकार से हिन्दुस्तान के लोगों और विशेष रूप से मुसलमानों को ईसाई बनाने की ज़बर दस्त कोशिश की गई। कम्पनी के समर्थन और सहायता से मुल्क के प्रत्येक क्षेत्र में ईसाईयत का प्रचार लागू कर दिया और 1857 ई. के इन्क़लाब के बाद इस बात ने बड़ा ज़ोर पकड़ा। पादरी बाज़ारों, मेलों और आम जन समूहों में इस्लाम और ह़ज़रत मुह़म्मद सल. पर आरोप लगाने लगे। ह़ज़रत नानौतवी ने दिल्ली में रहते हुए जब यह ह़ालत देखी तो अपने शागिर्दों से फ़रमाया कि वह भी इसी प्रकार ख़ड़े होकर बाज़ार में भाषण दिया करें और पादरियों की काट करें। एक दिन स्वयं अपने आप को प्रकट किये बग़ैर जन समूह में पहुंचे और पादरी तारा चन्द से मुनाज़रा (वादविवाद) किया और उस को भरे बाज़ार में हराया।

अंगरेज़ सरकार ने एक ख़त़रनाक चाल चली कि हिन्दुओं को मुसलमानों के मुक़ाबले खड़ा किया। हिन्दुस्तान में मुसलमानों को सियासी बढ़ोतरी प्राप्त थी। अंग्रेज़ों ने अपनी नीति के तह़त हिन्दुओं को बढ़ाया और मुसलमानों को घटाया। जब समाजी और आर्थिक क्षेत्र में हिन्दू आगे बढ़ गये तो उन को धार्मिक बड़ाई समझाई और हिन्दुओं को मुसलमानों के साथ वाद–विवाद पर उतार दिया और इस के लिये अवसर भी दिया ताकि हिन्दू मुसलमानों से खुले आ़म मुनाज़रा करें।

शाहजहांपुर (यू.पी.) के समीप चान्दपुर गांव में वहां के ज़मींदार प्यारे लाल कबीर पंथी पादरी नौलिस की सरबराही और राबर्ट जार्ज कलक्टर शाहजहांपुर की आज्ञा से 8 मई 1876 ई. को एक मेला ख़ुदा शनासी लगाया गया, जिस में ईसाई, हिन्दू और मुसलमन तीनों धर्मों के सदस्यों को इश्तहार के द्वारा बुलाया गया कि वह अपने–अपने धर्मों की सच्चाई को सिद्ध करने के लिये आयें। मौलाना मुनीर नानौतवी और मोलवी इलाही बख़्श रंगीन बरेलवी के अतिरिक्त मौलाना अबुल मंसूर देहलवी मिर्जा मोहिद जालंधरी, मोलवी अह़मद अ़ली, मीर है़दर देहलवी, मोलवी नोअ़मान बिन लुक़मान भी सम्मिलित हुए। इन तमाम आ़लिमों ने इस मेले में भाषण दिये और इन का बड़ा प्रभाव हुआ। ह़ज़रत नानौतवी ने तसलीस व शिर्क के ख़िलाफ़ और तौही़द (अद्वैत) के समर्थन में ऐसा भाषण दिया कि जलसे के मुख़ालिफ़ (विरोधी) व मुवाफ़िक़ (समर्थक) सब मान गये। एक अख़बार लिखता है– "8 मई 1876 ई. के जलसे में

मौलाना मुह़म्मद क़ासिम साह़ब ने भाषण दिया और इसलाम की अच्छाईयां बयान कीं। पादरी साह़ब ने तसलीस का बयान विचित्र अंदाज़ में बयान किया कहा कि एक ख़त में तीन गुण पाये जाते हैं, लम्बाई, चौड़ाई, और गहराई तो तसलीस (तीन) हर प्रकार से सिद्ध है। मोलवी साह़ब ने इस का खण्डन उसी समय कर दिया। फिर पादरी साह़ब और मोलवी साह़ब भाषणों द्वारा विवाद करते रहे। इसी पर जलसा बरख़ास्त (ख़त्म) हो गया। तमाम समीप और दूर चारों ओर शोर मच गया कि मुसलमान जीत गये। जहां एक इसलामी विद्वान खड़ा हो तो उस के आस पास हज़ारों आदमी इकट्ठा हो जाते थे। पहले दिन के जलसे में जो आरोप इसलाम की ओर से थे उन का जवाब इसाइयों ने कुछ नहीं दिया। मुसलमानों ने इ़साइयों के सभी उत्तर दिये और सफलता पाई।"

ह़ज़रत नानौतवी मेला ख़ुदा शनासी में दोनों साल सम्मिलित हो कर इ़साईयों के षड़यन्त्र को असफल बनाया। इस अवसर पर प्रोफ़ेसर अय्यूब क़ादरी ने मौलाना अह़मद ह़सन नानौतवी की सवानेह़ में लिखा हैः "एक बात यहां ख़ास तौर पर गौरतलब है कि मेला ख़ुदा शनासी शाहजहांपुर ऐलान व इश्तिहार के साथ दो साल हुआ और उस में एक तरह़ से इस्लाम धर्म को चैलेंज किया गया था। शाहजहांपुर से बरेली और बदायूं बिल्कुल समीप है। मगर इस मेले बदायूं और बरेली के किसी उ़लमा की दिलचस्पी का कोई सुराग नहीं मिलता।"

इसी तरह पंडित दयानन्द सरस्वती ने मुसलमानों को चैलंज किया। ह़ज़रत मौलाना नानौतवी मुनाज़रे के लिये गए मगर पंडित जी इस के लिये तैयार नहीं हुए और रूड़की से चले गये। ह़ज़रत मौलाना नानौतवी ने अ़ाम जलसे में उनके आरोपों का खण्डन किया।

इस के बाद पंडित जी मेरठ पहुंचे वहां भी उन्हों ने यही अंदाज़ अपनाया। मेरठ के मुसलमानों ने ह़ज़रत नानौतवी से प्रार्थना की जिस पर आप मेरठ तशरीफ़ ले गये। पंडित जी ने वहां भी बातचीत करने से मना कर दिया। मजबूरन ह़ज़रत नानौतवी ने अ़ाम जलसे में बहुत ज़ोर का भाषण देकर आरोपों के उत्तर दिये।

स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेना

1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम में इन्हों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया

और ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर की शामली तह़सील फ़तह़ कर डाली। मगर उस समय के बिगड़े हुए सियासी ह़ालात ने शामली से आगे बढ़ने का अवसर नहीं दिया। स्वतंत्रता संग्राम में ह़ज़रत नानौतवी के कार्यों का इतिहास में एक प्रकाशमान अध्याय है। आप ने हिन्दुस्तानियों के दिलों में आज़ादी की शमा रोशन की और अंग्रेज़ों से हिन्दुस्तान को आज़ाद करने के लिये एक ठोस प्रोग्राम तैयार किया जिस को आप के बाद आप के शागिर्दों में से ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने पूरा कर के अंग्रज़ों की ईंट से ईंट बजादी।

पुस्तकें: ह़ज़रत नानौतवी की दो दर्जन से अधिक पुस्तकें हैं। उन्होंने अपने ज़माने में उन घटनाओं पर क़लम उठाया है जो उस समय अधिकतर वादविवाद के अधीन थीं। उनकी तमाम किताबें किसी न किसी के जवाब में लिखी गयी हैं।

मृत्यु: ह़ज़रत नानौतवी ने 49 साल की उ़मर में 4 जुमादल ऊला 1297 हि. (15 अपरैल 1880) को जुमेरात (बृहस्पतिवार) के दिन वफ़ात पाई। दारुल उ़लूम के उत्तर की ओर क़ासमी क़ब्रिस्तान में आप दफ़न हैं।

ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
(1827–1905)

ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही दारुल उ़लूम के दूसरे सरपरस्त (संरक्षक) थे। दारुल उ़लूम से ह़ज़रत गंगोही का आरम्भ ही से गहरा लगाव रहा है। हजरत गंगोही अनेक अवसरों पर दारुल उ़लूम का दौरा करते, मदरसे का निरीक्षण करते आौर विद्यार्थियों की परीक्षा लेते। दारुल उ़लूम के जलसों में शामिल होते। वह ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी के गहरे दोसत थे। दोनों ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब मुहाजिर मक्की के प्रसिद्ध ख़लीफ़ा थे। 1292/1875 में दारुल उ़लूम की प्रथम इमारत नौदरा और अहाता मौलसरी की नींव अन्य उलमा के याथ हजरत गंगोही ने रखी। दारुल उ़लूम की स्थापना के बाद दारुल उ़लूम के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद गंगोह ह़ाज़िर होते और ह़ज़रत गंगोही के ह़दीस के सबक़ में ह़ाज़िर हो कर लाभ प्राप्त करते थे।

ह़ज़रत गंगोही 6 ज़ीक़ादा 1242 हि. (जून 1827) को पीर के दिन गंगोह में पैदा हुए। इनके पिता मौलाना हिदायत अह़मद अपने समय के महान विद्वान थे। वह दिल्ली के ह़ज़रत शाह ग़ुलाम अ़ली मुजद्दिदी के ख़लीफ़ा थे। ह़ज़रत गंगोही क़ुरआन शरीफ़ घर पर ही पढ़कर अपने मामूं के पास करनाल चले गये और उन से फ़ारसी की किताबें पढ़ीं। फिर मोलवी मुह़म्मद बख़्श रामपुरी से सर्फ़, व नहव की शिक्षा प्राप्त की। 1261 हि. में दिल्ली पहुंच कर ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली नानौतवी से शिक्षा प्राप्त की। यहीं पर ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी से मुलाक़ात हुई जो फिर सारी उ़मर क़ायम रही। दिल्ली में मअ़कूलात विषय की कुछ किताबें मुफ़्ती सदरूद्दीन आज़ुर्दह से भी पढ़ीं। अन्त में ह़ज़रत शाह अब्दुल ग़नी साह़ब मुजद्दिदी की ख़िदमत में रह कर ह़दीस का ज्ञान प्राप्त किया।

शिक्षा प्राप्ति के बाद ह़ज़रत ह़ाजी इम्दादुल्लाह साह़ब की खिदमत

में रहकर बैअत हुए। ह़ज़रत मौलाना याकूब नानौतवी साह़ब ने 'सवानेह़ क़ासमी' में लिखा है: "जनाब मोलवी रशीद अह़मद साह़ब गंगोही और मोलवी मुह़म्मद का़सिम साह़ब से उसी समय से सहपाठी और मित्रता रही है। अन्त में ह़दीस जनाब शाह अ़ब्दुल ग़नी साह़ब की ख़िदमत में पढ़ी और उसी ज़माने में दोनों महापुरूषों ने जनाब क़िबला ह़ज़रत ह़ाजी इम्दादुल्लाह साह़ब से बैअत (दीक्षा) की ओर सुलूक आरम्भ किया। उन्हों ने बड़ी तीव्रता से उपासना का मार्ग तय किया। अतः चालीस दिन की थोड़ी मुद्दत में ख़िलाफ़त मिल गयी। फिर गंगोह वापस आकर शेख़ अ़ब्दुल क़ुद्दूस गंगोही के हुजरे (कमरे) क़याम किया। उस बीच मतब (दवाखाना) जीवन का साधन था।"

1857 ई. में ख़ानक़ाह क़ुद्दूसी से निकल कर कर अंग्रेज़ों के विरूद्ध मोर्चा खोला और अपने पीर ह़ज़रत ह़ाजी इमदादुल्लाह साह़ब और दूसरे साथियों के साथ शामली के मैदान में जिहाद बोल दिया। इस जंग में ह़ाफ़िज़ ज़ामिन साह़ब शहीद हो गये तो आप उन की लाश को उठा कर समीप की मस्जिद में ले गये। शामली की लड़ाई के बाद गिरफ़्तारी का वारन्ट जारी हुआ और उन को पकड़ कर सहारनपुर की जेल में बंद कर दिया गया। फिर वहां से मुज़फ़्फ़रनगर बदल दिया गया। छह महीने जेल में रहे। वहां बहुत से क़ैदी आप के अनुयायी हो गये और जेलख़ाने में जमात के साथ नमाज़ होने लगी।

रिहाई के बाद गंगोह में पढ़ाने का कार्य आरम्भ किया। 1299 हि. तीसरे ह़ज के बाद अपने यहां प्रबन्ध किया कि तीसरे साल में पूरी सिह़ाह़–ए–सित्ता (ह़दीस की 6 मशहूर किताबें) समाप्त करा देते थे। नियम यह था कि प्रातः 12 बजे तक विद्यार्थियों को पढ़ाते थे। आप के पढ़ाने की प्रसिद्धी सुन–सुन कर ह़दीस पढ़ने वाले विद्यार्थी दूर–दूर से आते थे। कभी–कभी उनकी संख्या 70–80 तक पहुंच जाती थी जिनमें भारत और विदेशी विद्यार्थी भी होते थे। विद्यार्थियों के साथ बड़े प्रेम का व्यवहार करते थे। पढ़ाने का ढंग ऐसा होता था कि एक साधारण व्यक्ति भी समझ लेता था। आपके ह़दीस पढ़ाने की एक विशेषता यह थी कि ह़दीस के विषय को सुन कर उस पर अ़मल करने का शौक़ पैदा हो जाता था। जामे तिरमिज़ी की दरसी तक़रीर 'अल–कौकबुदुर्री' छप चुकी है जो संक्षिप्त होने के बावजूद तिरमिज़ी की ठोस कुंजी (शरह़) है।

1314 हि. तक आप का दर्स जारी रहा। तीन सौ से अधिक ह़ज़रात ने आप से दौरा–ए–ह़दीस पढ़ी। ह़दीस पढ़ने वालों में आपके अंतिम शागिर्दों में मौलाना ज़करया कांधलवी के पिता मौलाना मुह़म्मद यह़या कांधलवी थे।

अंत में बीमारी के कारण पढ़ाई बन्द हो गई मगर उपदेश और फ़तावा का कार्य बराबर जारी रहा। अल्लाह की याद पर बड़ी तवज्जोह थी। जो लोग सेवा में उपस्थित होते तो आख़रत के लिये कुछ न कुछ लेकर जाते। सुन्नत के पालन करने का विशेष प्रबन्ध करते थे। 1297 हि. में ह़ज़रत नानौतवी की वफ़ात के बाद दारुल उ़लूम देवबन्द के संरक्षक हुए। मुश्किल ह़ालात में दारुल उ़लूम की गुत्थी को सुलझा देना उनकी एक बड़ी विशेषता थी। 1314 हि. से मदरसा मजाहिर उ़लूम सहारनपुर की संरक्षता भी स्वीकार करली थी। फिक़ह व तसव्वुफ़ में तक़रीबन 14 पुस्तकें लिखीं।

9 जुमादस्सानिया 1323 हि./11 अगसत 1905 ई. को जुमे के दिन 78 साल की आयु में वफ़ात पाई। आप के शिष्यों का एक बहुत बड़ा हल्क़ा है जिसमें असीरे मालटा ह़ज़रत शेख़ुल इसलाम मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी सहित बड़े–बड़े नामवर उलमा (विद्वान) शामिल हैं। इसी प्रकार आप के ख़लीफ़ाओं की भी एक लम्बी फ़ेहरिस्त है। आपके तफ़सीली ह़ालात लेखक मौलाना अ़ाशिक इलाही मेरठी ने 'तज़किरतुर्रशीद' लिखे हैं। यह पुस्तक दो खण्डो में है।

ह़ज़रत शेखुल हिन्द मौलाना मह़मूद ह़सन
(1851–1920)

शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी दारुल उ़लूम के तीसरे सरपरस्त (संरक्षक) और तीसरे सदर मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक) थे। वह दारुल उ़लूम के सबसे पहले विद्यार्थी थे, उन के सम्बन्ध में कहा गया है कि जिसने सबसे पहले उस्ताद के सामने किताब खोली वह मह़मूद था।

ह़ज़रत शेखुल हिन्द का जन्म 1851 ई. में बरेली में हुवा था जहां उनके पिता मौलाना जुलफ़क़ार अ़ली सरकारी शिक्षा विभाग में डिप्टी इन्स्पेक्टर थे। आप ने आरम्भिक शिक्षा प्रसिद्ध विद्वान मौलाना महताब अ़ली साह़ब से प्राप्त की क़ुदूरी और शरह़ तहज़ीब पढ़ रहे थे कि दारुल उ़लूम की स्थापना हो गयी। और आप को उस में दाखिल करा दिया गया। दारुल उ़लूम की शिक्षा प्राप्त करने के बाद ह़ज़रत नानौतवी की सेवा में रह कर ह़दीस का ज्ञान प्राप्त किया। दूसरे विषयों की उच्च पुस्तकें अपने पिता मौलाना जुलफ़क़ार अ़ली से पढ़ीं।

1873 में ह़ज़रत नानौतवी के हाथों पगड़ी पहनी। पढ़ते समय आप की गणना ह़ज़रत नानौतवी के प्रिय शिष्यों में होती थी। ह़ज़रत नानौतवी इन से विशेष प्रेम करते थे। अतः उनकी तीब्र बुद्धि और योग्यताओं को दृष्टि में रखकर दारुल उ़लूम की मुदर्रिसी के लिये आप को चुन कर 1291 हि. में चौथे स्तर के उस्ताद के रूप में आप को नियुक्त कर दिया। जिससे उन्नति करते–करते 1890 ई. में आप सदर मुदर्रस के पद पर पहुंच गये।

प्रत्यक्ष ज्ञान की भांति आन्तरिक (आत्मिक) ज्ञान भी काफ़ी था। ह़ज़रत ह़ाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की से ख़िलाफ़त प्राप्त थी। दारुल उ़लूम में सदर मुदर्रसी की माहवार तनख्वाह 75 रूपये थी मगर आपने 50 रूपये से अधिक कभी स्वीकार नहीं किया। बाक़ी 25 रूपये दारुल उ़लूम के चन्दे में दिया करते थे। आपकी ज़बरदस्त इ़ल्मी शख्सियत के

कारण असंख्य विद्यार्थियों ने ह़दीस की शिक्षा प्राप्त की। ह़ज़रत शेखुल हिन्द के विद्यार्थियों में मौलाना सय्यद अनवर शाह कशमीरी, मौलाना उ़बैदुल्लाह सिन्धी, ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी, मौलाना मंसूर अंसारी, मौलाना हुसैन अह़मद मदनी, मौलाना किफ़ायतुल्लाह देहलवी, मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी, मौलाना सय्यद असग़र हुसैन देवबन्दी, मौलाना सय्यद फ़खरुद्दीन अह़मद, मौलाना ऐजाज़ अ़ली अमरोहवी, मौलाना इब्राहीम बलयावी, मौलाना सय्यद मनाज़िर अह़सन गीलानी जैसे प्रसिद्ध उ़लमाओं की जमात शामिल थी।

बहुत से योग्य और बुद्धिमान विद्यार्थी जो विभिन्न उस्तादों की सेवा करने के बाद ह़ज़रत की सेवा में उपस्थित हो कर अपनी शंकायों का समाधान करते और ह़ज़रत मौलाना की ज़ुबान से क़ुरआन शरीफ़ की आयतें और ह़ज़रत मुह़म्मद सल. की ह़दीसों के अर्थ और व्याख्या सुन कर उन को स्वीकार करते और कहते यह ज्ञान किसी में नहीं है और ऐसा महान विद्वान दुनिया में नहीं देखा।

अंतिम उ़मर में जब तराबलुस और बलक़ान का युद्ध छिड़ गया तो इस के कारण मुसलमानों में बेचैनी फैल गयी। ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने हिन्दुस्तान से ब्रिटिश सरकार के प्रभुत्व को समाप्त करने के लिये एक योजना तैयार की। इस के लिये 1913 ई. के समय में उन्होंने सुसंगठित रूप से अपना प्रोग्राम बनाया था। उन के शागिर्दों और साथियों की एक बड़ी जमात जो देश और विदेशों में फैली हुई थी उन की योजना को सफल बनाने के लिये हर प्रकार तैयार थी। शागिर्दों में, मौलाना उ़बैदुल्लाह सिंधी, मौलाना मुह़म्मद मियां मंसूर अंसारी और दूसरे बहुत से उलमा इस में शामिल थे जिन्हों ने ह़ज़रत शेखुल हिन्द के सियासी क्रांतिकारी प्रोग्राम के लिये अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दी। उस समय आम विचार यह था कि शक्ति के बिना हिन्दुस्तान से अंग्रेज़ों को निकाला नहीं जा सकता। इसके लिये सिपाही और शस्त्र की आवश्यकता है। इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये अफ़ग़ानिस्तान और तुर्की को चुना गया।

ह़ज़रत शेखुल हिन्द अपनी योजना को सफल बनाने के लिये बृद्धावस्था के बावजूद 1915 ई. में हिजाज़ (अ़रब) की यात्रा पर गये। वहां तुर्की के गवर्नर ग़ालिब पाशा और अनवर पाशा जो उस समय तुर्की

के युद्ध मन्त्री थे उन से मुलाक़ात की और कुछ महत्व पूर्ण कार्य पूरे किये। आप अ़रब से सीधे बग़दाद, बिलोचिस्तान होते हुए सीमा प्रांत के स्वतन्त्र क़बाइल में पहुंचाना चाहते थे कि अचानक शरीफ़ हुसैन मक्का ने अंग्रेज़ों की हि़मायत में आप को बन्दी बना कर अंग्रेज़ों को सौंप दिया। ह़ज़रत शेखुल हिन्द के साथ मौलाना हुसैन अह़मद मदनी, मौलाना उ़ज़ैर गुल, ह़कीम नुसरत हुसैन और मौलाना वही़द अह़मद को भी गिरफ़तार कर लिया। आप को पहले मिश्र और फिर वहां से मालटा ले जाया गया। जो ब्रिटिश सरकार में युद्धबन्दियों के लिये सुरक्षित स्थान था। ह़ज़रत शेखुल हिन्द के इस क्रांतिकारिय आन्दोलन को तह़रीक रेशमी रूमाल के नाम से जाना जाता है।

महा युद्ध की समाप्ति पर आप को हिन्दुस्तान आने की इजाज़त मिली और जून 1920 ई. को आप बम्बई पहुंचे। यद्यपि मालटा से वापसी पर स्वास्थ्य बिगड़ गया था वृद्धावस्था के कारण कमज़ोर हो गये थे फिर भी आपने बड़ी हिम्मत से काम लिया। आप के महान कार्य को तबीअ़त सहन न कर सकी इस लिये 18 रबीउल अव्वल 1339 हि. (30 नवमबर 1920 ई.) को दिल्ली में शरीर त्याग दिया। जनाज़ह देवबन्द लाया गया। अगले दिन ह़ज़रत नानौतवी की क़ब्र के पास दफ़ना दिये गये।

ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब रायपुरी (1850–1919)

ह़ज़रत शाह अब्दुलर्रहीम साह़ब रायपुरी दारुल उ़लूम के चौथे सरपरस्त (संरक्षक) थे। 1333/1615 में जिस वक्त शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी क्रांतिकारी आन्दोलन 'तह़रीक रेशमी रूमाल' के सिलसिले में अ़रब चले गए उस के बाद आप ने दारुल उ़लूम की सरपरस्ती की।

ह़ज़रत शाह अब्दुर्रहीम साह़ब की वास्तविता गाँव तिगरी था जो हरियाणा प्रान्त में स्थित है। वहीं आप एक बड़े ज़मीदार घराने में पैदा हुए थे। आप के पिता का नाम राव अशरफ अली था। 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शामली युद्ध के विफल हो जाने के पश्चात 1858 ई0. में हजरत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही जब अपने गुरू ओर शामली युद्ध का नेतृत्व करने वाले ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब की तलाश में तिगरी पहुंचे तो ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब केवल तीन वर्ष के छोटे बच्चे थे। इस घटना से पता चलता है कि आप का जन्म 1855 ई0 में हुआ है ह़ज़रत शाह अब्दुर्रहीम साह़ब के पिता भी ह़ज़रत गंगोही के साथ पंजलाशा जा कर हाजी इम्दादुल्लाह साह़ब से मिले थे। बाद में हाजी साह़ब मक्का चले गये थे और आजीवन वहीं रहे।

ह़ज़रत शाह अब्दुलर्रहीम साह़ब की आरम्भिक शिक्षा गांव में हुई। कुरान शरीफ उर्दू और कुछ फारसी भी गांव ही में पढ़ ली थी। इसके पश्चात् आप ने अ़रबी, फारसी और इस्लाम धर्म की शिक्षा सहारनपुर के अ़रबी मदरसा मज़ाहर उ़लूम में प्राप्त की।

जिन दिनों आप मजाहिर उ़लूम में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, आप का संपर्क मियां अब्दुर्रहीम साह़ब से हो गया। यह मियां अब्दुर्रहीम साह़ब सीमा प्रांत के एक व्यक्ति से मुरीद थे जिन को अखुंद साह़ब कहतें थे। यह अखुंद साह़ब मुजाहिद क्रांतिकारी थे जो अंग्रेजों के सख्त ख़िलाफ़

थे। ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब को मियां अब्दुर्रहीम साह़ब सहारनपुरी ने अंग्रेजों कें विरूद्ध कार्य करने के लिये ही मुरीद बनाया था।

ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब का ननिहाल और ददिहाल रायपुर गांव में ही था इस कारण अपनी पढ़ाई के समय से ही आप वहां आया जाया करते थे, लेकिन शिक्षा प्राप्ति के पश्चात जब आप ने अपने गुरू मियां अब्दुर्रहीम से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर ली तो उनके आदेशानुसार आप रायपुर चले गए और नहर के किनारे पर बाग में एक फूंस के मकान में रहने लगे जो बाद में 'रायपुर खानकाह' से मशहूर हुई। खानकाह में रहने लगे तो आप के मन में हज करने की इच्छा जागी। हजरत शाह अब्दुर्रहीम साह़ब मक्का शहर में हजरत हाजी इमदादुल्ला साह़ब की खिदमत में गए। उनसे क्रांतिकारी की दीक्षा ली फिर हज करके खैरियत से स्वदेश लौट आए।

पीर अब्दुर्रहीम साह़ब का इंतकाल हो गया तो आपने ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही को अपना पीर बनाया। ह़ज़रत गंगोही ने आपको ख़िलाफत भी इनायत की। अब आपका आना जाना ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के दरबार में हो गया। ह़ज़रत गंगोही की मृत्यु के पश्चात जिस व्यक्ति का शाह अब्दुर्रहीम साह़ब पर गहरा प्रभाव पड़ा वह ह़ज़रत शैखुल हिंद थे तथा ह़ज़रत शैखुल हिंद जिस पर अटूट विश्वास करते थे और जिनसे दिली मशवरा करते थे वह ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब रायपुरी थे। इस प्रकार ह़ज़रत गंगोही और शैखुल हिंद के संपर्क में आने से मुस्लिम क्रांतिकारियों से पुर्ण रूप से जुड़ गए। धन और प्रचार का काम ह़ज़रत ने अपने हाथ में लिया, क्रांतिकारी, मुजाहिद और विश्वास पात्र साथी तलाश करना ह़ज़रत शैखुल हिंद को सौंपा जिन्होंने यह कार्य दारुल उ़लूम देवबंद के माध्यम से किया। अ़रब जाने से पहले ह़ज़रत शैखुल हिंद रायपुर तशरीफ लाए। दो दिन ह़ज़रत के पास ठहरे। ह़ज़रत शैखुल हिंद ने अपने तमाम लोगों, दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, लाहौर आदि सभी मुरीदों को यह फरमा गए थे कि मेरे बाद मेरा कायम मुकाम ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब रायपुरी को समझना।

ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब अपने ज़माने के माने जाने

शैख और पीर थे। उन को दुनिया की इज्जत, बड़ाई और माल व जायदाद से कोई लगाव नहीं था न ही कभी आपने इस बात के लिये कोई प्रयत्न किया था।

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब की वफात 26 रबीउस्सानी 1337 हि. (29 जनवरी 1919 ई.) को हुई। आखिर आप को उसी बाग में जहां आप की हयात का आखिरी हिस्सा गुज़रा था मस्जिद के दक्षिणी ओर दफन किया गया। मालटा में हज़रत रायपुरी के वफात की खबर पहुंची हज़रत शेखुल हिंद को बहुत सदमा हुआ और उन के मरसिये में एक कसीदा भी लिखा था जो आपके कसाइद में है।

ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी (1863–1943)

ह़ज़रत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी हकीमुल उम्मत के नाम से प्रसिद्ध और महान लेखक हैं। दीन के प्रत्येक शोबे पर आप अधिकारी रखते हैं। आप उच्च स्तर के लेखनकार्य है। आप दारुल उ़लूम के पांचावें सरपरस्त (संरक्षक) थे।

ह़ज़रत थानवी का जन्म 1280 हि. (1863 ई.) में हुआ। आपका तारीख़ी नाम करम अज़ीम है। ददिहाल की ओर से आपका नाम अब्दुल ग़नी रखा गया था। लेकिन ह़ज़रत हाफ़िज़ गुलाम मुर्तज़ा पानीपती ने अशरफ़ अली नाम रखा। इसी नाम से आप मशहूर हुए। आप थाना भवन के फ़ारूक़ी शयूख़ में से थे। पांच साल की आयु में माता जी का स्वर्गवास हो गया था इसलिये आपका पालन पोषण आपके पिता ने किया। कुरान शरीफ़ हाफ़िज़ हुसैन अली से हिफ़्ज़ किया। फारसी अ़रबी की शुरूआती किताबें वतन ही में पढीं। फारसी की बडी किताबें अपने मामा वाजिद अली साह़ब से पढीं। 1295 हि. में आप दारुल उ़लूम में पढने आये जहां से आपने 1301 हि. में शिक्षा पूरी की।

1301/1884 में मदरसा फ़ैज़–ए–आम कानपुर में अध्यापक बने और फिर मदरसा जामिउल उ़लूम कानपुर के अध्यापक हुए जहां आपकी बडी शोहरत हुई। ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के द्वारा ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की से 1299 हिजरी में बैअत हो गये थे। 1301 हिजरी में हज के समय ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब से मिलकर बैअत की। 1310/1893 में दोबारा हज किया और ह़ज़रत हाजी साह़ब की ख़िदमत में हाज़िर हुए। इस समय आपको ख़िलाफ़त मिल गई।

हजरत हाजी साह़ब के आदेश के अनुसार 1315/1897 में कानपुर छोड़ कर ख़ानक़ाह थानाभवन में आ बसे और वहीं स्थाई रिहायश इख़्तियार की। यहां आप 47 सालों तक रहे। अल्लाह ने आपकी

नसीहतों में बडा प्रभाव रखा था। बडे मजमों में आपने तक़रीरें कीं। उस समय के बडे–बडे विद्वान आप की सेवा में रहे। आपके द्वारा इस्लाम की इतनी सेवा गई कि ऐसे काम बहुत कम लोगों के हिस्से में आते हैं।

आपकी तक़रीरें और लेखों ने हजारों क्या लाखों इन्सानों को नेक बना दिया। आपके कारण असंख्य बुराईयां समाज से दूर हुइें। विशेष व्यक्तियों की संख्या जितनी आपकी मुरीद हुई उतनी कम ही लोगों से होइ है। आपके मुरीदों में हकीमुल इस्लाम ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द, ह़ज़रत मुफ़्ती शफ़ी उस्मानी देवबन्दी, मौलाना ज़फ़र अह़मद उस्मानी, मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी, सय्यद सुलैमान नदवी, ह़ज़रत मौलाना अब्दुल बारी नदवी, ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ईसा इलाहाबादी, ह़ज़रत मौलाना वसीउल्लाह इलाहाबादी, ह़ज़रत मौलाना अब्दुल ग़नी फूलपुरी, ह़ज़रत मौलाना अबरारूल हक़ हरदोई, ह़ज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ान साह़ब जलालाबादी आदि शामिल हैं।

आपका ज्ञान बडा ही विस्तृत था। आपकी पुस्तकें ऐसी थी कि दीन का कोई शोबा उनसे छुपा नहीं था। उनकी छोटी बडी पुस्तकों की सख्या लगभग 350 है। इनके अलावा तीन सौ से अधिक तक़रीरें हैं जो छप चुकी हैं। इन साब को मिलाकर आपकी पुस्तकें व रिसाले लगभग आठ सौ के आसपास हो जाते हैं। इन पुस्तकों में बहुत मक़बूल बहिश्ती ज़ेवर, तफ़सीर बयानुल कुरान आदि मुख्य हैं। आपकी छोटी पुस्तकों और भाषणों के कई मजमुए आ चुके हैं।

आपकी ज़िन्दगी बडी मुनज़्ज़म थी। कामों के अवक़ात निश्चित थे और हर काम अपने समय पर करते थे। मिलने आने वालों के पत्रों के उत्तर अपने हाथों से लिखते थे। सच यह है कि आपके जीवन की सफलता का राज़ इसी समय की पाबन्दी में छुपा था। नहीं तो 47 वर्षों के समय में आठ सौ से अधिक पुस्तकें आदि लिखना महान कार्य और ज़िन्दा करामात है।

ह़ज़रत थानवी की विशेषता यही रही है कि अपनी पुस्तकों से कभी एक पैसा भी नहीं लिया। तमाम किताबों का कोइ कापी राइट नहीं है और जिसका जी चाहे उसको छाप सकता है। पुस्तकों की गैर मामूली मक़बूलियत के बावजूद आपने कभी किसी किताब छापने के अधिकार

को अपने लिये सुरक्षित नहीं रखा।

दारुल उ़लूम की सरपरस्ती

1320/1902 में हकीमुल उम्मत ह़ज़रत थानवी को दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा का सदस्य बनाया गया। 1344/1925 में ह़ज़रत थानवी दारुल उ़लूम देवबन्द के सरपरस्त बने। आपने अपनी सूझबूझ से दारुल उ़लूम को झगडों से बचाया। 1354 हिजरी में आपने अपनी व्यस्तता के कारण इस पद से इस्तीफ़ा दे दिया। इसके बाद दारुल उ़लूम के सरपरस्त के नाम से किसी का चुनाव नहीं हुआ।

मृत्यु

15–16 रजब 1362 हिजरी/19–20 जुलाई 1943 ई. की दरमियानी रात को थाना भवन में आपकी मृत्यु हुई। थाना भवन में हाफ़िज़ ज़ामिन शहीद के मज़ार के पास आप को अपने निजी बाग़ में दफ़ना दिया गया।

दारुल उ़लूम के मोहतमिम

क्र.	मोहतमिम का नाम	आरम्भ व अन्त	समय
1.	हज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब (1835–1913)	1283/1866–1284/1867 1286/1869–1288/1871 1306/1888–1310/1893	10 वर्ष
2.	हज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब (1836–1891)	1284/1867–1285/1868 1288/1872–1306/1888	19 वर्ष
3.	हज़रत हाजी फ़ज़ल हक़ साह़ब	1310/1893–1311/1894	1 वर्ष
4.	हज़रत मौलाना मुनीर साह़ब नानौतवी (जन्म 1831)	1311/1894–1313/1895	डेढ वर्ष
5.	हज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद (1862-1928)	1313/1895-1347/1928	34 वर्ष
6.	हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी (मृ. 1929)	1347/1928-1348/1929	स वा साल
7.	हज़रत मौलाना कारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब (1897-1983)	1348/1930-401/1981	52 वर्ष
8.	हज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान बिजनौरी (1914-2010)	1402/1982-1432/2010	32 वर्ष
9.	हज़रत मौलाना गुलाम मुह़म्मद वुस्तानवी (जन्म 1950)	1432/2010	7 माह
10.	हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी (ज. 1947)	1432/2011- जारी	जारी

ह़ज़रत ह़ाजी सय्यद मुह़म्मद आ़बिद साह़ब
(1835—1913)

ह़ाजी साह़ब देवबन्द के निहायत मुत्तक़ी, परहेज़गार और प्रभावशाली महापुरूष थे। दारुल उ़लूम के सरगर्म संस्थापकों में थे। दारुल उ़लूम की सर्वप्रथम पदवी आप ही को सौंपी गई थी।

ह़ाजी साह़ब का जन्म 1835 ई. में हुआ। क़ुरआन शरीफ़ और फ़ारसी पढ़कर दीनी तालीम की शिक्षा के लिये आप दिल्ली गये। शिक्षा प्राप्ति के समय आप को तसव्वुफ़ का ऐसा शौक़ हुआ कि शिक्षा प्राप्ति को छोड़ कर अनेक सूफ़ियों से ख़िलाफ़त प्राप्त की। मियांजी करीम बख़्श रामपुरी और ह़ज़रत ह़ाजी इमदादुल्लाह साह़ब मुह़ाजिर मक्की से भी ख़िलाफ़त प्राप्त की थी।

ह़ज़रत ह़ाजी आ़बिद साह़ब का 60 वर्ष तक छत्ते की मस्जिद में क़याम रहा। प्रसिद्ध है कि 30 साल तक आपकी तकबीर ऊला नहीं छूटी। साह़िबे कश्फ़ व करामत बुज़ुर्ग थे। अत्यधिक कार्यों के कारण समय की पाबन्दी का पूरी तरह ध्यान रखते थे। प्रत्येक कार्य अपने समय पर ठीक—ठाक होता था। सुन्नत की पूरी पाबन्दी थी। उनका कथन है कि "बेअ़मल दरवेश ऐसा है जैसे सिपाही बग़ैर हथयार के।" एक बार ज्ञात हुआ कि मुरीदों में ह़ाजी मुह़म्मद अनवर देवबन्दी ने नफ़्सकुशी के तौर पर खाना—पीना बिल्कुल छोड़ दिया, आपने चेतावनी स्वरूप लिखा कि यह कार्य सुन्नत के ख़िलाफ़ है सुन्नत के मुताबिक़ खाना—पीना ज़रूर होना चाहिए। चाहे थोड़ा ही क्यों न हो। (तजकिरतुल आ़बिदीन पृष्ठ 67)

अनवार—ए—क़ासमी में लिखा हैः "ह़ाजी साह़ब देवबन्द में एक बड़े सम्मनित प्रभावशाली, उपासक हस्ती थी। आपकी बुजुर्गी का सिक्का प्रत्येक छोटे—बड़े औरत—मर्द बच्चे व बूढ़े के दिल पर था। उनके आत्मिक फ़ैज़ ने देवबन्द और उसके आस पास बल्कि दूसरे प्रांतों के दिलों को भी मोह लिया था। आप की सूरत को देख कर अल्लाह याद आता था।" (अनवारे क़ासमी खण्ड प्रथम पृष्ठ 350, 351)

सवानेह़ क़ासमी में लिखा हैः "देवबन्द के निवासी आपसे बहुत अ़क़ीदत रखते थे। आपसे लोगों को बहुत अनेकों प्रकार का लाभ है। घर–बार, ज़मीन बाग़ जितना भी आपकी मिलकियत में था सब का सब अल्लाह की राह में देकर केवल अल्लाह पर विश्वास किये हुए थे।" (सवानेह़ कासमी भाग दो पृष्ठ 239,241)

समय और कार्यक्रम की बहुत सावधानी बरती जाती थी। ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद या़कूब नानौतवी साह़ब कहा करते थे कि जानने वाला हर वक्त यह बता सकता है कि ह़ाजी साह़ब अमुक कार्य में लगे हैं अगर कोई जाकर देखे तो उसी काम में उनको लगा हुआ पायेंगे।

दारुल उ़लूम की सेवा में

दारुल उ़लूम देवबन्द के लिये सार्वजनिक चन्दे का आन्दोलन आपही ने शुरू किया था, ह़ाजी फ़ज़ले ह़क़ ने ह़ज़रत नानौतवी की सवानेह़ मह़फ़ूज़ में लिखा है "एक रोज़ इश्राक़ के समय ह़ज़रत ह़ाजी सय्यद मुह़म्मद आ़बिद सफ़ेद रूमाल की झोली बनाकर और उस में तीन रूपये अपने पास से डाल कर छत्ता मस्जिद से अकेले मोलवी महताब अ़ली के पास पधारे, मोलवी साह़ब ने प्रसन्नता पूर्वक छह रूपये डाले और दुआ़ की, बारह रूपये मोलवी फ़ज़्लुर्रह़मान साह़ब ने और छह रूपये सवानेह़ मख़तूता के लेखक ह़ाजी फ़ज़्ले ह़क़ साह़ब ने दिये। वहां से उठकर मोलवी ज़ुलफ़कार साह़ब के पास आये मोलवी साह़ब ने तुरन्त बारह रूपये दिये। सौभाग्य से वहां सय्यद ज़ुलफ़कार अ़ली सानी देवबन्दी मौजूद थे उनकी ओर से भी बारह रूपये मिले। वहां से उठकर यह दरवेश बादशाह मुह़ल्ला अबुल बरकात पहुंचे। दो सौ रूपये जमा होगये और शाम तक तीन सौ रूपये की रक़म जमा हो गई। फिर धीरे–धीरे चर्चा हुई और जो फल–फूल इसको लगे वह ज़ाहिर हैं। (सवानेह क़ासमी भाग 2, पृष्ठ 258 से 259)

दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा की रुकनियत के अ़लावा कई बार एहतमाम आप के सुपुर्द हुआ। पहली बार स्थापना के समय 1283 / 1866 से 1284 / 1867 तक, दूसरी बार 1286 / 1869 से 1288 / 1871 तक और तीसरी बार 1306 / 1888 से 1310 / 1893 तक मोहतमिम रहे। यह कुल दस साल का समय है।

जामा मस्जिद देवबन्द की तामीर भी आप ही के प्रयत्नों का परिणाम है। अन्त में कार्य की अधिकता के कारण अपने एहतमाम से इस्तीफ़ा दे दिया था। इन के प्रभाव से दारुल उ़लूम को बहुत लाभ हुआ है और इस संस्था का क़दम हर समय उन्नति की ओर बढ़ता रहा।

27 ज़ुलहिज्ज 1331 हि. तद्नुसार 27 नवमबर 1913 ई. को 81 साल की उम्र में इस संसार को अलविदा कहा।

ह़जरत मौलाना रफ़ीउ़द्दीन साह़ब

(1836–1891)

ह़ज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब 1252 हि. तद्नुसार 1836 ई. में पैदा हुए। शाह अब्दुल ग़नी मुजहिदी के मशहूर ख़लीफ़ा थे। यद्यपि इनकी शैक्षिक योग्यता मामूली थी लेकिन प्रशासनिक कामों का बेह़द अनुभव था और इस काम में उनकी विशेष योग्यता थी। उनकी गिनती अपने समय के कामिल वली–अल्लाह लोगों में थी। आप दो बार दारुल उ़लूम के मोहतमिम नियुक्त हुए। पहली बार 1284 हि./1867 ई. से 1285 हि./1868 ई, तक ह़ाजी साह़ब के ह़ज को चले जाने के समय मोहतमिम हुए। और दूसरी बार इसके लगभग तीन साल के बाद 1288 हि./1871 ई. में मोहतमिम नियुक्त हो गये, और 1306 हि./1888 ई. के आरम्भ तक इस पद पर रहे। उन्नीस साल तक आप मोहतमिम रहे।

प्रसिद्ध है कि दयानत व अमानत के साथ प्रशासनिक योग्यता बहुत कम होती है मगर आपमें यह गुण बहुत अधिक थे। दारुल उ़लूम की आरम्भिक अधिकतर इ़मारतें आप ही के समय में बनाई गयीं। उन के भवन निर्माण की रूचि का पता इन इ़मारतों विशेषकर नौदरे से चलता है। यह इ़मारत दारुल उ़लूम की इ़मारतों में विशेष स्थान रखती है।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़ज़ीज़ुर्रह़मान (मृत्यु 1347 हि./1928 ई.) को मौलाना रफ़ीउ़द्दीन से ख़िलाफ़त प्राप्त थी। 1306 हि./1888 ई. में आप हिजरत के उद्देश्य से मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गये और वहीं दो साल के बाद 1308 हि./1890 ई. में देहान्त हो गया। और वहीं जन्नतुल बक़ी में दफ़न हुए।

ह़ज़रत ह़ाजी सय्यद फ़ज़ले ह़क़ देवबन्दी

हाजी फ़ज़ल हक़ देवबन्दी, देवबन्द के सादात परिवार में से थे। दारुल उ़लूम की स्थापना में आरम्भ से ही शरीक रहे थे। ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी से बैअ़त थे। आरम्भ से ही दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के सदस्य थे। दारुल उ़लूम की स्थापना के बाद दफ़्तर के कामों के ज़िम्मेदार बनाये गये। 1310 हि./1893 हि. में ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब के कार्यों की अधिकता के कारण त्यागपत्र देने के बाद दारुल दलूम के मोहतमिम बनाये गये। लगभग एक साल तक इस सेवा को पूरा करके त्याग पत्र दे दिया।

हाजी फ़ज़ल ह़क़ साह़ब ने ह़ज़रत नानौतवी की एक सवानह उमरी (जीवनी) लिखी थी जो छप नहीं सकी। सवानह क़ासमी के लेखक मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी ने कई स्थान पर इसका ज़िक्र किया है। इससे अन्दाज़ा होता है कि जीवनी पूर्ण होगी। लिखने की योग्यता के साथ–साथ उनमें प्रबन्धात्मक योग्यता भी काफी थी।

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मुनीर नानौतवी

ह़ज़रत मौलाना मुनीर साह़ब नानौतवी प्रसिद्ध विद्वान व लेखक मौलाना मुह़म्मद अह़सन नानौतवी और मौलाना मुह़म्मद मज़हर नानौतवी के छोटे भाई थे। 1247 हि./1831 ई. में नानौता में पैदा हुए। प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता ह़ाफ़िज़ लुत्फ़ अ़ली से प्राप्त की, फिर दिल्ली कालेज में दाख़िल हो गये। वहां ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली नानौतवी, मुफ़्ती सदरुद्दीन और ह़ज़रत शाह अब्दुल ग़नी देहलवी से इल्मी लाभ प्राप्त किया। मौलाना मुनीर साह़ब स्वतंत्रता संग्राम 1857 के एक कर्मठ सदस्य और मुजाहिद रहे थे। शामली युद्ध में दूसरे लोगों के कन्धों से कन्धा मिला कर युद्ध में श्रीक रहे। शामली युद्ध के बाद रूपोश होगये और आ़म माफ़ी के बाद अपने बड़े भाई मौलाना मुह़म्मद अह़सन के पास बरेली चले गये वहां आप 1861 में बरेली कॉलेज में मुलाज़िम हो गये। बरेली में रहते समय अपने भाई मौलाना मुह़म्मद अह़सन के सिद्दीक़ी प्रेस बरेली के प्रबन्धक भी रहे। मौलाना मुह़म्मद मुनीर नक़्शबन्दी सिलसिले में बैअ़त थे। इन्होंने इमाम ग़ज़ाली की किताब 'मिनहाजुल आ़बिदीन' का उर्दू अनुवाद 'सिराजुस्सालिकीन' के नाम से किया है, जो सिद्दीक़ी प्रेस बरेली से 1864 ई. में छपा है। इन की दूसरी किताब 'फ़वाइदे ग़रीबह' है यह भी तसव्वुफ़ के विषय पर लिख़ी गई है।

एक साल से कुछ अधिक समय तक मोहतमिम रहे। ख़ारजी समय में विद्यार्थियों को अ़रबी अदब बढ़ाते थे। दयानतदारी और अमानत में आप बड़े सावधान थे। एक बार मौलाना दारुल उ़लूम की रूदाद छपवाने दिल्ली गये उसके ख़र्च के लिये ढ़ाई सौ रूपये साथ थे। दुर्भाग्यवश रूपये चोरी हो गये। मौलाना यह घटना किसी को बताये बिना अपने घर नानौता आये। अपनी ज़मीन बेच कर रूपये लिये फिर उन से रूदाद छपवाई। मजलिसे शूरा के सदस्यों को जब इस का पता चला तो उन्होंने ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही से इस सम्बन्ध में मसला पूछा, वहां से जवाब आया—"मोहतमिम साह़ब अमीन थे और धन चूंकि बिना उनकी ग़लती के चोरी हुआ इसलिये उन पर तावान नहीं

आसकता" मजलिस ने फ़तवा दिखाकर मौलाना मुनीर से दर्ख़ास्त की कि अपना रूपया वापस लेलें, मौलाना ने फ़रमाया "फ़तवे की बात नहीं है, अगर स्वयं मौलाना रशीद अह़मद साह़ब को ऐसी घटना का सामना पडता तो क्या वह रूपये ले लेते?" अतः बहुत कहने पर भी रूपया नहीं लिया, इन्कार करदिया" (अरवाहे सालासाः ह़िकायत 453 पृष्ठ 157, 160)

ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब (1862-1928)

ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब, ह़ज़रत नानौतवी के बेटे थे। 1279 हि/1862 ई. में नानौता में जन्मे। क़ुरआन शरीफ़ ह़िफ़्ज़ करने के बाद आरम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये गुलावठी गये, ह़ज़रत अब्दुल्लाह अम्बेहटवी उस मदरसे में अध्यापक थे। इसके बाद आगे बढ़ने के लिये मुरादाबाद मदरसा शाही में गये। यहां ह़ज़रत नानौतवी के शागिर्द ह़ज़तर मौलाना अह़मद ह़सन अमरोहवी पढ़ाते थे। उनसे विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ीं। इसके बाद देवबन्द आये, और ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द से पढ़ना आरम्भ किया। मौलाना मुह़म्मद याक़ूब साह़ब से तिरमिज़ी शरीफ़ के कुछ पाठ पढ़े। फिर दौरह ह़दीस गंगोह पहुंच कर ह़ज़रत गंगोही से पढ़ा।

1885 ई. में दारुल उ़लूम में अध्यापक पद पर नियुक्ति हुई और विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ाईं। 1892 ई. में जब ह़ज़रत ह़ाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब ने दारुल उ़लूम के एहतमाम से इस्तीफ़ा दे दिया तो एक के बाद दूसरे मोहतमिम हुए (ह़ाजी फ़ज़्ले ह़क़ देवबन्दी और मौलाना मुनीर नानौतवी) मगर एक साल से अधिक एहतमाम न कर सके। प्रत्येक वर्ष के परिवर्तन के कारण दारुल उ़लूम के प्रबन्ध में अस्थिरता उत्पन्न होने लगी।

1313 हि./1895 ई. में ह़ज़रत गंगोही ने एहतमाम के लिये ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ साह़ब की नियुक्ति करदी। ह़ाफ़िज़ साह़ब बहुत अच्छे प्रबन्धक और प्रभावशाली व्यक्ति थे। उन्होंने बहुत शीघ्र दारुल उ़लूम के इन्तज़ाम पर उबूर हासिल कर लिया और नियुक्ति के समय उन से जो आशायें थी वे पूरी हुई।

ह़ाफ़िज़ साह़ब के एहतमाम के समय दारुल उ़लूम ने बड़ी उन्नति की। जब उन्होंने दारुल उ़लूम का एहतमाम संभाला था तो दारुल उ़लूम की आमदनी का औसत 5-6 हज़ार रूपये सालाना था। आपके समय में

यह बजट 90 हज़ार तक बढ़ गया। इसी प्रकार तलबा का औसत दो ढ़ाई सौ से उन्नति कर के लागभग नौ सौ तक पहुंच गया। उस समय पुस्तकालय में 5 हज़ार किताबें थी, आप के समय में किताबों की संख्या 40 हज़ार पहुंच गयी। 1895 ई. तक इ़मारत दारुल उ़लूम की मालियत 36 हज़ार थी, आप के समय में यह मालियत 40 लाख पहुंच गयी।

आपके एहतमाम के समय दारुल उ़लूम ने बहुत अधिक उन्नति की। आप के एहतमाम से पहले, विभागों और द़फ़्तरों का कोई साफ़ प्रबन्ध न था। आप ही के समय में मदरसे से दारुल उ़लूम बना। विभाग और द़फ़्तरों की शक्ल व्यवहारिक बनाई गयी। प्रतिदिन दारुल उ़लूम का क़दम आगे ही आगे बढ़ता चला गया। आपके एहतमाम का समय दारुल उ़लूम की तारीख़ में बड़ा महत्वपूर्ण है।

दारुल उ़लूम की दारुल ह़दीस की इ़मारत जो अपनी क़िस्म की हिन्दुस्तान भर में पहली इ़मारत है आप ही के समय में बनाई गयी थी। जदीद दारुल इक़ामह का आग़ाज़ (आरम्भ) और मस्जिद क़दीम व कुतबख़ाने की तअ़मीर (निर्माण) भी हाफ़िज़ साह़ब के ज़माने की यादगारें हैं। 1910 ई. में एक बहुत बड़ा दस्तार बन्दी का जलसा आपके ज़माने की यादगार है जिस में एक ह़ज़ार से अधिक फ़ुज़ला (विद्वान) की दस्तार बन्दी हुई थी। दारुल उ़लूम की तरक़्क़ी के सम्बन्ध में ह़ाफ़िज़ साह़ब ने मुल्क के विभिन्न शहरों की यात्रा करके दारुल उ़लूम के लिये बहुत से स्थाई चन्दे नियुक्त कराये। विशेष रूप से पूर्व रियासत भोपाल, बहावलपुर और हैदराबाद की यात्रायें कीं जो दारुल उ़लूम के इतिहास में हमेशा याद रहेंगे।

ब्रिटिश सरकार की ओर से आप को शम्सुल उ़लमा का ख़िताब दिया गया था। मगर आपने दारुल उ़लूम के स्वतन्त्रता के समर्थन के कारण सरकार का ख़िताब (सम्मान) प्राप्त करना पसन्द नहीं किया अतः पदक वापस कर दिया। यह भी आप ही के समय की विशेषता थी कि दोबार उत्तरप्रदेश के राज्यपाल दारुल उ़लूम में आये।

ह़ाफ़िज़ साह़ब की सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि दारुल उ़लूम की बड़ी से बड़ी समस्या आसानी से सुलझा दिया करते थे। विद्यार्थियों की छोटी से छोटी समस्या पर नज़र रहती थी। उन पर रोक टोक और डांट–डपट रखते थे। वहीं उनपर दयालु और मेहरबान थे। विद्यार्थियों

की छोटी से छोटी आवश्यक्ता पर प्यार से नज़र रखते थे। बीमार विद्यार्थियों के इलाज पर विशेष ध्यान देते थे। अध्यापकों और विद्यार्थियों पर ह़ाफ़िज़ साह़ब का रोब (दबदबा) अतिथि सत्कार बहुत ऊंचा था। दारुल उ़लूम के अतिथियों का ख़र्च स्वयं उठाते थे। आरम्भ से पढ़ने–पढ़ाने का जो कार्य था वह एहतमाम के समय भी जारी रहा। भाषण बहुत स्पष्ट और सुलझा हुआ होता था। अपने पिता के विशेष विषयों या ज्ञान पर काफ़ी पकड़ थी।

ह़ाफ़िज़ साह़ब को रियासत ह़ैदराबाद दकन में मुफ़्ती आज़म के पद पर नियुक्त किया गया। हुकूमत आसफ़ीया के इस सबसे बड़े दीनी पद पर आप 1922 ई. से 1925 ई. तक नियुक्त रहे। निज़ाामे ह़ैदराबाद को दारुल उ़लूम में आने का निमन्त्रण दिया जो स्वीकार कर लिया गया था। प्रोग्राम यह था कि निज़ाम जब दिल्ली जायेंगे तो दारुल उ़लूम भी देखेंगे। 1928 ई. में निज़ाम के दिल्ली आने की सम्भावना थी वादे की याद दोहराने के लिये आप ह़ैदराबाद तशरीफ़ ले गये। जिस समय आप ह़ैदराबाद की तैयारी कर रहे थे तो स्वास्थ्य बिगड़ गया। अपनी बीमारी की परवाह न करते हुए दारुल उ़लूम के लाभ के लिये ह़ैदराबाद चल दिये वहां जाकर त़बीअ़त और ख़राब हो गयी। पहले तो प्रतीक्षा करते रहे कि त़बीअ़त सम्भले तो निज़ाम से मुलाक़ात की जाये। मगर जब मर्ज़ दिन बदिन बढ़ता गया तो साथियों ने राय बनाई कि वापस देवबन्द ले जाया जाये। अतः वापसी के इरादे से आप हैदराबाद से चल दिये, मगर अभी ट्रेन ह़ैदराबाद की सीमा में ही थी कि निज़ामाबाद स्टेशन पर ह़ाफ़िज़ साह़ब का स्वर्गवास हो गया। यह घटना 3 जुमादल ऊला 1347 हि./17 अकतूबर 1928 ई. को हुई।

निज़ामाबाद स्टेशन पर शव (लाश) उतार कर जनाज़ह तैयार किया गया, साथियों और निज़ामे दकन को तार द्वारा सूचित किया गया। निज़ाम का उत्तर आया कि ह़ाफ़िज़ साह़ब का जनाज़ह ह़ैदराबाद ही लाया जाये। निज़ामाबाद और ह़ैदराबाद में कई–कई बार नमाज़े जनाज़ह पढ़ी गई। अगले दिन सरकारी ख़र्च पर आप को विशेष क़ब्रिस्तान 'ख़ित्ता–ए–सालीह़ीन' में दफ़ना दिया गया।

ह़ाफ़िज़ साह़ब ने 45 वर्ष दारुल उ़लूम की सेवा की। आरम्भ के दस साल पढ़ाने में गुज़ारे और 35 साल मोहतमिम रहे।

ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी

आप ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान के बेटे थे। आरम्भ से अन्त तक दारुल उ़लूम में शिक्षा प्राप्त की। आप एक उच्च कोटि के विद्वान और अ़रबी भाषा के बड़े साहित्यकार थे। उनका अनुशासन और प्रशासन दारुल उ़लूम में प्रसिद्ध था। दारुल उ़लूम की तरक़्क़ी में इन का बड़ा योगदान रहा है।

1907 ई. में ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ अह़मद साह़ब की तल्लीनताओं के कारण और दारुल उ़लूम को उन्नति देने के लिये एक ऐसे योग्य और प्रशासनिक व्यक्ति की ज़रूरत अनुभव की गयी जो समय पड़ने पर ह़ाफ़िज़ साह़ब की सहायता कर सके इसके लिये आप से अधिक उचित कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। अतः इनकार के बावजूद आपको मजबूर करके उप–मोहतमिम बनाया गया। कहा जाता है कि यह दारुल उ़लूम का सौभाग्य था कि उसको मौलाना ह़बीबुर्रह़मान साह़ब उस्मानी जैसा काम करने वाला निःस्वार्थ व्यक्ति मिल गया। एहतमाम के कामों में उन को इतना अनुभव था कि उन्होंने दारुल उ़लूम के विभागों को इतना सुसंगठित कर दिया था कि जब ह़कूमते आसफ़िया की ओर से नवाब सदरयार जंग बहादुर ने दारुल उ़लूम के ह़िसाब किताब की जांच की तो उन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक–एक दो–दो आने तक के ह़िसाब के कागज़ात और रसीदें नियामानुसार फ़ाइल में मौजूद थीं। नवाब सदरयार जंग बहादुर का बयान है कि कोइ कागज़ ऐसा नहीं था जो मांगा गया हो और तुरन्त पेश न किया गया हो। ह़ाफ़िज़ साह़ब के समय की तरक़्क़ी वास्तव में आपके सहयोग से थी। आप सदैव उनके दाहिने हाथ और विश्वासनीय नायब रहे।

1925 ई. में जब ह़ाफ़िज़ साह़ब अपनी उ़म्र के कारण हैदराबाद के मफ़्ती–ए–आज़म के पद से मुक्ति पा गये तो उनकी जगह आप की नियुक्ति हुई परन्तु कुछ मतभेद के कारण आपने पद से त्याग पत्र दिया। इसी समय अ़ल्लामह अन्वर शाह कश्मीरी, ह़ज़रत मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रह़मान और ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी साह़ब और दूसरे अध्यापकों

और विद्यर्थियों की बड़ी जमात के साथ दारुल उ़लूम से अलग होगए। यह बड़ा नाज़ुक समय था। मगर आपके साहस और हिम्मत और बुद्धिमत्ता ने दारुल उ़लूम की किश्ती को डगमगाने से बचा लिया।

1347/1928 में ह़जरत़ हाफ़िज़ अह़मद साह़ब के बाद दारुल उ़लूम के मोहतमिम बनाये गये और 1348/1929 तक इस पद पर रहे।

मौलाना ह़बीबुर्रह़मान जिनका व्यक्तित्व हर प्रकार से अद्वितीय है उसके सम्बंध में विचार किया जाता है अगर आपको देश की राजनिति में भी इतना ही लगाव होता जितना दारुल उऱलूम से था तो आप दुनिया के बड़े लीडर सिद्ध होते। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की वसीयत थी कि जमीअ़तुल उ़लमा के दो सदस्यों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए उनमें पहला नाम आप ही का था। आप जमीअ़तुल उ़लमा के बेहतरीन परामर्शदाता सिद्ध हुए। 1921 ई. में जमीअ़तुल उ़लमा का इजलास गया (बिहार) में हुआ था उसमें आप को उसका सदर बनाया गया और उसकी राजनीतिक महत्ता को मुल्क के राजीतिक क्षेत्र में भी पसन्द किया गया।

अध्ययन की अधिकता के कारण आपका समान्य ज्ञान काफ़ी विस्तृत था ह़ज़रत शाह साह़ब फ़रमाया करते थे "अगर मुझपर किसी के इ़ल्म का प्रभाव पड़ता है ते वह मौलाना ह़बीबुर्रह़मान है।" अ़रबी अदब और तारीख़ से विशेष रूचि थी। निम्मन लिखित पुस्तकें उनकी यादगार हैं:

(1) क़सीदतुल मुअ़जिज़ात– यह ह़ज़रत मुह़म्मद स0 की नअ़त (प्रशंसा) में लगभग तीन सौ अ़रबी अशआ़र हैं जिनमें ह़ज़रत मुह़म्मद स0 के एक सौ मोअ़जिज़े बड़े साहित्यिक रूप में पेश किये गये हैं। मौलाना मुह़म्मद ऐजा़ज़ साह़ब अमरोहवी ने अ़रबी अशआ़र की सरल उर्दू में व्याख्या की है।

(2) इशाअ़ते इसलाम – दुनियां में इसलाम क्यों कर फैला? इस सवाल के जवाब में तक़रीबन पांच सौ पृष्ठों पर उन एतिहासिक घटनाओं को पेश किया गया है जो अपनी मनोवैज्ञानिक आकर्षण के आधार पर इशाअ़ते इसलाम का कारण बनीं।

(3) तअ़लीमाते इसलाम – इस पुस्तक में इस्लामी ह़कूमत के तरीक़े को बयान किया गया है कि मशवरह अमीरे ज़मात के लिये कितना आवश्यक है।

(4) रहमतुल लिलआ़लमीन – यह ह़ज़रत मुह़म्मद स0 की जीवन पर बहुत अच्छी पुस्तक है।

(5) अल–क़ासिम – यह मासिक पत्रिका थी जिसे आप ने दारुल उ़लूम से जारी किया!

मृत्यु

4 रजब 1348 हि./5 दिसमबर 1929 ई. की रात में आप का स्वर्गवास हुआ।

ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब (1897–1983)

ह़ज़रत मौलाना कारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब दारुल उ़लूम के सातवें मोहतमिम, आल इण्ड़िया मुस्लिम प्रसनल्लाह बोर्ड के अध्यक्ष और एक अज़ीम आलिम थे। आप ह़ज़रत नानौतवी के पोते हैं। आप को अल्लाह ने असंख्य गुणों से नवाज़ा था। ज़ाहिरी उ़लूम में वह अल्लामा अनवरशाह कश्मीरी के प्रिय शिष्य थे और आत्मिक ज्ञान में उनको ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी जैसे अ़ज़ीम शेख़ की ख़िलाफ़त प्राप्त थी उन्होंने अपने पठन–पाठन, भाषण, उपदेश, व दावत के विभिन्न साधनों से अपनी लम्बी उ़मर में न केवल हिन्दुस्तान बल्कि इस्लामी दुनिया को लाभ पहुंचाया।

1897 ई. में पैदा हुए। सात साल की आयु में दारुल उ़लूम में दाख़िल हुए। दो साल के अन्दर क़ुरआन शरीफ़ क़िराअत व तजवीद के साथ ह़िफ़्ज़ कर लिया। पांच साल फ़ारसी, ह़िसाब की कक्षायें पास करके अ़रबी पाठयक्रम आरम्भ किया जिससे 1918 ई. में शिक्षा पूरी करली। पढ़ते समय आपके पूर्वजों के सम्बन्ध से अध्यपकों ने उच्च कोटि की विशेष तरीक़े से तअ़लीम व तरबियत की। ह़दीस की विशेष सनद आपको उस समय के प्रसिद्ध उ़लमा से प्राप्त हुई।

शिक्षा पूर्ण करने के बाद आप ने दारुल उ़लूम में पढ़ाना आरम्भ कर दिया। ज्ञान, बुद्धि और परिवारिक निस्बत के कारण आपसे विद्यार्थी बहुत जल्दी प्रभावित हो गये। इसके बाद 1924 ई. में आप को नायब मोहतमिम बना दिया गया जिस पर 1928 ई. तक आप अपने पिता साह़ब और ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान साह़ब की देख–रेख में एहतमाम के कामों में ह़िस्सा लेते रहे। 1929 ई. में मौलाना ह़बीबुर्रह़मान की मृत्यु के पश्चात आपको दारुल उ़लूम का मोहतमिम बना दिया गया। पिछले अनुभव कार्य की दक्षता और पारिवारिक सम्बन्ध से यह सिद्ध हो चुका था कि आप के व्यक्तित्व में दारुल उ़लूम के एहतमाम की क़ाबिलियत

बहुत अच्छी है। अतः मोहतमिम होने के बाद आप को अपने ज्ञान और ख़ानदानी प्रभाव के कारण देश में शीघ्र ही प्रसिद्धि और बड़ाई मिली, जिस से दारुल उ़लूम को उच्चता और शोहरत (प्रसिद्धि) मिली। अतः दारुल उ़लूम ने आपके समय में बड़ी उन्नति प्राप्त की।

जब आप ने दारुल उ़लूम के एहतमाम की बागडोर संभाली तो उसके केवल आठ विभाग थे जिन की संख्या आपने 23 तक पहुंचा दी, उस समय दारुल उ़लूम की आमदनी का सालाना बजट 50262 रूपय था। आपके समय में 26 लाख तक पहुंच गया। 1929 ई. में दारुल उ़लूम के मुलाज़िमीन के अ़मले में 45 आदमी थे, आपने उनकी संख्या दो सौ तक पहुंचादी। उस समय अध्यापकों की संख्या 18 थी जो बढ़कर 59 हो गयी। विद्यार्थियों की संख्या 480 थी जो आप के समय में दो हज़ार तक पहुंच गयी। इसी प्रकार भवनों में भी बहुत अधिक उन्नती हुई। दारुत्तफ़सीर और दारुल इफ़ता व दारुल कु़रआन, मत्बख़, जदीद फ़ोक़ानी दारुल ह़दीस, बालाई मस्जिद, बाबुज़्ज़ाहिर, जामिया तिब्बिया, दो मंज़िला दारुल इक़ामह (होस्टल) मेहमान ख़ानह की इ़मारत, कुतुबख़ाने (पुस्तकालय) का बड़ा हाल, अफ़रीक़ी मंजिल (मत्बख़ के पास) और दरसगाहों की बढ़ोतरी हुइ। तात्पर्य यह कि दारुल उ़लूम के हर विभाग ने बहुत तरक़्क़ी की थी। दारुल उ़लूम की प्रबन्धक समिति ने अनेकों बार आप की सेवाओं की सराहना की। दारुल उ़लूम की शान को प्रजवलित रखने के लिये बुढ़ापे तक जवानी की भांति काम में लगे रहे।

शैक्षिक सिलसिले में पढ़ाने के अ़लावह भाषण देने में आप को अल्लाह की ओर से बड़ा अभ्यास मिला था। विद्यार्थी जीवन ही से आप का भाषण पब्लिक जलसों में बड़े ध्यान से सुना जाता था। अहम–अहम मसाइल (समस्या) पर दो–दो तीन–तीन घन्टे लगातार भाषण देने में आप को कोई रुकावट और तकलीफ़ नहीं होती थी। ह़क़ाइक़ और शरीअ़त के बयान करने में अपको विशेष अधिकार था। देश का कोई भाग ऐसा नहीं जिस में आपकी तक़रीरों की गूंज नहीं पहुंची। आपकी ज्ञान भरी तक़रीर जब इ़ल्म के गहरे समन्दर से गुजरती थी तो लहरों की शांति देखने योग्य होती थी।

जमीअ़तुल उ़लमा के सालाना इजलास में आपके अध्यक्षीय भाषण

बड़ी क़दर से देखे गये हैं। आपकी इल्मी तक़रीरों से एक विशेष वर्ग तैयार हो गया है। विदेशों में भी आप के भाषणों के प्रभाव वहां के इ़ल्मी हल्कों में पहुंच चुके हैं 1934 में हिजाज़ (अऊदी अ़रब) की यात्रा के समय जब एक वफ़द की अध्यक्ष की हैसियत से सुलतान इब्ने सऊ़द के दरबार में जो भाषण दिया उसने सुलतान (सम्राट) को बहुत प्रभावित किया। जिस से उन्होंने इनका बड़ा सम्मान किया।

1939 ई. में आपकी अफ़ग़ानिस्तान का सफर एक अलग इतिहास है। आप ने दारुल उ़लूम के सदस्य के रूप में, दारुल उ़लूम और अफ़ग़ानिस्तान सरकार के बीच शैक्षिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिये यह यात्रा अपनाई थी। अफ़ग़ानिस्तान के शैक्षिक, साहित्यक, सरकारी और ग़ैर सरकारी अंजुमनों और सोसायटियों ने बुलाया था। आप की आ़लिमाना तक़रीरों से वहां के इ़ल्मी और अदबी क्षेत्र बहुत प्रभावित हुए। इसी प्रकार विदेशों में आपने ब्रमा, दक्षिणी अफ़ीक़ा, ज़नजिबार, कीनिया, रोडेशिया, रियूनियन, मडगासकर, ह़ब्शह, मिश्र, इंग्लैण्ड, फ्रांस और जर्मनी आदि देशों का दौरा किया था।

शायरी से भी लगाव था। आप की काफ़ी नज़में प्रकाशित हो चुकी हैं। आप का संग्रह इ़रफ़ान आ़रिफ़ के नाम से छप गया है। अध्यक्ष भाषण, तक़रीर की भांति तह़रीर पर भी आप का अधिकार था आप की पुस्तकों की संख्या काफ़ी है। कुछ पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं: (1) अत्तशब्बुह फ़िल इसलाम (2) मशाहीरे उम्मत (3) कलिमाते तय्यबात (4) अत्यबुस्समर (5) साइंस और इसलाम (6) तालीमाते इसलाम और मसीही अक़्वाम (7) मसला–ए–ज़ुबान उर्दू व हिन्दुस्तान (8) दीन व सियासत (9) असबाबे उ़रूज व ज़वाल (10) इसलामी आज़ादी का मुकम्मल प्रोग्राम (11) अल–इजतिहाद वत्तक़्लीद (12) उसूल दअ़वते इसलाम (13) इसलामी मसावत तफ़सीर सूरह फ़ील (14) फ़ित़री ह़कूमत आदि।

1980 ई. में आप के एहतमाम के समय दारुल उ़लूम के सदसाला इजलास की चहल पहल आज तक लोगों के दिलों में ताज़ा है। उस एतिहासिक इजलास में दुनियां ने देख लिया कि न केवल उपमहद्वीप बल्कि पूरी दुनिया पर दारुल उ़लूम के इ़ल्मी व रूह़ानी लाभ का सर्किल कितना बड़ा है। अपने बुढ़ापे और कमज़ोरी के बावजूद अपनी सोच और कार्य की पुख़्तगी दर्शाते हुए इस दुनिया भर के इजलास के द्वारा

देवबन्दी विचार धारा को आम किया और राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय प्रसिद्ध दुनिया भर की विभूतियों को समेट कर आ़म व ख़ास अ़वाम के ठाठे मारते समन्दर की लहरों के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि दारुल उ़लूम देवबन्द एक शैक्षिक संस्था ही नहीं बल्कि पूरी दुनियां के मुसलमानों की तमन्नाओं का केन्द्र है।

1980 ई॰ के पश्चात बृद्धावस्था के कारण एहतमाम की ज़िम्मेदारियां आप पर बोझ लगने लगी तो आपने मजलिसे शूरा में एक सहायक की ज़रूरत का इज़हार किया। अतः प्रार्थना पत्र के अनुसार मजलिसे शूरा ने सहायतक रूप में मौलान मरग़ूबुर्रह़मान साह़ब को नियुक्त किया।

लेकिन इस के बाद ह़ज़रत क़ारी साह़ब अपने समीपवर्ती सलाह कारों की गलत पालीसियों का शिकार होगये। कुछ एसे फैसले लिये जो कि नियम के विरूद्ध थे और एक बड़ा क़दम उठाया कि एक ग़ैर क़ानूनी इजतमा (जलसा) तलब कर के मजलिस–ए–शूरा तोड़ देने की घोषणा करदी। इस घटना ने दारुल उ़लूम के प्रबन्ध की जड़ें हिला दीं। प्रबन्ध कमैटी की सियासी खींचा तानी ने दुनिया भर के मुसलमानों को चिंता में डाल दिया। अक्तूबर 1981 में दारुल उ़लूम से विद्यार्थियों को दारुल उ़लूम से बाहर निकाल दिया गया। 23–24 मार्च 1982 ई॰ की रात में विद्यार्थी फिर दारुल उ़लूम के अन्दर लौट आये। और नियमानुसार मजलिसे शूरा के आधीन दारुल उ़लूम चल पड़ा। 15 अगस्त 1982 ई. को मजलिस–ए–शूरा के जलसे में आप ने त्याग पत्र जिस में दारुल उ़लूम से दिली लगाव के इज़हार के बाद एहतमाम की ज़िम्मेदारियों से अलग कर देने की दरख़ास्त थी। आपकी वृद्धावस्था को ध्यान में रखते हुए मजलिस–ए–शूरा के मेम्बरों ने उस को स्वीकार कर लिया।

1982 ई. के आरम्भ ही से आपका स्वास्थ्य दिन प्रति दिन गिरता जा रहा था। 17 जूलाई 1983 ई को अन्ततः दारुल उ़लूम देवबन्द और आल इण्ड़िया मुस्लिम प्रसनल लॉ बोर्ड के प्लेट फ़ार्म से क़ौम व मिल्लत की महान सेवा को पूर्ण करके आप इस दुनियां से रुख़्सत फ़रमा गये। क़ब्रिस्तान क़ासमी में ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी की बग़ल में दफन हैं।

ह़ज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान बिजनौरी
(1914–2010)

ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब के बाद दारुल उ़लूम देवबन्द के एहतमाम का पद ह़ज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब बिजनौरी को सौंपा गया। आप दारुल उ़लूम के आठवें मोहतमिम थे। आपने लगभग आधी सदी तक दारुल उ़लूम की सेवा की जिसमें शुरू में लगभग बीस सालों तक मजलिस–ए–शूरा के सदस्य रहे इसके बाद तीस साल तक आप दारुल उ़लूम के मोहतमिम रहे। आपने बडे कठिन समय में बडे साहस के साथ संस्था को मंझधार से किनारे पर लगाया।

ह़ज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब शहर बिजनौर मुहल्ला क़ाज़ीपाड़ह के एक दीनी और इल्मी सम्मानित ज़मींदार घराने में 1333 हि./1914 ई. को पैदा हुए। आपने बड़े धनी परिवार में जन्म लिया और जीवन का अधिकतर भाग इसी खुशहाली में गुज़ारा था। आपके रिशते के नाना हकीम रहीमुल्लाह बिजनौरी (मृत्यु 1347 हि./1929 ई.) दारुल उ़लूम के प्रथम समय के फ़रिग़ थे। ह़ज़रत नानौतवी के अंतिम दौर के प्रिय छात्रों में से थे। आप के पिता ह़ज़रत मौलाना मशीयतुल्लाह बिजनौरी (मृत्यु 1372 हि./1952 ई.) ह़ज़रत शैखुल हिन्द के शागिर्द और ह़ज़रत अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी के सहपाठी थे। ह़ज़रत हकीम साह़ब 1344 हि. में दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के सदस्य चुने गये और जीवन भर सदस्य रहे। मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब के बडे भाई हकीम मतलूबुर्रहमान (मृत्यु 1408 हि./1988 ई.) भी दारुल उ़लूम देवबन्द के पढे थे। ये ह़ज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना मदनी के आरम्भिक सदारत के वि्यार्थियों में से थे। ह़ज़रत मदनी से उनका बड़ा तअल्लुक़ था।

होश संभाला तो मदरसा रहीमिया मदीनतुल उ़लूम जामा मस्जिद बिजनौर में दाख़िल कर दिये गये। यह मदरसा ह़ज़रत मौलाना हकीम रहीमुल्लाह साह़ब की वसीयत के मुताबिक़ उन्हीं के ख़र्च से चलाया

गया था। आपके पिता मौलाना मशीयतुल्लाह के संरक्षण और देखरेख में यह मदरसा चल रहा था। तीन साल में वहां की शिक्षा पूरी करके आपने 1351 हि./1932 ई. में ह़ज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना मदनी से सही बुख़ारी और जामे तिर्मिज़ी और दूसरे अध्यापकों से ह़दीस की किताबें पढकर शिक्षा पूरी करली। इसके बाद शोबा इफ़ता में (1353 हि. में) दाख़िल होकर शोबे के सदर ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सहूल भागलपुरी और मुफ़ती शफ़ी देवबन्दी आदि से इफ़ता पढ़ा।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद पिता के कहने पर आरम्भिक शिक्षा के मदरसे रहीमिया मदीनतुल उ़लूम में पढ़ाना शुरू कर दिया लेकिन यह काफ़ी दिनों तक नहीं चल पाया। जायदाद और जनसेवा के कामों में आप इतने उलझ गये कि पढाने के काम को रोक देना पड़ा।

दारुल उ़लूम में

1382 हि./1962 ई. में मजलिस–ए–शूरा दारुल उ़लूम देवबन्द के सदस्य बने। इसी साल मौलाना अबुल हसन नदवी, मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी, मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी, मौलाना हामिद अंसारी ग़ाज़ी और सय्यद हमीदुद्दीन फ़ैज़ाबादी शेखुल ह़दीस मदरसा आलिया कलकत्ता के विद्वानों को भी मजलिस–ए–शूरा का सदस्य बनाया गया। मजलिस–ए–शूरा में आपकी राय की बडी अहमियत होती थी। मजलिस–ए–शूरा जब कोई सब कमेटी बनाती तो आप का नाम उसमें ज़रूर रखती थी। इस से पता चलता है कि आपके विचारों पर मजलिस–ए–शूरा को पूरा भरोसा होता था।

दारुल उ़लूम के पूर्व मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब ने मजलिस–ए–शूरा में 25 रजब 1401 हिजरी/1981 ई. में एक प्रार्थनापत्र दिया कि बुढ़ापे और बीमारी के कारण उनके कार्य को हल्का करने के लिये कुछ प्रबंध किया जाये। इसी पर ह़ज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब को मददगार मोहतमिम बनाया गया। बाद में जब दारुल उ़लूम के हालात ख़राब हुए और ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब ने एहतमाम से त्यागपत्र दे दिया तो मजलिस–ए–शूरा ने 24 शव्वाल 1402 हिजरी तदनुसार 15 अगस्त 1982 ई. को ह़ज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब को स्थाई मोहतमिम बना दिया गया।

हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब ने दारुल उ़लूम की बागडौर ऐसे समय में संभाली जब बडी उथल–पुथल चल रही थी। ऐसी दशा में पूरे इन्तज़ाम को ठीक–ठाक करके बडे साहस के साथ उसको पूरा किया और सुकून व शांति बनाई। आपके तीस साला एहतमाम के दौर में कभी कोई बडा झगड़ा नहीं उभरा जिसके कारण दारुल उ़लूम में दिन रात तरक़्क़ी होती चली गई। आपके एहतमाम के दौर में तालीमी स्तर उंचा हुआ। अ़रबी के चौथे साल तक की शिक्षा के लिये मदरसा सानविया बनाया गया। बुनियादी तालीम की ओर विशेष ध्यान दिया गया। इसी प्रकार हिफ़्ज़ व नाज़रा और प्राइमरी दर्जों की तालीम की ओर विशेष ध्यान दिया गया। दारुल कुरआन के नाम से अलग इमारत बनाई गई और अध्यापक बढाये गये। इसी दौर में दारुल उ़लूम में ह़दीस पर रिसर्च विभाग स्थापित हुआ और शोबा तख़स्सुस फ़िल ह़दीस क़ायम हुआ। आपके तीस साला दौर एहतमाम में बीस हज़ार से अधिक फ़ुज़ला तैयार हुए। छात्रों की संख्या प्रतिवर्ष 2000 से बढ़कर चार हज़ार तक हो गई। दारुल उ़लूम का बजट पैंतीस लाख से बढकर सतरह करोड तक चला गया।

इस दौर में कई विभाग भी वजूद में आये विशेष रूप से इस्लाम की रक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। इसी संदर्भ में मजलिस तह़फ़ुज़ खत्म नबुव्वत, शोबा रद्दे ईसाइयत, शोबा तह़फ़ुज़ सुन्नत, शोबा मुहाज़रात इल्मिया का सिलसिला आरम्भ हुआ। इसी प्रकार दारुल उ़लूम की दीनी और दावती ख़िदमात को वर्तमान समय के अनुसार बनाने के लिये शैखुल हिन्द एकेडमी, शोबा कम्प्यूटर, मीडिया सेल, शोबा अंग्रेज़ी और शोबा इन्टरनैट स्थापित किये गये। इस सम्बन्ध में पत्रकारिता, कम्प्यूटर, अंग्रेज़ी में डिप्लोमा आदि कोर्स आरम्भ किये गये। शोबा इन्टरनैट के द्वारा दारुल उ़लूम का परिचय पूरी दुनिया में फैलाया गया। पूरी दुनिया में लोगों को दारुल उ़लूम की वैब साईट के द्वारा सम्पर्क बढा। पूरे हिन्दुस्तान में मदारिस को एक प्लेटफ़ार्म पर जमा करने के लिये 'ऑल इण्डिया राब्ता मदारिस अरबिया' की स्थापना इसी समय हुई। आप इस राब्ता इस्लामिया अरबिया के जीवनभर अध्यक्ष रहे। ढाई हजार से अधिक मदरसे इस संगठन में शामिल हैं। हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब के समय का एक बडा कार्य शोबा तंज़ीम व तरक़्क़ी को चुस्त दुरूस्त

बनाना है। इस शोबे को आपने बडी तरक़्क़ी दी। यह शोबा जो पहले कठिनता से एक तिहाई ख़र्च जमा करता था आज दारुल उ़लूम के दो तिहाई ख़र्च उठाता है। आपके ही समय में शोबा ख़रीद व फ़रोख़्त और स्टॉक रूम भी बना।

आपके एहतमाम के समय में कई शानदार इमारतें भी बनीं और ज़मीन का क्षेत्रफल दो गुना हो गया। मस्जिद रशीद, दारुल तरबियत, मदरसा सानविया, दारुल मुदर्रिसीन, रुवाक़े ख़ालिद, शैखुल हिन्द मंज़िल (आसामी मंज़िल), हकीमुल उम्मत मंज़िल (तहफ़ीज़ुल कुरआन मंज़िल) आदि इमारतें इसी दौर में बनीं। छात्रावास 'दारे जदीद' का नये अन्दाज़ में निर्माण कार्य इसी दौर में शुरू हुआ।

इस दौर में दारुल उ़लूम को (अन्तर्राष्ट्रीय) शोहरत मिली। दारुल उ़लूम ने अपने ऐतिहासिक परम्पराओं को क़ायम रखकर अपने विचारकों की भरपूर नुमाईन्दगी की। इस दौर में पूरी दुनिया से बडे–बडे प्रतिनिधि मंडल आये। अमीरूल हिन्द ह़ज़रत मौलाना असद मदनी सदर जमीअत उलमा–ए–हिन्द के बाद आप सर्वसम्मति से तीसरे अमीरूल हिन्द चुने गये। आपने मुस्लिम क़ौम का मार्गदर्शन किया और विभिन्न कॉन्फ़्रेंसों और जलसों में आपके सदारत के खुतबात छप चुके हैं। आपकी बौद्धिकता, समझदारी और जीवन के लम्बे अनुभव के साथ आपका अख़लाक़ी और मानवता का गुण एक नमूना था।

मृत्यु – सन हिजरी के आधार पर आपने सौ साल की आयु पाई। 1 मुहर्रम 1432 हि./18 दिसम्बर 2010 ई. को बिजनौर में आपका इन्तक़ाल हुआ। मज़ार क़ासमी देवबन्द में आपको दफ़नाया गया।

ह़ज़रत मौलाना गु़लाम मुह़म्मद वसतानवी

(जन्मः 1370 हि./1950 ई.)

ह़ज़रत मौलाना गु़लाम मुह़म्मद वसतानवी साह़ब, जामिया इशाअ़तुल उ़लूम अक्कल कुवा (महाराष्ट्र) के मोहतमिम और देश के असंख्य संसथाओं के संस्थापक और संरक्षक हैं।

ह़ज़रत मौलाना वसतानवी साह़ब का वतन 'वसतान' ज़िला सूरत (गुजरात) है। आप का जन्म 1370 हि./1950 ई. को हुआ। आप के पिता का नाम ह़ाजी मुह़म्मद इसमाईल था। आप की प्रारम्भिक शिक्षा मदरसा कु़व्वतुल इसलाम कोसारी में हुई। इस के बाद आप ने 1965 ई. में उच्च शिक्षा के लिये दारुल उ़लूम फ़लाह़ दौरान तरकेसर ज़िला सूरत (गुजरात) में दाखिला लिया और वहां के उलमा से लाभ प्राप्त किया। फिर 1392 हि./1972 ई. में मज़ाहिर उ़लूम सहारनपूर आ गए और शैखुल ह़दीस मौलाना ज़करिया कांधलवी आदि उसतादों से ह़दीस पढ़ी।

ह़ज़रत मौलाना वसतानवी ने अपने अध्यापक के कार्य को ज़िला सूरत के क़सबा उधाना से आरमभ किया। कुछ दिनों तक दारुल उ़लूम कंथरिया में भी रहे। अंत में महाराष्ट के एक पिछड़े क्षेत्र अक्कल कुवा ज़िला नंदूरबार में मदरसा इशाअ़तुल उ़लूम की नीव रखी जो उन्नति करते हुए आत एक बड़ा विद्ययालय बन गया है और उस की सैकड़ों शाखैं देश के विभिन्न स्थानों पर स्थापित हो चुकी हैं। मदरसा इशाअ़तुल उ़लूम अक्कल कुवा और उस की शाखों से हज़ारों ह़ाफ़िज़ और आ़लिम पैदा हो चुके हैं।

ह़ज़रत मौलाना वसतानवी साह़ब ने मदरसों के अलावह मुसलिम नैजवानों के लिये वर्तमान शिक्षा संसथाओं का सिलसिला भी आरमभ किया जिस में प्रइमरी स्कूल, हायर सेकंडरी स्कूल, बी एड कालेज, इंजीनियरिंग कालेज और मेडिकल कालेज शामिल हैं। आधुनिक शिक्षा के मैदान में भी आप की सेवाऐं बहुत अधिक हैं और मुसलिम नैजवानों

को इन संसथाओं से बहुत लाभ मिल रहा है।

हज़रत मौलाना वसतानवी साह़ब देश के अनेकों मदरसों की सरपरसती (संरक्षण) भी करते हैं। मदरसों और मुसलिम संसथाओं की आर्थिक मदद और विकास के लिये प्रयत्न करने में लगे रहते हैं।

1419 हि./1998 ई. में आप को दारुल उ़लूम देवबन्द की मजलिस–ए–शूरा का सदस्य चुना गया। आप दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–आ़मिला के अहम सदस्य हैं।

दारुल उ़लूम के भूतपूर्व मोहतमिम हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब की मृत्यु के बाद 5 सफ़र 1432/10 जनवरी 2011 को मजलिस–ए–शूरा के जलसे में आप को दारुल उ़लूम के मोहतमिम पद के लिये चुना गया जिस पर आप 21 शाबान 1432 हि./23 जूलाइ 2011 ई. तक बने रहे। इस प्रकार सफ़र से शाबान 1432 हि./जनवरी से जूलाई 2011 तक कुल सात महीने आप दारुल उ़लूम के मोहतमिम रहे।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी

(जन्मः 1366 हि./1947 ई.)

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब दारुल उ़लूम देवबन्द के दसवें मोहतमिम हुए। आप मुलक के प्रसिद्ध आलिम और मुफ़्ती हैं। दारुल उ़लूम के मोहतमिम पद पर आने से पहले जामिया इसलामिया रेवड़ी तालाब बनारस के शैखुल ह़दीस और मुफ़्ती थे। दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के वरिष्ठ मिमबर होने के साथ साथ जमीअ़त उ़लमा–ए–हिन्द की मजलिस आमिला (कार्यकारिणी समिति) के अहम सदस्य भी रहे।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब का जन्म 22 फरवरी 1366 हि./14 जनवरी 1947 ई. को बनारस (वारांसी) शहर के मोहल्ला मदनपूरा में हुआ। आप के पिता का नाम ह़ाजी मुह़म्मद ह़नीफ़ था। आप की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही पिता और दादा जनाब क़ारी मुह़म्मद निज़ामुद्दीन साह़ब की देख रेख में हुई। फिर जामिया इसलामिया मदनपूरा में पढ़ा। बाद में अ़रबी शिक्षा के लिये उस क्षेत्र के प्रसिद्ध मदरसा दारुल उ़लूम मऊनाथ भंजन में प्रवेश लिया। 1381 हि./1962 ई. में मिफ़्तरहुल उ़लूम मऊ में एक साल शिक्षा प्राप्त कर के उच्च शिक्षा के लिये दारुल उ़लूम देवबन्द आ गये।

दारुल उ़लूम में 1382 हि./1963 ई. से 1388 हि./1969 ई. तक दाखिल रहे। 1387 हि./1968 ई. में दौरा ह़दीस पूरा किया और फिर एक साल तक दारुल इफ़्ता से मुफ़्ती का कोर्स पढ़ा। अ़रबी भाषा और साहित्य से भी आप को दिलचस्पी रही और आप ने मौलाना वह़ीदुज़्ज़माप कैरानवी से लाभ प्राप्त किया। दारुल उ़लूम के विद्यार्थीयों की अंजुमन में आप बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब ने दारुल उ़लूम देवबन्द से शिक्षा प्राप्ति के बाद अपने शहर बनारस के पुरीने मदरसे

जामिया इसलामिया रेवड़ी तालाब में पढ़ाना आरमभ किया। दारुल उ़लूम में मोहतमिम पद पर नियुक्त होने तक इस मदरसे में शैख़ुल ह़दीस और सदर मुफ़्ती रहे।

1413 हि./1992 ई. में आप को दारुल उ़लूम देवबन्द की मजलिस–ए–शूरा का सदस्य चुना गया। आप जमीअ़त उ़लमा–ए–हिन्द की मजलिस आमिला (कार्यकारिणी समिति) के भी सरगर्म सदस्य रहे और एक बार जमीअ़त के नाएब सदर भी नियुक्त हुए। आप दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के अहम सदस्यों में थे और कई बार मजलिस आमिला (कार्यकारिणी समिति) और अन्य समितियों के मिमबर रहे। 1 मुहर्रम 1432 हि./18 दिसम्बर 2010 ई. को ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साह़ब बिजनौरी के निधन के बाद मजलिस–ए–शूरा हाने तक आप को कार्यवाहक मोहतमिम नियुक्त किया गया।

ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम मुह़म्मद वसतानवी साह़ब के मोहतमिम बन्ने के बाद 19 रबीउल अव्वल 1432 हि./23 फरवरी 2011 को मजलिस–ए–शूरा की हंगामी मीटिंग बुलाई गई तो उस में ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी को कार्यवाहक मोहतमिम नियुक्त किया गया। फिर 21 शाबान 1432 हि./23 जूलाइ 2011 ई. को मजलिस–ए–शूरा ने ह़ज़रत मौलाना वसतानवी साह़ब की जगह आप को दारुल उ़लूम का स्थाई मोहतमिम बना दिया। उस वक़्त से आप दारुल उ़लूम का प्रबंध भली भांति देख रहे हैं।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब प्रसिद्ध बुज़ुर्ग और आलिम ह़ज़रत मुफ़्ती महमूद हसन साह़ब गंगोही के ख़लीफ़ा भी हैं। आप एक कामयाब मुक़र्रिर (वक्ता) हैं और मुलक के अंदर व बाहर के जलसों और कॉन्फरंसों में भाग लेते रहते हैं। दारुल उ़लूम की देख रेख के साथ साथ आप दौरा ह़दीस के छात्रों को ह़दीस का सबक़ भी पढ़ाते हैं।

दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रिस और शैखुल ह़दीस

क्र.	नाम / कब से-कब तक	समय	जन्म-मृत्यु	पद
1	ह़ज़रत मौलाना याकूब साह़ब नानौतवी 1283 / 1866-1302 / 1884	19 साल	(1833-1884)	सदर व शैख़
2	ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद साह़ब देहलवी 1302 / 1884-1307 / 1890	6 साल	(मृत्यु 1894)	सदर व शैख़
3	शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन 1308 / 1891-1333 / 1915	25 साल	(1851-1920)	सदर व शैख़
4	ह़ज़रत अल्लामा अनवर शाह साह़ब कश्मीरी 1333 / 1915-1346 / 1927	12 साल	(1875-1933)	सदर व शैख़
5	ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी साह़ब 1346 / 1927-1377 / 1957	32 साल	(1879-1957)	सदर व शैख़
6	ह़ज़रत अल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम बलियावी 1377 / 1957-1387 / 1967	10 साल	(1887-1967)	सदर मुदर्रिस
7	ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन मुरादाबादी 1377 / 1957-1387 / 1967 ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन 1387 / 1967-1392 / 1972	10 साल 5 साल	(1889-1972)	शैखुल ह़दीस सदर व शैख़
8	ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुल हसन मुरादाबादी 1392 / 1972-1401 / 1981	9 साल	(1905-1981)	सदर मुदर्रिस
9	ह़ज़रत मौलाना शरीफुल ह़सन साह़ब देवबन्दी 1392 / 1972-1397 / 1977	5 साल	(1920-1977)	शैखुल ह़दीस
10	ह़ज़रत मौलाना मेराजुल हक़ साह़ब देवबन्दी 1401 / 1981-1412 / 1991	11 साल	(1910-1991)	सदर मुदर्रिस
11	ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी 1397 / 1977-1412 / 1991 ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी 1412 / 1991-1429 / 2008	15 साल 17 साल	(1919-2010)	शैखुलह़दीस सदर व शैख़
12	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी 1429 / 2008-अभी तक	जारी	(जन्म 1943)	सदर व शैख़

हज़रत मौलाना मुहम्मद यअ़कूब नानौतवी
(1833–1884)

दारुल उ़लूम के इस उच्चतम पद पर सबसे पहले हज़रत मौलाना मुहम्मद यअ़कूब नानौतवी साहब नियुक्त हुए। उन्होंने अपने पिता हज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली और हज़रत शाह अ़ब्दुल ग़नी मुजद्दिदी देहलवी से शिक्षा प्राप्त की थी।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यअ़कूब साहब नानौतवी 13 सफ़र 1249 हि./जूलाई 1833 को नानौता में पैदा हुए। कुरआन मजीद नानौता में हिफ़्ज़ (कण्ठस्थ) किया। मुहर्रम 1260 हि. में जब कि इन की उ़मर गयारह साल की थी, इन के पिता इनको दिल्ली लेगये। तमाम शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की लेकिन हदीस की शिक्षा हज़रत शाह अ़ब्दुल ग़नी मुजद्दिदी से प्राप्त की। ज़ुलहिज्जह 1267 हि./1851 ई. में आपके पिता हज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली की मृत्यु हो गयी।

शिक्षा प्राप्ति के बाद अजमेर कालेज में 30 रूपये माहवार नौकरी पर चले गये। प्रिंसिपल की सिफ़ारिश पर आप को डिप्टी कलक्ट्री का पद दिया गया मगर आप ने स्वीकार नहीं किया। इसके बाद आप को सौ रूपये माहवार बनारस पर भेजा गया। वहां से डेढ़सौ रूपये माहवार तनखाह पर डिप्टी इन्सपेक्टर बनाकर सहारनपुर में भेजे गये। यहीं पर 1857 ई. की क्रांति पेश आई। सरकारी नौकरी से इसतफ़ा (त्याग पत्र) देकर मेरठ में मुंशी मुम्ताज़ अ़ली के प्रेस में काम करने लगे।

1283 हि./1866 ई. में देवबन्द तशरीफ़ लाये और यहां सदर मुदर्रस के पद पर नियुक्त हुए। दारुल उ़लूम के प्रथम शैखुल हदीस थे। उन के पढ़ाये हुए बहुत से बड़े आ़लिम हुए। 19 वर्ष के समय में 77 विद्यार्थियों ने आप से सनदे फ़राग़त प्राप्त की। मौलाना अ़ब्दुल हक़ पुरक़ाज़ी, अब्दुल्लाह अम्बेहटा, मौलाना फ़तेह मुहम्मद थानवी, शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूद हसन देवबन्दी, मौलाना ख़लील अहमद अम्बेहटा, मौलाना अहमद हसन अमरोहवी, मौलाना फ़ख़रुल हसन गंगोही, मौलाना

मंसूर खां मुरादाबादी, मौलाना मुफ़्ती अ़ज़ीज़ुर्रह़मान देवबन्दी, मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी, मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद और मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी आदि प्रसिद्ध विद्वानों ने आप से शिक्षा प्राप्त की है।

ह़ज़रत मौलाना यअ़क़ूब साह़ब और उनके शिष्यों की शिक्षा के सिलसिले को देखते हुए अगर यह कहा जाये कि उस समय हिन्दुस्तान, बंगाल, अफ़ग़ानिस्तान और मध्य ऐशिया में जितने भी विद्वान हैं वे किसी न किसी रूप में आप से लाभ प्राप्त हैं तो यह अतिश्योक्ति न होगी। अशरफ़ुस्सवानेह़ में लिखा हैः "ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यअ़क़ूब– जो प्रत्येक विषय में माहिर और बहुत बड़े दूरदर्शी भी थे– से ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी ने बड़ा लाभ उठाया है और अधिकतर विचित्र ज्ञान उन्हीं से प्राप्त किया है। (अश्रफ़ुस्सवानेह़ भाग 1 पृष्ठ 33)

मकतूबाते यअ़क़ूबी की प्रस्तावना लिखने वाले ह़कीम अमीर अह़मद लिखते हैंः "आप के सैकड़ों शार्गिद और मुरीद, फिर शागिर्दों के शागिर्द भारत के नगरों, क़ाबुल, बख़ारा वग़ैरह में मौजूद हैं। आप महान विद्वान होने के अ़लावा रूह़ानी (आत्मिक) ह़कीम भी थे।"

ह़ज़रत मौलाना यअ़क़ूब ने ह़ज़रत ह़ाजी इम्दादुल्लाह साह़ब मुहाजिर मक्की से सुलूक व मार्फ़त के मक़ामात तय किये थे। संसारिक आकर्षण बिल्कुल नहीं था।आप बहुत प्रसन्न चित्त, विनम्रभाषी और कमाल के व्यक्ति थे। स्वभाव में जलाल और जज़्ब का प्रभाव था और उस पर रोब और प्रभाव की यह दशा थी कि लोग बात करते हुए घबराते थे। मगर आप प्रत्येक व्यक्ति से बड़े प्यार के साथ मिलते थ। अपने पूर्वजों की भांति स्वभाव में बड़ा संतोष था जिस का अन्दाज़ह इस घटना से लगाया जा सकता है कि एक व्यक्ति ने जिनको मौलाना से बेतकल्लुफ़ी थी उसने निवेदन किया कि अमुक नवाब साह़ब की बड़ी इच्छा है कि एक बार आप उन के यहां तशरीफ ले जायें, मौलाना ने फ़रमाया "हमने सुना है कि जो मोलवी नवाब साह़ब के यहां जाता है नवाब साह़ब उसको सौ रूपये देते हैं। हमें वह ख़ुद बुला रहे हैं इस लिये शायद दो सौ रूपये देदें। सौ दो सौ रूपय हमारे कितने दिन के हैं हम वहां जाकर मौलवियत पर धब्बा नहीं लगायेंगे।"

मोलवी जमालुददीन भोपाली, ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली के शार्गिद थे। उन्होंने इसी सम्बन्ध से मौलाना यअ़क़ूब साह़ब को एक बड़ी

तनखा पर भोपाल बुलाया, मगर आपने दारुल उ़लूम की कम तनख़ाह पर काम करना पसन्द किया।

आपने दो ह़ज किये, पहला ह़ज 1860 ई. में ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम साह़ब के साथ। यह यात्रा पंजाब और सिंध के रास्ते से की गयी। दूसरे ह़ज के लिये 1877 ई. में तशरीफ़ लेगये। इस बार भी उ़लमा की एक जमात साथ रही। ह़ज़रत मौलाना नानौतवी, ह़ज़रत मौलाना गंगोही, ह़ज़रत मौलाना मज़हर नानौतवी, मौलाना मुनीर नानौतवी, मौलाना ह़कीम ज़ियाउददीन रामपुरी, शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल ह़सन देवबन्दी आदि ह़ज़रात के अ़लावह इस क़ाफ़िले में लगभग सौ आदमी थे।

मौलाना यअ़क़ूब साह़ब को शेर व शायरी का भी शौक़ था। गुमानाम, तख़ल्लुस था। उनहों ने दिल्ली में विद्यार्थी जीवन में ग़ालिब, ज़ोक़, सहबाई आज़ुर्दह जैसे प्रसिद्ध शायरों को देखा था, उनकी मजलिसों में श्रीक हुए थे। मौलाना का फ़ारसी और उर्दू कलाम 'बयाज़े यअ़क़ूबी' में दर्ज है। अशआ़र क़ुदरते कलाम के साथ संवेदना और दर्द का प्रभाव है।

लेखन में तीन रिसाले उनकी यादगार हैं। ह़ज़रत मौलाना नानौतवी की जीवनी अगरचे बहुत संक्षिप्त है मगर भाषा और लेखन, दर्शन व वाक़िआ़त के लिहाज़ से बहुत उत्तम है। उनका दूसरा संग्रह मकतूबाते यअ़क़ूबी है जो 64 ख़तो पर आधारित है। ख़ुतूत प्रश्न के उत्तर में लिखे गये हैं। तीसरा संग्रह बयाज़े यअ़क़ूबी है। यह सफ़र ह़ज के ह़ालात, ह़दीस की किताबों की सनदें, मनज़ूमात और अ़मलियात आदि पर आधारित है। अन्त में तिब्बी नुस्ख़े लिखे गये हैं।

मृत्यु से कुछ दिन पूर्व अपने जन्म स्थान नानौता तशरीफ़ लेगये थे। वहीं 3 रबीलअव्वल 1302 हि./20 दिसम्बर 1884 को ताऊ़न की बीमारी में मृत्यु हुई।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद देहलवी (मृत्यु 1894)

आप उच्च कोटि के विद्वान थे। मनकूलात के साथ–साथ माकूलात के इमाम समझे जाते थे। विशेष रूप से, गणित, और हैयत में तो उनकी प्रसिद्धि योरोप तक पहुंची हुई थी। ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम कहा करते थे कि मोलवी सय्यद अह़मद साह़ब को अल्लाह ने गणित विषय में वह ज्ञान दिया है कि इस विषय के आविषकारक को भी शायद इतनी हो।

दारुल उ़लूम की स्थापना के तीसरे साल 1868 ई. में द्वितीय श्रेणी के अध्यापक के रूप में बुलाये गये। ह़ज़रत मौलाना यअ़कूब साह़ब की मृत्यु के बाद सदर मुदर्रसीन के पद पर नियुक्त किये गये। छह साल तक आप इस पद पर रहे। इस समय में 28 विद्यार्थियों ने दौरह ह़दीस (मौलवियत का अंतिम साल) पूरा किया।

1885 ई. में भोपाल तशरीफ़ लेगये और 1894 ई. में वहीं इन्तक़ाल फ़रमाया।

शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना मह़मूदुल ह़सन

ह़ज़रत शेखुल हिन्द दारुल के ह़ालात 'दारुल उ़लूम के सरपरस्त (संरक्षक)' में आचुके हैं।

ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कशमीरी (1875–1933)

ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह साह़ब इस ज़माने के बहुत प्रसिद्ध और उच्चकोटि के विद्वान थे। अगर ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने दारुल उ़लूम की प्रसिद्धी का झंडा संसार में ऊंचा किया है तो शाह साह़ब ने शिक्षक के रूप में इस्लामी दुन्या को दीन की रोशनी से रोशन कर दिया। फ़िक़ह के ज्ञान में फ़क़ीहे आ़ज़म थे। इसलामी दुनिया ने इतना बड़ा विद्वान और आलिम बहुत कम पैदा किये हैं। शाह साह़ब यद्यपि एक ओर महान विद्वान थे तो दूसरी ओर तक़्वा में भी उनकी शख़्सियत बेमिसाल थी। तेज़ बुद्धि में वह अपनी मिसाल नहीं रखते थे। वह एक बाकमाल मुफ़स्सिर, मुह़द्दिस और फ़लसफ़ी थे। आदमी का एक कमाल का होना भी कम नहीं होता, मगर उनके अन्दर अनेको कमाल थे। वास्तविकता यह है कि इ़ल्मी दुनिया में एक इन्क़लाब पैदा हो गया था। ज्ञान के इच्छुक लोगों ने जिस अधिकता से इस महान विद्वान से जितना ज्ञान प्राप्त किया वह आप अपनी मिसाल हैं। ह़ज़रत गंगोही से ख़िलाफ़त प्राप्त की थी।

ह़ज़रत शाह साह़ब कशमीर के रहने वाले थे। 1292 हि./1875 ई. में एक सम्मानित शिक्षित परिवार में आप का जन्म हुवा। यह परिवार शिक्षा और ज्ञान के आधार पर उच्चतम समझा जाता था। साढे चार साल की आयु में अपने पिता मौलाना सय्यद मुअ़ज़्ज़म शाह से क़ुरआन मजीद शुरू की। तेज़ बुद्धि स्मरण शक्ति आरम्भ ही से थे अतः डेढ साल की इतनी कम आयु में क़ुरआन शरीफ़ के साथ फ़ारसी की कुछ पुस्तकें समाप्त करके अगली शिक्षा प्राप्त करने में लग गये। अभी 14 साल की आयु होगी कि शिक्षा प्राप्ति के शौक़ ने वतन छुडवा दिया। लग भग तीन साल हज़ारा के मदरसे में रह कर विभिन्न विषयों को पढ़ा, मगर देवबन्द की प्रसिद्धी ने आगे शिक्षा पूरी करने में बेचैन बना दिया।

अतः 1311 हि./1893 में देवबन्द आये। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द सदर मुदर्रस थे। उस्ताद ने शागिर्द को शागिर्द ने उस्ताद को पहली ही मुलाक़ात में पहचान लिया। पाठयक्रम की पुस्तकें पढ़ने के पश्चात तफ़्सीर की किताबें पढ़ना आरम्भ किया और कुछ ही सालों में दारुल उ़लूम देवबन्द में प्रसिद्धी प्राप्त करके शान प्राप्त की। 1314 हि. तक ह़दीस व तफ़्सीर का ज्ञान प्राप्त कर के आप ह़ज़रत गंगोही की ख़िदमत में उपस्थित हुए और ह़दीस की सनद के साथ–साथ आत्मिक ज्ञान से भी लाभान्वित हुए।

दारुल उ़लूम से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात मदरसा अमीनिया दिल्ली में कुछ दिनों पढ़ाया। इस के बाद 1903 ई. में कशमीर चले गये। वहां अपने क्षेत्र में फ़ैज़े अ़ाम नाम का एक मदरसा स्थापित किया। 1905 ई. में ह़ज करने के गये, कुछ दिनों तक हिजाज़ में रहे और वहां के पुस्तकाल्यों से लाभ प्राप्त किया।

1909 ई. में आप देवबन्द तशरीफ़ लाये। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने आप को यहां रोक लिया। 1915 ई. के अंत जब ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने अ़रब की यात्रा का इरादह किया तो अपने स्थान पर इनको नियुक्त किया। सदर मुदर्रसीन के पद पर लगभग बारह साल तक रहे। 1927 ई. के आरम्भ में दारुल उ़लूम के एहतमाम से कुछ मतभेद के कारण आप सदर मुदर्रसीन के पद से त्याग पत्र देकर गुजरात के मदरसा डाभेल में चले गये जहां 1932 ई. तक ह़दीस की शिक्षा देते रहे।

मध्य एशिया से लेकर चीन तक इन के इ़ल्म का प्रभाव रहा भारत और भारत से बाहर हज़ारों ज्ञान प्यासों ने अपनी प्यास बुझाई है। अविभाजित हिन्दुस्तान, अ़रब, ईरान, इ़राक़, अफ़ग़ानिस्तान, चीन, मिश्र, दक्षिण अफ़्रीक़ा, इन्डोनेशिया, मलेशिया के काफ़ी संख्या के विद्यार्थियों ने आप से लाभ उथया। दारुल उ़लूम में आपके समय में 809 विद्यार्थी ह़दीस से फ़ारिग़ हुए।

ह़ज़रत शाह साह़ब को अल्लाह की ओर से स्मरण शक्ति इतनी महत्व की मिली थी कि एक बार की देखी हुई किताब के विषय व मतलब की तो दूर की बात पृष्ठ और पंक्तियां याद रहती थीं। जो बात कान या दृष्टि के रास्ते दिमाग़ में पहुंच जाती वह सदैव के लिये सुरक्षित हो जाती। वह भाषण के बींच बिना झिझक हवाले पर हवाले देते चले

जाते थे। इसी के साथ अध्ययन का यह शौक़ था कि विभिन्न ज्ञान के ख़ज़ाने उन की जुस्तजू को संतुष्ठ न कर पाते थे। अधिक अध्ययन और स्मरण शक्ति के कारण मानों एक चलता फिरता कुतुबख़ाना थे। सिह़ाह़ सित्ता के अ़लावह अधिकतर किताबें ज़ुबानी याद थी। ख़ोज पर्ण मसले जिनकी ख़ोज में उमरें गुज़र जाती हैं उन को चन्द क्षण में ही स्पष्ट कर देते थे। वह हर एक इ़ल्म व फ़न पर स्पष्ट भाषण करते थे जैसे उन को तमाम विषय ज़ुबानी याद हैं। भाषण देते समय असंख्य पुस्तकों के ह़वाले बे रोक टोक देते चले जाते थे यहां तक कि अगर किसी किताब के पांच–पांच और दस–दस फ़ुटनोट होते तो हर एक की इ़बारत पृष्ठ व पक्ति याद होती थी। ह़दीसों का पूरा संग्रह और उनके सह़ी ग़लत के विवाद और उन के दरजे ज़ुबानी याद थे। प्रसिद्ध पुस्तकाल्यों के मख़्तूतात दृष्ठि से गुज़र गये थे। और ह़ाफज़े में सुरक्षित थे।

अध्यन केवल शरीअ़त तक ही सीमित न था बल्कि जिस विषय की भी किताब हाथ में आती उसका आरम्भ से अन्त तक अध्यन आवश्य कर लेते थे और जब कभी उस के सम्बन्ध में बात चीत हो जाती तो उस किताब के सम्बन्ध में ह़वालों के साथ बयान करते कि सुन्ने वाला आशचर्य करने लगता।

शाह साह़ब की स्मरण शक्ति ग़ज़ब की थी। शेख़ इब्ने हुमाम की पुस्तक फ़तहुन क़दीर जो आठ खण्ड़ों में है उसका अध्यन 20 दिन में इस प्रकार किया था कि फ़तहुल क़दीर की किताबुल–ह़ज की तलख़ीस (सारांश) भी साथ–साथ करते चले गये थे और इब्ने हुमाम साह़ब ने हिदायह पर जो एतराज़ किये थे उन के उत्तर भी लिखते गये। पढ़ाते समय एक बार फ़रमाया कि अब से 26 साल पहले मैंने फ़तहुल क़दीर का अध्यन किया था अब तक दोबारह देखने की ज़रूरत नहीं आई आज भी उसका मज़मून पेश कारूगां तो उस में बहुत कम अन्तर पाओगे। यह एक घटना है इस प्रकार के वाक़िआ़त उन के जीवन में असंख्य हैं।

अ़ल्लामा इक़बाल को शाह साह़ब से बहुत लगाव था। अधिकतर इ़ल्मी वाद विवाद में उन से सम्पर्क करते थे। अ़ल्लामा इक़बाल मरहूम को अपने जीवन के अन्तिम दिनों में इसलाम से जो लगाव उत्पन्न हो गया था उसमें शाह साह़ब का योगदान है। अल्लामा इक़बाल ने इसलामियात में शाह साह़ब से बहुत कुछ लाभ प्राप्त किया। अतः

अ़ल्लामा साह़ब आपका बहुत सम्मान करते थे।

तात्पर्य यह कि तफ़सीर व ह़दीस और फ़िक़ह की जितनी सेवा में अपनी मिसाल आप हैं। उच्चस्तरीय मसलों पर पुस्तकें लिखी। दरसे ह़दीस का अन्दाज़ह 'फ़ैज़ुल बारी' से किया जा सकता है जो सह़ीह़ बुख़ारी की तक़रीर है और अनेक जिल्दों में छपी है। विभिन्न इसलामी विषयों पर अ़रबी फ़ारसी उर्दू में एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं।

तफ़सीर व ह़दीस, फ़िक़ह व अन्य उ़लूम के अ़लावह तसव्वुफ़ पर भी उन की दृष्टि बड़ी गहरी थी। मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी ने शाह साह़ब की मृत्यु पर मआ़रिफ़ में लिखा थाः "उनकी मिसाल उस समन्दर कीसी थी जिसके ऊपर की सतह़ साकिन (ठहरी) लेकिन अन्दर की सतह मोतियों के बहुमूल्य ख़ज़ानों से भारी होती है। वह विशाल दृष्टि स्मरण शक्ति और कसरते हिफ़्ज़ से इस युग में बेमिसाल थे। ह़दीस के ज्ञान के ह़ाफ़िज़ और उ़लूमे अदब में बलन्द पाया, माक़ूलात में माहिर और ज़ोहद व तक़्वा में कामिल थे।"

मिस्र के मशहूर आ़लिम सय्यद रज़ा साह़ब देवबन्द तशरीफ़ लाये और शाह साह़ब से उन की मुलाक़ात हुई तो बे साख़्ता बार–बार कहते थे– "मैंने इस अज़ीम उस्ताज़ जैसा कोई आ़लिम नहीं देखा।"

ह़ज़रत थानवी ने नफ़ह़तुल अ़म्बर की प्रस्तावना में लिखा हैः "मेरे नज़दीक इसलाम की ह़क़्क़ानियत की बहुत सी दलीलों में से एक दलील ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह का वजूद भी है। अगर इसलाम में कोई कमी होती तो मौलाना अनवर शाह यक़ीनन इसलाम को छोड़ देते।"

ह़ज़रत शाह साह़ब की मृत्यु पर ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी ने शोक संदेश में कहा था– "मुझे अगर मिस्र व शाम का कोई आदमी पूछता कि क्या तुमने ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़सक़लानी, शेख़ तक़ीउद्दीन बिन दक़ीक़ुल ईद और सुल्तानुल–उ़लमा शेख़ अ़ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम को देखा है? तो मैं कह सकता था कि हां देखा है क्योंकि समय का अन्तर है। अगर शाह साह़ब भी छटी सातवीं सदी में होते तो इन विशेषताओं के ह़ामिल होने के कारण उन्ही मरतबा के होते।"

दारुल उ़लूम की यह ख़ुश क़िस्मती थी कि ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के बाद सदर मुदर्रसीन का काम आपके सपुर्द हुआ। आप के जमाने में

विद्यर्थियों के ज्ञान में बड़ा इन्क़लाब हुवा और अच्छे–अच्छे योग्य विद्यार्थी आप के दरस से लाभानवित हुए। मुल्की सियासत में शाह साह़ब अपने अपने उस्ताज़ शेखुल हिन्द के पैरोकार थे। हिन्दुस्तान के मुसलमानों में सह़ी इस्लामी ज़िन्दगी पैदा करना उ़लमा का प्रथम कर्तव्य समझते थे।

ढाभेल में कुछ साल क़याम रहा। अन्त में मरज़ के कारण देवबन्द आगये थे। यहीं 3 सफ़र 1352 हि./27 मई 1933 ई. को 60 साल की उ़म्र में मृत्यु हो गयी। देवबन्द ईदगाह के पास मज़ार है।

मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ बिन्नौरी ने 'नफ़ह़तुल अ़म्बर' में शाह साह़ब के विस्तार से ह़ालात लिखे हैं। यह किताब अ़रबी में है। दूसरी किताब 'ह़याते अनवर' उर्दू में है। 'अल–अनवर' और 'नक़शे दवाम' में भी आप के ह़ालात लिखे हैं।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी (1879–1957)

शैखुल इसलाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी बहुत प्रसिद्ध और उच्चकोटि के विद्वान, शैखे वक़्त और मुजाहिद आज़ादी थे। ह़ज़रत शेखुल हिन्द की मृत्यु के बाद सर्वसम्मति से आप को उन का अत्तराधिकारी माना गया। आपका ह़दीस का पढ़ाना विद्वता के आधार पर इस्लामी दुनिया में अपनी क़िस्म का अलग समझा जाता था। अतः उसकी प्रसिद्धि और आकर्षण साल बसाल विद्यार्थियों की बढ़ोतरी का कारण बना। ह़दीस शरीफ़ के सबक़ में आपके शिष्यों की संख्या का विस्तार होता गया। उप महाद्वीप का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां आप के शागिर्द मौजूद न हों। जिस प्रकार आप ने संसार में दारुल उ़लूम को इस्लमी शिक्षा में महत्ता दी है इसी प्रकार आपकी महत्ता भी विशेष स्थान रखती थी।

ह़ज़रत मदनी का वतन मौज़ा अल्लाह दादपुर टांडा ज़िला फ़ैज़ाबाद है। 19 शव्वाल 1296 हि./5 अकतूबर 1879 ई. को पैदा हुए। आपके पिता का नाम सय्यद ह़बीबुल्लाह था। इ़ल्म व परहेज़गारी के लिहा़ज़ से सादात का यह परिवार हमेशा विशेष सम्मान और शाही ज़माने में एक बड़ी जागीर का मालिक था।

आरम्भिक शिक्षा प्राइमरी स्कूल में प्राप्त करने के बाद 14 साल की आयु में आप देवबन्द तशरीफ़ लाये। यहां ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने विशेष प्यार मुह़ब्बत से आपकी शिक्षा दीक्षा फ़रमाई। दारुल उ़लूम के निसाब की शिक्षा प्राप्त करके जब अपने वतन तशरीफ़ लेगये तो पिता साह़ब हिजरत करके मदीने के लिये तैयारी कर चुके थे। आपभी मां–बाप के साथ चल दिये। चलने से पूर्व आप ह़ज़रत गंगोही से बैअ़त हो चुके थे। मक्का मुकर्रमा से लाभान्वित होने के पश्चात आप मदीना मुनव्वरह में पिता साह़ब के साथ स्थापित होगये। आपने हिन्दुस्तान से हिजरत का इरादह नही किया था फिर भी पिता के जीवन तक पिता को छोडकर

हिन्दुस्तान आना पसन्द नहीं किया।

मदीने में रहते समय लगभग दस साल तक मस्जिद नबवी में ह़दीस पढ़ाते रहे। तंगी और निर्धनता के बावजूद अल्लाह के भरोसे कार्य करते रहे। लगभग प्रति दिन बारह–बारह घंटे लगातार पढ़ाने का कार्य चलता रहता था। विभिन्न जमातें एक के बाद दूसरी उपस्थित होकर विद्या ग्रहण करती थीं। मस्जिद नब्वी में आपका ह़दीस पढ़ाना वहां के तमाम शेख़ों के ह़दीस पढ़ाने से अधिक पसन्द किया जाता था। इस प्रसिद्धी ने विभिन्न मुल्कों के विद्यार्थियों की एक बड़ी जमात इकट्ठी कर दी थी। ह़िजाज़ की पवित्र भूमि और ख़ास मस्जिदे नब्वी में एक हिन्दुस्तानी आ़लिम की ओर इतनी आकर्षण का कारण आपके पढ़ाने की विशेषता समझी जाती थी जो आपको दारुल उ़लूम के अध्यापकों से प्राप्त हुई थी।

मदीना मुनव्वरह में रहते समय आप कई बार हिन्दुस्तान आये और इसी बीच ह़ज़रत गंगोही से ख़िलाफ़त प्राप्त की। 1911 ई. में लगभग एक साल देवबन्द में रहे और पढ़ाया। 1915 ई. में जब ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ह़िजाज़ तशरीफ़ लेगये तो आप के यहां ठहरे। आपही के द्वारा तुर्की के वज़ीरे जंग, अनवर पाशा और जमाल पाशा से मुलाक़ात करके अपनी इन्क़ालाबी स्कीम उनको बतलाई थी। जब अ़रबों ने तुर्की के ख़िलाफ़ बग़ावत की और शरीफ़ हुसैन ने ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द को गिरफ़तार करके अंग्रेज़ों के ह़वाले किया तो आप भी ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के साथ थे। अतः सवा तीन साल तक आप को भी मालटा में जंगी क़ैदी की भांति रहना पड़ा। 1920 ई. में जब मालटा से रिहाई हुई तो आप ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के साथ हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाये।

मालटा से वापसी का युग ख़िलाफ़त आन्दोलन का आरम्भिक युग था। आप यहां पहुंच कर ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के नेतृत्व में सियासत में शरीक होगये। उस ज़माने में अपकी मुजाहिदाना क़ुर्बानियों ने मुसलमानों के दिलों को आपके प्यार से भर दिया था। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की मृत्यु के बाद सर्वसम्मति से आप को उन का अत्तराधिकारी मान लिया गया। सियासी कामों में लगे रहने के कारण आप को काई बार कई–कई साल तक क़ैद में भी रहना पड़ा और देश की स्वतन्त्रता के लिये जेल भी काटनी पड़ी।

1927 ई. में ह़ज़रत कशमीरी ने दारुल उ़लूम से इस्तीफ़ा दे दिया तो आप के सिवा दारुल उ़लूम की जमात में कोई ऐसा व्यक्ति मौजूद न था जो दारुल उ़लूम के इस बड़े पद को संभाल सकता। इसलिये आपही को सदर मुदर्रसीन के पद पर लाया गया। आप की सदारत के समय विद्यार्थियों की संख्या दोगुनी से भी अधिक बढ़ गई थी। दौरह ह़दीस की जमात में तीन गुना बढ़ोतरी हुई। 1346 हि. से 1377 तक 32 साल में आप के सदर रहते 4483 विद्यार्थियों ने दौरह ह़दीस पूरा किया। जबकि आप से पहले तमाम विद्यार्थियों की संख्यां 275 है।

आपका दस्तरखान (भोज भण्डारा) बड़ा विस्तृत था, कम से कम दस पन्द्रह मेहमान आप के दस्तरखान पर अवश्य उपस्थि रहते थे।

12 जुमादस्सानिया 1377 ई./5 दिसम्बर 1957 ई. आपकी वफात हुई। ह़ज़रत मौलाना ज़करया साह़ब शेख़ुल ह़दीस मज़ाहिरुल उ़लूम सहारनपुर ने नमाज़ जनाज़ह पढ़ाई और क़ास्मी क़ब्रिस्तान में दफन किया गया।

ह़ज़रत मौलाना मदनी के जीवन के सम्बन्ध में खुद उन की स्वयं की आत्माकथा 'नक्शे ह़यात', अलजमीअत का शेख़ुल इस्लाम नम्बर और अनफ़ासे क़ुदसियह लेखक मफ़ुती अ़ज़ीज़ुर्रह़मान बिजनौरी की पुस्तक पढ़िये।

सदर मुदर्रसीन से सम्बंधित आवश्यक विस्तार

दारुल उ़लूम में ह़ज़रत मौलाना यअ़क़ूब नानौतवी (जो दारुल उ़लूम के सबसे पहले सदर मुदर्रिस थे) के समय से यह नियम चला आरहा था कि सह़ीह़ बुख़ारी का सबक़ सदर मुदर्रिस पढ़ाया करते थे। बाद में जब तअ़लीमात के कामों में काम का दबाव बढ़ा तो उनकी पूरी ज़िम्मेदारी भी सदर मुदर्रिस पर ही डाल दी गयी। ह़ज़रत मौलाना ह़ुसैन अह़मद मदनी की मृत्यु के पश्चात बुख़ारी शरीफ़ का पढ़ाना और तअ़लीमी कामों की देख रेख दो भागों में बांट दिये गये। सदर मुदर्रसी और शिक्षा की देख रेख का काम मौलाना मुह़म्मद इब्राहीम बलयावी के ह़िस्से में आया और बुख़ारी का सबक़ मौलाना फ़ख़रूद्दीन अह़मद को सौंपा गया।

मजलिस–ए–शूरा के यह शब्द हैं: "मजलिसे शूरा ने इस

वास्तविकता को सामने रखते हुए कि शेख़ुल इसलाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी की मृत्यु के बाद दारुल उ़लूम के लिये ऐसा कामिल उच्च व्यक्तित्व वाला विद्वान नज़र नहीं आता इसलिये मजलिसे शूरा दारुल उ़लूम के शैक्षिक विभाग को महत्वपूर्ण बनाने के लिये सर्वसम्मिति से यह तैय करती है कि दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रसीन और नाज़िमे तअ़लीमात के पद पर ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इब्राहीम साह़ब को नियुक्त किया जाता है और ह़दीस शरीफ़ की महत्ता को सामने रखते हुए ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुधीन अह़मद साह़ब को शेख़ुल ह़दीस के पद पर नियुक्त किया जाता है।"

ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम बलियावी (1887–1967)

ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम बलियावी दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रसीन और ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के ख़ास शागिर्द थे।

1304 हि./1887 ई. में पूर्वी उत्तर प्रदेश के शहर बलिया में एक इ़ल्मी घराने में जनमे। इन का परिवार पंजाब के ज़िला झंग से जौनपुर आया, फिर कुछ दिनों बाद बलिया में आबाद हो गया। जौनपुर में फ़ारसी अ़रबी की आरम्भिक शिक्षा मशहूर ह़कीम मौलाना जमीलुद्दीन नगीनवी से प्राप्त की और मअ़कूलात की किताबें मौलाना फ़ारूक़ अह़मद चरयाकोटी और मौलाना हिदायतुल्लाह खान (शिष्य मौलाना फ़ज़ले ह़क़ ख़ैराबादी) से पढ़ीं। दीनयात की तअ़लीम के लिये मौलाना अ़ब्दुल ग़ुफ़्फ़ार के पास गये जो ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के शागिर्द थे। 1325 हि. में दारुल उ़लूम में दाख़िल होकर हिदायह और जलालैन की किताबें बढ़ीं और 1327/1909 में दारुल उ़लूम से फ़ारिग़ हो गये।

शिक्षा प्रप्ति के बाद उसी साल मदरसा आ़लियह फ़तेह़पुरी में अध्यापक बनाये गये। फिर उ़मरी ज़िला मुरादाबाद के मदरसे में कुछ दिनों तक पढ़ाया 1331 हि. में आपको दारुल उ़लूम में बुला लिया गया। 1340 हि. से 1344 हि. तक मदरसा दारुल उ़लूम मऊ और मदरसा इमदादियह दरभंगा में सदर मुदर्रिस की ख़िदमत अंजाम दीं। 1344 हि. में फिर आपको दारुल उ़लूम देवबन्द में बुला लिया गया। 1333 हि. की रूदाद में आप का वर्णन इस प्रकार है: "मोलवी मुह़म्मद इब्राहीम साह़ब तमाम विषयों में पारंगत हैं। माकूल व फ़लसफ़े की तमाम किताबें भली प्रकार पढ़ा सकते हैं। ⌋ह्न विद्यार्थियों का बहुत अधिक झुकाव उन की ओर रहता है। अच्छा लेक्चर देते हैं। तात्पर्य यह कि एक क़ाबिले क़दर और प्रसिद्धी प्राप्त करने वाले अध्यापक हैं।"

1362 हि. में फिर दारुल उ़लूम से अलग हो कर पहले जामिआ़

इस्लामीयह ढाबेल में सदर मुदर्रिस बने वहां के बाद कुछ समय तक मदरसा आ़लियह फ़तेह़पुरी में सदर मुदर्रिस रहे। इसके बाद बंगाल में हाटहज़ारी जिला चाटगाम के मदसा में सदर मुदर्रिस रहे। और अंत में 1366 हि. में फिर दारुल उ़लूम देवबन्द में आगये। 1377 हि./1957 ई. में ह़ज़रत मौलाना मदनी की मृत्यु के पश्चात आप दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रिस बना दिये गये। अन्त तक इसी पद पर रहे। इन के शागिर्दों की संख्या हज़ारों से भी अधिक है।

ह़ज़रत अ़ल्लामा इब्राहीम बलयावी प्रत्येक विषय विशेष रूप से इ़ल्मे कलाम और अ़क़ाइद में प्रवीण थे। उन्होंने तफ़्सीर व ह़दीस, अ़क़ाइद, कलाम और दूसरे विषयों को शानदार रूप से पढ़ाया। उन के पढ़ाने की मुद्दत 1327 से 1387 हि. तक 60 साल तक होती है। विद्यार्थी उनकी कक्षा में बड़े चाव से उपस्थित होते और उनसे लाभ प्राप्त करते थे। कक्षा के सबक़ संक्षिप्प और विद्वतापूर्ण होते थे। पढ़ाने का अन्दाज़ बड़ा प्रभावपूण होता था लेकिन इसके साथ–साथ लतीफ़ों से बड़े संजीदह अंदाज़ में मसलों को ह़ल कर दिया जाता था। क़िस्से मसलों पर इस प्रकार लागू कर देते थे कि मसले के सभी पक्ष स्पष्ट हो जाते थे।

उनके सबक़ की एक और विशेषता होती थी कि विद्यार्थियों को विषय से काफ़ी गहरा लगाव हो जाता था। तथा उन पर ज्ञान के दरवाज़े खुल जाते थे। वह अपने समय में अ़क़ाइद, कलाम, व मंतिक़ के बेनज़ीर विद्वान थे। ह़दीस में रिवायत से अधिक दिरायत से काम लेते थे। ह़ज़रत नानौतवी के इ़ल्म पर गहरी नज़र थी। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के शागिर्द होने के साथ–साथ उनसे बैअ़त भी थे।

अ़ल्लामह बलियावी की पुस्तकों में रिसाला मुसाफ़हा और रिसाला तरावीह़ उर्दू में हैं। एक रिसाला अनवारुल ह़िकमत फ़ारसी में है। यह रिसाला मंतिक़ व फ़लसफ़ा के विषयों पर आधारित है। सुल्लमुल उ़लूम पर उन का ह़ाशियह अ़रबी में ज़ियाउन्नुजूम है। मेबज़ी और ख़्याली पर भी उन्होंने फुट नोट लिखे थे जो नष्ट होगये। अन्त में तिरमिज़ी शरीफ़ पर ह़ाशिया लिख रहे थे जो पूरा न हो सका।

24 रमज़ान 1387 हि./25 दियम्बर 1967 ई. को 84 साल की उमर में मृत्यु हुई। क़ासमी क़ब्रिस्तान में दफ़नाये गये।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन अह़मद (1889—1972)

आप का जन्म स्थान हापुड़ है। आप के पूर्वजों में सय्यद कुतब और सय्यद आ़लम अपने दूसरे दो भाईयों के साथ शाहजहां के समय में हिरात से दिल्ली आये। यह ह़ज़रात अपने समय के उच्चकोटि के विद्वानों में से थे। शाहजहां ने उनके पढ़ाने के लिये हापुड़ में एक मदरसा बनाकर दिया। सय्यद आ़लम का सिलसिला 26 पुश्तों से ह़ज़रत हुसैन (र.अ.) से मिल जाता है।

1889 ई. में आपका जन्म अजमेर में हुआ। आप के दादा सय्यद अ़ब्दुल करीम पुलिस विभाग में थानेदार थे। चार साल की उम्र में शिक्षा आरम्भ हुई। कुरआन शरीफ़ पिता साह़ब से पढ़ा। फ़ारसी की तालीम अपने ख़ानदान के बुज़ुर्गों से प्राप्त की। उ़मर के बारहवें साल अपने ख़ानदानी बुज़ुर्ग और आ़लिम मौलाना ख़ालिद साह़ब से अ़रबी सर्फ़ व नह़व शुरू किया। इसी बीच आपकी माता को अपने पूर्वजों के मदरसे को ज़िन्दा करने का ख़्याल आया जो 1857 ई. में नष्ट हो गया था। कुछ दिन उस में शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप को गुलावठी के मदरसा मम्बउ़ल उ़लूम में भेज दिया गया। वहां मौलाना माजिद अ़ली से विभिन्न पुस्तकें पढ़ीं। इस के बाद अपने उस्ताद मौलाना माजिद अ़ली के साथ दिल्ली चले गये। दिल्ली के मदरसे में माकूलात की किताबें पढ़ीं।

1326 हि./1908 ई. में दारुल उ़लूम आये। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने प्रवेश परीक्षा ली। इम्तिह़ान में ऊँचे नम्बरों से पास हुए। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के निर्देशों के मुताबिक़ एक साल के बजाये दो साल में दौरह ह़दीस पास किया। दारुल उ़लूम के विद्यार्थी जीवन में ही विद्यार्थियों को मअ़कूलात की किताबें पढ़ाने लगे थे।

1910 ई. में शिक्षा प्राप्त करने के बाद दारुल उ़लूम में अध्यापक हो गये। मगर कुछ समय के बाद दारुल उ़लूम के ज़िम्मेदारों ने आपको मदरसा शाही में भेज दिया जहां लग भाग 48 साल रहे। इस आधी सदी

में बहुत से विद्यार्थियों ने आप से ह़दीस शरीफ़ पढ़ी।

1957 ई. में ह़ज़रत मौलाना मदनी की मृत्यु के पश्चात दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के मेम्बरों ने दारुल उ़लूम देवबन्द के लिये आप का चुनाव किया। ह़ज़रत मौलाना मदनी ने अपनी बीमारी के समय मुरादाबाद से बुला कर अपने स्थान पर बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाने पर नियुक्त किया था। इससे पहले भी दो बार ह़ज़रत मदनी की गिऱफ्तारी और छुट्टी के समय आप दारुल उ़लूम में बुख़ारी पढ़ा चुके थे। 1970 ई. में पोने तीन सौ विद्यार्थी आप के ह़दीस के सबक़ में सम्मिलित थे। लगभग प्रति वर्ष इतने ही विद्यार्थी आप के सबक़ में रहते थे।

मौलाना फ़ख़रुद्दीन साह़ब चूंकि ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द और ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कशमीरी के विशिष्ट शागिर्द थे इस लिये आप के ह़दीस पढ़ाने के तरीक़े में दोनों का मेल पाया जाता है। आपका बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाना बड़े विस्तार से होता था जिस में ह़दीस के तमाम पक्षों पर प्रकाश डाला जाता था। फ़ुक़हा के मज़हब को बयान करने के बाद, अह़नाफ़ के फ़िक़ही मसलक के पक्ष विपक्ष की स्पष्टता में ऐसी दलीलें पेश करते थे जिनके बाद सुनने वाले के मन में कोई शंका नहीं रह पाती थी। सबक़ के बीच में सह़ीह़ बुख़ारी की विभिन्न ख़ुलासे के साथ–साथ अपने उस्तादों के कथन को भी स्थान–स्थान पर बयान करते थे। ह़दीस के सबक़ में आपका लेक्चर विस्तार से होने के साथ–साथ आसान भी होता था। इसलिये कम बुद्धि विद्यार्थी भी पूरा–पूरा लाभ उठा लेते थे। आप के बुख़ारी शरीफ़ के पढ़ाने को प्रसिद्धी थी कि आप इस क्षेत्र में विशिष्ट माने जाते थे विद्यार्थी उनसे पढ़ना सौभाग्य समझते थे।

देश की राजनीति से आपको तअ़ल्लुक़ रहा। इस के परिणाम स्वरूप जेल की कठिनाइयां भी झेली। ह़ज़रत मौलाना मदनी की जमीअ़त उ़लमा–ए–हिन्द की अध्यक्षता के समय में दो बार नायब सदर रहे और इसके बाद सदर बने और मृत्यु तक जमीअ़त उ़लमा–ए–हिन्द के सदर रहे।

अन्त में जब स्वास्थ्य ने जवाब दे दिया तो इ़लाज के लिये मुरादाबाद ले जाये गये। मुरादाबाद में कुछ दिन बीमार रह कर 15 अप्रेल 1972 ई. को आधी रात के बाद इन्तिक़ाल फ़रमाया। ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब पूर्व मोहतमिम देवबन्द ने जनाज़े की नमाज़

पढ़ाई, बाद में मुरादाबाद में दफ़न किये गये।

दारुल उ़लूम देवबन्द में सही़ बुख़ारी के सबक़ का यह अ़ज़ीम पद लगभग 60 साल से ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के शागिर्दों में लगातार चला आरहा था। ह़ज़रत मौलाना फ़ख़रुधीन अह़मद के बाद यह सिलसिला समाप्त हो गया।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुल ह़सन साह़ब
(1910–1991)

10 रजब 1323 हि./8 सितम्बर 1905 को अपने पूर्वजों के वतन उ़मरी ज़िला मुरादाबाद में पैदा हुए। कु़रआन शरीफ़ उर्दू, दीनियात और आरम्भिक फ़ारसी की शिक्षा ह़ाफ़िज़ नसीमुद्दीन और ह़ाफ़िज़ अब्दुल क़ादिर अमरोहवी से प्राप्त की। आपके पिता मदरसा शाही मुरादाबाद में कुतबख़ाने के नाज़िम थे। इसलिये लगभग 1335 हि. में मदरसा शाही मुरादाबाद में दाख़िल हो गये। यहां फ़ारसी पढ़ी अगली कुछ किताबें अपने पिता से पढ़ीं, फिर मज़ाहिर उ़लूम सहारनपुर में दाखिला लिया। 1343 हि. को दारुल उ़लूम में दाखिल हुए और 1347 हि. में दौरह पढ़ा और शिक्षा पूरी करली।

शिक्षा प्राप्ति के बाद मदरसा आ़लियह फ़तेहपुरी में अध्यापक हुए। फिर वहां से आप बिहार चले गये और मदरसा शम्सुल हुदा पटना में अध्यापक हो गये। मगर डेढ़ साल के बाद फिर मदरसा आ़लियह फ़तेह़पुरी में वापस आ गये और सह़ीह़ मुस्लिम तथा दूसरी किताबें पढ़ाने लगे।

1362/1943 में आपकी नियुक्ति दारुल उ़लूम देवबन्द में होगयी। आपके सबक़ में सह़ीह़ मुस्लिम और तफ़्सीर बेज़ावी को विशेष प्रसिद्धी मिली। अतः बेज़ावी आपकी दरसी तक़रीर 'तफ़्सीरुल ह़ावी' प्रकाशित होकर बड़ी स्वीकार्य हो चुकी है। भाषण देने में भी महारत थी।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन अह़मद के ज़माने में ही आाप नायब सदर मुदर्रिस नियुक्त हुए। 1392 हि./1972 ई. को ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन अह़मद की मृत्यु के बाद आपको दारुल उ़लूम का सदर मुदर्रिस बनाया गया जिस पर आप मृत्यु समय तक क़ायम रहे। ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल क़ादिर साह़ब रायपुरी से आपको इजाज़त व ख़िलाफ़त प्राप्त थी।

1401 हि./1981 ई. में आपकी मृत्यु हुई।

ह़ज़रत मौलाना शरीफ़ हसन साह़ब देवबन्दी (1920–1977)

ह़ज़रत मौलाना शरीफ़ हसन साह़ब देवबन्दी दारुल उ़लूम के शैख़ुल ह़दीस थे। आप देवबन्द के रहने वाले थे। 4 ज़ुलहिज्ज 1338 हि./19 अगस्त 1920 ई. को देवबन्द में जन्मे। यहीं हाफ़िज़ अब्दुल ख़ालिक़ से क़ुरान हिफ़्ज़ किया, फिर तीन साल तक फारसी और अ़रबी की आरम्भिक पुस्तकें बेहट जिला सहारनपुर के मदरसे में रह कर पढीं। इसके बाद दारुल उ़लूम में दाखिला लेकर 1358 हि./1939 ई. में शिक्षा पूर्ण की।

शिक्षा पूर्ण करने के बाद शव्वाल 1360 हि./1941 ई. में मदरसा इमदादुल उ़लूम ख़ानक़ाह थानाभवन में मुख्य अध्यापक बने। आपको ह़दीस और इफ़्ता से ख़ास लगाव था। 1364 हि. में मदरसा इशातुल उ़लूम बरेली में सदर मुदर्रिस बने। आपका पूरा जीवन पठन–पाठन में गुज़रा। नौ साल बाद डाभेल गुजरात में शैख़ुल ह़दीस नियुक्त हुए। इस मदरसे में बुख़ारी और तिरमिज़ी शरीफ़ पढाई।

1393 हि./1963 ई. में आपको दारुल उ़लूम देवबन्द में बुलाया गया। आपको इल्म ह़दीस से काफी लगाव था। मौलाना फ़ख़रूद्दीन अह़मद के बाद बुख़ारी शरीफ़ पढाना आरम्भ किया। मृत्यु से चन्द घन्टे पहले भी आप पढाने में लगे रहे। मौलाना शरीफ़ हुसैन साह़ब बुजुर्गों की यादगार थे। प्रत्येक छोटे बडे से प्रसन्नता से मिलते थे। 14 या 15 जुमादस्सानी 1397 हि./जून 1977 ई. में लगभग 58 वर्ष की आयु में हार्ट अटैक हो जाने से कुछ ही घन्टों की बीमारी के बाद आपकी मृत्यु हो गई। क़ास्मी क़ब्रिस्तान में आपको दफ़नाया गया।

ह़ज़रत मौलाना मेअ़राजुल ह़क़ देवबन्दी
(1910–1991)

ह़ज़रत मौलाना मैराजुल हक़ साह़ब देवबन्दी दारुल उ़लूम के नायब मोहतमिम, सदर मुदर्रिस और योग्य उस्ताद थे। शैक्षिक और इंतज़ामी सलाहियतों (प्रबन्धन) में बहुत माहिर थे। आप लगभग 40 साल तक दारुल उ़लूम देवबन्द की सेवा करते रहे।

1328 हि./1910 ई. में देवबन्द में जन्मे। आपकी अच्छी तरबियत हुई आपके पिता मुंशी नूरूल हक़ साह़ब बडे दीनदार थे। आपने एक होनहार विद्यार्थी की हैसियत से दारुल उ़लूम में शिक्षा ग्रहण की। 1351 हि. में दारुल उ़लूम से फ़राग़त हासिल की और अपने गुरूजनों के सुझाव से हैदराबाद दक्षिण के गुलबर्गा शहर में स्थित एक मदरसे में अध्यापक बनकर चले गये। आपने वहां अपनी बौद्धिक योग्यता प्रयोग करते हुए अपने अध्यापन में बड़ा कमाल पैदा किया। तथा एक सफल अध्यापक के रूप में उभर कर सामने आये।

दारुल उ़लूम देवबन्द के प्रबन्धन ने आपकी योग्यता पहचानकर आपको दारुल उ़लूम में बुला लिया। 1363 हिजरी से आप दारुल उ़लूम में उस्ताद बन गये। हिदाया आख़रैन का आपका सबक़ काफ़ी मक़बूल रहा। आपके अन्दर इंतज़ामी (प्रबंधन) गुण भरे हुए थे। एक लम्बे समय तक आप नाज़िम दारुल इक़ामा (हास्टल इंचार्ज) रहे और विद्यार्थियों की ज़रूरी बातों को पूरा किया। हालांकि आप बडे शान्त स्वभाव के थे लेकिन छात्रों पर आपका बडा रौब रहता था। बच्चे आपका बहुत सम्मान करते थे।

आपके कामों को देखकर 11 शव्वाल 1386 हिजरी को मौलाना बशीर अह़मद साह़ब की मृत्यु के बाद आपको मजलिस–ए–शूरा ने उप मोहतमिम बनाया। आप ने ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब की नयाबत का भरपूर हक़ अदा किया। आप के कार्य प्रणाली से दारुल उ़लूम की शूरा के मेम्बर बड़े प्रभावित हुए और 1401 हि. में आप को सदर

मुदर्रसीन के पद पर नियुक्त कर दया। आप जीवन के अन्तिम क्षणों तक इस पद पर क़ायम रहे।

यह आपके चरित्र का गुण था कि आप दारुल उ़लूम में शिक्षा के साथ–साथ इंतज़ामी कामों को पूरा करते रहे। आप एक अल्लाहवाले बुजुर्ग थे। आपकी ज़ात से कभी किसी को हानि नहीं पहुंची। आप हमेशा दूसरों के काम आते थे। छात्रों के मसलों में आपको हमेशा दिलचस्पी रहती थी।

जीवन को 83 बहारें देखने के बाद आप 6 स़फ़र 1412 हि./16 अगस्त 1991 ई. को आपकी मृत्यु हो गई। आपको क़ब्रिस्तान क़ासमी में दफ़नाया गया।

ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी (1919–2010)

ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब बुलन्दशहरी दारुल उ़लूम के शेखुल ह़दीस और सदर मुदर्रिस थे। आपने दारुल उ़लूम में छह दशकों से अधिक अध्यापन कार्य किया है और लगभग 32 साल तक बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाई है। इस बीच लगभग बीस हज़ार छात्रों ने आपसे बुख़ारी का दर्स लिया। आपके ह़दीस के दर्स को काफ़ी मक़बूलियत थी। स्वभाव में सादगी और विनम्रता थी। आपका अन्दर और बाहर का एक ही रूप था।

21 जुमादल उला 1337 हि./22 जनवरी 1919 ई. को ज़िला बुलन्दशहर में पैदा हुए। कुरआन मजीद हिफ़्ज़ करने के बाद फ़ारसी और अ़रबी की विभिन्न पुस्तकें मदरसा मम्बउल उ़लूम गुलावठी ज़िला बुलन्दशहर में पढ़ीं। दारुल उ़लूम देवबन्द में 1362 हि./1942 ई. में दौरा ह़दीस में दाख़िला लिया। आपकी शिक्षा और तरबियत में आपके बड़े भाई मौलाना बशीर अह़मद ख़ान साह़ब का बडा योगदान रहा है जो आपसे पहले मदरसा मम्बउल उ़लूम गुलावठी और बाद में दारुल उ़लूम देवबन्द में उस्ताद बने। उन दिनों स्वतन्त्रता के आन्दोलन के कारण शैखुल इस्लाम ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी नैनी जेल में क़ैद थे। इसलिये इस साल बुख़ारी और तिर्मिज़ी शरीफ़ शैखुल अदब ह़ज़रत मौलाना ऐजाज़ अली साह़ब से पढ़ी थी। मगर ह़ज़रत मदनी से लाभ प्राप्त करने की इच्छा थी। इसलिये अगले साल 1363 हिजरी में फिर ह़ज़रत मदनी से बुख़ारी और तिर्मिज़ी शरीफ़ पढ़ी। अपनी क़ाबलियत बढ़ाने के लिये दूसरी विधाओं (विषयों) की किताबें भी पढ़ीं और तजवीद (क़िरअत) की शिक्षा प्राप्त की।

जुलहिज 1365 हि./1946 ई. में इब्तदाई अध्यापक की हैसियत से आपका तक़र्रुर हुआ। आपने बिल्कुल आरम्भिक पुस्तकें पढ़ानी शुरू कीं। आप बड़ी लगन से पढाते थे। आपका कार्य हमेशा उत्तम रहता था।

कुछ पुस्तकों के पढाने में बड़ी मक़बूलियत मिली। मक़ामात हरीरी, मेबज़ी, शरह जामी, जलालैन शरीफ़, अलफ़ौज़ुल कबीर और मिशकात शरीफ़ आदि पुस्तकें आपने काफ़ी समय तक पढ़ाईं। इल्म हैयत का सबक़ भी आपके पास रहा। निहायत मेहनत, परिश्रम और लगन के कारण आप आरम्भिक दर्जे से तरक़्क़ी करते हुए ऊँचे दर्जे तक पहुंच गये। 1391 हिजरी में दौरा ह़दीस की पुस्तकें भी पढ़ाने लगे। 1391 हिजरी से 1397 हिजरी तक आप तहावी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ जिल्द सानी, मोअत्ता इमाम मालिक पढ़ाते रहे।

1397 हिजरी में दारुल उ़लूम के शैखुल ह़दीस ह़ज़रत मौलाना शरीफुल हसन साह़ब देवबन्दी की वफ़ात के बाद आप बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाने लगे। इसके बाद आप लगातार बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाते रहे। एक साल बुख़ारी की दानों जिल्दें पढ़ाईं, इसके बाद हमेशा पहली जिल्द पढ़ाते रहे। आपके अन्दर इल्मी और इन्तज़ामी दोनों योग्यतायें पाई जाती थीं। पढ़ाने के साथ–साथ इन्तज़ामी काम भी आपने भली–भांति निभाया। काफ़ी दिनों तक आप हास्टल इंचार्ज रहे। सफ़र 1391 हि. को मजलिस–ए–शूरा ने आपको दारुल उ़लूम देवबन्द का नायब मोहतमिम बना दिया। ह़ज़रत मौलाना मेराजुल हक़ देवबन्दी के बाद 1412 हि. में आप सदर मुदर्रिस बनाए गये।

1429 हिजरी में विभिन्न बीमारियों के कारण अध्यापन से त्याग पत्र दे दिया। 1391 हिजरी से 1429 हिजरी तक लगभग 40 सालों तक आप ह़दीस पढ़ाते रहे।

ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान स्वभाव से बडे नेक और शरीफ़ थे। बुज़ुर्गों की यादगार और उन का नमूना थे। आप बेहतरीन उस्ताद और आलिम भी थे। आपके स्वभाव का एक बड़ा गुण यह था कि तवाज़ो, रहमदिली, ख़ैर ख़्वाही और मुहब्बत जैसे गुण आपमें कूट–कूट कर भरे थे। आपके यहां छोटा भी छोटा नहीं था। सबका बराबर सम्मान करते थे। आपके द्वारा किसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचती थी। नमाज़ बड़े इत्मीनान से पढ़ते थे। देखने वाला यह समझता था कि इससे अच्छी नमाज़ नहीं हो सकती। अंतरात्मा भी गुणों से भरपूर थी। आपकी आवाज़ बुलन्द मगर आकर्षक थी। बात करने का ढंग सरल और लुभावना था।

ह़ज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अह़मद मदनी से आप

आत्मिक लगाव था। आपको हकीमुल इस्लाम ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब से बैअ़त व ख़िलाफ़त प्राप्त थी।

आपने 96 वर्ष की लम्बी आयु पाई। लगभग पैंसठ साल दारुल उ़लूम में अध्यापक रहे। 1429 हिजरी में विभिन्न बीमारियों के कारण दर्स और मदरसे की हाज़िरी से विवश हो गये।

19 सफ़र 1431 हि./4 फरवरी 2010 ई. बृहस्पतिवार की रात में आपकी मृत्यु हुई। अगले दिन आपको क़ासमी क़ब्रिस्तान में दफ़ना दिया गया।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपूरी

(जन्मः 1362 हि./1942 ई.)

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालनपूरी दारुल उ़लूम देवबन्द के र्वतमान सदर मुदर्रिस और शैख़ुल ह़दीस हैं। आप ह़दीस के मशहूर विद्वान, मुफती, कामयाब उसताद और अनेक अहम किताबों के लेखक हैं।

मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालनपूरी 1362 हि./1942 ई. में पैदा हुए। आप का वतन 'कालेड़ह' ज़िला बनास कांठा (गुजरात) है। आप पालनपूरी की निसबत से मशहूर हुए जो आप के घर से 30 मील दूरी पर है।

आप ने अपने पिता जनाब मुह़म्मद यूसुफ़ साह़ब से शिक्षा आरम्भ की, फिर आप ने प्रारम्भिक शिक्षा के लिये गांव के मकतब में दाखिला लिया। उस के बाद दारुल उ़लूम छापी में प्रवेश लिया जहां अपने मांमू मौलाना अबदुर्रह़मान साह़ब की निगरानी में पढ़ते रहे। फिर पालनपूर में मौलाना नज़ीर अह़मद साह़ब के मदरसे में दाखिल हुए और चार साल तक वहीं पढ़ते रहे। 1377 हि./1958 ई. में मज़ाहिर उ़लूम सहारनपूर में प्रवेश लिया। तीन साल के बाद 1380 हि./1961 ई. में दारुल उ़लूम देवबन्द आ गए और 1382 हि./1963 ई. में दौरा हदीस पूरा किया। सालाना परीक्षा में प्रथम आये। फिर एक साल तक दारुल इफ़्ता में ऐक साल तक फ़तवा लिखने की मश्क़ की।

शिक्षा पूरी करने के बाद 1384 हि./1965 ई. में दारुल उ़लूम अशरफ़िया रांदेर ज़िला सूरत (गुजरात) में उच्च श्रेणी उसताद नियुक्त हुए और वहां 1393 हि./1973 ई. तक अध्यापक रहे।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब को ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी की कोशिश से 1393 हि./1973 ई. में दारुल उ़लूम देवबन्द में नियुक्त किया गया। उस वक़्त से लेकर आज तक

सेवाएं अंजाम दे रहे हैं।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब दारुल उ़लूम देवबन्द में तफ़सीर, हदीस आदि पुस्तकें पढ़ाईं। आप ह़दीस के मशहूर विद्वान, बड़े मुफती और कामयाब उसताद माने जाते हैं।

1429 हिजरी/2008 ई. में जब हज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब बुलन्दशहरी विभिन्न बीमारियों के कारण मदरसे की हाज़िरी से विवश हो गये तो मजलिस–ए–शूरा (5 शाबान 1429/अगस्त 2008) में आप को सदर मुदर्रिस और शैखुल ह़दीस का पद सोंपा गया।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपूरी अनेक अहम किताबों के लेखक भी हैं। आप ने तफ़सीर, हदीस आदि विषयों पर तीन र्दजन से अधिक छोटी बड़ी किताबें लिखीं। आप की कुछ मशहूर और अहम किताबों के नाम यह हैं –

(1) रह़मतुल्लाह अल–वासिअ़ह शरह़ हुज्जतुल्लाह अल–बालिफ़ह
(2) तोह़फ़तुल क़ारी शरह सह़ीह़ बुखारी
(3) तोह़फ़तुल अलमई शरह तिरमिज़ी
(4) अल अवनुल कबीर शरह अल–फौज़ुल कबीर
(5) हिदायतुत कुरआन तक्मीलह
(6) फ़ैज़ुल मुनइम शरह़ मुक़द्दिमाए मुस्लिम
(7) ह़वाशी इमदादुल फ़तावा
(8) मबादियुल फ़लसफ़ा
(9) तोह़फ़तुद्दुरर शरह नुखबतुलफ़िकर
(10) आप फ़तवा कैसे दें?

दारुल उ़लूम के उलमा
एक नज़र में

दारुल उ़लूम के संस्थापक

क्र.	नाम	जन्म–मृत्यु
1	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी	1832–1880
2	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब	1835–1913
3	ह़ज़रत मौलाना महताब अली देवबन्दी	मृत्यु 1887
4	ह़ज़रत मौलाना ज़ुलफ़िक़ार अली देवबन्दी	1822–1905
5	ह़ज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान देवबन्दी	1832–1907
6	ह़ज़रत मुंशी फ़ज़ल हक़	
7	ह़ज़रत शेख़ निहाल अह़मद	मृत्यु 1887

दारुल उ़लूम के सरपरस्त (संरक्षक)

क्र.	सरपरस्त का नाम	जन्म–मृत्यु
1	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी	1832–1880
2	ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही	1827–1905
3	शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी	1851–1920
4	ह़ज़रत मौलाना अबदुर्रहीम रायपूरी	0000–1919
5	ह़ज़रत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी	1863–1943

मजलिस–ए–शूरा के सदस्य

क्र.	सदस्य का नाम	कब से–कब तक
1	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब	1866–1892
2	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी	1866–1880

3	ह़ज़रत मौलाना महताब अली देवबन्दी	1866–1887
4	ह़ज़रत मौलाना ज़ुलफ़िक़ार अली देवबन्दी	1866–1903
5	ह़ज़रत मौलाना फ़ज़लुर्रहमान देवबन्दी	1866–1905
6	ह़ज़रत मुंशी फ़ज़ल हक़ देवबन्दी	1866–1893
7	ह़ज़रत शैख़ निहाल अह़मद देवबन्दी	1866–1887
8	ह़ज़रत हकीम मुशताक़ अह़मद साह़ब	1881–1891
9	ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही	1881–1905
10	ह़ज़रत हकीम ज़ियाउद्दीन साह़ब, रामपूर	1888–1894
11	ह़ज़रत शैख़ ज़हूरुद्दीन साह़ब, देवबन्द	1894–1905
12	ह़ज़रत मौलाना अह़मद ह़सन साह़ब, अमरोहा	1895–1911
13	ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी मुहि़उद्दीन साह़ब, मुरादाबाद	1895–1928
14	ह़ज़रत मौलाना मु. अ़बदुलह़क़ साह़ब पूरक़ज़ी	1895–1923
15	ह़ज़रत शाह मज़हर ह़ुसैन साह़ब गंगोही	1895–1920
16	ह़ज़रत हकीम मु. इसमाईल साह़ब, रामपूर	1895–1923
17	ह़ज़रत शाह सईद अह़मद साह़ब अमबेथवी	1895–1921
18	ह़ज़रत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी	1903–1935
19	ह़ज़रत मौलाना अबदुर्रहीम रायपूरी	1903–1921
20	ह़ज़रत हाफ़िज़ हकीम अह़मद साह़ब, देवबन्द	1903–1923
21	ह़ज़रत खलीफ़ा अह़मद ह़सन साह़ब, देवबन्द	1905–1910
22	ह़ज़रत हाफ़िज़ दाद इलाही साह़ब, देवबन्द	1905–1906
23	ह़ज़रत मुंशी मज़हर ह़सन साह़ब, देवबन्द	1905–1931
24	ह़ज़रत मुंशी फ़रागत अली साह़ब, देवबन्द	1905–1910
25	ह़ज़रत शैख़ मु. ह़ुसैन साह़ब, देवबन्द	1905–1906
26	ह़ज़रत मौलाना हकीम मसूद अह़मद गंगोही	1906–1931
27	ह़ज़रत मौलाना सईदुद्दीन साह़ब रामपूरी, भोपाल	1906–1928
28	ह़ज़रत मौलाना ज़हूर अ़ली अह़मद पूरक़ाज़ी, भोपाल	1906–1928
29	ह़ज़रत शैख़ ह़बीबुर्रह़मान साह़ब, देवबन्द	1906–1907
30	ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी मुह़म्मद ह़सन साह़ब, भोपाल	1912–1946
31	ह़ज़रत ह़ाजी हाफ़िज़ फसीहुद्दीन साह़ब, मेरथ	1925–1925

32	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम जमीलुद्दीन, नगीना बिजनोर	1925–1935
33	ह़ज़रत हकीम मु. इसहा़क़, किठोर मेरथ	1925–1954
34	ह़ज़रत मौलाना हकीम मशीयतुल्लाह साह़ब, बिजनोर	1925–1953
35	ह़ज़रत मौलाना अबदुर्रह़मान साह़ब, सेवहारा बिजनोर	1925–1931
36	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम मु. अशफ़ाक़ साह़ब राएपूरी	1925–1948
37	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम रज़ीयुल ह़सन साह़ब कांधलवी	1926–1930
38	ह़ज़रत हाजी शैख़ रशीद अह़मद साह़ब, मेरथ	1926–1952
39	ह़ज़रत मौलाना कारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब, मोहतमिम	1929–1981
40	ह़ज़रत मौलाना मनाज़िर अह़सन गीलानी साह़ब	1931–1948
41	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम मक़सूद अ़ली जंग, है़दराबाद	1931–1961
42	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सादिक़ साह़ब, कराची	1931–1948
43	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम सईद अह़मद साह़ब गंगोही	1931–1940
44	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सहूल साह़ब भागलपूरी	1931–1943
45	ह़ज़रत खवाजा फीरोज़ुद्दीन साह़ब, रियासत कपूरथल्ला	1931–1943
46	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद फ़ज़लुल्लाह साह़ब, मद्रास	1931–1933
47	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुर्रहमान ख़ान साह़ब, बुलंदशहर	1931–1940
48	ह़ज़रत मौलाना सईद अह़मद साह़ब, हाटहज़ारी	1931–1948
49	ह़ज़रत मौलाना शाह रह़मत अ़ली साह़ब, जालंधर	1931–1932
50	ह़ज़रत मौ. ह़ाफ़िज़ मह़मूद रामपूरी, रियासत राजपूताना	1932–1940
51	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद शफ़ी साह़ब देवबन्दी	1932–1933
52	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इलयास साह़ब कांधलवी	1932–1934
53	ह़ज़रत मौलाना नवाब ह़बीबुर्रह़मान शेरवानी साह़ब	1933–1940
54	ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद यूसुफ़ साह़ब गंगोही	1933–1944
55	ह़ज़रत मौलाना हु़सैन अह़मद मदनी, सदर मुदर्रिस	1934–1957
56	ह़ज़रत नवाब अ़बदुलबासित खान साह़ब, है़दराबाद	1934–1947
57	ह़ज़रत खान बहादुर शैख़ ज़ियाउलह़क़ साह़ब, राजूपूर	1935–1954
58	ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उसमानी, सदर मोहतमिम	1935–1943
59	ह़ज़रत मुफ़ती किफ़ायतुल्लाह साह़ब, सदर जमीअ़त उलमा	1936–1954

60	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इबराहीम साह़ब, रानदेर सूरत	1936–1948
61	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम मुह़म्मद यासीन साह़ब, नगीना	1941–1958
62	ह़ज़रत मौलाना शाह अ़बदुलक़ारि साह़ब राएपुरी	1941–1942 1957–1961
63	ह़ज़रत मौलाना ज़हीरुल ह़सन साह़ब, कांधला	1941–1943
64	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम अ़बदुर्रशीद मह़मूद साह़ब गंगोही	1943–1948
65	ह़ज़रत मौलाना ह़िफ़्ज़ुर्रह़मान साह़ब सेवहारवी	1943–1962
66	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी साह़ब, लखनऊ	1944–1996
67	ह़ज़रत मौलाना खैर मुह़म्मद साह़ब, जालंधर	1944–1947
68	ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अ़ली साह़ब थानवी	1944–1947
69	ह़ज़रत मौलाना बशीर अह़मद साह़ब, किठोर मेरथ	1944–1954
70	ह़ज़रत मौलाना अह़मद सईद साह़ब देहलवी	1945–1957
71	ह़ज़रत मौलाना सै. फ़ख़रुद्दीन अह़मद साह़ब सदर मुदर्रिस के तौर पर दोबारा	1949–1957 1967–1972
72	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद नबीह साह़ब खानजहानपूरी	1949–1961
73	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़तीकुर्रह़मान उसमानी साह़ब	1949–1984
74	ह़ज़रत मौलाना सय्यद सुलैमान साह़ब नदवी	1950–1951
75	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद मियां साह़ब देवबन्दी	1951–1965
76	ह़ज़रत मौ. डा. मुस़तफ़ा ह़सन अ़लवी साह़ब, लखनऊ	1951–1981
77	ह़ज़रत मौलाना शैख़ ज़करिया साह़ब कांधलवी	1951–1962
78	ह़ज़रत मुफ़्ती मह़मूद नानौतवी, मुफ़्ती मालवा उज्जैन	1954–1968
79	ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान मुह़द्दिस आ़ज़मी साह़ब	1954–1991
80	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुस्समद रह़मानी साह़ब, मोंगीर	1954–1973
81	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सईद समलकी साह़ब, सुरत	1954–1990
82	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मिन्नतुल्लाह रह़मानी, मोंगीर	1955–1991
83	ह़ज़रत मौ. ह़कीम मुह़म्मद इसमाईल नगीनवी, देहली	1955–1962
84	ह़ज़रत मौ. अ़ल्लामा मुह़म्मद इबराहीम बलयावी	1957–1967
85	ह़ज़रत मौ. डा. सय्यद अ़बदुलअ़ली साह़ब, लखनऊ	1957–1960

86	ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुलह़सन अ़ली नदवी, लखनऊ	1962–1999
87	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुलक़ादिर साह़ब, मालेगॉव	1962–1992
88	ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुलआ़बिदीन सज्जाद, मेरथ	1962–1991
89	ह़ज़रत मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी, अलीगढ़	1962–1985
90	ह़ज़रत मौलाना ह़ामिदुल अनसारी साह़ब ग़ाज़ी	1962–1985
91	ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साह़ब बिजनौरी दोबारा मोहतमिम के तौर पर	1962–1982 1982–2010
92	ह़ज़रत मौलाना फ़ज़लुल्लाह साह़ब, हैदराबाद	1962–
93	ह़ज़रत मौलाना सय्यद ह़मीदुद्दीन साह़ब फ़ैज़ाबादी	1962–1967
94	ह़ज़रत मौलाना सै. फ़ख़रुल ह़सन साह़ब, सदर मुदर्रिस	1967–1982
95	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुल ह़लीम साह़ब जौनपूरी	1972–1998
96	ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती अबू सऊद साह़ब, बेंगलौर	1972–1986
97	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम मुह़म्मद ज़मान साह़ब, कलकत्ता	1972–2000
98	ह़ज़रत मौ. ह़कीम मुह़म्मद इफ़हामुल्लाह साह़ब, अलीगढ़	1972–1997
99	ह़ज़रत मौलाना मेराजुलह़क़ देवबन्दी, सदर मुदर्रिस	1981–1991
100	ह़ज़रत मौ. मुह़म्मद उस्मान चेयरमैन देवबन्दी	1981–1985
101	ह़ज़रत मौलाना क़ारी सिद्दीक़ अह़मद साह़ब बांदवी	1981–1985
102	ह़ज़रत मौलाना ह़ाजी अ़लाउद्दीन साह़ब, मुमबई	1981–1988
103	ह़ज़रत नवाब उबैदुर्रह़मान ख़ान शेरवानी, अ़लीगढ़	1981–1991
104	ह़ज़रत मौलाना सय्यद अ़सअ़द मदनी साह़ब	1985–2006
105	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम अ़बदुलजलील सिद्दीक़ी, देहली	1986–1990
106	ह़ज़रत हाफ़िज़ मुह़म्मद सिद्दीक़ साह़ब एम पी, मुरादाबाद	1986–2012
107	ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती अ़बदुलअ़ज़ीज़ साह़ब, सहारनपूर	1988–1991
108	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुलअ़ज़ीज़ साह़ब, हैदराबाद	1988–2011
109	ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम रसुल खामोश साह़ब, छापी	1989–2010

110	ह़ज़रत मौलाना इसमाईल मोटा साह़ब, रांदेर सूरत	1990–2006
111	ह़ज़रत मौलाना नाज़िर हुसैन साह़ब, हापुड़	1990–2009
112	ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब बुलंदशहरी	1991–2008
113	ह़ज़रत मौलाना इसमाईल साह़ब, कटक उड़ीसा	1992–2006
114	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद आ़क़िल साह़ब, सहारनपूर	1992–1992

मजलिस–ए–शूरा के वर्तमान सदस्य

क्र.	नाम सदस्य	चयन वर्ष
1	ह़ज़रत मौ. मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब, शूरा सदस्य मोहतमिम दारुल उ़लूम	1413/1992 1432/2011
2	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालनपुरी, सदर मुदर्रिस, दारुल उ़लूम	1429/2008
3	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मंजूर अह़मद साह़ब, क़ाज़ी कानपुर	1405/1985
4	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद याकूब मदरासी साह़ब, मद्रास (चेन्नई)	1406/1986
5	ह़ज़रत मौलाना अज़हर नोमानी साह़ब, मोहतमिम मदरसा हुसैनिया रांची	1406/1986
6	ह़ज़रत मौलाना बदरूद्दीन अजमल साह़ब, अध्यक्ष जमीअत उलमा आसाम	1413/1992
7	ह़ज़रत मौलाना निज़ामुद्दीन साह़ब, नाज़िम इमारत शरिया पटना	1413/1992
8	ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम मुह़म्मद वुस्तानवी साह़ब, मोहतमिम मदरसा अक्कलकुआ	1419/1998
9	ह़ज़रत मौलाना अब्दुल अलीम फ़ारूक़ी साह़ब, दारुल मुबल्लिग़ीन लखनऊ	1419/1998
10	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबे हसन नदवी साह़ब, नाज़िम नदवतुल उलमा लखनऊ	1428/2007
11	ह़ज़रत मौलाना तलहा साह़ब, मज़ाहिर उ़लूम सहारनपुर	1428/2007
12	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मियां ख़लील हुसैन साह़ब, मदरसा असग़रिया देवबन्द	1428/2007
13	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इस्माईल साह़ब, मालेगांव महाराष्ट्र (एम एल ए)	1428/2007
14	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इश्तियाक़ साह़ब, मुज़फ़्फ़रपुर बिहार	1428/2007
15	जनाब अलहाज जमील साह़ब, कोलकाता	1428/2007

16	ह़ज़रत मौलाना मलक मुह़म्मद इब्राहीम साह़ब, मीलविशारम तमिलनाडू	1428/2007
17	ह़ज़रत मौलाना हकीम कलीमुल्लाह साह़ब, अलीगढ़	1433/2012
18	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अह़मद ख़ानपुरी साह़ब, जामिया इस्लामिया डाभेल गुजरात	1433/2012
18	ह़ज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कश्मीरी साह़ब, मोहतमिम बांडीपुरा कश्मीर	1433/2012
20	ह़ज़रत मौलाना अनवारूल रहमान साह़ब, बिजनौर	1433/2012

दारुल उ़लूम के मोहतमिम

क्र.	मोहतमिम का नाम	आरम्भ व अन्त	समय
1.	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब (1835–1913)	1283/1866–1284/1867 1286/1869–1288/1871 1306/1888–1310/1893	10 वर्ष
2.	ह़ज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब (1836–1891)	1284/1867–1285/1868 1288/1872–1306/1888	19 वर्ष
3.	ह़ज़रत हाजी फ़ज़ल हक़ साह़ब	1310/1893–1311/1894	1 वर्ष
4.	ह़ज़रत मौलाना मुनीर साह़ब नानौतवी (जन्म 1831)	1311/1894–1313/1895	डेढ वर्ष
5.	ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद (1862–1928)	1313/1895–1347/1928	34 वर्ष
6.	ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमाना उस्मानी (मृ. 1929)	1347/1928–1348/1929	स वा साल
7.	ह़ज़रत मौलाना कारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब (1897–1983)	1348/1930–401/1981	52 वर्ष
8.	ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान बिजनौरी (1914–2010)	1402/1982–1432/2010	32 वर्ष
9.	ह़ज़रत मौलाना गुलाम मुह़म्मद वुस्तानवी (जन्म 1950)	1432/2010	7 माह
10.	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी (ज. 1947)	1432/2011– जारी	जारी

सदर मोहतमिमः

ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी 1935/1354–1943/1362

कारगुज़ार मोहतमिमः

हज़रत मौ. गुलाम रसूल ख़ामोश 2003/1424-2010/1431

दारुल उ़लूम के नायब मोहतमिम

क्र.	नाम/कब से-कब तक		समय
1	हज़रत मौलाना अब्दुल क़दीर देवबन्दी	1308/1890-1309/1892	2 साल
2	हज़रत मौलाना मुफ़ती अज़ीज़ुर्रहमान	1309/1892-1310/1893 1317/1899-1323/1905	7 साल
3	हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान देवबन्दी	1325/1907-1343/1925	18 साल
4	हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब	1344/1926-1347/1928	2 साल
5	हज़रत मौ. सय्यद मुबारक अली नगीनवी	1350/1931-1388/1968	37 साल
6	हज़रत मौलाना मुहम्मद ताहिर क़ासमी	1351/1932-1352/1933	1 साल
7	हज़रत मौलाना बशीर अहमद बुलन्दशहरी	1384/1964-1385/1965	1 साल
8	हज़रत मौलाना मेराजुलहक़ देवबन्दी	1386/1966-1396/1976	10 साल
9	हज़रत मौ. नसीर अहमद ख़ान बु.शहरी	1391/1971-1414/1994	23 साल
10	हज़रत मौ. मु. उस्मान चेयरमैन देवबन्दी	1401/1981-1405/1985	4 साल
11	हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान ख़ैराबादी	1412/1992-1418/1997	5 साल
12	हज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ मद्रासी	1418/1997-अभी तक	जारी
13	हज़रत क़ारी मुहम्मद उस्मान मन्सूरपुरी	1418/1997-1429/2008	11 साल
14	हज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ सम्भली	1429/2008-अभी तक	जारी

मुआ़विन मोहतमिमः हज़रत मौण वहीदुज़्ज़मां कैरानवी 1405/1984-1410/1990

सदर मुदर्रिस और शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रात

क्रं	नाम/कब से-कब तक	समय	जन्म-मृत्यु	पद
1	हज़रत मौलाना याक़ूब साहब नानौतवी 1283/1866-1302/1884	19 साल	(1833-1884)	सदर व शैख़

2	ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद साह़ब देहलवी 1302/1884–1307/1890	6 साल	(मृत्यु 1894)	सदर व शैख़
3	शेख़ुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन 1308/1891–1333/1915	25 साल	(1851–1920)	सदर व शैख़
4	ह़ज़रत अल्लामा अनवर शाह साह़ब कश्मीरी 1333/1915–1346/1927	12 साल	(1875–1933)	सदर व शैख़
5	ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी साह़ब 1346/1927–1377/1957	32 साल	(1879–1957)	सदर व शैख़
6	ह़ज़रत अल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम बलियावी 1377/1957–1387/1967	10 साल	(1887–1967)	सदर मुदर्रिस
7	ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन मुरादाबादी 1377/1957–1387/1967 ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन 1387/1967–1392/1972	10 साल 5 साल	(1889–1972)	शैख़ुल ह़दीस सदर व शैख़
8	ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुल हसन मुरादाबादी 1392/1972–1401/1981	9 साल	(1905–1981)	सदर मुदर्रिस
9	ह़ज़रत मौलाना शरीफुल ह़सन साह़ब देवबन्दी 1392/1972–1397/1977	5 साल	(1920–1977)	शैख़ुल ह़दीस
10	ह़ज़रत मौलाना मेराजुल हक़ साह़ब देवबन्दी 1401/1981–1412/1991	11 साल	(1910–1991)	सदर मुदर्रिस
11	ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी 1397/1977–1412/1991 ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी 1412/1991–1429/2008	15 साल 17 साल	(1919–2010)	शैख़ुल़ह़दीस सदर व शैख़
12	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी 1429/2008–अभी तक	जारी	(जन्म 1943)	सदर व शैख़

दारुल उ़लूम के नाज़िम तालीमात

क्र.	नाम	कब से–कब तक	समय
1	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुर्तज़ा हसन चांदपुरी	1339/1921–1351/1921	10 वर्ष
2	कोई नहीं रहा	1352/1932–1356/1937	5 वर्ष

3	हज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी (नायब नाज़िम हज़रत मौ. ऐज़ाज़ अली अमरोही)	1357/1938–1377/1957	19 वर्ष
4	हज़रत अल्लामा मुहम्मद इबराहीम बलियावी	1377/1957–1387/1967	10 वर्ष
5	हज़रत मौलाना मियां अख़्तर हुसैन देवबन्दी	1387/1967–1397/1977	10 वर्ष
6	हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साह़ब कश्मीरी	1398/1978–1401/1981	3 वर्ष
7	हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साह़ब कैरानवी	1402/1982–1405/1985	3 वर्ष
8	हज़रत मौलाना रियासत अली बिजनौरी (नायब नाज़िम हज़रत मौ. सय्यद अरशद मदनी)	1405/1985–1410/1990	5 वर्ष
9	हज़रत मौलाना क़मरूद्दीन साह़ब गोरखपुरी	1410/1990–1416/1995	5 वर्ष
10	हज़रत मौलाना सय्यद अरशद साह़ब मदनी	1416/1995–1429/2008	13 वर्ष
11	हज़रत मौलाना मुजीबुल्लाह साह़ब गोन्डवी	1429/2008–अभी तक	जारी

दारुल उ़लूम के मुफ़्ती हज़रात

क्र.	नाम	कब से–कब तक	समय
1	हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साह़ब देवबन्दी	1310/1892–1329/1911 1329/1912–1346/1927	26 वर्ष
2	हज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली साह़ब अमरोहवी	1347/1928–1348/1929 1364/1945–1366/1947	4 वर्ष
3	हज़रत मौलाना मुफ़्ती रियाजुद्दीन बिजनौरी	1349/1930–1349/1930	1 वर्ष
4	हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साह़ब देवबन्दी	1350/1931–1354/1935 1359/1940–1361/1942	6 वर्ष
5	हज़रत मौलाना मुह़म्मद सहूल भागलपुरी	1355/1936–1358/1938	2 वर्ष
6	हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह गंगोही	1358/1939–1358/1939	1 वर्ष
7	हज़रत मौलाना मुफ़्ती फ़ारूख़ अम्बेहटवी	1362/1943–1363/1944	1 वर्ष
8	हज़रत मुफ़्ती मेहदी हसन शाहजहांपुरी	1367/1948–1387/1967	20 वर्ष
9	हज़रत मुफ़्ती महमूद हसन साह़ब गंगोही	1385/1965–1401/1981	16 वर्ष
10	हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साह़ब आज़मी	1385/1965–1420/2000	35 वर्ष
11	हज़रत मुफ़्ती हबीबुर्रहमान साह़ब खैराबादी	1402/1982–जारी	जारी

12	ह़ज़रत मुफ़्ती ज़फ़ीरूद्दीन साहब मिफ़ताही	1403 / 1983-1429 / 2008	26 वर्ष

दारुल उ़लूम के नाएब मुफ़्ती

क्र.	नाम	कब से-कब तक	समय
1	मुफ़्ती क़ाज़ी मसूद अह़मद साह़ब	1338 / 1920-1384 / 1964	46 साल
2	मुफ़्ती अह़मद अली सईद नगीनवी	1357 / 1938-1401 / 1981	44 साल
3	मुफ़्ती जमीलुर रहमान साह़ब सेवहारवी	1374 / 1955-1386 / 1966	11 साल
4	मुफ़्ती कफीलुर रहमान साह़ब देवबन्दी	1397 / 1977-1427 / 2006	30 साल
5	मुफ़्ती मह़मूद ह़सन साह़ब बुलन्दशहरी	1413 / 1992-1433 / 2012	जारी
6	मुफ़्ती मुह़म्मद ताहिर ग़ाज़ियाबादी	1414 / 1993-1417 / 1996	3 साल
7	मुफ़्ती अबदुल्लाह साह़ब कशमीरी	1418 / 1997-1424 / 2003	6 साल
8	मुफ़्ती ज़ैनुलइसलाम साह़ब इलाहाबादी	1427 / 2006-1433 / 2012	जारी

दारुल उ़लूम के वर्तमान वरिष्ठ उलमा

नाम	पद
ह़ज़रत मौ. मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब बनररसी	मोहतमिम
ह़ज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ साह़ब मद्रासी	नायब मोहतमिम
ह़ज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ साह़ब सम्भली	नायब मोहतमिम
ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालनपुरी	सदर मुदर्रिस व शैख़ुल ह़दीस
ह़ज़रत मौलाना मुजीबुल्लाह साह़ब गोन्डवी	नाज़िम तालीमात
ह़ज़रत मौलाना शैख़ अबदुल ह़क़ साह़ब आज़मी	उच्च श्रेणी उसताद
ह़ज़रत मौलाना क़मरूद्दीन साह़ब गोरखपुरी	= =
ह़ज़रत मौलाना रियासत अली साह़ब बिजनौरी	= =
ह़ज़रत मौलाना सय्यद अरशद साह़ब मदनी	= =
ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद उस्मान साह़ब मन्सूरपुरी	= =
ह़ज़रत मौलाना नेमतुल्लाह साह़ब आज़मी	= =
ह़ज़रत मौलाना हबीबुर रह़मान साह़ब आज़मी	= =
ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद अमीन साह़ब पालनपुरी	= =

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ साह़ब ताउलवी	= =
ह़ज़रत मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरौडवी	= =
ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद अह़मद साह़ब फ़ैज़ाबादी	= =
ह़ज़रत मौलाना नूर आ़लम खलील अमीनी साह़ब	= =
जनाब मौलाना मुह़म्मद जमाल मेरठी साह़ब	
जनाब मौलाना अ़बदुर्रह़ीम बस्तवी साह़ब	
जनाब मौलाना नसीम अह़मद बाराबंकवी साह़ब	

दारुल उ़लूम देवबन्द के कुछ मशहूर विद्वान

मशाइख़ (धार्मिक व आत्मिक मार्गदर्शक)

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की
हज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
हज़रत मौलाना ख़लील अह़मद साह़ब सहारनपुरी
हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थनवी साह़ब
शैखुल इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद हुसैनअह़मद मदनी
हज़रत मौलाना मुह़म्मद अली मुंगेरी साह़ब
हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम रायपुरी साह़ब
हज़रत मौलाना सय्यद मियां असग़र हुसैर साह़ब देवबन्दी
हज़रत मौलाना नाज़िर ग़ामुददीन साह़ब फ़ैज़ाबादी
हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साह़ब रायपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर अब्बासी साह़ब मदनी
हज़रत मौलाना अह़मद अली लाहौरी साह़ब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद हसन साह़ब
हज़रत मौलाना ख़ैर मुह़म्मद जालन्धरी साह़ब
हज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब क़ासमी
हज़रतशैखुल ह़दीस मौलाना ज़करिया साह़ब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना असदुल्लाह साह़ब रामपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ साह़ब अकरोडवी
हज़रत मौलाना मिन्नतुल्लाह साह़ब रहमानी
हज़रत मौलाना शाह अब्दुल ग़नी साह़ब फूलपुरी
हज़रत मौलाना शाह वसीउल्लाह साह़ब फ़तेहपुरी
हज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ान साह़ब जलालाबादी

हज़रत मौलाना क़ारी फ़ख़रूददीन साहब गयावी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद हसन साहब गंगोही
हज़रत मौलाना अब्दुल जब्बार साहब मारूफ़ी
हज़रत मौलाना अबरारूल हक़ साहब हरदोईवी
हज़रत मौलाना सय्यद असद मदनी साहब
हज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद सिददीक़ साहब बान्दवी
हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहब कांधलवी
हज़रत मौलाना मुह़म्मद साहब कांधलवी
हज़रत मौलाना अह़मद अली साहब आसामी

कुरान करीम के व्याख्याता व अनुवादक

हज़रत शैखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ साहब कश्मीरी
हज़रत मौलाना आशिक़ इलाही साहब मेरठी
हज़रत मौलाना अह़मद साहब लाहौरी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब अमरोहवी
हज़रत मौलाना सनाउल्लाह साहब अमृतसरी
हज़रत हकीमुल उम्मत मौ. अशरफ़ अली साहब थानवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साहब बिजनौरी
हज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुह़म्मद नईम साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना अह़मद अली साहब लाहौरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साहब पालनपुरी
हज़रत मौलाना अह़मद सईद साहब देहलवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती ज़फ़ीरूददीन साहब
हज़रत मौलाना हुसैन अली साहब पंजाबी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब
हज़रत मौलाना इदरीस साहब कांधलवी
हज़रत मौलाना मुह़म्मद अन्ज़र शाह कश्मीरी साहब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुह़म्मद उस्मान काशिफ़ साहब हाशमी

हज़रत मौलाना अल्लामा शमसुल हक़ अफ़ग़ानी साह़ब
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साह़ब मरवानी
हज़रत मौलाना ग़ुलामुल्लाह ख़ान साह़ब
हज़रत मौलाना शाईक़ अह़मद उस्मानी साह़ब
हज़रत मौलाना क़ाज़ी ज़ाहिदुल हुसैनी साह़ब
हज़रत मौलाना याक़ूबुर्रहमान उस्मानी साह़ब
हज़रत मौलाना अख़लाक़ हुसैन साह़ब क़ासमी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साह़ब कांधलवी
हज़रत मौलाना सय्यद हसन साह़ब देहलवी
हज़रत मौलाना अब्दुल ह़ई फ़ारूक़ी साह़ब
हज़रत मौलाना सिब्ग़तुल्लाह साह़ब
हज़रत मौलाना अरशद मदनी व प्रोफ़ेसर मुह़म्मद सुलैमान (हिन्दी)
हज़रत मौलाना सय्यद अनवारूल हक़ साह़ब काकाख़ैल (पश्तों भाषा)
हज़रत मौलाना मुह़म्मद जमाल साह़ब मेरठी

मुहुद्दिस (ह़दीस के प्रवक्ता)

हज़रत मौलाना अह़मद अली साह़ब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साह़ब कामिलपुरी
हज़रत मौलाना रशीद अह़मद साह़ब गंगोही
हज़रत मौलाना सरफ़राज़ ख़ान सफ़दर साह़ब पाकिस्तान
हज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम साह़ब नानौतवी
हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ साह़ब अकौड़ा, खटक पाकिस्तान
हज़रत मौलाना मज़हर साह़ब नानौतवी
हज़रत मौलाना शरीफ़ुल हसन साह़ब देवबन्दी
हज़रत मौलाना अह़मद हसन साह़ब अमरोहवी
हज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब बुलन्द शहरी
हज़रत मौलाना याक़ूबसाह़ब नानौतवी
हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साह़ब कश्मीरी
हज़रत मौलाना सय्यद अह़मद साह़ब देहलवी
हज़रत मौलाना अब्दुल जब्बार आज़मी साह़ब
हज़रत मौलाना महमूद हसन साह़ब देवबन्दी

हज़रत मौलाना ख़ुरशीद आलम साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना फ़ख़रूल हसन साहब गंगोही
हज़रत मौलाना सलीमुल्लाह ख़ान साहब पाकिस्तानी
हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अहमद साहब
हज़रत मौलाना अब्दुल अली साहब मेरठी
हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ आज़मी साहब
हज़रत मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी
हज़रत मौलाना नैमतुल्लाह साहब आज़मी
हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहकद साहब मदनी
हज़रत मौलाना अरशद साहब मदनी
हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्हाक़ अमृतसरी साहब
हज़रत मौलाना रियासत अली साहब बिजनौरी
हज़रत मौलाना बदर आलम साहब मेरठी
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साहब क़ासमी आज़मी
हज़रत मौलाना इदरीस साहब कांधलवी
मौलाना डॉक्टर मुस्तुफ़ा साहब आज़मी
हज़रत मौलाना फ़ख़रूद्दीन साहब मुरादाबादी
मौलाना डॉक्टर अबुलैस आज़मी साहब
हज़रत मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहब गुजरांवाला (पाकि.)
हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान मुहद्दिस्स साहब आज़मी
हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद यूसुफ़ साहब बिन्नौरी
हज़रत मौलाना माजिद अली साहब जौनपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहब मऊवी
हज़रत मौलाना ज़फ़र अहमद साहब उस्मानी
हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद साहब उस्मानी
हज़रत मौलाना हमीदुद्दीन साहब फ़ैज़ाबादी
हज़रत मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमाना साहब कांधलवी

फुक़हा (मुफ़्ती)

हज़रत मौलाना रशीद अह़मद साह़ब गंगोही
हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली साह़ब थानवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साह़ब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साह़ब देहलवी
हज़रत मौलाना सआदत अली साह़ब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद यूसुफ़ साह़ब कश्मीरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती सहूल साह़ब भागलपुरी
हज़रत मौलाना रशीद अह़मद साह़ब लुधियानवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती रियाज़ुद्दीन साह़ब बिजनौरी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम लाजपुरी साह़ब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ साह़ब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुल करीम साह़ब गुमथलवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साह़ब मेरठी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती हबीबुर्रहमान साह़ब ख़ैराबादी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यद मेहदी हसन साह़ब शाहजहांपुरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती ज़फ़ीरूद्दीन साह़ब मिफ़्ताही
हज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद हसन साह़ब गंगोही
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मन्ज़ूर अह़मद साह़ब मज़ाहिरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साह़ब आज़मी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम साह़ब नौमानी बनारसी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद इस्माईल बिस्मिल्लाह साह़ब सूरती
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुर्रहमान साह़ब देहलवी
हज़रत मौलाना अह़मद सईद साह़ब अजराडवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती शब्बीर अह़मद साह़ब मदरसा शाही
हज़रत मौलाना फ़क़ीरूल्लाह साह़ब रायपुरी
हज़रत मौलाना क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम साह़ब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद साह़ब सरहदी
हज़रत मौलाना अबू ज़ैदा साह़ब बान्दा
हज़रत मौलाना मुफ़्ती जमील अह़मद साह़ब थानवी

हज़रत मौलाना मुफ़्ती कफ़ीलुर्रहमान निशात साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती हबीबुर्रहमान साहब ख़ैराबादी

इस्लामी तालीमात के प्रवक्ता, लेखक और इतिहासकार

हज़रत मौलाना क़ासिम साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी
हज़रत मौलाना रहीमुल्लाह साहब बिजनौरी
हज़रत मौलाना मुरतज़ा हसन साहब चांदपुरी
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी साहब
हज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साहब
हज़रत मौलाना अल्लामा इब्राहीम साहब बलियावी
हज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी साहब
हज़रत मौलाना अल्लामा शम्सुल हक़ साहब अफ़ग़ानी
हज़रत मौलाना सय्यद मनाज़िर हसन साहब गीलानी
हज़रत मौलाना अल्लामा ख़ालिद महमूद साहब
हज़रत मौलाना क़ाज़ी मज़हर हुसैन साहब
हज़रत मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन साहब
हज़रत मौलाना नूरूल हसन साहब शेरकोट
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी साहब
हज़रत मौलाना याक़ूबुर्रहमान साहब
हज़रत मौलाना मंजूर साहब नौमानी
हज़रत मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान साहब सियौहारवी
हज़रत मौलाना सरफ़राज़ अह़मद सफ़दर साहब
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साहब आज़मी
हज़रत मौलाना सय्यद नूरूल हसन साहब बुख़ारी
हज़रत मौलाना क़ाज़ी मुह़म्मद अतहर साहब मुबारकपुरी
हज़रत मौलाना सईद अह़मद साहब अकबराबादी
हज़रत मौलाना तक़ी साहब उस्मानी
हज़रत शैखुल ह़दीस मौलाना ज़करिया साहब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ साहब लुधियानवी
हज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद मियां साहब देवबन्दी

हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साहब कैरानवी

मशहूर उस्ताद

हज़रत मौलाना याकूब साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना करीम बख़्श साहब सम्भली
हज़रत मौलाना सय्यद अहमद साहब देहलवी
हज़रत अल्लामा मुहम्मद इबराहीम साहब बलियावी
हज़रत मौलाना अहमद हसन साहब अमरोहवी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब कामिलपुरी
हज़रत मौलाना मुनफ़ैत अली साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुहम्मद सिद्दीक़ साहब कशमीरी
हज़रत मौलाना अब्दुल अली साहब मेरठी
हज़रत मौलाना मुहम्मद अब्दस्समी साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना अब्दुल मौमिन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना ज़ैनुल आ़बिदीन साहब आज़मी
हज़रत मौलाना मुहम्मद मज़हर साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना मुहम्मद याहया सहसरामी साहब
हज़रत मौलाना गुलाम रसूल ख़ान साहब हज़ारवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सहूल साहब भागलपुरी
हज़रत मौलाना सिद्दीक़ साहब अम्बेहटवी
हज़रत मौलाना मुहम्मद ऐज़ाज़ अली साहब अमरोहवी
हज़रत मौलाना मुहम्मद मुराद साहब पाक पट्टनी (पाकि.)
हज़रत मौलाना मुहम्मद हुसैन साहब बिहारी
हज़रत मौलाना सय्यद असग़र हुसैन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना शुकरूल्लाह साहब आज़मी
हज़रत मौलाना मुहम्मद रसूल ख़ान साहब
हज़रत मौलाना अली अहमद साहब आज़मी
हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ साहब अकरोडवी
हज़रत मौलाना अब्दुस्समद साहब
हज़रत मौलाना हमीदुद्दीन साहब फ़ैज़ाबादी
हज़रत मौलाना अख़्तर हुसैन साहब देवबन्दी

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद हयात साह़ब सम्भली
ह़ज़रत मौलाना फ़ख़रूल हसन साह़ब मुरादाबादी
ह़ज़रत मौलाना अह़मद हसन साह़ब कानपुरी
ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब बुलन्द शहरी
ह़ज़रत मौलाना अब्दुस्सत्तार साह़ब मारूफ़ी
ह़ज़रत मौलाना नईम साह़ब देवबन्दी
ह़ज़रत मौलाना बशीर अह़मद साह़ब बुलन्दशहरी
ह़ज़रत मौलाना सालिम साह़ब क़ासमी
ह़ज़रत मौलाना मैराजुल हक़ साह़ब देवबन्दी
ह़ज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साह़ब कैरानवी

दावत व मुनाज़रा के प्रवक्ता

ह़ज़रत मौलाना क़ामिस साह़ब नानौतवी
ह़ज़रत मौलाना अब्दुस्सलाम फ़ारूक़ी साह़ब लखनऊवी
ह़ज़रत मौलाना अह़मद हसन साह़ब लाहौरी
ह़ज़रत मौलाना अब्दुल हलीम फ़ारूक़ी साह़ब
ह़ज़रत मौलाना ख़लील अह़मद साह़ब सहारनपुरी
ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी मुह़म्मद मज़हर हुसैन साह़ब
ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुरतज़ा हसन साह़ब चांदपुरी
ह़ज़रत मौलाना अब्दुस्सत्तार साह़ब तौंसवी
ह़ज़रत मौलाना अबुल वफ़ा साह़ब शाहजहांपुरी
ह़ज़रत मौलाना लाल हुसैन अख़्तर साह़ब
ह़ज़रत मौलाना असदुल्लाह साह़ब रामपुरी
ह़ज़रत मौलाना अह़मद हयात साह़ब फ़ातेह क़ादयान
ह़ज़रत मौलाना सय्यद इरशाद अह़मद फ़ैज़ाबादी साह़ब
ह़ज़रत मौलाना अल्लामा ख़ालिद महमूद साह़ब
ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद हसन साह़ब गंगोही
ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इस्माईल साह़ब कटकी
ह़ज़रत मौलाना मन्ज़ूर अह़मद साह़ब नौमानी
ह़ज़रत मौलाना इमाम अली दानिश साह़ब लखीमपुरी
ह़ज़रत मौलाना नूर मुह़म्मद टांडवी साह़ब

हज़रत मौलाना मुहम्मद अमीन सफ़दर साहब औकाडवी
हज़रत मौलाना अब्दुल्लतीफ़ साहब आज़मी
हज़रत मौलाना मुहम्मद ताहिर साहब गयावी

आज़ादी की जंग में भाग लेने वाले कुछ देवबन्दी उलमा

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर साहब मक्की
हज़रत मौलाना महमूद क़ासिम साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही
शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साहब शाहजहांपुरी
इमाम इंक़लाब हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब सिंधी
हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद साहब मदनी
हज़रत मौलाना मुहम्मद मियां मन्सूर अन्सारी साहब
हज़रत मौलाना मुहम्मद सादिक़ साहब कराची सिंध
हज़रत मौलाना अहमद अली साहब लाहौरी
मुजाहिद मिल्लत हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब सियौहारवी
रईसुल अहरार हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साहब लुधियानवी
हज़रत मौलाना ख़लीफ़ा गुलाम मुहम्मद साहब दीनपुरी
हज़रत मौलाना सज्जाद हुसैन साहब बिहारी
हज़रत मौलाना अहतेशाम हुसैन साहब थानवी
हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद मियां साहब देवबन्दी

लेखक व पत्रकार

नाम / कार्यक्षेत्र
मौलाना हबीबुर्रहमान साहब उसमानी संपादक मासिक अल–क़ासिम व अल–रशीद दारुल उ़लूम, देवबन्द
मौलाना सय्यद मनाज़िर हसन गीलानी संपादक मासिक अल–क़ासिम, दारुल उ़लूम
मौलाना मन्जूर अहमद साहब नौमानी संपादक अल–फुरक़ान, बरेली व लखनऊ
मौलाना सईद अहमद साहब अकबराबादी संपादक बुरहान, देहली

मौलाना अहसानुल्लाह ख़ान ताजवर साह़ब नजीबाबादी आपके संपादन में बहुत सी पत्रिकायें प्रकाशित हुईं
मौलाना मज़हरूद्दीन साह़ब बिजनौरी दैनिक अल–अमान, दिल्ली
मौलाना शाईक़ उस्मानी साह़ब असर–ए–जदीद, कलकत्ता
मौलाना आमिर उस्मानी साह़ब मासिक तजल्ली, देवबन्द
मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल अ़ाबिदीन मेरठी अल–हरम, मेरठ
मौलाना हबीबुर्रहमान साह़ब बिजनौरी मन्सूर और अलख़ैल साप्ताहिक
मौलाना अब्दुल वहीद साह़ब सिद्दीक़ी नई दुनिया, दिल्ली
मौलाना खलीक़ अह़मद साह़ब सरधन्वी पूर्व संपादक माहनामा दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना अज़हर शाह कैसर साह़ब पूर्व संपादक माहनामा दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना हामिद अन्सारी ग़ाज़ी साह़ब संपादक मदीना, बिजनौर व जम्हूरियत, देहली
मौलाना रियासत अ़ली साह़ब बिजनौरी पूर्व संपादक माहनामा दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना तक़ी उस्मानी साह़ब अलबलाग़, कराची पाकिस्तान
मौलाना समीउल हक़ साह़ब अलहक़, अकौडा, ख़टक
मौलाना मुफ़्ती यूसुफ़ साह़ब लुधियानवी बईनात, बिन्नौरी टाऊन कराची, पाकिस्तान
मौलाना मुह़म्मद सादिक़ साह़ब बस्तवी नक़ूश हयात, बस्ती

मौलाना असीर अदरवी साह़ब तिमाही तर्जुमान–ए–इस्लाम, बनारस
मौलाना हबीबुर्रहमान क़ासमी आज़मी माहनामा दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना वहीदुज़्ज़मान साह़ब कैरानवी अल–किफ़ाह़ (अरबी मासिक), दिल्ली
मौलाना बदरुल ह़सन क़ासमी साह़ब पूर्व संपादक अल–दाई (अरबी मासिक), दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना नूर आलम अमीनी साह़ब अल–दाई (अरबी मासिक), दारुल उ़लूम
मौलाना ऐजाज़ अली साह़ब आज़मी अल–मुआसिर तिमाही, मऊ
मौलाना मुफ़्ती सलमान साह़ब मन्सूरपुरी निदा–ए–शाही, मुरादाबाद
मौलाना नूरूलहसन राशिद साह़ब तिमाही अहवाल व आसार, कांधला
मौलाना मुह़म्मद हाशिम क़ासमी साह़ब अल–फ़ैसल, हैदराबाद
मौ. क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम क़ासमी तिमाही, बहस व नज़र, पटना
मौलाना रिज़वान क़ासमी साह़ब सफ़ा, जामिया सबीलुस्सलाम, हैदराबाद
मौलाना कफ़ील अह़मद अलवी कैरानवी आईना–ए–दारुल उ़लूम देवबन्द, पाक्षिक
मौलाना मुह़म्मद सालिम जामई साह़ब अल–जमीअत, साप्ताहिक, देहली
मौलाना ह़क़्क़ानी क़ासमी साह़ब इस्तआ़रा, नई देहली
मौलाना वारिस साह़ब मज़हरी तर्जुमान–ए–दारुल उ़लूम, नई देहली

मौलाना नदीमुल वाजिदी साह़ब देवबन्दी तर्जुमान–ए–देवबन्द, देवबन्द
मौलाना असरारूल हक़ साह़ब मिल्ली इत्तिहाद, नई देहली
मौलाना अब्दुल क़ादिर शम्स क़ासमी मिल्ली इत्तिहाद, नई देहली
मौलाना बुरहानुद्दीन साह़ब क़ासमी ईसटर्न किरिसेंट (इंगलिश मासिक), मुमबई

शब्दावली

उर्दू/अ़रबी शब्द	**हिंदी अर्थ**
सरप्रस्त	संरक्षक
मोहतमिम	कुलपति
सदर मुदर्रिस	प्रधानाध्यापक
शैखुल हदीस	ह़दीस की पुस्तक बुख़ारी के अध्यापक
मजलिस–ए–शूरा	प्रबन्धक निकाय
मजलिस–ए–आ़मिला	कार्यकारिणी समिति
मजलिस तालीमी	शैक्षणिक परिषद
मुफ़ती	फ़तवा देने वाला
मुहुद्दिस	ह़दीस के प्रवक्ता
मौलाना	विद्वान
आ़लिम/उ़लमा	विद्वान
फ़ाज़िल/फुज़ला	स्नातक
फ़राग़त	स्नातक स्तर की पढ़ाई
दौरह ह़दीस	आ़लिम पाठ्यक्रम का अन्तिम वर्ग
फ़क़ीह/फुक़हा	इसलामी क़ानून के विद्वान
दीन	धर्म
मसलक	विचारधारा
दावत	इसलाम धर्म का प्रचार
मुनाज़रा	धार्मिक वादविवाद
तफ़सीर	कुरान करीम की व्याख्या
फ़िक़ह	इसलामी क़ानून का संग्रह
किताब व सुन्नत	कुरान व ह़दीस
इ़लम	ज्ञान
तालीम	शिक्षा
शोबा	विभाग

दफ़्तर	कार्यालय
रूदाद	रिपोर्ट
नाज़िम	प्रबन्धक
सदर	अध्यक्ष
इजलास	बैठक
जलसा	बैठक, सम्मेलन
हिजरी	मुसलिम कैलंडर
मुह़र्रम	मुसलिम कैलंडर का पहला महीना
सफ़र	मुसलिम कैलंडर का दूसरा महीना
रबीउ़लअव्वल	मुसलिम कैलंडर का तीसरा महीना
रबीउ़स्सानी	मुसलिम कैलंडर का चौथा महीना
जुमादलऊला	मुसलिम कैलंडर का पॉचवां महीना
जुमादसानिया	मुसलिम कैलंडर का छठा महीना
रजब	मुसलिम कैलंडर का सातवां महीना
शाबान	मुसलिम कैलंडर का आठवां महीना
रमज़ान	मुसलिम कैलंडर का नौवां महीना
शव्वाल	मुसलिम कैलंडर का दसवां महीना
ज़ूलक़ादह	मुसलिम कैलंडर का ग्यारहवां महीना
ज़ूलहि़ज्जह	मुसलिम कैलंडर का बारहवां महीना
माहनामा	मासिक
सालाना	वार्षिक
वफ़ात	मृत्यु, निधन
इंतिक़ाल	मृत्यु, निधन

मकतबा दारुल उलूम, शैखुल हिंद अकेडमी व तहफ़्फ़ुज़–ए–ख़तम–ए–नबुव्वत

की प्रकाशित पुस्तकें

1 तारीख़ दारुल उलूम देवबन्द, 2 खण्ड
2 तारीख़ दारुल उलूम देवबन्द, 2 खण्ड
3 दारुल उलूम देवबन्द
4 फ़तावा दारुल उलूम देवबन्द, 17 खण्ड
5 उलमा–ए–देवबन्द का दीनी रुख़ और मसलकी मिज़ाज
6 हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवीः हयात और कारनामे
7 हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोहीः हयात और कारनामे
8 शैखुल हिंद हज़रत मौ. महमूद हसनः हयात और कारनामे
9 सवानेह क़ासमी हज़रत नानौतवी की जीवनी
10 दारुल उलूम देवबन्द के इबतिदाई नुक़ूश
11 मक़ालात–ए–हबीब, 3 खण्ड
12 इशाअत–ए–इसलाम
13 अफ़कार–ए–आलम, 2 खण्ड
14 आईन–ए–हक़ीक़त नुमा
15 तदवीन–ए–सेयर व मग़ाज़ी
16 तज़किरतुन नोमान
17 अयोध्या के इसलामी आसार
18 इसलाम और अक़लियात
19 खवातीन–ए–इसलाम की इलमी व दीनी खिदमात
20 खैरुलकुरून की दरसगाहें और उन का निज़ाम–ए–तालीम
21 अहद–ए–रिसालत
22 उलूमुल कुरान
23 मखतूतात दारुल उलूम
24 मुसलमानों के हर तबक़े में इलम व उलमा
25 सवानेह–ए–अइम्मा अरबअह
26 शूरा की शरई हैसियत
27 निकाह व तलाक़ः अक़ल व शरअ की रौशनी में

अकाबिर की पुस्तकें

28 मजमूआ़ हफ़्त रसाइल
29 आब–ए–ह़यात
30 इंतसारुल इसलाम
31 तसफ़ितुल अ़क़ाइद
32 तक़रीर–ए–दिल पज़ीर
33 इसलाम
34 ह़िकमत क़ासमियह
35 अहसनुल कुरा तौज़ीह़ औसक़िल उ़रा
36 अररायुन्नजीह़ फ़ी रकअ़ात अल–तरावीह
37 औसकुल उ़रा फ़ी तह़क़ीक़ अल–जुमअ़ति फ़िल कुरा
38 हिदायतुल फ़ी क़िरअतिल मुक़तदी
39 अदिल्ल–ए–कामिला
40 ईज़ाहुल अदिल्लह
41 बराहीन–ए–क़ासमियह

फिरक़ों के खण्डन में पुस्तकें

42 मुह़ज़रात सेट बरैलवियत व अन्य
43 खण्डन का पूरा सेट
44 रद्दे मिरज़ाइयत के ज़र्रीं उसूल
45 सुबूत ह़ाज़िर हैं
46 खतम–ए–नुबूव्वत
47 गैर मुक़ल्लिदियत खण्डन का पूरा सेट
48 फ़िरक़ा–ए–अहल ह़दीस का जाएज़ह
49 मजमूआ़ रसाइल चांदपूरी
50 मजमूआ़ रसाइल शाहजहांपूरी
51 बरैलवियतः तलिस्म या फरेब
52 दुरर–ए–मंसूरह
53 गलत फ़हमियों का इज़ाला
54 जमाअ़त इसलामी का दीनी रुख
55 मौदूदी मज़हब
56 मौदूदी दसतूर और अ़क़ाइद की ह़क़ीक़त

57 मकतूबात–ए–सलासा

58 मकतूब–ए–हिदायत

59 नेक बीबियां नमाज़ कहां पढें

60 नमाज़ के अहम मसाइल की तह्क़ीक़

61 चंद अहम अ़सरी मसाइल

अ़रबी पुस्तकें

62 उलमाउ देवबन्दः खिदमातुहुम फ़िल ह़दीस

63 उलमाउ देवबन्दः इत्तिजाहुहुम अल–दीनी

64 अल–ह़दीस अल–ह़सन

65 ह़सनुन सह़ीह 3 खण्ड

66 ह़सनुन ग़रीब 2 खण्ड

67 अल–इसलाम व अल–अ़क़लानियह

68 अल–इमाम मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी......

69 मुह़वरीत फिद दीन

70 अल–ह़ालत अल–तालीमियह

71 अल–फ़ितनत अल–दज्जालियह

72 इसलाम

73

74

75

76 तसहीलुल उसूल

77 बाबुल अदब

78 क़साइद मुंतखबह

79 मबादियुल फ़लसफ़ह

80 तफ़सीरुन नुसूस

आरडर का पता

मकतबा दारुल उ़लूम

देवबन्द ज़िला सहारनपूर यू.पी. 247554

Phone: 01336-222429 Fax: 222768

info@darululoom-deoband.com